चेखव की श्रेष्ठ कहानियाँ

द्वितीय भाग

आन्तोन चेखव





प्र भा त प्र का श न

दिल्ली ★ मथुरा

प्रकाशक :
प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाजार
दिल्ली—६

*

अनुवादक :
राजनाथ, एम० ए०

*

सन् १९६१

*

*

मुद्रक :
जगदीशप्रसाद भरतिया
बम्बई भूषण प्रेस,
मथुरा

*

मूल्य
तीन रुपया

चेखव की ये कहानियाँ...

चेखव संसार में श्रेष्ठ कहानीकारों में से है।...इन्होंने अपनी कला को चमत्कारी बनाने के लिए न तो अनोखी घटनाएँ ढूँढ़ी हैं, न अनूठे पात्रों की सृष्टि की है। इनके पात्र ऐसे हैं, जिनसे अपने नित्य प्रति के जीवन में हम अक्सर मिलते हैं।...खास तौर से उच्च वर्गों के आडम्बरपूर्ण जीवन में, उनके बनावटी शिष्टाचार के नीचे मानव-हृदय को घुटते-कहराते देखा है...उनका तेज व्यङ्ग इस संस्कृति की हृदयहीनता को नश्तर की तरह चीरता चला जाता है। दुःखी लोगों के लिए उनके हृदय में करुणा है...व्यङ्ग का नश्तर उनके लिए नहीं है।

चेखव की कहानियाँ पढ़ कर हम अपने चारों तरफ के जीवन को नई निगाह से देखते हैं। सामाजिक जीवन का काम हमें बहुधा अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं के प्रति अचेत कर देता है, हमारी जागरूकता बहुधा कुन्द हो जाती है। चेखव इस जागरूकता को तीव्र करते हैं, हमारी कुन्द होती हुई सहृदयता को सचेत करते हैं, उन छोटी-छोटी बातों की तरफ ध्यान देना सिखाते हैं, जिनके न होने पर मनुष्य का सुख-दुःख निर्भरकरता है।...

लोग कहते हैं, एक कहानी सुनने पर दुबारा सुनने को जी नहीं चाहता। चेखव की कहानियों पर यह बात लागू नहीं होती। वे कविता की तरह नवीन हैं, हर बार पढ़ने पर रोचक सरस और शिक्षाप्रद।

—डा० रामविलास शर्मा

कहानी-क्रम

१.	एरियादुने	५
२.	गुसेव	४२
३.	दो बोलोद्या	६४
४.	एक स्त्री का राज्य	८२
५.	बड़े दिन की सुबह	९९
६.	भोजन	११५
७.	सन्ध्या	१२९
८.	दुलहिन का दहेज	१४३
९.	पोलिन्का	१५१
१०.	सहधर्मिणी	१५९
११.	अन्यूता	१६८
१२.	योग्यता	१७६
१३.	उनींदी	१८३
१४.	दर्रे में	१९२



एरियादने

ओदीसा से सेवास्तोपोल जाते हुए स्टीमर के डेक पर एक छोटी-सी गोल दाढ़ी वाला सम्भ्रांत व्यक्ति मेरे पास तम्बाखू पीने की इच्छा से आया और कहने लगा:

"छाया में बैठे हुए उन जर्मनों की तरफ जरा गौर से देखिए ! जब कभी जर्मन और अँग्रेज आपस में मिलते हैं तो फसल की, ऊन की कीमत की या अपने व्यक्तिगत मामलों की बातें करते हैं । परन्तु किसी कारणवश जब हम रूसी लोग आपस में मिलते हैं तो औरतों, आदर्शों या अव्यावहारिक विषयों और विशेषरूप से औरतों के ही सम्बन्ध में बातें करते हैं।"

इस व्यक्ति का चेहरा मेरे लिए पहले से ही परिचित था । पिछली शाम को हम दोनों एक ही ट्रेन से विदेश से लौटे थे और जब वोलोत्चिस्क पर, चुंगी के अधिकारियों द्वारा सामान की जांच की जा रही थी, मैंने उसे उसके साथ यात्रा करने वाली एक महिला के साथ औरतों के कपड़ों से भरे हुए ट्रंकों और टोकरियों के एक ऊँचे ढेर के सामने खड़ा हुआ देखा था और गौर किया था कि जब उसे नकली रेशम के एक टुकड़े पर टैक्स देना पड़ा था तो वह कितना व्यग्र और निराश हो उठा था । और उसके साथ वाली महिला ने शिकायत करने की धमकी दी थी। बाद में, ओदीसा आते हुए मैंने उसे मटर और सन्तरे लेकर जनाने डिब्बे की तरफ जाते देखा था ।

हवा में सीलन थी । जहाज थोड़ा-सा हिल रहा था । महिलाएँ अपने कमरों में जा चुकी थीं ।

छोटी गोल दाढ़ी वाला व्यक्ति मेरे पास बैठ गया और कहने लगा :

"हां, जब रूसी एक-दूसरे से मिलते हैं तो आदर्शों और औरतों के अलावा और कोई बातें नहीं करते। हम लोग इतने बुद्धिमान, इतने गम्भीर हैं कि सत्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं कहते और केवल उच्चादर्शों के विषय में ही बातें कर सकते हैं। रूसी अभिनेता विदूषक का पार्ट करना नहीं जानता। वह प्रहसन में भी गम्भीरता के साथ अभिनय करता है। हमलोग भी वैसे ही हैं। जब हमें साधारण मामूली विषयों पर बातें करनी पड़ती हैं तो हम लोग उन्हें बड़े ऊँचे दृष्टिकोण से देखते हैं। इसका कारण साहस, सचाई और सरलता का अभाव है। हम औरतों के बारे में प्रायः बातें करते हैं, और मेरा ख्याल है कि इस कारण करते हैं क्योंकि हम असंतुष्ट हैं। हम औरतों को अत्यन्त ऊँचे आदर्शों पर कसकर देखना चाहते हैं और वास्तविकता जो कुछ हमें दे सकती है, हम उसके अनुपात में बहुत ऊँची वस्तुओं की माँग करते हैं। और हमें मिलता वह है जो हमारी मांग से नितान्त भिन्न होता है और इसका परिणाम असन्तोष, टूटी हुई अभिलाषाओं और आन्तरिक दुःख के रूप में प्राप्त होता है। और अगर कोई दुखी है तो वह उसके विषय में बातें करने के लिए बाध्य है। आप उन बातों से ऊब तो नहीं उठते ?"

"नहीं, कतई नहीं।"

"ऐसी स्थिति में आज्ञा दीजिए कि मैं अपना परिचय दूँ," अपनी जगह से थोड़ा-सा उठते हुए मेरे साथी ने कहा, "इवान इलिच शामोहिन, मास्को का एक जमींदार समझ लीजिए......आपको मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

वह बैठ गया और मेरी तरफ मित्रतापूर्ण और सच्चे भाव से देखता हुआ कहने लगा।

"मैक्स नोर्दू जैसा एक मध्यम श्रेणी का दार्शनिक स्त्रियों सम्बन्धी इन निरन्तर होने वाली बातों को प्रेम का पागलपन कहेगा या यह बताएगा कि इसका कारण यह है कि हम लोग गुलाम रखने वाले लोग हैं। मेरा इस विषय में बिल्कुल भिन्न विचार है। मैं फिर दुहराता हूँ कि हमलोग असंतुष्ट हैं

क्योंकि हम लोग आदर्शवादी हैं। हम, उन प्राणियों को जो हमें और हमारे बच्चों को गर्भ में धारण करती हैं, अपने से और संसार की अन्य सारी वस्तुओं से श्रेष्ठ देखना चाहते हैं। जब हम युवक रहते हैं तो उनकी, जिन्हें हम प्यार करते हैं, पूजा करते हैं और उन्हें कविता की तरह सुन्दर समझते हैं। प्रेम और प्रसन्नता, हमारे लिए एक ही चीज के लिए प्रयुक्त होने वाले दो शब्द हैं। हम रूसियों में प्रेम-हीन विवाह घृणित समझा जाता है, इन्द्रिय सुख का मजाक उड़ाया जाता है और इसके प्रति विरक्ति प्रदर्शित की जाती है और सबसे बड़ी सफलता उन उपन्यासों और कहानियों में मानी जाती है जिनके नारी-पात्र सुन्दर, भावुक और महान होते हैं। यदि रूसी बर्षों से रफेल की मेडोना[1] के पीछे पागल रहे हैं या नारी-स्वतन्त्रता के इच्छुक रहे हैं तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस विषय में कोई बाह्य प्रदर्शन की भावना नहीं रही है। परन्तु मुसीबत यह है कि जब हमारी शादी हो जाती है या किसी स्त्री के साथ हमारी घनिष्ठता हुए दो या तीन साल बीत जाते हैं तो हम स्वयं को छला हुआ और निराश अनुभव करने लगते हैं। हम दूसरों के साथ रहना प्रारम्भ कर देते हैं और फिर वही निराशा, वही विरक्ति आ जाती है और अन्त में जाकर हमें यह विश्वास हो जाता है कि औरतें झूंठी, तुच्छ, उपद्रवी, अन्यायी, अपरिपक्व और निर्दयी होती हैं। दरअसल मनुष्यों से श्रेष्ठ होना तो दूर रहा, वे उनसे बहुत ही नीची होती हैं। और हमारे असन्तोष और निराशा के कारण हमारे पास इसके अलावा और कोई भी चारा नहीं रह जाता कि हम उस बात के विषय में कुढ़ें और बातें करें, जिसमें हमें इतनी निर्दयतापूर्वक छला गया है।"

जब शामोहिन बातें कर रहा था तो मैंने गौर किया कि रूसी भाषा और अपना रूसी वातावरण उसे अत्यधिक आनन्द प्रदान कर रहे थे। इसका कारण सम्भवतः यह था कि उसे विदेश में रहते समय वतन की बड़ी याद

१—रफेल पन्द्रहवीं शताब्दी में इटली में पैदा हुआ था और संसार के सर्वश्रेष्ठ चित्रकारों में उसकी गणना की जाती है। 'मेडोना' माता मेरी के उस रूप का नाम है जो चित्रों में प्रदर्शित किया जाता है।

आती रही थी। यद्यपि उसने रूसियों की तारीफ की और उन्हें ऊँचे और दुर्लभ आदर्श वाला मनुष्य बताया परन्तु साथ ही उसने विदेशियों के महत्व को भी नही घटाया और इसके लिए मैं उसकी प्रशंसा करता हूं। साथ-ही यह भी प्रकट हो रहा था कि उसकी प्रशंसा करता हूं। साथ ही यह भी प्रकट हो रहा था कि उसकी आत्मा में कोई बेचैनी थी और वह स्त्रियों की अपेक्षा स्वयं अपने विषय में अधिक बातें करना चाह रहा था और मुझे आत्म-स्वीकृति के रूप में एक लम्बी कहानी सुननी थी। जब हमने शराब की एक बोतल मँगवाई और एक-एक गिलास पी चुके तो उसने इस तरह कहना प्रारम्भ किया।

"मुझे याद है कि वाल्टमैन के एक उपन्यास में कोई कहता है, 'और यह कहानी है !' और कोई उत्तर देता है, 'नहीं, यह कहानी नहीं है—यह तो कहानी की केवल भूमिका है।' इसी तरह जो कुछ मैंने अब तक कहा है, वह केवल भूमिका है। दरअसल जो मैं आपको सुनाना चाहता हूँ, वह मेरी अपनी प्रेम कहानी है। क्षमा कीजिए, मैं आपसे फिर पूछता हूँ, आप इससे ऊब तो नहीं उठेंगे ?"

मैंने उसे बताया कि ऐसा नहीं होगा अतः वह कहने लगा :

"मेरी कहानी का क्षेत्र मास्को प्रान्त के उत्तरी जिलों में से है। मैं आपको बता दूँ कि वहां का प्राकृतिक दृश्य अद्भुत रूप से सुन्दर है। हमारा बगीचे से घिरा हुआ मकान एक तेज बहने वाली नदी के ऊँचे किनारे पर है जहाँ नदी का पानी रात-दिन कलकल करता हुआ बहता रहता है। कल्पना कीजिए, एक पुराना बड़ा बाग, फूलों की साफ क्यारियाँ, शहद की मक्खी के छत्ते, तरकारी की छोटी-सी बगिया और उसके नीचे एक नदी जिसके किनारे पर घनी पत्तियों वाले 'विलो' के वृक्ष, जो, जब उन पर गहरी ओस पड़ी रहती है, तो अपनी चमक खोकर भूरे रङ्ग के दिखाई पड़ने लगते हैं, और नदी के दूसरे किनारे पर एक चारागाह, और चरागाह से परे, ऊँची जमीन पर एक भयङ्कर, घना चीड़ का जङ्गल। उस जङ्गल में जायकेदार हल्के लाल रंग के फल बहुत बड़ी तादाद में पैदा होते हैं और बारहसिंगे अब

भी उसकी गहरी गुफाओं में रहते हैं। जब मुझे कफन के ताबूत में बन्द कर दिया जायगा, मुझे यकीन है कि मैं तब भी उन सुबहों का सपना देखूँगा जब सूरज आँखों को तकलीफ पहुँचाता है। या बसन्त की उन अद्भुत संध्याओं को जब बुलबुल और कोयलें बाग में और बाग के परे गा उठती हैं और संगीत का स्वर गाँव पर लहराने लगता है, जब लोग घर में पियानो बजाते हैं और नदी कल-कल कर उठती है...जब ऐसा संगीत बज उठता है तब, सचमुच, हरेक की इच्छा होती है कि चिल्लाए और जोर से गा उठे।

हमारे पास खेती के लायक ज्यादा जमीन नहीं है मगर हमारे चरागाह उस कमी का बहुत बड़ा हिस्सा पूरा कर देते हैं और जङ्गल की पैदावार को मिलाकर हमारी सालाना आमदनी दो हजार रूबल के लगभग हो जाती है। मैं अपने बाप का इकलौता बेटा हूँ, हम दोनों ही संकोची आदमी हैं इसलिए मेरे पिता की पेंशन को मिलाकर यह आमदनी हमारे लिए काफी थी।

युनिवर्सिटी की पढ़ाई खत्म करवे के बाद, मैंने तीन साल अपनी जायदाद की देखभाल करते हुए बराबर इस उम्मीद में देहात में ही बिताए कि मैं स्थानीय असेम्बली के लिए चुन लिया जाऊँगा। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि मैं एक अनिन्द्य सुन्दरी और आकर्षक लड़की से प्रेम करने लगा था। वह हमारे एक पड़ोसी जमींदार कोत्लोविच की बहन थी। यह जमींदार बर्बाद हो चुका था। इसकी जमींदारी में अनन्नास,स्वादिष्ट आड़ू, बिजली पैदा करने की मशीन, चहारदीवारी के भीतर एक फुव्वारा आदि अनेक प्रकार की चीजें थीं, साथ ही उसकी जेब हमेशा खाली रहती थी। वह कुछ भी नहीं करता था और जानता था कि कुछ भी कैसे नहीं किया जाता है। वह इतना कोमल था मानो उबाली हुई सलगम द्वारा बनाया गया हो। वह किसानों का होम्योपैथिक इलाज किया करता था और आत्म-विद्या में रुचि रखता था। फिर भी वह बड़ा कोमल और विनम्र व्यक्ति था। और किसी भी हालत में उसे मूर्ख नहीं कहा जा सकता। परन्तु ऐसे व्यक्तियों को जो आत्माओं से बातें करते हैं और किसानों की औरतों का चुम्बकीय शक्ति से इलाज करते है, मैं पसन्द नहीं करता। पहली बात तो यह

है कि उन लोगों के विचार, जो बौद्धिकरूप से स्वतन्त्र नहीं होते, सदैव उलझे रहते हैं, ऐसे लोगों से बातें करना बहुत मुश्किल रहता है, और दूसरे, साधारणतः वे लोग किसी से प्रेम नहीं करते, स्त्रियों से कोई सम्पर्क नहीं रखते और उनकी रहस्य-भावना का भावुक व्यक्तियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। मैं उसकी शारीरिक रूप-रेखा को भी पसन्द नहीं करता था। वह लम्बा, मोटा और गोरा था। उसका सिर छोटा, आँखें चमकती हुई और उंगलिया सफेद और फूली हुई थीं। वह हाथ नहीं मिलाता था वलिक दूसरे का हाथ अपने हाथ में पकड़कर उसे मसलता था। वह हमेशा विनम्र बना रहता था। अगर वह किसी चीज को माँगता तो, 'क्षमा कीजिए' और अगर आपको कोई चीज देता तो भी, 'क्षमा कीजिए' कहता था।

उसकी बहन बिलकुल दूसरी ही तरह की थी। मैं यह बता दूँ कि कोतलोविच-परिवार से मेरा बचपन और किशोरावस्था में कोई परिचय नहीं था क्योंकि मेरे पिता 'न' में प्रोफेसर थे इसलिए हम लोग बहुत दिनों तक घर से बाहर रहे थे। जब मेरा उनसे परिचय हुआ तब वह लड़की बाईस साल की थी। बहुत पहले स्कूल छोड़ चुकी थी और दो या तीन साल मास्को में अपनी एक धनवान बुआ के यहाँ रही थी जिसने उसे सम्भ्रान्त समाज में उठना-बैठना सिखाया था। जब मेरा उससे परिचय कराया गया और मैंने उससे पहली बार बातें कीं तो मुझे सबसे अधिक आकर्षण और अद्भुत वस्तु उसका नाम लगा—एरियाद्ने। यह बहुत ही उपयुक्त नाम था। वह सांवले रङ्ग की, दुबली-पतली, कृशकाय, कोमल, दर्शनीय और अद्भुत रूप से भव्य थी। उसकी रूपरेखा सुसंस्कृत और अत्यधिक तेजस्विता-पूर्ण थी। उसके नेत्र भी चमकीले थे परन्तु उसके भाई के नेत्रों की चमक शान्त, मधुर और चीनी की मिठाई की तरह फीकी थी जब कि उसके नेत्रों में यौवन, गर्व और सौन्दर्य की आभा थी। उसने परिचय के पहले ही दिन मेरा हृदय जीत लिया और सचमुच इस घटना को रोका भी नहीं जा सकता था। मुझ पर उसका प्रथम प्रभाव इतना गहरा पड़ा था कि मैं आज तक भी अपनी उस कल्पना से छुटकारा नहीं पा सका हूँ। मैं अब भी यह कल्पना

करने को उत्सुक हो उठता हूँ कि उस लड़की का निर्माण करते समय प्रकृति के सम्मुख कोई महान और अत्यधिक सुन्दर आदर्श रहा होगा। एरियाद्ने की आवाज, उसकी चाल, उसका टोप, यहाँ तक कि रेतीले किनारे पर पड़े उसके पदचिन्ह, जहाँ वह मछली पकड़ने बैठती थी, मुझे प्रसन्नता से भर देते और मुझ में जीवन के प्रति एक उत्कट लालसा उत्पन्न हो उठती। मैं उसकी आत्मा का अनुमान उसके सुन्दर चेहरे और आकर्षक रूपरेखा से लगाया करता था। उसका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक मुस्कान मुझे मन्त्रमुग्ध कर देती, जीत लेती और उसकी आत्मा की श्रेष्ठता में विश्वास करने को बाध्य कर देती। उसका व्यवहार मित्रतापूर्ण होता वह हमेशा बातें करने को तैयार रहती और उसके व्यवहार में प्रसन्नता और सादगी भरी रहती। ईश्वर के प्रति उसकी आस्था काव्यमय थी। मृत्यु के विषय में वह कवित्वपूर्ण विचार रखती। और उस की आत्मा में इतनी विभिन्नताएँ झलकती रहतीं कि उसके दोष भी अद्भुत और आकर्षक गुण बन जाते। मान लीजिए कि उसे एक घोड़े की जरूरत होती और पास में पैसा न होता—तो कोई चिन्ता की बात नहीं थी। कोई चीज बेच दी जाती या गिरवी रख दी जाती। और अगर कारिन्दा कसम खाता कि कोई भी चीज न तो बेची जा सकती है और न गिरवी रखी जा सकती है तो मकान की छत की लोहे की चादरें उखाड़ी जातीं और फेक्टरी में ले जाई जातीं या काम की बहुत ज्यादा भीड़ रहने पर भी खेती में काम आने वाले घोड़े बाजार ले जाए जाते और मिट्टी के मोल बहा दिए जाते। कभी-कभी उसकी ये अनियन्त्रित इच्छाएँ सारे घर को निराशा में डुबा देतीं और वह अपनी इच्छाओं को इतने सुन्दर ढङ्ग से व्यक्त करती कि उसके लिए सारी चीजों को न्यौछावर कर दिया जाता। सारी चीजों पर उसका उतना ही अधिकार रहता जैसा कि किसी देवी या सीजर की पत्नी का रहता था। मेरा प्रेम कारुणिक था और शीघ्र ही सब लोग इस तथ्य को जान गए--मेरे पिता, पड़ोसी और किसान आदि की भी सहानुभूति मेरे साथ थी। जब मैं मजदूरों को वोद्का बाँटता तो वे सलाम करते और कहते, 'भगवान करे कोटलोविच महिला आपकी पत्नी बने।'

एरियाद्ने खुद भी जानती थी कि मैं उसे प्यार करता था। वह

कभी घोड़े पर सवार होकर और कभी गाड़ी में बैठ कर हम लोगों से मिलने के लिए आती और पूरा दिन मेरे और मेरे पिता के साथ बिताती। उसने पिता के साथ गहरी मित्रता कर ली। उन्होंने उसे साइकिल चलाना भी सिखाया जो उनका प्रिय मनोरञ्जन था।

मुझे याद है कि एक शाम को मैंने उसे साइकिल पर चढ़ने में मदद की थी और वह इतनी सुन्दर लगी थी कि जब मैंने उसका स्पर्श किया तो ऐसा अनुभव किया मानो मेरे हाथ जल रहे थे, मैं खुशी से कांप उठा। जब वे दोनों, मेरे वृद्ध पिता और वह, जो इतने सुन्दर और ललित दिखाई पड़ रहे थे, बड़ी सड़क पर एक-दूसरे की बगल में साइकिलों पर बैठे जा रहे थे तो एक काला घोड़ा, जिस पर कारिन्दा सवार था, दौड़ कर एक तरफ को हट गया क्योंकि वह भी उसके सौन्दर्य से प्रभावित हो उठा था। मेरे प्रेम, मेरी पूजा ने एरियाद्ने को प्रभावित किया और उसके हृदय को पिघला दिया। उसकी उत्कट इच्छा थी कि वह भी मेरी तरह किसी के वश में हो जाय और प्रतिदान में उतनी ही गम्भीरता से प्रेम करे। यह सब इतना भावुकतापूर्ण था!

परन्तु वह मेरी तरह प्रेम करने के अयोग्य थी क्योंकि उसकी प्रकृति शीतल थी और चरित्र भी कुछ सीमा तक खराब था। उसके हृदय में एक शैतान था जो रात-दिन उसके कान में फुसफुसाया करता था कि वह आकर्षक और पूजा के योग्य है। उसे क्यों उत्पन्न किया गया था या उसे यह जीवन किसलिए प्रदान किया है, इस विषय में उसके कोई निश्चित विचार नहीं थे। वह भविष्य में स्वयं अपनी कल्पना एक धनवान और विशिष्ट महिला के अतिरिक्त और किसी भी दूसरे रूप में नहीं करती थी। वह नृत्यों, घुड़दौड़ों, कीमती पोशाकों, सजे-सजाए भव्य ड्राइङ्ग-रूमों और अपने एक व्यक्तिगत कमरे के स्वप्न देखा करती थी और राजकुमारों, राजदूतों, प्रसिद्ध चित्रकारों और कलाकारों के एक ऐसे झुंड की कल्पना करती थी, जो सब-के-सब उस की पूजा कर रहे होते और उसके सौन्दर्य और वस्त्राभूषणों को देख अभिभूत हो उठते।

व्यक्तिगत सफलता की इस प्यास और एक ही दिशा में मस्तिष्क को सदैव केन्द्रित किए रहने की इस आदत से व्यक्ति उदासीन हो उठता है और एरियाद्ने उदासीन थी—मेरे प्रति, प्रकृति के प्रति और संगीत के प्रति। समय बीतता चला जा रहा था और अभी तक रङ्गमंच पर राज-दूतों का पदार्पण नहीं हुआ था। एरियाद्ने अपने आध्यात्मवादी भाई के साथ रह रही थी। हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ती चली जा रही थी। यहाँ तक कि उसके पास टोप और पोशाकें खरीदने के लिए कुछ भी नहीं बचा था और उसे अपनी निर्धनता को छिपाने के लिए तरह-तरह की चालाकियों और धोखेबाजियों का सहारा लेना पड़ता था।

सौभाग्य से, माक्तुएव नामक एक प्रिंस, जो एक अमीर, परन्तु बहुत ही नगण्य-सा व्यक्ति था, उसके पास उस समय आया था जब वह मास्को में अपनी बुआ के पास रहती थी। उसने प्रिंस को पूर्णतः निराश कर दिया था। परन्तु अब वह इस बात पर पश्चाताप करती थी कि उसने उसे अस्वीकार कर दिया था, जैसे कि एक किसान कॅकड़े पड़े हुए क्वास (शराब) के प्याले को देखकर घृणा से थूक देता है परन्तु फिर भी उसे पी लेता है। इसी तरह वह प्रिंस की याद कर घृणा से कुढ़ उठती परन्तु फिर भी अपने आपसे कह उठती, "जो तुम्हारी इच्छा हो सो कहो, फिर भी एक पदवी में कुछ अबोध्य सा आकर्षण होता है...।"

वह स्वप्न देखती थी एक पदवी का, एक उच्च सामाजिक स्थिति का और साथ ही मुझे भी हाथ से निकल जाने देना नहीं चाहती थी। कुछ भी हो, कोई भी राजदूतों का स्वप्न देख सकता है परन्तु फिर भी उसका हृदय पत्थर का नहीं होता और हरेक व्यक्ति अपने यौवन के दिनों में उत्कट भाव-नायें रखता है। एरियाद्ने ने प्रेम में पड़ने का प्रयत्न किया, प्रेम करने का प्रदर्शन किया और कसम भी खाई कि वह मुझसे प्रेम करती है। परन्तु मैं एक जागरूक और भावुक व्यक्ति हूँ। जब मुझसे प्रेम किया जाता है तो मैं बिना प्रतिज्ञाओं और विश्वास दिलाए जाने के प्रयत्नों के ही, दूर से ही इसका अनुभव कर लेता हूँ। तुरन्त ही मैंने अनुभव किया कि वातावरण में उपेक्षा

थी और जब वह मुझसे प्रेम की बातें करती तो ऐसा लगता मानो मैं धातु की बनी हुई एक बुलबुल का संगीत सुन रहा हूँ। एरियाद्ने स्वयं इस बात से चौकन्नी थी कि उसमें कोई कमी नहीं थी। वह परेशान हो उठी थी और मैंने उसे कई बार रोते हुए देखा था। एक बार—आप इसकी कल्पना कर सकते हैं ?—वह अचानक मुझसे लिपट गई और मेरा चुम्बन ले लिया। यह घटना नदी तट पर शाम को घटी थी और मैंने उसकी आँखों से पहचाना था कि वह मुझसे प्रेम नहीं करती थी बल्कि केवल उत्सुकतावश आलिंगन कर रही थी और स्वयं को जांचना और यह देखना चाहती थी कि इसका क्या परिणाम निकलता है। मैं भयभीत हो उठा। मैंने उसके हाथ पकड़ लिए और निराश होकर बोला "इन प्रेमहीन दुलारों से मुझे दुख होता है !"

"तुम भी कैसे अजीब आदमी हो !" उसने नाराज होकर कहा और चली गई।

इस प्रकार एक या दो साल गुजर गए होंगे। प्रत्येक सम्भावना के रहते हुए मुझे उससे विवाह कर लेना चाहिए था और इस तरह मेरी कहानी समाप्त हो जाती, परन्तु भाग्य ने तो हमारे इस प्रेम-व्यापार का कोई दूसरा ही रूप निश्चित कर रखा था। ऐसा हुआ कि हमारे उस क्षितिज पर एक नया व्यक्ति उदय हुआ। एरियादने के भाई का युनिवर्सिटी का एक पुराना मित्र मिहेल इवानिच लुबकोव उससे मिलने आया। वह एक आकर्षक व्यक्ति था। कोचवान और नौकर उसे "मजेदार आदमी" कहा करते थे। वह औसद कद का, दुबला-पतला और गंजा, अच्छे स्वभाव वाले बुर्जुआ व्यक्ति के से चेहरे वाला, अनाकर्षक परन्तु पीला और मिलने योग्य व्यक्ति था। उसकी मूंछें कड़ी और ऐंठी हुई, गर्दन बत्तख की खाल की तरह रङ्ग वाली और पेट आदम के बड़े पेट की तरह था। वह एक चौड़े काले फीते में बंधा हुआ एक आँख वाला चश्मा लगाता था, तुतलाता था और 'र' और 'ल' का उच्चारण नहीं कर पाता था। वह हमेशा खुश रहता था, प्रत्येक वस्तु उसका मनोरंजन करती थी।

बीस साल की उम्र में उसने एक निहायत बेवकूफी से भरी हुई शादी

की थी और अपनी पत्नी के दहेज के रूप में उसे मास्को में दो मकान मिले थे। उसने उनकी मरम्मत कराना और एक स्नान-गृह बनवाना प्रारम्भ कर दिया और पूरी तरह बर्बाद हो गया। आजकल उसकी बीवी और चार बच्चे 'पूर्वी इमारतों' में बड़ी गरीबी की जिन्दगी बिता रहे हैं। उसे उनका पालन-पोषण करना पड़ता था—और इसमें उसे मजा आता था। उसकी अवस्था छत्तीस वर्ष की थी और उस समय उसकी बीवी बयालीस साल की थी और इस बात में भी उसे आनन्द आता था। उसकी माँ एक घमन्डिन, गुस्सेबाज और अमीरी शान-शौकत का दिखावा करने वाली औरत थी। वह उसकी बीवी से नफरत करती थी और कुत्ते और बिल्लियों के एक पूरे चिड़ियाघर के साथ अलग रहती थी। लुबकोव को उसे भी सत्तर रूबल माहवारी देने पड़ते थे। वह खुद भी सुसंस्कृत रुचि का व्यक्ति था। स्लाव्यान्स्की बाजार में दोपहर का भोजन और "हरमीटेज' में शाम का भोजन करना पसन्द करता था। उसे बहुत सारे पैसों की जरूरत रहती थी परन्तु उसका चाचा उसे सिर्फ दो हजार रूबल सालाना ही देता था जो उसके लिए काफी नहीं थे। वह कई-कई दिनों तक, जैसी कि कहावत है, जीभ निकाले मास्को में इधर-से उधर किसी कर्ज देने वाले साहूकार की तलाश में घूमता रहता था और इसमें भी उसे मजा आता था। वह कोत्लोविच के यहाँ, जैसा कि उसका कहना था, प्रकृति की गोद में पारिवारिक जीवन से दूर रहकर, आराम करने आया था। दोपहर के खाने, शाम की ब्यालू और हम लोगों के घूमने जाते समय वह अपनी बीवी, अपनी माँ, अपने कर्जदारों और अमीरों के बारे में बातें करता और उनकी हँसी उड़ाता। वह अपने ऊपर भी हँसता और हमको विश्वास दिलाता कि कर्ज लेने की उसकी प्रतिभा को धन्यवाद है, उसने इसके द्वारा अनेक व्यक्तियों से अच्छी जान-पहचान करली है। वह बिना रुके हँसता रहता और हम लोग भी हँस उठते। साथ ही उसके साथ हम लोगों का समय भी दूसरी तरह कटने लगा। मेरा झुकाव अपेक्षाकृत अधिक शान्त, कहना चाहिए कि, ग्रामीण जीवन के आनन्दों की तरफ अधिक था। मुझे मछली पकड़ना, सांध्य-भ्रमण, कुक्कुरमुत्ते इकट्ठे करना अच्छा लगता था।

लुबकोव को पिकनिकें, आतिशबाजी और शिकार का शौक था। वह हफ्ते में तीन बार पिकनिकों का आयोजन किया करता था और एरियाद्ने बिना इस बात को पूछे कि मेरे पास पैसे हैं या नहीं, मुझे केकड़ों, शेम्पेन और मिठाइयों की एक पूरी लिस्ट बनाकर पकड़ा देती कि मैं जाकर मास्को से ले आऊँ। उन पिकनिकों में शराब ढलती और ठहाके लगते और फिर वही मजाकिया बातें शुरू हो जातीं कि उसकी बीवी कितने साल की है, उसकी माँ के पास कैसा मोटा गोदी में खिलाने वाला कुत्ता है और उसके साहूकार कैसे मजेदार आदमी हैं...

लुबकोव प्रकृति-प्रेमी था परन्तु वह उसे एक ऐसी चीज मानता था जो बहुत दिनों से परिचित हो और साथ ही, उससे बहुत नीची हो और उसके मनोरंजन के लिये बनाई गई हो। वह कभी किसी अत्यन्त सुन्दर प्राकृतिक दृश्य को देखकर स्थिर खड़ा हो जाता और कहता "यहाँ चाय पीने में आनन्द आएगा।"

एक दिन एरियाद्ने को दूर छाता लगाए जाते हुए देखकर उसने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा, "वह पतली है, इसलिए मुझे बड़ी अच्छी लगती है, मुझे मोटी औरतें पसन्द नहीं हैं।"

इस बात ने मुझे चौंका दिया। मैंने उससे अपने सामने स्त्रियों के विषय में इस तरह की बातें करने के लिए मना किया। उसने ताज्जुब से मेरी तरफ देखा और बोला :

"इस बात में क्या बुराई है कि मैं पतली औरतों को पसन्द करता हूँ और मोटी औरतों की तरफ ध्यान नहीं देता ?"

मैंने जवाब नहीं दिया। बाद में उमङ्ग में भरकर और कुछ मस्त होकर उसने कहा :

"मैंने गौर किया है कि एरियाद्ने ग्रिगोरीएव्ना तुमको चाहती है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उस पर विजय पाने की कोशिश क्यों नहीं करते।"

उसके शब्दों ने मुझे परेशान कर दिया और कुछ व्यग्र होते हुए मैंने उसे बताया कि प्रेम और स्त्रियों के प्रति मेरा क्या दृष्टिकोण है।

"मुझे नहीं मालूम" उसने गहरी सांस ली, "मेरे विचारानुसार तो एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है। जैसा कि तुम कहते हो, हो सकता है कि एरियादने भावुक और महान हो परन्तु इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह प्राकृतिक नियमों से भी महान है। तुम खुद ही देख लो कि अब वह उस अवस्था को पहुँच गई है जब उसका कोई पति या प्रेमी होना ही चाहिए। मैं भी औरतों की उतनी ही इज्जत करता हूँ जितनी कि तुम करते हो, परन्तु मैं नहीं सोचता कि कुछ विशिष्ट सम्बन्ध कविता को दूर कर देते हैं। कविता एक चीज है और प्रेम बिल्कुल दूसरी चीज। यह वैसा ही है जैसा कि खेती में होता है। प्रकृति का सौन्दर्य एक चीज है और तुम्हारे खेतों और जंगलों से होने वाली आमदनी दूसरी चीज है।"

जब मैं और एरियाद्ने मछली पकड़ रहे होते तो लुबकोव पास ही बालू पर लेट जाता और मेरा मजाक उड़ाता या जीवन कैसे बिताना चाहिये इस बात पर व्याख्यान देता रहता।

"मुझे आश्चर्य है, प्रिय महोदय, कि आप बिना प्रेम किये कैसे रह सकते हैं," वह कहता, "आप जवान हैं, मजेदार हैं—सचमुच, आप ऐसे व्यक्ति हैं जिस पर नाक-भौं नहीं चढ़ाना चाहिये फिर भी आप एक साधु की तरह रहते हैं। उफ ! मैं ऐसे आदमियों को सहन नहीं कर सकता जो अट्ठाईस वर्ष की अवस्था में ही बुड्ढे बन जाते हैं। मैं आपसे लगभग दस साल बड़ा हूँ और फिर भी हम में से कौन जवान है ? एरियाद्ने ग्रिगोरीएव्ना, हम में से कौन जवान है ?"

"बेशक, आप हैं," एरियाद्ने ने जवाब दिया।

और जब वह हमारी खामोशी और तिरैरी पर निगाह जमाये रहने से ऊब उठता तो घर चला जाता और एरियाद्ने मेरी तरफ गुस्से से देखती हुई कहती :

"तुम सचमुच आदमी नहीं हो बल्कि मिट्टी के एक लौंदे हो, भगवान मुझे क्षमा करे ! आदमी को इस योग्य होना चाहिये कि भावनाओं में बह जाय, उसे इस लायक होना चाहिये कि वह पागल हो उठे गल्तियाँ करे, दुख उठाये। एक औरत तुम्हारी धृष्टता और बदतमीजी को क्षमा कर सकती है परन्तु वह तुम्हारी मूर्खता को कभी भी क्षमा नहीं करेगी !"

वह सचमुच गुस्से में थी इसलिए आगे कहती गई :

"सफलता प्राप्त करने के लिये आदमी को दृढ़ और साहसी होना चाहिये। लुबकोव तुम्हारी तरह सुन्दर नहीं है परन्तु अधिक आकर्षक है। उसे हमेशा औरतों के मामले में सफलता प्राप्त होगी क्योंकि वह तुम्हारी तरह नहीं है, वह एक आदमी है...।"

सचमुच उसकी आवाज में क्रोध की उत्तेजना भरी हुई थी।

एक दिन भोजन के समय उसने बिना मुझे संबोधन किए कहना प्रारम्भ किया कि अगर वह पुरुष होती तो यहाँ देहात में बंध कर नहीं रहती बल्कि यात्रा करती, कहीं विदेश में जाड़े बिताती—उदाहरण के लिए जैसे इटली में जाड़े बिताती। ओह ! इटली ! इसी समय मेरे पिता ने अनजान में ही आग में घी डाल दिया। वे हमें बताने लगे कि इटली कैसा है, वहाँ कितना अच्छा लगता था, वहाँ के प्राकृतिक दृश्य कितने भव्य थे, अजायबघर कैसे सुन्दर थे। एरियाद्ने के हृदय में अचानक इटली जाने की तीव्र इच्छा प्रज्ज्वलित हो उठी। उसने दृढ़तापूर्वक मेज पर घूंसा मारा और उसकी आँखें चमक उठीं जब उसने यह कहा, "मैं जरूर जाऊँगी !"

उसके बाद रोज इटली के विषय में बातें होने लगीं। इटली में कितना आनन्द आएगा। आह, इटली ! ओह, इटली ! और जब एरियाद्ने ने, मुड़कर, उपेक्षापूर्ण और धृष्ट दृष्टि से मेरी तरफ देखा तो मुझे लगा कि उसने अपने स्वप्न में ही इटली को जीत लिया था—वहाँ के सुन्दर होटल, महान् विदेशी और यात्री सबको। अब उसे रोका नहीं जा सकता था। मैंने उसे कुछ दिन और रुकने की सलाह दी कि वह अपनी यात्रा को एक या दो

साल के लिए स्थगित कर दे, परन्तु वह नफरत से त्यौरियाँ चढ़ा उठी और बोली—

"तुम एक बुढ़िया की तरह कंजूस हो !"

लुबकोव यात्रा के पक्ष में था। उसने कहा कि वह बहुत सस्ते में हो सकती है। वह खुद भी इटली जाएगा और वहाँ पारिवारिक जीवन से दूर रहकर आराम करेगा।

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने एक स्कूली लड़के की तरह सरल व्यवहार किया। ईर्षा से नहीं बल्कि किसी भयानक और अद्भुत भविष्य की कल्पना कर मैंने पूरी कोशिश की कि उन दोनों को अकेले एक साथ न रहने दूँ परन्तु उन्होंने मेरा मजाक उड़ाया। उदाहरण के लिए जब मैं भीतर जाता तो वे यह दिखाते कि अभी एक-दूसरे का चुम्बन ले रहे थे, और ऐसी ही अन्य प्रकार की हरकतें करने लगते थे।

परन्तु देखिए, एक सुन्दर प्रभात में, उसका मोटा, सफेद चमड़ी वाला वह आध्यात्मवादी भाई आया और मुझसे एकान्त में बात करने की इच्छा प्रकट की।

उस आदमी में अपनी कोई इच्छा-शक्ति नहीं थी। इतना शिक्षित और विनम्र होते हुए भी वह दूसरे आदमियों के पत्रों को पढ़ने से अगर वे पत्र उसके सामने मेज पर पड़े होते, अपने को रोक नहीं पाता था। और इस समय उसने स्वीकार किया कि उसने अचानक लुबकोव का एरियादने के नाम लिखा हुआ एक पत्र पढ़ लिया था।

"उस पत्र से मुझे मालूम हुआ कि वह बहुत जल्दी ही विदेश जा रही है। मेरे प्यारे भाई, मैं बहुत परेशान हो उठा हूँ। भगवान के लिए मुझे स ब कुछ बतादो। मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आ रहा।"

उसने यह कहते हुए गहरी साँस ली और सीधी मेरे मुँह पर छोड़ दी। उसमें से उबले हुए गोश्त की गन्ध आ रही थी।

"मुझे इस पत्र का रहस्य खोल देने के लिए क्षमा करना, परन्तु तुम एरियादने के मित्र हो, वह तुम्हारी इज्जत करती है। शायद तुम इस विषय

में कुछ जानते हो। वह बाहर जाना चाहती है, मगर किसके साथ? मिस्टर लुबकोव उसके साथ जाने का प्रस्ताव रख रहे हैं। क्षमा कीजिए, परन्तु यह मिस्टर लुबकोव का विचित्र व्यवहार है। वे एक शादीशुदा आदमी हैं, उनके बच्चे हैं, और फिर भी वे प्रेम की घोषणा कर रहे हैं, वे एरियादूने के लिए लिखते हैं, 'डार्लिंग", क्षमा कीजिए मगर यह सब बड़ा विचित्र-सा लग रहा है।"

मैं स्तम्भित हो उठा, मेरे हाथ-पैर सुन्न पड़ गए और मैंने अपने सीने में एक दर्द महसूस किया मानो एक तिकौना पत्थर उसमें घुसेड़ दिया गया हो, कोत्लोविच हताश होकर एक आरामकुर्सी पर गिर पड़ा। उसके हाथ बगल में शिथिल होकर लटकने लगे।

"मैं क्या कर सकता हूँ?" मैंने पूछा।

"उसे समझाओ......उस पर असर डालो......जरा सोचो तो सही कि लुबकोव उसके लिए क्या है? क्या वह उसके योग्य है? ओह मेरे भगवान! यह कितना विचित्र है, कितना विचित्र है!" अपना सिर पकड़कर वह कहता गया। "उसके सामने इतने अच्छे प्रस्ताव रखे गए थे—प्रिंस माक्तुएव और...और दूसरे लोगों ने प्रस्ताव रखे थे। लक्स प्रिंस उसकी पूजा करता है और अभी पिछले बुधवार को उसके स्वर्गीय बाबा, इलारियोन, ने यह स्पष्ट घोषणा की थी कि एरियादूने निश्चितरूप से उसकी बीबी बनेगी। उसका बाबा, इलारियोन, मर गया है, मगर वह एक अद्भुत बुद्धिमान व्यक्ति है, हम रोज उसकी आत्मा को बुलाते हैं।"

इस बातचीत के बाद में सारी रात जागता हुआ पड़ा रहा और मैंने अपने आप को गोली मार लेने का इरादा किया। सुबह होने पर मैंने पाँच पत्र लिखे और उन सबको फाड़ डाला। फिर मैं खलिहान में जाकर रोता रहा। इसके बाद मैंने पिता से कुछ धन लिया और बिना बिदा माँगे काकेशस की तरफ रवाना हो गया।

बेशक एक औरत एक औरत है और एक मर्द एक मर्द है लेकिन क्या यह सब इतना आसान हो सकता है जितना कि प्रलय से पहले था, और क्या ऐसा हो सकता है कि मैं, एक सुसंस्कृत मनुष्य जिसका आत्मिक संगठन

बड़ा पेचीदा है, उस गहरे आकर्षण की व्याख्या करूँ जो मैं एक नारी के प्रति अनुभव करता हूँ, सिर्फ इस कारण कि उसकी शारीरिक बनावट मुझसे भिन्न है ? ओह, यह कितना भयानक होगा ! मैं विश्वास करना चाहता हूँ कि प्रकृति से संघर्ष करने में मनुष्य की बुद्धि शारीरिक प्रेम के प्रति भी संघर्षशील रही है। इस तरह मानो शत्रु के साथ संघर्ष कर रही हो और अगर उसने इस पर विजय नहीं प्राप्त की है तो भी कम-से-कम वह इसे भाईचारे और प्रेम के स्वप्नजाल में आबद्ध करने में तो सफल हो ही गया है, और यह मेरे लिये अब किसी-न-किसी तरह, मेरी पाशविक प्रकृति की साधारण प्रवृत्ति न रहकर, जैसी कि कुत्ते और मेंढ़कों में होती है, सच्चा प्रेम बन गई है और प्रत्येक आलिंगन हृदय की पवित्र भावना और नारी के प्रति सम्मान की भावना के कारण आध्यात्मिक बन गया है।

वास्तविकता यह है कि मानव-सन्तति को पशु-प्रवृत्ति के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न करने की शिक्षा युगों से दी जाती रही है। मुझे भी यह रक्त-परम्परा से प्राप्त हुई है और मेरे स्वभाव का अंग बन गई है और यदि मैं प्रेम को भावुकता की दृष्टि से देखता हूँ तो क्या यह उतना ही स्वाभाविक और अवश्यम्भावी नहीं है जितना कि कानों की हिलाने की शक्ति का हम में अभाव होना और हमारे शरीर पर घने बालों का न उगना है ? मैं सोचता हूँ कि सभ्य मनुष्यों का एक बहुत बड़ा भाग इसको इसी दृष्टि से देखता है जिससे कि आज के युग में, प्रेम में चारित्रिकता और भावुकता के अंश का अभाव एक अद्भुत वस्तु के रूप में और पूर्वजों की प्रकृति की समानता के आधार पर देखा जाता है। उनका कहना है कि पागलपन के अनेक लक्षणों में से यह भी पतन का एक लक्षण है। यह सत्य है कि प्रेम को भावुकतापूर्ण बनाने में, हम प्रेमास्पदों में उन गुणों की कल्पना कर लेते हैं जिनका उनमें अभाव होता है और इसी से हमारे जीवन में निरन्तर त्रुटियाँ होती रहती हैं और हमें बराबर दुख का सामना करना पड़ता है। परन्तु मेरे विचार से ऐसा होते हुए भी यह अच्छा है, मतलब यह कि यह अधिक अच्छा है, कि नारी को एक नारी और पुरुष को एक पुरुष ही मानकर इसके आधार पर सन्तोष प्राप्त करने की अपेक्षा हम दुख उठाते रहें।

टिफलिस में मुझे पिता का एक पत्र मिला। उन्होंने लिखा था कि अमुक तिथि को एरियाद्ने ग्रिगोरिएव्ना, पूरे जाड़े बिताने के विचार से विदेश चली गई है। एक महीने बाद मैं घर लौट आया। इस समय तक शरद ऋतु आ चुकी थी। प्रति सप्ताह एरियाद्ने मेरे पिता को सुगन्धित कागज पर सुन्दर साहित्यिक शैली में अत्यन्त रोचक पत्र लिखकर भेजा करती थी। यह मेरा मत है कि प्रत्येक नारी लेखिका हो सकती है। एरियाद्ने ने विस्तार के साथ वर्णन करते हुए लिखा कि उसे अपनी बुआ को मनाने और यात्रा के लिए उससे एक हजार रूबल लेने में बड़ी कठिनाई हुई थी और उसे मास्को में अपने साथ चलने के लिये एक दूर की रिश्तेदार स्त्री को अभिवाविका के रूप में तैयार करने के लिये बहुत समय तक ठहरना पड़ा था। इतने विस्तृत वर्णन में किसी उपन्यास की सी झलक मारती थी और मैंने अनुभव किया कि उसके साथ कोई भी अभिभाविका नहीं है।

कुछ ही दिनों बाद मुझे भी उसका एक पत्र मिला—वैसा ही सुगन्धित और साहित्यिक। उसने लिखा कि उसे मेरी बड़ी याद आती है, मेरे सुन्दर, बुद्धिमत्तापूर्ण नेत्रों की याद आती है। उसने स्नेहपूर्वक मेरी भर्त्सना की कि मैं अपने यौवन को बर्बाद कर रहा हूं, देहात में पड़ा हुआ हूँ जब कि उसकी तरह मैं भी नारियल के वृक्षों की छाया में, नारङ्गी के वृक्षों की सुगन्धित वायु का उपभोग करता हुआ स्वर्ग में रह सकता था। और उसने नीचे अपने हस्ताक्षर किये थे, "तुम्हारी परित्यक्ता एरियाद्ने"। दो दिन बाद उसी शैली में लिखा हुआ दूसरा पत्र आया जिसके नीचे लिखा था, "तुम्हारी विस्मृता एरियाद्ने।" मैं परेशान हो उठा। मैं उससे गहरा प्रेम करता था, हर रात उसका स्वप्न देखता था और फिर यह "तुम्हारी परित्यक्ता", "तुम्हारी विस्मृता'—इसका क्या अभिप्राय था ? यह किसलिये था ? और फिर ग्रामीण जीवन की वह नीरसता, लम्बी संध्यायें, लुबकोव से सम्बन्धित व्यग्र विचार...इस संशय ने मुझे उद्विग्न कर दिया और मेरे जीवन में विष घोल दिया। यह असहनीय हो उठा। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका और विदेश के लिए रवाना हो गया।

एरियादने ने मुझे अब्बाजिया बुलाया। मैं वहाँ वर्षा के बाद उस समय पहुँचा जब धूप खिल रही थी। वर्षा की बूँदें पेड़ों पर अब भी लटक रही थीं और उस विशाल बैरकों की तरह बने हुए होटल पर जहाँ एरियाद्ने और लुत्रकोव ठहरे हुए थे, चमक रही थीं।

वे लोग घर पर नहीं थे। मैं पार्क में गया, सड़कों पर घूमा और फिर बैठ गया। आस्ट्रिया का एक जनरल, हाथ पीछे किये, हमारे जनरलों की तरह पतलून पर लाल पट्टियाँ लगाए, मेरे सामने से गुजरा। बच्चा-गाड़ी में बैठा हुआ एक बच्चा गुजरा। उसकी गाड़ी के पहिये बालू पर चरमरा रहे थे। पीलिया का रोगी एक अपाहिज बुड्ढा निकला, फिर अंग्रेज औरतों का एक झुण्ड, एक कैथोलिक पादरी और फिर वही आस्ट्रियन जनरल सामने से गुजरा। एक फौजी बैन्ड' जो अभी फ्यूम से आया था, अपने चमकते हुये बाजों को लिये घूमता हुआ बैन्ड-स्टेन्ड की तरफ गया और फिर धुनें बजाने लगा।

आप कभी अब्बाजिया गए हैं? यह एक छोटा-सा गन्दा स्लाव कस्बा है जिसमें सिर्फ एक ही सड़क है। उसमें से बदबू आती रहती है और पानी पड़ने के बाद उस पर बिना बरसाती जूते पहने चलना असम्भव है। मैंने इस धरती के स्वर्ग के विषय में इतना अधिक और सदैव इतनी गहरी तन्नयता के साथ पढ़ा था कि जब बाद में, पतलून ऊपर उठाए मैंने सावधानी से उस संकरी सड़क को पार किया और ऊब कर एक ग्रामीण बुढ़िया से थोड़ी-सी सख्त नाशपातियाँ खरीदीं, जिसने यह पहचान कर कि मैं रूसी हूँ 'चेतिरी' (चार) की जगह 'चीतरी' और 'द्वादत्सात' (बीस) की जगह 'दाव्रादत्सात' का उच्चारण किया, और जब मैं परेशान होकर सोचने लगा कि कहाँ जाऊँ और क्या करूँ और जब मेरी मुलाकात अनिवार्यत: मेरी ही तरह निराश अन्य रूसियों से हुई तो मैं परेशान और लज्जित हो उठा। वह समुद्र की एक शान्त खाड़ी है जिसमें स्टीमर और रङ्गीन पाल वाली नावें भरी रहती हैं। वहाँ से फ्यूम और दूर धुँधली नीलिमा में ढके हुए टापू दखाई पड़ रहे थे। यह अत्यन्त सुन्दर दृश्य होता, अगर खाड़ी के किनारे

बने हुए होटलों और उनके नौकरों के लिए बने हुए क्वार्टरों की भद्दी, सस्ते ढंग की बनी हुई इमारतें वहाँ न होतीं। जिनके साथ-साथ हरियाली से ढका हुआ वह सारा तट पैसे के भूखे व्यक्तियों से भर गया था, इनके कारण इस छोटे-से स्वर्ग के अधिकांश भाग में आपको खिड़कियों, बरामदों, मेजों और काले कोट वाले वेटरों वाले चौकोर कमरों के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई पड़ सकता था। वहाँ एक पार्क है, वैसा ही जैसे कि आजकल विदेश में प्रत्येक जल प्राप्त करने वाले स्थानों में पाए जाते हैं। ताड़-वृक्षों की निस्तब्ध शान्त गहरी हरियाली, पगडंडियों पर बिछी हुई पीली बालू, चमकदार हरे बैठने के स्थान, और गधे की तरह रेंकती हुई फौजी तुरही— इन सबने मुझे दस मिनट में ही डुबा दिया। फिर भी किसी को किसी कारणवश दस दिन या दस हफ्ते वहाँ रहना ही है!

अनिच्छापूर्वक इन जल प्राप्त करने के स्थानों में इधर-उधर खिचड़ते हुये मुझे इस बात का अधिकाधिक अनुभव होता गया कि वहाँ के धनी और सम्पन्न व्यक्तियों का जीवन कितना असुविधापूर्ण और बहशी है, उनकी कल्पना कितनी नीरस और तुच्छ है, उनकी रुचि और अभिलाषाएँ कितनी दयनीय हैं। और वे यात्री, बुड्ढे और जवान कितने अधिक सुखी हैं जिनके पास होटलों में ठहरने के लिए पैसे नहीं हैं। उन्हें जहाँ जगह मिल जाती है, वहीं ठहर जाते हैं और पहाड़ों की चोटियों पर से, हरी घास पर लेटे हुए समुद्र के दृश्य का आनन्द लेते हैं, घोड़ों पर सवार होने के स्थान पर पैदल घूमते हैं, जंगलों और गाँवों को नजदीक से देखते हैं, देहाती रीति-रिवाजों का निरीक्षण करते हैं, उनके गीत सुनते हैं, वहाँ की औरतों से प्रेम करते हैं—

जब मैं पार्क में बैठा हुआ था तो अंधेरा होने लगा और सन्ध्या की धुंधली रोशनी में मेरी एरियाद्ने आई—मोहक और राजकुमारियों की सी पोशाक पहने। उसके पीछे-पीछे लुबकोव चला आ रहा था, एक नया ढीला ढाला सूट पहने जो सम्भवतः वियेना में खरीदा गया था।

"तुम मुझसे नाराज़ क्यों हो?" वह कह रहा था, "मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?"

मुझे देख कर वह प्रसन्नता से चीख उठी और शायद, अगर हम लोग पार्क में न होते तो मेरी गर्दन से लिपट जाती। उसने आत्मीयतापूर्वक मेरे हाथ दबाए और हँसी, मैं भी हंसी और भावना से उद्वेलित होकर लगभग चीख-सा पड़ा। इसके बाद प्रश्न पूछे गए—गाँव के विषय में, मेरे पिता के विषय में, मैंने उसके भाई को देखा या नहीं, आदि। उसने आग्रह किया कि मैं सीधा उसके चेहरे की तरफ देखता रहूँ और पूछा कि मुझे मछली पकड़ने की, हमारी छोटी-छोटी लड़ाइयों की, पिकनिकों आदि की बातें याद हैं।

"सचमुच वह सब कितना अच्छा था?" उसने गहरी साँस ली। "परन्तु यहाँ भी हमारा जीवन कोई बुरा नहीं कट रहा है। यहाँ हमारे बहुत से परिचित हैं, मेरे प्यारे, मेरे सबसे अच्छे मित्र! कल मैं यहाँ एक रूसी परिवार से तुम्हारा परिचय कराऊँगी परन्तु मेहरबानी कर अपने लिए दूसरा टोप खरीद लेना।" उसने मुझे गौर से भौंहों में बल डाले अच्छी तरह से देखा। "अब्बाजिया गाँव नहीं है," वह बोली, "यहाँ हरेक को ठीक तरह से रहना चाहिये।"

फिर हम लोग रेस्त्रां में गये। एरियाद्ने पूरे समय तक हँसती और ऊधम मचाती रही। मुझे 'प्रिय', 'अच्छा', 'चतुर' कहती रही और ऐसी लग रही थी कि जैसे उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही न हो रहा हो कि मैं उसके पास था। हम ग्यारह बजे तक बैठे रहे और भोजन और एक-दूसरे से पूरी तरह सन्तुष्ट होकर विदा हुए।

दूसरे दिन एरियाद्ने ने यह कह कर उस रूसी परिवार से मेरा परिचय कराया, "एक प्रसिद्ध प्रोफेसर के सुपुत्र जिनकी जमींदारी हमारे पड़ोस में है।"

वह इस परिवार से केवल जमींदारियों और फसलों की ही बातें करती रही और बराबर मुझे आकर्षित करती रही। वह अपने को एक बहुत अमीर जमींदारिन के रूप में प्रकट करना चाह रही थी और सचमुच इसमें उसे सफलता मिली। उसका व्यवहार अत्यन्त भव्य था, एक सच्चे सामन्त के समान जो कि वह जन्म से वास्तव में थी भी।

"लेकिन मेरी बुआ भी कैसी अजीब है !" उसने अचानक मुस्करा कर देखते हुए कहा।

"हम लोगों में जरा-सा झगड़ा हुआ और वह रूठ कर मेरान चली गई। आपका इस विषय में क्या ख्याल है ?"

बाद में जब हम लोग पार्क में घूम रहे थे तो मैंने उससे पूछा।

"अभी तुम किस बुआ के बारे में बातें कर रही थीं ? वह कौन सी बुआ है ?"

"वह तो मैं अपने बचाव के लिए झूठ बोली थी," एरियादने हँसी, "उन्हें यह नहीं मालूम पड़ना चाहिए कि मैं बिना किसी अभिभाविका के ही यहाँ रह रही हूँ।"

क्षणभर की चुप्पी के बाद वह मेरे और नजदीक खिसक आई और बोली।

मेरे प्यारे, मेरे प्यारे तुम लुबकोव से दोस्ती करलो। वह बड़ा दुखी है। उसकी बीवी और माँ बड़ी खराब हैं।"

उसने लुबकोव से बातें करने में सादे शिष्टाचार का प्रयोग किया और जब वह ऊपर सोने जा रही थी तब उसने उससे बिल्कुल उसी तरह नमस्कार की थी जिस तरह कि मुझ से। उन दोनों के कमरे अलग-अलग मंजिल पर थे। इन सब बातों से मुझे यह आशा हुई कि वे सब वाहियात बातें थीं, और उनमें प्रेम-संबंध जैसी कोई चीज नहीं थी। और जब मैं उससे मिला तो मुझे तसल्ली हुई। एक दिन जब उसने मुझसे तीन सौ रूबल कर्ज माँगे तो मैंने बड़ी खुशी से दे दिए।

हमारा प्रत्येक दिन आनन्द मनाने—में केवल आनन्द मनाने में ही व्यतीत होने लगा। हम लोक पार्क में घूमते, खाते और शराब पीते। हर रोज उस रूसी परिवार से हमारी बातें होतीं। धीरे-धीरे मैं इस बात का अभ्यासी हो गया कि अगर मैं पार्क मैं जाता तो यकीनन उस पीलिया के बुड्ढे रोगी से, उस कैथोलिक पादरी से, और उस आस्ट्रियन जनरल से, जो हमेशा ताशों की एक गड्डी पास रखता और जहाँ सम्भव होता वहीं बैठ

जाता और उत्तेजित होकर अपने कन्धे उचकाते हुए 'पेशेन्स' खेलने लगता मुकाकात होती। और वह बैंड बार-बार एक ही गीत बजाता रहता।

घर पर, काम करने वाले दिन, मैं उस समय किसानों से मिलने में बड़ा झेंपता, जब मछली पकड़ रहा होता या पिकनिक हो रही होती। यहाँ भी मैं उन नोकरों, कोचवानों और मजदूरों को देख कर, जो मुझसे मिलते, लज्जित हो उठता था। मुझे हमेशा ऐसा लगता कि वे मेरी तरफ देख रहे हैं और सोच रहे हैं "तुम कोई काम क्यों नहीं करते ?" और मैं प्रतिदिन लज्जा की इस भावना से सुबह से लेकर शाम तक परेशान बना रहता। यह बड़ा अजीब, उदास और उबा देने वाला समय होता। इसमें केवल उसी समय अन्तर पड़ता जब लुबकोव मुझसे कभी सौ और कभी पचास रूबल उधार माँगता और उस धन से एकाएक इस तरह प्रसन्न होकर जैसे, अफीमची अफीम को पाकर होता है, अपनी बीवी पर, खुद पर और अपने कर्जदारों पर हँसना प्रारम्भ कर देता।

अन्त में वर्षा होने लगी और ठण्ड बढ़ गई। हम लोग इटली चले गये और मैंने पिता को रोम के पते पर आठ सौ रूबल भेज देने की प्रार्थना करते हुये एक तार भेजा। हम लोग वेनिस में, बोलोन्गा में, फ्लोरेन्स में ठहरे और हर शहर में बराबर कीमती होटलों में रुके जहाँ हम लोगों से बिजली के, नोंकरों के, कमरा गर्म करने के, भोजन के साथ रोटी के, और कमरे में मँगाकर खाना खाने के विशेषाधिकार के अलग-अलग पैसे वसूल किए जाते रहे। हम लोगों ने खूब खाया। होटल वाले सुबह नाश्ते के साथ चाय, दोपहर को भोजन जिसमें गोश्त, मछली, एक तरह का आमलेट, पनीर फल और शराब होती, देते। छः बजे आठ 'कोर्सों' वाला डिनर मिलता। दो कोर्सों के बीच काफी समय रहता जिसमें हम बीयर और शराब पीते रहते। नौ बजे चाय मिलती। आधी रात को एरियाद्ने घोषणा करती कि वह भूखी है और गोश्त और उबले हुए अन्डे माँगती। उसका साथ देने के लिए हम लोग भी खाते।

विभिन्न भोजनों के बीच के समय में हम लोग अजायबघरों और

नुमायशों को देखने को भागे जाते। हमें बराबर भय सताता रहता कि डिनर या लंच के लिए देर न हो जाय। मैं चित्रों को देखते-देखते ऊब उठा था। मैं आराम से घर पर रहने के लिये व्याकुल हो उठा। मैं पूरी तरह थक गया था, इसलिये मैंने ढूँढ़ कर एक कुर्सी पकड़ी और अन्य लोगों के साथ झूठमूठ ही कहने लगा, "कितना सुन्दर है, कैसा सुन्दर वातावरण है!" अघाए हुए अजगर की पेशियों की तरह हम लोग केवल बहुत तड़क-भड़क वाली चीजों की तरफ ही ध्यान देते थे। दूकानों की सजी-सजाई खिड़कियाँ हमें मन्त्रमुग्ध कर देती थीं, हम लोग बालों में लगाने वाली नकली रत्न जटित पिनों को देख कर पागल हो उठते और हम लोगों ने ढेर-की-ढेर बेकार चीजें खरीद डालीं।

यही रोम में हुआ जहाँ पानी पड़ रहा था और हवा चल रही थी। खूब खाकर हम लोग संत पीटर का स्थान देखने गए और हमारी सम्पन्न स्थिति या शायद खराब मौसम को धन्यवाद है कि इसका हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और एक-दूसरे में कला के प्रति उपेक्षा का भाव देख कर हम आपस में लगभग लड़ ही पड़े।

मेरे पिता के पास से पैसा आ गया। मुझे याद है कि मैं उस पैसे को लेने सुबह गया था। लुब्रकोव मेरे साथ था।

"वर्तमान पूर्ण और सुखद नहीं हो सकता जब किसी के पीछे एक इतिहास हो," उसने कहा।

"गुजरे हुए जमाने ने मुझ पर बहुत बोझ डाल रखा है। ऐसी स्थिति में अगर मुझे पैसा मिल जाय तो इसकी कोई चिन्ता नहीं परन्तु अगर न मिले तो मैं परेशान हो उठता हूँ। आप विश्वास करेंगे कि मेरे पास सिर्फ आठ अङ्क बाकी बचे हैं फिर भी मुझे अपनी बीबी को सौ और माँ को सौ और भेजने हैं। और हम लोगों को यहाँ भी रहना है। एरियाद्ने बच्चे की तरह है, वह परिस्थिति को महसूस नहीं करती और एक रानी की तरह पैसा फेंकती रहती है। कल उसने घड़ी क्यों खरीदी थी? और इसका क्या मतलब है कि हम बड़े आदमियों का सा दिखावा करते रहें? क्योंकि हमारे आपस के

सम्बन्धों को नौकरों और दोस्तों से छिपाने के लिए हमें दस से लेकर पन्द्रह फ्रांक प्रतिदिन के हिसाब से बेकार का खर्चा करना पड़ता है क्योंकि मुझे एक अलग कमरा रखना पड़ता है। इसका मतलब क्या है?"

मैंने अनुभव किया मानो एक नोंकीला पत्थर मेरे सीने में घुसेड़ दिया गया हो। अब कोई संशय नहीं रहा था, सब स्पष्ट था। मेरे सारे शरीर में सनसनी दौड़ गई और तुरन्त ही मैंने दृढ़ निश्चय किया कि इन लोगों की शकल भी नहीं देखूँगा, इनसे दूर भाग जाऊँगा, फौरन घर चल दूँगा.........।"

"औरत को काबू में करना बड़ा आसान है," लुबकोव कहता गया। "तुम्हें सिर्फ उसे नङ्गा कर देना है परन्तु बाद में बड़ी विरक्ति होती है, कैसी मूर्खता का काम है!"

जब मैंने वह पैसा गिन लिया, जो मुझे मिला था, तो वह बोला:

"अगर आप मुझे एक हजार फ्रांक उधार नहीं देंगे तो समझ लीजिए कि मैं पूरी तरह बर्बाद हो चुका। आपका पैसा ही अब मेरे लिए एकमात्र साधन रह गया है।"

मैंने उसे रुपया दे दिया। वह फौरन ही चहकने लगा और अपने चाचा की जो एक चालाक आदमी था, हँसी उड़ाने लगा कि वह अपनी बीवी से अपने पते का रहस्य कभी नहीं छिपा पाता था। जब मैं होटल पहुँचा तो मैंने अपना सामान बांधा और बिल चुकाया। मुझे अभी एरियाद्ने से विदा लेनी थी।

मैंने उसके दरवाजे को खटखटाया।

"अन्दर आओ!"

उसके कमरे में बड़ी ही अव्यवस्था थी, मेज पर चाय की चीजें, आधी खायी हुई मिठाई, अण्डे के छिलके, पड़े थे और इत्र की तेज गन्ध आ रही थी। बिस्तर अभी ठीक नहीं किया गया था और यह स्पष्ट था कि उस पर दो व्यक्ति सोए थे।

एरियाद्ने खुद अभी बिस्तर से उठी थी, और बाल बिखेरे फलालैन की एक ड्रैसिंग जाकेट पहने खड़ी थी।

मैंने उसे नमस्कार किया और फिर एक मिनट तक खामोश बैठा रहा। इस बीच उसने बाल ठीक करने की कोशिश की और तब मैंने पूरी तरह कांपते हुए उससे पूछा।

"क्यों.........क्यों.........तुमने मुझे यहाँ क्यों बुलाया था?"

यह स्पष्ट था कि उसने मेरे विचारों को भाँप लिया था। उसने मेरा हाथ पकड़ा और कहने लगी :

"मैं चाहती हूँ कि तुम यहीं रहो, तुम इतने पवित्र हो!"

मैं अपने विचारों पर, अपने काँपने पर लज्जित हो उठा। मुझे भय था कि कहीं मैं सिसकने भी न लगूँ। मैं एक भी शब्द बिना कहे बाहर निकल आया, और घन्टे भर में ही मैं रेल में बैठा हुआ था। यात्रा भर, मैं किसी कारणवश कल्पना करता रहा कि एरियाद्ने गर्भवती है। वह मुझे बड़ी घृणित लगी और वे सारी औरतें जिन्हें मैंने रेल में और स्टेशनों पर देखा, ऐसा लगा कि वे भी गर्भवती थीं और उनकी दशा मुझे बड़ी दयनीय प्रतीत हुई। मेरी दशा उस लालची, धन के उत्कट लोभी कन्जूस की सी थी जिसे एकाएक यह पता चला हो कि उसके सारे सुनहरी सिक्के नकली हैं। वे पवित्र भव्य मूर्तियाँ, जिनकी प्रेम से उत्साहित होकर मेरी कल्पना ने इतने दिनों से पूजा की थी, मेरी कल्पनाएँ, मेरी आशाएँ, मेरी स्मृतियाँ, मेरे प्रेम और नारी-विषयक विचार—सब मेरा मजाक उड़ा रहे थे और मुझे जीभ दिखा-दिखा कर चिढ़ा रहे थे। "एरियाद्ने" मैं भयभीत और त्रस्त होकर बराबर पूछता रहा, "वह यौवन से छलकती हुई, चतुर अनिन्द्य सुन्दरी युवती, एक सीनेटर की बेटी, एक ऐसे साधारण रूखे स्वभाव वाले गुन्डे के साथ मिलकर षडयन्त्र रच रही थी? परन्तु वह लुबकोव से प्रेम क्यों न करे?" मैंने अपने आप उत्तर दिया। "वह किस बात में मुझसे नीचा है? ओह, वह जिसे चाहे उससे, प्रेम करे परन्तु मुझसे झूँठ क्यों बोलती है? परन्तु वह मुझसे खुलने के लिए भी क्यों बाध्य हो?" और इस तरह मैं तब तक बराबर सोचता रहा जब तक कि मेरा सिर भन्नाने न लगा।

रेल में ठण्ड थी। मैं प्रथम श्रेणी में यात्रा कर रहा था परन्तु फिर

भी उसमें तीन यात्री और थे। उसमें दुहरी खिड़कियाँ नहीं थीं। बाहरी दरवाजा सीधा डिब्बे के भीतर खुलता था। मैंने अनुभव किया मानो मैं इस भीड़ में एक टूटा हुआ उजड़ा आदमी हूँ और मेरी टाँगें बुरी तरह सुन्न हो उठी हैं। साथ ही मैं बराबर यह याद करता रहा कि उस सुबह बाल नीचे लटकाए और ड्रेसिंग जाकेट पहने हुए वह कितनी आकर्षक लग रही थी। अचानक मैं तीव्र द्वेष की भावना से इस तरह उद्वेलित हो उठा कि वेदना से उछल पड़ा। मेरी यह हरकत देखकर मेरे पड़ोसी आश्चर्य और भय से मेरी तरफ घूरने लगे।

घर पर मैंने गहरी बरफ और बीस डिग्री की सरदी पायी। मुझे जाड़े अच्छे लगते हैं। मुझे ये इसलिए अच्छे लगते हैं क्योंकि उन दिनों, गहरे पाले के समय भी घर विशेष रूप से आरामदेह लगता है। पाले पड़े हुए धूप से चमकते दिनों में अपनी रूंएदार जाकेट और चमड़े के बड़े बूट पहनना, बाग में या अहाते में कोई काम करना, या खूब गर्म कमरे में बैठ कर पढ़ना, खुली हुई आग के सामने अपने पिता के अध्ययन-कक्ष में बैठना, अपने देहाती स्नान-गृह में नहाना बड़ा अच्छा लगता है। शरद ऋतु की संध्यायें बड़ी उदास लगती हैं, अगर घर में माँ, बहिन और बच्चे न हों तो वे संध्यायें अद्भुत रूप से लम्बी और शान्त प्रतीत होती हैं। और घर जितना ही अधिक गर्म और आरामदेह होता है, यह अभाव उतना ही अधिक खटकता है। जाड़ों में, जब मैं विदेश से वापस लौटा तो संध्यायें अनिश्चित रूप से लम्बी लगती थीं। मैं बुरी तरह मायूस था, इतना मायूस कि पढ़ भी नहीं सकता था। दिन में मैं भीतर-बाहर आता-जाता रहता, बाग में बरफ साफ करता रहता या मुर्गी के बच्चों और बछड़ों को खाना खिलाता रहता परन्तु शाम होने पर मेरे सारे कार्य समाप्त हो जाते।

पहले मैंने मेहमानों की कभी चिन्ता नहीं की थी परन्तु अब उन्हें देखकर मुझे खुशी होने लगी थी क्योंकि मैं जानता था, यहाँ एरियादूने के बारे में बातें जरूर होंगी। वह आध्यात्मवादी कोत्लोविच अक्सर अपनी बहिन के बारे में बातें करने आता और कभी-कभी अपने साथ अपने मित्र प्रिंस

मकतुएव को ले आता था। वह एरियादने से उतना ही प्रेम करता था जितना कि मैं। एरियादने के कमरे में बैठना, उसके पियानो पर उङ्गलियाँ चलाना तथा उसके संगीत की तरफ देखना प्रिंस के लिए एक आवश्यक कार्य बन गया था। वह उसके बिना रह नहीं सकता था। उसके बाबा इलारियोन की आत्मा अब भी यही भविष्यवाणी कर रही थी कि देर या अवेर से एरियादने उसकी पत्नी बनेगी। प्रिंस आमतौर से हम लोगों के साथ काफी देर तक ठहरता था—दोपहर के खाने से लेकर आधी रात तक। पूरे समय तक वह बिलकुल खामोश बैठा रहता था। चुपचाप बीयर की दो या तीन बोतलें पीता और रह-रहकर यह दिखाने के लिए कि वह भी बातचीत में भाग ले रहा है, अचानक, विषादमय मूर्खतापूर्ण हँसी के साथ हँस उठता। घर जाने से पहले वह हमेशा मुझे एक तरफ ले जाता और धीमी आवाज में पूछता, "आपने एरियादने ग्रिगोरियेव्ना को आखिरी बार कब देखा था? क्या वह अच्छी तरह से थी? मेरा ख्याल है कि वह विदेश में रहने से ऊबी नहीं है?"

बसन्त ऋतु आ गई। खेत जोते गए और फिर बसन्त ऋतु के अनाज और तिनपतिया घास की बुवाई हुई। मैं दुखी था परन्तु बसन्त की मस्ती भर रही थी इसलिए प्रत्येक अवश्यम्भावी को स्वीकार करने के लिए व्याकुल हो उठा। खेतों में काम करते और पक्षियों की बोलियाँ सुनते हुए मैंने अपने आप से पूछा, "क्या मैं अपनी इस व्यक्तिगत प्रसन्नता के प्रश्न को अन्तिम बार और सदैव के लिए हल नहीं कर सकता था? क्या मैं अपनी इस कल्पना को एक तरफ हटाकर किसी सीधी-साधी किसान-कन्या से विवाह नहीं कर सकता था?"

जब हम बुरी तरह से व्यस्त थे तो मुझे अचानक इटली की मोहर लगा हुआ एक खत मिला और मेरे सामने से वह घास, वे शहद की मक्खियाँ, वे बछड़े और वह किसान-कन्या सब धुँए की तरह गायब हो गए। एरियादने ने लिखा कि वह अत्यधिक दुखी थी। उसने, उसकी सहायता न करने के लिए, उसे अपने गुणों की श्रेष्ठता के कारण नीचा समझने के लिए और संकट के समय उसका साथ छोड़ देने के लिए, मेरी भर्त्सना की थी। यह

सब बातें गन्दी, धब्बेदार और निराशापूर्ण बड़ी-बड़ी लिखावट में लिखी गई थीं और यह स्पष्ट था कि उसने जल्दी में और दुखी होकर यह पत्र लिखा था। अन्त में उसने मुझसे आने और उसकी रक्षा करने की प्रार्थना की थी। एक बार फिर मेरा लंगर उठा और मैं चल पड़ा। एरियादने रोम में थी। मैं शाम को देर से पहुँचा और जब उसने मुझे देखा तो सिसकने लगी और मेरी गर्दन से लिपट गई। वह उन जाड़ों में बिलकुल नहीं बदली थी और अब भी उतनी ही जवान और आकर्षण थी। हमने साथ-साथ खाना खाया और फिर अँधेरा होने तक रोम में इधर उधर घूमते रहे और पूरे समय वह अपनी बातें बताती रही। मैंने पूछा कि लुबकोव कहाँ है ?"

"मुझे उस जानवर की याद मत दिलाओ !" वह चीखी, "वह मेरे लिए घृणित और नीच है !"

"परन्तु मैंने सोचा था कि तुम उससे प्रेम करती थीं," मैंने कहा।

"कभी नहीं," वह बोली, "शुरू-शुरू में वह मुझे नया लगा और उसने मेरी करुणा को जाग्रत कर दिया, बस, इतना ही वह ढीटहै और औरत पर तूफान की तरह हावी हो जाता है, और यही आकर्षण होता है। मगर हम उसके बारे में बातें नहीं करेंगे। यह मेरे जीवन का एक दुखद पृष्ठ है। वह पैसे लेने रूस चला गया है। उसके लिए यही ठीक था ! मैंने उससे कह दिया कि वह वापस आनेका साहस न करे।"

वह उस समय एक होटल में न रहकर एक दो कमरे वाले घर में रह रही थी जिसे उसने अपनी रुचि के अनुसार साधारण परन्तु भव्य रूप से सजा रक्खा था। लुबकोव के चले जाने के बाद उसने अपने परिचितों से लगभग पाँच हजार फ्राँक उधार ले लिए थे और मेरा आगमन निश्चित रूप से उसके उद्धार का प्रतीक था। मैंने सोचा था कि मैं उसे वापस घर ले चलूँगा परन्तु उसमें मुझे सफलता नहीं मिली। वह अपने घर लौटने के लिए लालायित थी। परन्तु जब उसे उस गरीबी की, जिसमें वह रह चुकी थी, संकुचित जीवन की, अपने भाई के घर जङ्ग लगी हुई छत की याद आई तो वह घृणा से काँप उठी और जब मैंने उसे घर चलने की सलाह दी तो उसने काँपते हुए मेरा हाथ दबाया और कहने लगी—

"नहीं, नहीं, मैं वहाँ घुटकर मर जाऊँगी !"

तब मेरा प्रेम अपनी अन्तिम सीमा पर पहुँच गया।

"तुम वैसे ही प्यारे बन जाओ जैसे कि थे, मुझे थोड़ा-सा प्यार करो," एरियाद्ने ने मुझ पर झुकते हुए कहा, "तुम मन में नाराज हो और सोचते रहते हो; तुम मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति के सम्मुख झुकने से भय खाते हो और सदैव परिणामों के विषय में चिन्तित रहते हो इसलिए यह सब बड़ा नीरस प्रतीत होता है। इसे छोड़ दो, मैं तुमसे भीख माँगती हूँ, मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ, मेरे साथ अच्छा व्यवहार करो !......मेरे निर्मल, मेरे पूज्य, मेरे प्रिय, मैं तुम्हें इतना प्यार करती हूँ।"

मैं उसका प्रेमी बन गया। महीने भर तक मैं पागल-सा बना रहा। मुझे आनन्द के अतिरिक्त और किसी का भी अनुभव नहीं होता था। अपनी बाँहों में एक जवान और सुन्दर शरीर को भर लेना, सौभाग्य से हर समय सोने से जागने पर उसकी गर्माहट का अनुभव करना और यह याद करते रहना कि वह यहाँ है—वह, मेरी एरियाद्ने यहाँ है !—ओह, इसका अभ्यस्त होना इतना सरल नहीं था। परन्तु फिर भी मैं इसका अभ्यस्त हो गया था और धीरे-धीरे अपनी नई स्थिति पर विचार करने योग्य बन गया था। सबसे पहले, पहले ही की तरह मैंने महसूस किया कि एरियाद्ने मुझे प्रेम नहीं करती थी। परन्तु वह सचमुच प्रेम करना चाहती थी, वह एकान्त से भयभीत थी और सबसे बड़ी बात यह थी कि मैं स्वस्थ, युवक और शक्तिशाली था। वह जैसा कि प्रकृति का नियम है, सभी उदास प्रकृति के प्राणियों के समान, कामुक थी और हम दोनों ने यह दिखाया कि हम एक तीव्र और पारस्परिक प्रेम द्वारा एक-दूसरे से बँधे हुए हैं। बाद में, मैंने कुछ और भी अनुभव किया।

हम रोम में, नेपल्स में, फ्लोरेन्स में ठहरे, पेरिस गए परन्तु वहाँ हमने सोचा कि ठण्ड है इसलिए इटली वापस लौट आए। हर जगह हमने अपना परिचय पति-पत्नी के रूप में दिया—एक धनवान जमींदार दम्पति के रूप में। लोग प्रसन्नता से हमारे परिचित बन जाते इसलिए एरियाद्ने को

सामाजिक क्षेत्र में सर्वत्र बड़ी सफलता प्राप्त हुई। जब उसने चित्रकारी सीखनी प्रारम्भ की तो वह चित्रकार कहलाने लगी, और तनिक कल्पना कीजिए कि, वह नाम उस पर फब जाता था यद्यपि उसमें योग्यता का नामो-निशान तक नहीं था।

वह रोज दो या तीन बजे तक सोती रहती, काफी और दोपहर का खाना बिस्तर में ही खाती। शाम को वह शोरवा, केंकड़ा, मछली, गोश्त, शिकार खाती और जब सोने चली जाती तो मैं उसके लिए कुछ लाया करता जैसे कि उबला हुआ गाय का गोश्त और वह उसे उदास और थकी हुई मुद्रा से खाती और अगर रात को उसकी नींद खुल जाती तो सेब और सन्तरे खाती।

नारी की सबसे प्रमुख, या कहना चाहिए कि सारभूत विशेषता उसका आश्चर्यजनक रूप से दुहरा पार्ट अदा करना था। वह निरन्तर, प्रत्येक क्षण स्पष्टतः बिना किसी आवश्यकता के धोखा दिया करती थी मानो यह उसकी पशु-प्रवृत्ति हो, वैसी ही प्रवृत्ति जिसके वशीभूत होकर गौरैया चहचहाती है और कनखजूरा अपनी मूँछों को हिलाता है। वह मुझे, नौकर को, कुली को, दूकानों पर बैठे हुए दूकानदारों को, अपने परिचितों को—सभी को धोखा देती थी जिसमें बनावट और आडम्बर का दिखावा न होता। कोई आदमी हमारे कमरे में घुसता कि—वह चाहे कोई क्यों न होता, वेटर या एक बड़ा जमींदार—फौरन उसकी निगाहें, उसका भाव, उसकी आवाज बदल जाती, यहाँ तक कि उसकी सम्पूर्ण रूपरेखा परिवर्तित हो उठती। उस समय उस पर पहली निगाह पड़ते ही आप कह उठते कि सारे इटली में उससे अधिक धनी और फैशनपरस्त और कोई भी नहीं है। किसी भी कलाकार या संगी-तज्ञ से, उसकी विलक्षण प्रतिभा के विषय में तरह-तरह की झूठी बातें कहे बिना कभी भी नहीं मिलती थीं।

"आप कितने प्रभावशाली हैं।" वह मधु-मिश्रित स्वर में कहती "मैं सचमुच आपसे आतंकित हूँ। मैं सोचती हूँ कि आप मनुष्यों की आत्मा की गहराई तक देख लेते हैं।"

और यह सब केवल उन्हें प्रसन्न करने, सफलता प्राप्त करने और आकर्षक बनने के लिए ही किया जाता था। वह हर सुबह सिर्फ एक ही विचार लिए उठती "सन्तुष्ट करना" ! यह उसके जीवन का लक्ष्य बन गया था। अगर मैं उससे कहता कि अमुक घर में, अमुक सड़क पर, एक आदमी रहता है जो उसके प्रति आकर्षक नहीं है तो इससे उसे वास्तविक दुख पहुँचता। वह रोज मनुष्यों को मंत्रमुग्ध करना, उन्हें वश में करना और अपने पीछे पागल बना देना चाहती थी। यह बात, कि मैं उसके प्रभाव में था और उसके आकर्षण के सम्मुख पूर्णतः परास्त हो चुका था, उसे उसी तरह का सन्तोष प्रदान करती थी जैसा कि प्रतियोगिताओं में विछेदाओं को मिलता है। मेरी गुलामी ही काफी नहीं थी। वह रात को एक बाघिन की तरह लम्बी उघड़ा पड़ी हुई...वह सदैव बहुत गर्म रहती थी—लुबकोव के भेजे हुए पत्रों को पढ़ा करती थी। लुबकोव ने उससे इस बात की कसम खाते हुए रूस लौट आने की प्रार्थना की थी, कि अगर वह न लौटी तो वह उसके पास आने के लिए, धन प्राप्त करने के लिए किसी को लूट लेगा या मार डालेगा। एरियाडने उससे नफरत करती थी परन्तु उसके उत्तेजक, गुलामी से भरे हुए पत्र उसे उत्तेजित कर देते थे। अपने आकर्षण के विषय में उसकी राय बड़ी विलक्षण थी। वह कल्पना करती थी कि अगर कहीं किसी बड़े समुदाय में मनुष्य यह देख पाते कि वह कितनी सुन्दर थी और उसकी त्वचा का रङ्ग कैसा था, तो वह सारे संसार को जीत लेती। उसकी रूपरेखा तथा उसकी त्वचा के बारे में उसकी बातों से मैं नाराज हो उठता था और यह देखकर, जब वह नाराज होती तो मुझे परेशान करने के लिए हर तरह की गन्दी बातें करती। एक दिन जब हम लोग अपनी एक परिचित महिला के ग्रीष्म-निवास पर थे और वह नाराज हो उठी थी तो यहाँ तक कह गई "अगर तुम अपने उपदेशों से मुझे परेशान करना बन्द नहीं करोगे तो मैं इसी क्षण कपड़े उतार डालूँगी और यहीं इन फूलों पर नङ्गी लेट जाऊँगी।"

मुझे अक्सर उसे सोते, खाते या चेहरे पर एक विनम्रता का भाव लाने का प्रयत्न करते हुए देखकर आश्चर्य होता कि ईश्वर ने उसे वह

अद्वितीय सौंदर्य, वह भव्यता और वह बुद्धि क्यों प्रदान की। क्या यह सब केवल बिस्तर में लोटने, खाने और लेटने, निरन्तर लेटने रहने के लिए ही था ? क्या उसकी बुद्धिमत्ता वास्तविक थी ? वह एक पंक्ति में रखी तीन मोमबत्तियों और तेरह की संख्या से भयभीत रहती थी और जादू :और बुरे सपनों से आतंकित हो उठती थी। एक हठीली बुढ़िया की तरह स्वतन्त्र प्रेम और सब बातों की स्वतन्त्रता पर बहस करती और घोषणा करती कि बोलेस्लेव मार्केविच तुर्गनेव से अच्छा लेखक था। परन्तु वह शैतान की तरह चालाक और तेज थी और जानती थी कि समाज में उच्च, शिक्षित और प्रगतिशील कैसे बना जाता हैं।

प्रसन्नचित्त रहने के क्षणों में भी वह नौकर का अपमान कर सकती थी। एक कीड़े को बिना कष्ट का अनभव किए जान से मार सकती थी। वह साँड़ों की लड़ाई देखना पसन्द करती थी, खून के किस्से उसे अच्छे लगते थे और उस समय नाराज हो उठती थी, जब कैदियों को छोड़ दिया जाता था।

जिस तरह का जीवन एरियाद्ने और मैं बिता रहे थे, उसके लिए काफी पैसा होना चाहिए था। मेरे पिता ने अपनी पेन्सन तथा अन्य छोटी रकमें, जो उन्हें मिलीं, मुझे भेज दीं, मेरे लिए जहाँ से सम्भव हो सका कर्ज लिया औह जब एक दिन उन्होंने मुझे जवाब दिया कि "अब कुछ भी नहीं बचा," तो मैंने उन्हें एक निराशा ले भरा हुआ तार भेजा जिसमें मैंने उनसे जमींदारी को गिरवी रख देने की प्रार्थना की। कुछ दिनों बाद मैंने उनसे प्रार्थना की कि किसी तरह जमीदारी को दुवारा गिरवी रखकर पैसे भेज दें। उन्होंने यह भी बिना किसी आपत्ति के कर दिया और मुझे सारा पैसा भेज दिया। एरियाद्ने जीवन के व्यावहारिक पक्ष को घृणा की दृष्टि से देखती थी, इस लबसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं था। जब उसकी पागलपन से भरी हुई इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए मैं हजारों फांक फेंकते समय एक पुराने पेड़ की तरह कराह उठता। उस समय वह प्रसन्न मन से कोई गीत गुन-गुना रही होती।

धीरे-धीरे मैं उससे विरक्त होने लगा और अपने इस सम्बन्ध पर मुझे लज्जा आने लगी। मुझे नारी का गर्भवती होना और घर में बन्द रहना अच्छा नहीं लगता, परन्तु अब मैं कभी-कभी एक बच्चे का स्वप्न देखने लगता जो हमारे जीवन का एक बाह्य औचित्य तो सिद्ध कर देता। कहीं मैं अपने से पूरी तरह घृणा न करने लगूँ, इसलिए मैंने पढ़ना और अजायबघरों और चित्र-प्रदर्शनियों में जाना प्रारम्भ कर दिया, शराब पीना छोड़ दिया और बहुत कम भोजन करने लगा। अगर कोई सुबह से लेकर शाम तक स्वयं को व्यस्त रखता है तो उसका हृदय हलका प्रतीत होने लगता है। मैं एरियाद्ने को भी परेशान करने लगा। वे लोग, जिन पर वह विजय प्राप्त करती थी, साधारणतया मध्यम श्रेणी के व्यक्ति होते थे। पहले ही की तरह वहाँ राजदूत नहीं थे, भव्य एवं विशाल भवन नहीं थे, पैसा पूरा नहीं पड़ता था और इससे उसे दुःख होता और वह सिसकने लगती थी, और अन्त में उसने मुझसे कहा कि कदाचित वह रूस लौटने के खिलाफ नहीं है।

और हम वापिसी मार्ग पर हैं। पिछले कुछ महीनों से वह अपने भाई के साथ विद्वेषपूर्ण पत्र-व्यवहार करती रही है। यह स्पष्ट है कि उसका इसमें कोई रहस्यपूर्ण अभिप्राय है, परन्तु वह क्या है, इसे भगवान् ही जानता होगा। मैं उसकी इन रहस्यपूर्ण चालबाजियों का पता लगाते-लगाते परेशान हो उठा हूँ। परन्तु हम लोग देहात न जाकर याल्टा को जा रहे हैं और फिर वहाँ से काकेशस जाएँगे। वह अब सिर्फ जल वाले स्थानों पर ही रह सकती है और काश आप जानते होते कि इन स्थानों से मैं कितनी घृणा करता हूँ, इनमें रहते हुए कैसा मेरा दम घुटता है और मुझे लज्जा आती है। काश, मैं इस समय देहात में होता। काश, मैं इस समय काम कर रहा होता, अपने पसीने से अपनी रोटी कमा रहा होता, अपनी मूर्खताओं का प्रायश्चित कर रहा होता। मैं अपने में एक अद्वितीय शक्ति का आभास पाता हूँ और मुझे विश्वास है कि यदि मैं उस शक्ति को काम में लगाता तो अपनी जमींदारी को पाँच साल में वापस लौटा लेता। परन्तु अब जैसा कि आप देख रहे हैं, इसमें उलझन पड़ गई है। यहाँ हम विदेश में नहीं है, बल्कि मातृभूमि रूस में है। हमें विधिपूर्वक विवाह के विषय में सोचना पड़ता है। निस्सन्देह, सारा

आकर्षण समाप्त हो चुका है। मेरे पुराने प्रेम का नामोनिशान भी बाकी नहीं बचा है, परन्तु चाहे जो हो, मैं उससे विवाह करने को बाध्य हूँ।

× × ×

शामोहिन, अपनी कहानी से उत्तेजित होकर, मेरे साथ नीचे गया और हम लोग औरतों के विषय में बातें करते रहे। देर हो गई थी। ऐसा लगा कि वह और मैं एक ही केबिन में थे।

"अब तक सिर्फ गावों में ही औरतें पुरुषों से पीछे नहीं हैं," शामोहिन ने कहा। "वहाँ औरत उसी तरह सोचती और अनुभव करती है जिस तरह कि पुरुष। वह संस्कृति के नाम पर पुरुष की ही तरह प्रकृति से संघर्ष करती रहती है। शहरों में बुर्जुआ और शिक्षित वर्ग की नारियाँ बहुत पहले से ही पिछड़ गई हैं और अपनी आदिम अवस्था की तरफ लौटी जा रही हैं। वे इस समय तक आधी पशु बन चुकी हैं। उन्हें धन्यवाद देना चाहिए कि जो कुछ मानव-बुद्धि के द्वारा अब तक प्राप्त किया गया है, उसका बहुत बड़ा भाग नष्ट हो चुका है। क्रमशः नारी लुप्त होती जा रही है और उसके स्थान पर वही आदिमकालीन छलना रह गई है। शिक्षित नारियों का यह प्रत्यागमन संस्कृति के लिए एक वास्तविक सङ्कट है। अपनी इस पीछे चलने वाली चाल में वह पुरुष को भी अपने साथ घसीटने की कोशिश करती है और उसे आगे बढ़ने से रोकती है। इसको रोका नहीं जा सकता।"

मैंने पूछा, "ऐसी धारणा सबके प्रति क्यों? अकेली एरियाद्ने से सम्पूर्ण नारियों को क्यों परखा जाय? नारियों का शिक्षा और लैंगिक समानता के लिए संघर्ष, जिसे मैं न्याय के लिए संघर्ष मानता हूं, प्रतिगामिता की कल्पना के विरुद्ध है।"

मगर शामोहिन ने मेरी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया और अविश्वासपूर्वक मुस्करा उठा। वह एक उत्कट और अपनी धारणा में पूर्ण विश्वास रखने वाला स्त्री-विद्वेषी व्यक्ति था और उसके विश्वासों को बदलना असम्भव था।

"ओह, वाहियात !" उसने टोका। "जब एक बार एक औरत मुझमें, एक आदमी को, एक बराबर के प्राणी को न देखकर एक पुरुष को देखती है और जीवनभर उसे एक ही चिन्ता रहती है कि मुझे आकर्षित करे, मतलब यह है कि मुझ पर अधिकार करे तो कोई उनके अधिकारों के विषय में बातें कैसे कर सकता है ? ओह, आप उनका विश्वास मत कीजिए, वे बहुत, बहुत ही ज्यादा चालाक होती हैं। हम पुरुष, उनकी मुक्ति के लिए कितना आन्दोलन करते हैं परन्तु वे अपनी मुक्ति की तनिक भी चिन्ता नहीं करतीं, वे केवल इसकी चिन्ता करने का दिखावा करती हैं। वे भयानक रूप से चालाक हैं, भयानक रूप से चालाक हैं !"

मैं इस विवाद से ऊब उठा और उनींदा हो उठा। मैंने दीवाल की तरफ करवट लेली।

"हाँ," जैसे ही मुझे नींद आई मैंने सुना—"हाँ, और यह हमारी शिक्षा ही है जो दोषपूर्ण है, महाशय हमारे नगरों में सारी शिक्षा और उस वातावरण में औरतों का पालन-पोषण होना, उसे मानव-पशु बना देती है—मतलब यह है कि पुरुष के लिए उसे आकर्षक बनाना और पुरुष पर विजय प्राप्त करना। हाँ, निस्सन्देह"—शामोहिन ने आह भरी—"छोटी लड़कियों लड़कों के साथ शिक्षा देना और पालना-पोसना चाहिए जिससे वे हमेशा साथ-साथ रह सकें। एक औरत को इस तरह शिक्षा देनी चाहिए जिससे वह पुरुष की तरह इस योग्य हो सके कि अपनी गल्तियों को पहचान ले वर्ना वह हमेशा यही सोचती रहती है कि वह ठीक है। एक छोटी बच्ची को उसके पालने में से ही यह सिखाओ कि पुरुष सबसे पहले एक योद्धा या होने वाला प्रेमी नहीं होता वरन् उसका पड़ोसी और हर बन्त में उसके समान होता है। उसे तर्क के आधार पर सोचने की, व्यापक दृष्टिकोण से देखने की शिक्षा दो और उसे यह विश्वास मत दिलाओ कि उसका मस्तिष्क पुरुष से दुर्बल होता है। इसलिए उसे विज्ञान के प्रति, कला के प्रति और साधारण तौर पर संस्कृति के कार्यों के प्रति उदासीन रहना चाहिए। मोची या मकानों पर रंग करने वाले रंग-साज के साथ काम करने वाले नौसिखिए का मस्तिष्क भी वयस्कों की तुलना में अपरिपक्व होता है फिर भी वह काम करता है, तकलीफें उठाता है और सबके साथ अस्तित्व को कायम रखने के

संघर्ष में भाग लेता है। हमें अपनी शरीर-सम्बन्धी धारणाओं को भी छोड़ देना चाहिए—गर्भधारण को, यह देखकर कि औरतों के हर महीने बच्चे पैदा नहीं होते, दूसरे, सब औरतों के बच्चे नहीं होते, और तीसरे, साधारणतया गाँव की औरत बच्चा पैदा होने तक खेतों में काम करती है और उससे उसे कोई हानि नहीं होती। इसके पश्चात् हमारे दैनन्दिन कार्यों में पूर्ण समानता होनी चाहिए। अगर एक पुरुष एक महिला के लिए अपनी कुर्सी छोड़ देता है या उसका रूमाल उठाकर दे देता है तो उस महिला को भी प्रतिदान में यही करने दीजिए। यदि अच्छे परिवार की एक लड़की मुझे कोट पहनने में सहायता देती है या मुझे पानी का एक गिलास भरकर देती है तो मैं इसमें विरोध की कोई बात नहीं देखता।"

मैंने आगे नहीं सुना क्योंकि मैं सो गया था।

अगली सुबह जब हम सेवास्तोपोल के करीब पहुंच रहे थे, मौसम नम और खराब था, जहाज हिल रहा था। शामोहिन सोचता हुआ और शान्त, मेरे साथ डेक पर बैठा हुआ था। जब चाय की घन्टी बजी तो पुरुष अपने कोट के कालरों को ऊपर उठाए और स्त्रियाँ पीले और उनींदे चेहरे लिए नीचे जाने लगीं। एक नवयुवती और अत्यन्त सुन्दर महिला, वही जो वोलोत्चिस्क में कस्टम के अधिकारियों पर बहुत बिगड़ रही थी, शामोहिन के सामने रुकी और एक शैतान और जल्दी गुस्सा हो जाने वाले बच्चे के से भाव में बोली :

"जीन, तुम्हारी चिड़िया समुद्री बीमारी का शिकार हो रही है।"

बाद में जब मैं याल्टा में था तो मैंने उसी महिला को दो और अफसरों के साथ जो उसका साथ मुश्किल से दे पा रहे थे, घोड़े पर सवार, तेजी से दौड़ते हुए देखा। और एक सुबह मैंने उसे शरीर पर एक लम्बा कपड़ा डाले और फ्रीजियन टोपी पहने, समुद्र के किनारे चित्र बनाते और दूर पर खड़ी एक छोटी-सी भीड़ को उसकी तरफ प्रशंसाभरी मुग्ध दृष्टि से देखते हुए देखा। मुझे भी उससे परिचित करा दिया गया था। उसने बड़े स्नेह से मेरा हाथ दबाया और मेरी तरफ आनन्द से देखते हुए मधु-मिश्रित स्वर में मुझे उस आनन्द के लिए धन्यवाद दिया जो उसे मेरी रचनाएं पढ़ने से प्राप्त हुआ था

"आप उसका विश्वास मत कीजिए," शामोहिन फुसफुसाया, "उसने उनका एक शब्द भी नहीं पड़ा है।"

शाम को जब कुछ जल्दी ही मैं समुद्र-तट पर घूम रहा था तो दोनों हाथों में अनेक बन्डल और खाने की चीजें लिए शामोहिन से मेरी मुलाकात हुई।

"प्रिंस मक्तुएव यही हैं !" उसने प्रसन्न होकर कहा,"वह कल उसके भाई, उस आध्यात्मवादी के साथ आया था। अब मैं समझा कि वह उसे किस बारे में लिख रही थी ! ओह भगवान् !" वह आकाश की तरफ देखते हुए और उन बन्डलों को अपने सीने से दबाते हुए कहता रहा : "अगर वह प्रिंस को फांस लेती है तो इसका मतलब होगा, आजादी और फिर मैं अपने पिता के पास घर जा सकूँगा।"

और वह आगे भागता हुआ चला गया।

"मैं आत्माओं में विश्वास करने लगा हूँ" पीछे देखते हुए उसने मुझे पुकार कर कहा। लगता है, बाबा इलारियोन की आत्मा ने भविष्यवाणी की थी ! ओह, काश ऐसा ही होता !"

इस मुलाकात के दूसरे ही दिन मैं याल्टा से चल दिया और शामोहिन की कहानी का क्या अन्त हुआ, मुझे नहीं मालूम।

गुसेव

अंधेरा बढ़ रहा था, रात होने वाली थी।

गुसेव, जो फौज से निकाला हुआ एक सिपाही था, अपने झूले* में उठ कर बैठ गया और धीमी आवाज में बोला :

"सुनो पावेल इवानिच। एक सिपाही ने सुत्वान में मुझसे कहा था: जब वे समुद्र में जा रहे थे तो एक बड़ी मछली उनके जहाज से आकर टकराई और उसमें छेद कर दिया।"

वह विलक्षण व्यक्ति जिसे सम्बोधन कर गुसेव कह रहा था, और जिसे जहाज के अस्पताल का प्रत्येक व्यक्ति पावेल इवानिच कहकर पुकारता था, खामोश रहा जैसे कि उसने सुना ही न हो।

फिर खामोशी छा गई।......हवा रस्सियों के साथ ऊधम मचा रही थी, कड़े खड़-खड़ा रहे थे, लहरें थपेड़े मार रहीं थीं, झूले चरमरा रहे थे, परन्तु कान बहुत पहले से ही इन शब्दों को सुनने के अभ्यस्त हो चुके थे और ऐसा लग रहा था जैसे चारों ओर प्रत्येक वस्तु निद्रामग्न और शान्त थी। वातावरण में उदासी थी। वे तीनों अपाहिज—दो सिपाही और एक मल्लाह जो दिन भर ताश खेलते रहे थे, इस समय सो रहे थे और सपने में बातें कर रहे थे।

---

*पानी के जहाजों में समुद्री बीमारी के प्रभाव से बचने के लिये मल्लाहों और यात्रियों के लिये एक प्रकार के झूले होते हैं जिन पर वे सोते हैं। जहाज के हिलने पर ये झूले भी हिलते हैं।

ऐसा लगा मानो जहाज हिलने लगा। गुसेव का झूला धीरे-धीरे इस तरह से ऊपर-नीचे होने लगा मानो गहरी सांस ले रहा हो और ऐसा एक बार, दो बार, तीन बार दुहराया गया। कोई चीज धमाके के साथ फर्श पर गिरी, यह जरूर नीचे गिरने वाली कोई सुराही होगी।

"हवा अपनी जंजीरें तोड़ कर निकल पड़ी है..." गुसेव ने सुनते हुए कहा।

इस बार पावेल इवानिच ने गला साफ किया और चिड़चिड़ाकर जवाब दिया।

"कभी एक जहाज मछली से टकराया, कभी हवा जंजीरें तोड़कर निकल रही है...क्या हवा एक जानवर है जो अपनी जंजीर तुड़ा कर भाग सकती है ?"

"ईसाई लोग इसी तरह बातें करते हैं।"

"वे तुम्हारी ही तरह मूर्ख हैं, फिर....वे तरह-तरह की बातें कहते हैं। हरेक को अपने मस्तिष्क का सन्तुलन रखना चाहिये और बुद्धि से काम लेना चाहिये। तुम मूर्ख प्राणी हो।"

पावेल इवानिच समुद्री-बीमारी का शिकार हो रहा था। जब समुद्र उद्वेलित होता तो आमतौर पर उसका मिजाज खराब हो उठता था और वह जरा-जरा सी बात पर चिड़चिड़ा उठता था। गुसेव की राय में गुस्सा होने की कोई भी बात नहीं थी। जैसे कि, उस मछली या हवा द्वारा जंजीर तोड़ कर भाग निकलने की बात में कौन सी अनहोनी और आश्चर्यजनक बात थी ? मानलो कि वह मछली पहाड़ जितनी बड़ी थी और उसकी पीठ बहुत कड़ी थी, और इसी तरह यह भी मानलो कि बहुत दूर, दुनियाँ के छोर पर बड़ी-बड़ी पत्थर की दीवालें खड़ी हैं और भयानक हवाएँ जंजीरों द्वारा उससे बाँध दी गईं हैं...अगर वे जंजीरें तुड़ाकर नहीं भागीं हैं तो पगलों की तरह समुद्र पर चारों तरफ क्यों बेतहाशा भागती-फिरती हैं और भाग निकलने के लिये कुत्तों की तरह लड़ पड़ती हैं ? अगर वे जंजीरों से नहीं बँधी थीं तो जब खामोशी थी तब वे कहाँ थीं ?

गुसेव बहुत देर तक पहाड़ की तरह बड़ी मछलियों और मोटी, जंग लगी जंजीरों के बारे में सोचता रहा फिर उसका मन ऊबने लगा और वह अपनी जन्मभूमि के विषय में सोचने लगा जहाँ वह पूर्वी प्रदेशों में पाँच साल नौकरी करने के बाद वापस जा रहा था। उसने बरफ से ढके हुये एक विशाल तालाब की कल्पना की...तालाब के एक तरफ चीनी मिट्टी का सामान बनाने वाली लाल ईटों की इमारत, एक ऊँची चिमनी और धुँए के बादल तथा दूसरी तरफ–एक गाँव। ...उसका भाई अलेक्सी पाँचवें अहाते में से एक स्लेज पर बैठा हुआ आता है, उसके पीछे उसका छोटा बेटा वन्का फेल्ट के बड़े बूट पहने बैठा है। उसकी छोटी बच्ची अकुलका भी वैसे ही बड़े बूट पहिने बैठी है। अलेक्सी शराब पीता रहा है। वान्का हँस रहा है, अकुलका का चेहरा उसे दिखाई नहीं पड़ रहा, है उसने अपने को पूरी तरह से ढक रखा है।

"तुम कभी नहीं समझोगे, वह बच्चों को वर्फ में गला डालेगा..." गुसेव ने सोचा। "भगवान उन्हें बुद्धि और विवेक प्रदान करे ताकि वे अपने माँ बाप की इज्जत करें और उनसे अधिक अक्लमन्द बनने का प्रयत्न करें।"

"इनमें तला लगवाने की जरूरत है," एक मल्लाह करवट बदलता हुआ भारी आवाज में कहता है। "हाँ, हाँ जरूरत है।"

गुसेव की विचार धरा भङ्ग हो गई और उसके सामने अचानक एक विशाल सांड़ का अजीब-सा बिना आँखों वाला सिर आजाता है, वह घोड़ा और स्लेजगाड़ी आगे नहीं बढ़ रहे हैं बल्कि धुँए के एक बादल में चारों तरफ चक्कर-पर-चक्कर खा रहे हैं। परन्तु फिर भी वह खुश था कि उसने अपने परिवार वालों को देखा था। खुशी से उसकी सांस रुक गई, वह ऊपर से नीचे तक कांप उठा और उसकी उङ्गलियाँ इठने लगीं।

"भगवान हमें फिर मिलायेगा," उत्तेजित होकर वह बड़बड़ाया, परन्तु फौरन उसने अपनी आँखें खोल लीं और अंधेरे में पानी तलाश करने लगा।

उसने पानी पीया और फिर लेट गया और फिर स्लेज चल रही थी, फिर दुबारा वही बिना आँखों वाला सांड़ का सिर, धुँआ, बादल ।...और दिन निकलने तक वह यही सब देखता रहा ।

अन्धकार में जो पहली चीज दिखाई दी वह एक नीला गोला-सा था छोटी गोल खिड़की, फिर क्रमशः गुसेव बगल वाले झूले में अपने पड़ौसी पावेल इवानिच को देख सका । वह बैठा हुआ सो रहा था क्यों कि वह लेट कर सोते में साँस नहीं ले सकता था । उसका चेहरा भूरा था, नाक लम्बी और तीखी थी, उसके भयानक रूप से पतले चेहरे के कारण उसकी आँखें बहुत बड़ी-बड़ी दिखाई पड़ती थीं, कनपटियाँ भीतर की तरफ घुसी हुईं थीं, दाढ़ी छितरी और बाल लम्बे थे ।...उसे देख कर आप यह पता नहीं लगा सकते थे कि वह किस वर्ग का व्यक्ति था—एक सज्जन, व्यापारी या किसान वर्ग का । उसके भावों और लम्बे बालों से यह प्रतीत होता था कि वह एक साधु या मठ में रहने वाला, कोई धर्म की दीक्षा पाकर अन्य कार्य करने वाला व्यक्ति है-परन्तु यदि कोई उसकी बातें सुनता तो यह लगता कि वह पादरी नहीं हो सकता था । वह खांसी, बीमारी और दम घोंटने वाली गर्मी से बुरी तरह पस्त हो चुका था और अपने सूखे होठों को हिलाता हुआ मुश्किल से सांस ले पाता था । यह देख कर कि गुसेव उसकी तरफ देख रहा है उसने अपना चेहरा उसकी तरफ घुमाया और कहा ।

"मैं सोचने लगा हूँ...हाँ...मैं अब इस सबको पूरी तरह समझ गया हूँ ।"

"तुम क्या समझ गये हो, पावेल इवानिच ?"

"बताता हूँ, सुनो...मुझे यह सदैव ही अद्भुत लगा है कि इतने भयंकर रूप से बीमार होते हुए भी तुम इस जहाज पर रहते हो जहाँ इतनी गर्मी और घुटन है और हम सब लोग लगातार नीचे-ऊपर उछलते रहते हैं, जहाँ, दरअसल, हर चीज तुम्हें मौत की धमकी देती रहती है । अब मेरे सामने सब कुछ स्पष्ट हो गया है......हाँ......तुम्हारे डाक्टरों ने तुमसे अपना पीछा छुड़ाने के लिए तुम्हें इस स्टीमर पर लाद दिया ।

वे तुम जैसे निरीह जंगलियों का इलाज करते-करते परेशान हो उठे थे। ...तुम उन्हें कुछ भी नहीं देते, वे तुमसे परेशान हो उठे हैं क्योंकि तुम अपनी मौत से उनके रेकार्ड को खराब करते हो—इसलिये, निस्सन्देह, तुम लोग जंगली हो। तुमसे छुटकारा पाना कठिन नहीं है।...वह सब जिसकी आवश्यकता है, पहले, आत्मा या मानवता से रहित होना है, और दूसरे जहाज के अधिकारियों को धोखा देना है। पहली बात पर विचार करने की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि उस मामले में हम लोग कलाकार हैं और, दूसरी बात में हरेक थोड़े से अभ्यास से ही सफलता प्राप्त कर लेता है। चार सौ स्वस्थ सिपाहियों और मल्लाहों की भीड़ में आधा दर्जन बीमारों का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने तुम सबको हाँक कर जहाज पर चढ़ा दिया, तुम्हें स्वस्थ मनुष्यों के साथ मिला दिया, जल्दी से तुम सबको गिना और उस हड़बड़ी में उन्हें कोई गलती नहीं दिखाई पड़ी और जब जहाज चल पड़ा तब उन्होंने देखा कि वहाँ डेक पर लकवे के और तपेदिक की अन्तिम अवस्था के रोगी इधर-उधर पड़े हुये थे..."

गुसेव पावेल इवानिच की बातों को नहीं समझ सका, परन्तु यह ख्याल कर कि उसे दोष दिया जा रहा है, वह आत्म-रक्षा करते हुए बोला।

"मैं डेक पर सोता हूँ क्योंकि मुझमें खड़े होने की शक्ति नहीं रही जब हम लोगों को उस बजरे पर से जहाज पर चढ़ाया गया था तो मैं बुरी तरह से ठंड खा गया था।"

यह बगावत भड़काने वाली बात है," पावेल इवानिच कहता गया। "इसमें सबसे बुरी बात तो यह है कि वे लोग पूरी तरह जानते हैं कि तुम इस लम्बी यात्रा को सहन नहीं कर सकोगे और फिर भी उन्होंने तुम्हें इस पर लाद दिया। मान लो कि तुम हिन्द महासागर तक पहुँच जाते हो, फिर क्या होगा? इसके बारे में सोचना भी भयानक है।······तुम्हारी स्वामि-भक्ति पूर्ण निर्दोष सेवा के बदले में उनकी यह कृतज्ञता है!"

पावेल इवानिच के नेत्रों में क्रोध झलक उठा। उसने घृणा से भौंहें सिकोड़ीं और मुँह फाड़ कर साँस लेते हए बोला :

"ये वे लोग हैं जिनकी अखबारों के जरिये तब तक छीछालेदर करनी चाहिये जब तक कि वे पूरी तरह से बर्बाद न हो जांय।"

वे दोनों बीमार सिपाही और वह मल्लाह जाग गये थे और ताश खेलने लगे थे। मल्लाह अपने झूले में आधा झुका हुआ बैठा था, सिपाही उसके पास जमीन पर बड़ी कष्टपूर्ण मुद्रा में बैठे हुए थे। एक सिपाही की दाहिनी बाँह पट्टी में बँधी लटक रही थी और हाथ पट्टियों से लिपटा हुआ था इसलिये वह अपने ताशों को दाहिने हाथ के नीचे वाले हिस्से से कुहनी की काँख में पकड़ कर बायें हाथ से खेल रहा था। जहाज बुरी तरह हिल रहा था। वे न तो खड़े हो सकते थे, न चाय पी सकते थे, और न अपनी दवाई ही पी सकते थे।

"क्या तुम किसी अफसर के नौकर थे?" पावेल इवानिच ने गुसेव से पूछा।

"हाँ, एक अफसर का नौकर था!'

"मेरे भगवान, मेरे भगवान!" पावेल इवानिच ने कहा और दुखी होकर अपना सिर हिलाया। "एक आदमी को उसके घर से जबरदस्ती छीन लेना, उसे बाहर हजार मील दूर घसीट कर ले जाना, फिर उसे तपेदिक का रोगी बना देना और...और यह सब किसलिए,हरेक यह देखकर आश्चर्य करता है? उसे किसी कोषेकिन नामक कप्तान का या डिर्का नामक 'मिडशिपमैन' का नौकर बना देना! कैसी सुन्दर दलील है!"

"यह मुश्किल काम नहीं है, पावेल इवानिच। सुबह उठो और बूटों को साफ कर दो, समोवार तैयार कर दो, कमरे साफ कर दो और उसके बाद तुम्हारे पास करने के लिए और कोई भी काम नहीं रह जाता। लेफ्टीनेन्ट दिन भर नक्शे बनाता रहता है इसलिए अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम प्रार्थना कर सकते हो, किताब पढ़ सकते हो, बाजार जा सकते हो। भगवान हरेक को ऐसी जिन्दगी दे।"

"हाँ, बहुत अच्छा, लेफ्टीनेन्ट दिन भर नक्शे बनाया करता है और तुम चौके में बैठकर घर की याद करते रहते हो। ..सचमुच नक्शे बनाया

करता है !...महत्व की बात नक्शे नहीं हैं बल्कि मनुष्य की जिन्दगी है। जिन्दगी दुबारा नहीं मिलती, इसके प्रति दयापूर्ण व्यवहार होना चाहिए।"

"बेशक, पावेल इवानिच, बुरे आदमी पर कहीं भी कोई रहम नहीं करता, न घर में और न फौज में, परन्तु अगर तुम, जिस तरह रहना चाहिए, उस तरह रहो और आज्ञाओं का पालन करो, तो किसी को क्या पड़ी है कि तुम्हारा अपमान करे ? अफसर लोग पढ़े-लिखे भले आदमी होते हैं, उनमें समझ होती है।...इन पांच सालों में मैं एक बार भी जेल नहीं गया और मुझे एक भी घूँसा नहीं खाना पड़ा। इसलिये भगवान, केवल एक बार और मेरी सहायता करना।"

"किसलिए ?"

"लड़ाई के लिए। मेरा हाथ मजबूत है, कोई चीज पावेल इवानिच। चार चीनी हमारे अहाते में आये। वे लकड़ी या और कोई चीज ला रहे थे, यह मुझे याद नहीं। खैर, मैं ऊब उठा था और मैंने उनमें जरा हाथ जड़ दिये, बुरा हो उसका एक की नाक से खून बहने लगा।...लेफ्टीनेन्ट ने छोटी खिड़की में से यह देख लिया। वह नाराज हुआ और उसने मेरे कान पर कस कर एक घूँसा जमाया।"

"मूर्ख, दीन प्राणी..." पावेल इवानिच फुसफुसाया, "काश कि तुम में थोड़ी-सी भी अक्ल होती !"

वह जहाज के हिलने से बुरी तरह थक गया था इसलिये उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं। उसका सिर रह-रह कह पीछे की तरफ झुकता और फिर उसके सीने पर लटक जाता। कई बार उसने लेटने की कोशिश की परन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ। साँस लेने में होने वाले कष्ट ने उसे लेटने नहीं दिया।

"तुमने उन चीनियों को किसलिये मारा था ?" कुछ देर बाद उसने पूछा।

"ओह कोई खास बात नहीं थी। वे अहाते में आए और मैंने उन्हें मार दिया !"

और निस्तब्धता छा गई,...ताश खेलने वाले दो घन्टे से बड़े जोश के साथ और एक दूसरे को गाली देते हुए खेल रहे थे, परन्तु जहाज के हिलने ने उन पर भी विजय प्राप्त कर ली। उन्होंने ताश एक तरफ फेंक दिए और लेट गए। गुसेव ने फिर वह बड़ा तालाब, ईंटों की इमारत और गाँव देखा ...स्लेज फिर चली आ रही थी, वान्का फिर हँस रहा था और छोटी सी वेवकूफ बच्ची अकुल्का ने अपना रूँएदार कोट खोल डाला और अपने पैर बाहर निकाल लिए, मानो कह रही हो। "देखो, अच्छे आदमियो, मेरे बरफ के जूते वान्का के से नहीं हैं, वे नए हैं।"

"पाँच साल की हो गई और फिर भी अभी तक उसे अकल नहीं आई," गुसेव सन्निपात में बड़बड़ाया। "अपने पैरों को फटकारने की बजाय अच्छा हो कि तुम आकर अपने चाचा को पानी पिला जाओ। मैं तुम्हें बड़ी अच्छी चीज दूँगा।"

इसके बाद एन्द्रोवे कन्धे पर चकमक पत्थर से चलने वाली बन्दूक रखे तथा एक खरगोश लटकाए, जिसे उसने मारा था, आया। उसके पीछे एक निर्बल बुड्ढा यहूदी इसाइत्चिक आया जो साबुन के एक टुकड़े के बदले में उस खरगोश को माँग रहा था, फिर झोंपड़े में बँधा हुआ काला बछड़ा, फिर कमीज सीती और किसी चीज के लिए चीखती हुई दोमना और फिर वही बिना आँखों वाला साँड़ का सिर, काला धुँआ......

ऊपर कोई जोर से चिल्लाया, कई मल्लाह दौड़े। वे लोग डेक पर कोई भारी चीज घसीटते लग रहे थे। कोई चीज भारी आवाज के साथ गिरी। वे लोग फिर दौड़े......क्या कोई दुर्घटना हो गई थी? गुसेव ने सिर उठाया, सुना और देखा कि वे दोनों सिपाही और वह मल्लाह फिर ताश खेल रहे थे, पावेल इवानिच बैठा हुआ होंठ चला रहा था। चारों तरफ घुटन थी, किसी में भी साँस लेने तक को शक्ति नहीं रही थी, प्यास लग रही थी, पानी गर्म और बेमजा था। समुद्र हमेशा की तरह ऊफन रहा था।

अचानक ताश खेलने वाले एक सिपाही को कुछ हो गया।...वह पान के पत्तों को ईंट का कहने लगा, उन्हें गिनने में गड़बड़ा उठा, फिर उसने

अपने पत्ते फेंक दिए, और भयभीत, मूर्खतापूर्ण मुस्कराहट के साथ चारों तरफ उन लोगों की ओर देखने लगा।

"मैं अभी एक मिनट में उठता हूँ, दोस्तो···एक मिनट में···" उसने कहा और फर्श पर लेट गया। प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित हो उठा। उन्होंने उसे आवाजें दीं मगर उसने जबाव नहीं दिया।

"स्टेपन, क्या तुम्हारी तबियत खराब है, क्यों?" पट्टी में बाँह लटकाए हुए सिपाही ने उससे पूछा। "अच्छा हो कि हम लोग पादरी को बुला लें, क्यों, क्या ख्याल है?"

"थोड़ा-सा पानी पी लो, स्टेपन·······" मल्लाह ने कहा। "लो भाई, पी लो।"

"तुम सुराही को उसके दाँतों से क्यों टकराए दे रहे हो?" गुसेव ने गुस्से से कहा। "देख नहीं रहे, शलगम की सी खोपड़ी के?"

"क्या कहा?"

"क्या कहा?" उसका मजाक उड़ाते हुए गुसेव ने दुहराया। "उसमें जान नहीं है, वह मर गया है! 'क्या कहा' यह है! कैसे मूर्ख आदमी हैं, भगवान हम पर रहम करे······!"

३

जहाज का हिलना बन्द हो गया था और पावेल इवानिच पहले से अधिक प्रसन्न था। अब वह चिड़चिड़ाता नहीं था। उसके चेहरे पर एक गर्वीला, निर्भयता और व्यंग का भाव था। वह इस तरह देखता था मानो कहना चाहता हो। "हाँ, एक मिनट में मैं तुम्हें ऐसी बात बताऊँगा जिसे सुनकर हँसी के मारे तुम्हारे पेट में बल पड़ जायेंगे।" वह छोटी गोल खिड़की खुली हुई थी और ठन्डी हवा बहती हुई पावेल इवानिच तक आ रही थी। पानी में पतवारों की छपछपाहट का शोर उठ रहा था। ठीक उस छोटी खिड़की के नीचे किसी ने एक भनभनाती-सी तेज, भद्दी आवाज में गाना शुरू कर दिया। निस्सन्देह एक चीनी गा रहा था।

"यहाँ हम लोग बन्दरगाह में हैं," पावेल फिर इवानिच ने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते हुए कहा। "सिर्फ एक महीना और, फिर हम लोग रूस में होंगे। अच्छा सज्जनो और बहादुरो! मैं ओडेसा पहुँचूँगा और वहाँ से सीधा हारकोव जाऊँगा। हारकोव में मेरा एक दोस्त है जो साहित्यकार है। मैं उसके पास जाऊँगा और कहूँगा, "अच्छा, दोस्त, अपने इन भयानक विषयों को, औरतों की प्रेम-कहानियों को और प्रकृति के सौन्दर्य को एक तरफ हटाओ और मनुष्य के दुराचारों का चित्रण करो।"

उसने एक मिनट सोचा और फिर बोला।

"गुसेव, तुम्हें मालूम है कि मैंने उन्हें कैसे काबू में किया था?"

"किसको काबू में किया था, पावेल इवानिच?"

"क्यों उन्हीं लोगों को……तुम जानते हो कि इस स्टीमर पर पहला दर्जा और तीसरा दर्जा दो ही दर्जे हैं और वे लोग सिर्फ किसानों के—नीच मनुष्यों—को तीसरे दर्जे में जाने देते हैं। अगर तुम एक मल्लाहों की जाकेट पहने हुए हो और तुम्हारी रूपरेखा अगर भले आदमियों या बड़े आदमियों से जरा-सी भी मिलती-जुलती है तो अगर तुम जाना चाहो तो तुम्हें पहले दर्जे में जाना पड़ेगा, तुम्हें पांच सौ रूबल कहीं से भी लाने पड़ेंगे चाहे ऐसा करने में तुम्हें जान ही क्यों न देनी पड़े। क्यों, पूछता हूँ मैं, क्या तुमने ऐसा नियम बनाया है? क्या इसके द्वारा तुम पढ़े-लिखे रूसियों का सम्मान बढ़ाना चाहते हो? बिल्कुल नहीं! हम तुम्हें तीसरे दर्जे में नहीं जाने देंगे सिर्फ इसलिए कि एक सम्भ्रान्त व्यक्ति तीसरे दर्जे में नहीं जा सकता। यह बड़ा भयानक और घृणित है। मैं भले आदमियों की भलाई के लिए इतनी चिन्ता रखने के लिये उनका सचमुच कृतज्ञ हूँ। परन्तु किसी भी हालत में चाहे वहाँ जगह अच्छी हो या बुरी मेरे पास सौ रूबल तो हैं नहीं। मैंने सरकारी रुपया नहीं चुराया है, मैंने किसी देश के रहने वालों को नहीं चूसा है, मैंने नाजायज चीजों का व्यापार नहीं किया है, मैंने किसी को कोड़े मार-मार कर जान से नहीं मारा है। इसलिये अनुमान लगाइए कि क्या मुझे पहले दरजे में यात्रा करने का अधिकार है और इससे भी कम क्या अपने को

शिक्षित वर्ग का कहने का अधिकार है। परन्तु तुम उन्हें तर्क द्वारा गिरफ्त में नहीं ला सकोगे। उन्हें तो धोखा देना पड़ता है। मैंने एक मजदूर का सा कोट और ऊँचे बूट पहने, चेहरे पर शराबियों का सा चापलूसी का भाव बनाया और एजेन्ट के पास गया। "हमें एक छोटा-सा टिकट दे दीजिए सरकार," मैंने कहा......

"क्यों, तुम किस वर्ग से सम्बन्धित हो?" एक मल्लाह ने पूछा।

"पादरियों से। मेरा बाप एक ईमानदार पादरी था वह हमेशा दुनियाँ के बड़े आदमियों के मुँह पर सच्ची बात कह देता था, और उसे इसके बदले मैं बहुत कुछ भोगना पड़ा था।"

पावेल इवानिच बात करते-करते थक गया था। वह साँस लेने के लिये रुका परन्तु फिर भी बोलता चला गया।

"हाँ मैं आदमियों के मुंह पर हमेशा सच्ची बात कह देता हूँ? मैं किसी से भी या किसी भी बात से नहीं डरता। इस मामले में मुझ में और तुम सब लोगों में बहुत बड़ा अन्तर है। तुम अन्धकार में हो, अन्धे और कुचले हुए हो। तुम कुछ भी नहीं देखते और जो कुछ देखते भी हो उसे समझ नहीं पाते। तुम्हें बताया जाता है कि हवा अपनी जंजीरों को तोड़ कर भाग निकलती है, कि तुम जानवर हो, पेत्येनीम हो और तुम इन बातों पर यकीन कर लेते हो। वे तुम्हारी गर्दन पर घूँसे मारते हैं और तुम उनके हाथ चूमते हो। कीमती रूंएदार मगजी वाला कोट पहने हुए कोई पशु तुम्हें लूट लेता है और फिर तुम्हें पन्द्रह कोपेक इनाम देता है, और तुम कहते हो, 'मुझे अपने हाथ का चुम्बन करने दीजिये सरकार।' तुम नीच, दीन प्राणी हो। मैं दूसरी तरह का आदमी हूँ। मेरी आँखें खुली हुई हैं, मैं यह सब उसी तरह साफ-साफ देख सकता हूँ जिस तरह एक शिकरा या बाज जमीन के ऊपर उड़ता हुआ देखता है, और मैं यह सब समझता हूँ। मैं सजीव विद्रोह हूं। गैर जिम्मेदाराना जुल्म देखता हूँ तो विरोध करता हूँ। बुरी बात और छल देखता हूँ तो विरोध करता हूँ। मैं सूअरों को विजयी होते देखता हूँ तो विरोध करता हूँ। मुझे दबाया नहीं जा सकता, कोई भी स्पेनी आविष्कार

मेरी जबान को बन्द नहीं कर सकता। मेरी जुबान काट दो और मैं गूँगों के से इशारे से अपना विरोध प्रकट करूँगा, मुझे काल-कोठरी में बन्द कर दो—मैं वहाँ से इतनी जोर से चीखूँगा जो आधे मील तक सुनाई पड़ेगा या भूख हड़ताल कर मर जाऊँगा जिससे उनकी काली आत्माओं पर एक और बोझ बढ़ जायेगा। मुझे मार डालो और मैं भूत बन कर उनका पीछा करूँगा। मेरे सारे परिचित मुझसे कहते हैं। "तुम बहुत बड़े दम्भी व्यक्ति हो, पावेल इवानिच।" और मुझे इस तरह का सम्मान पाकर गर्व होता है। मैंने तीन साल तक सुदूर पूर्व में नौकरी की है और मैं वहाँ सौ साल तक याद किया जाता रहूँगा। मेरी सबसे लड़ाई रह चुकी है। रूस से मेरे दोस्त मुझे लिखते हैं, "यहाँ वापस मत आओ," परन्तु देखो मैं उन पर थूकने के लिए वापस जा रहा हूँ। हाँ, यही जीवन है जैसा कि मैं इसे समझता हूँ। यही है जिसे कोई भी जीवन कह सकता है।"

गुसेव छोटी खिड़की की तरफ देख रहा था। वह सुन नहीं रहा था। निर्मल, स्वस्थ, फीरोजी रङ्ग के गर्म और धूप से चमकते हुए पानी पर एक नाव हिल रही थी। उसमें बैठे नंगे चीनी पीले रङ्ग की गाने वाली चिड़ियों के पिंजरे पकड़े हुए चिल्ला रहे थे।

"यह गाती है, यह गाती है।"

एक दूसरी नाव पहली नाव से टकराई। फिर वहाँ एक और नाव आई जिसमें बैठा हुआ एक मोटा चीनी छोटी-छोटी खपच्चियों से चावल खा रहा था।

मन्द गति से समुद्र का जल साँस ले रहा था, समुद्री चिड़ियाँ जल पर धीरे-धीरे तैर रही थीं।

"मेरा मन कहता है कि उस मोटे की गर्दन में एक हाथ दूँ," जम्हाई लेकर उस मोटे चीनी की तरफ देखते हुए गुसेव ने सोचा।

वह झपकी लेने लगा और उसे ऐसा लगा कि सारी प्रकृति भी तन्द्रिल हो उठी है। समय तेजी से गुजरता चला गया। अज्ञात रूप से दिन बीत गया, चुपचाप अन्धकार छा गया। जहाज अब खड़ा नहीं था बल्कि आगे बढ़ रहा था।



४

दो दिन बीत गए । पावेल इवानिच बैठने की जगह लेट गया, उसकी आँखें बन्द थीं और नाक और भी अधिक पतली दिखाई पड़ने लगी थी ।

"पावेल इवानिच," गुसेव ने उसे आवाज दी, 'ए, पावेल इवानिच ।"

पावेल इवानिच ने आँखें खोलीं और होंठ हिलाए ।

"क्या तुम्हारी तबियत भारी है ?"

"नहीं, कोई बात नहीं···" पावेल इवानिच ने हाँफते हुए जवाब दिया । "कोई बात नहीं, इसके बजाय···मैं पहले से अच्छा हूँ, तुम देख ही रहे हो, मैं लेट सकता हूँ । मैं पहले से कुछ आराम में हूँ ।"

"अच्छा, इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो, पावेल इवानिच ।"

"जब मैं अपने से तुम्हारी तुलना करता हूँ तो मुझे तुम्हारे लिए दुख होता है...। मेरे फेफड़े ठीक हैं, यह सिर्फ पेट की खाँसी है । लाल सागर की तो क्या चलाई मैं नरक को भी बर्दाश्त कर सकता हूँ । साथ ही मैं अपनी बीमारी और उन दवाओं को, जो वे मुझे इसके लिए देते हैं, आलोचनात्मक दृष्टि से देखता हूँ । जब कि तुम...तुम अन्धकार में हो...यह तुम्हारे लिए कठिन है, बहुत, बहुत, कठिन है ।"

जहाज हिल नहीं रहा था बल्कि शान्त था परन्तु साथ ही एक स्नान-घर की तरह गर्म और घुटन से भरा हुआ था । वहाँ बोलना ही मुश्किल नहीं था अपितु सुनना भी कठिन था । गुसेव ने अपने घुटने हाथों से बाँध लिये, उन पर अपना सिर रख लिया और अपने घर के बारे में सोचने लगा । हे भगवान, उस दम घोंटने वाली गर्मी में बरफ और ठंड के विषय में सोचने से कितना संतोष मिलता था । तुम एक स्लेज में बैठे जा रहे हो, अचानक घोड़े किसी चीज से डर जाते हैं और बेतहास दौड़ने लगते हैं ।...सड़क, खाई, घाटियों की बिना परवाह किये वे पागल की तरह आगे भागे चले जाते हैं, गाँव के बीच में होकर, चीनी मिट्टी के कारखाने के पास वाले

तालाब पर होकर बाहर खुले खेतों की तरफ भागे चले जाते हैं। "रोको" रास्ते में मिलने वाले कारखाने के मजदूर और किसान चीखते हैं, "रोको।" मगर क्यों? तीखी ठंडी हवा को किसी के चेहरे पर लगने दो और किसी के हाथों को काटने दो। घोड़ों के सुमों से उछले हुये बरफ के टुकड़ों को किसी की टोपी पर, किसी की पीठ पर, किसी के कालर के नीचे, किसी के सीने पर गिरने दो, दौड़ने वालों को बरफ पर घन्टी बजाते हुए दौड़ने दो और पहियों के निशानों और स्लेज को नष्ट हो जाने दो, शैतान उन सबको उठा ले जाय! और उस समय कितना आनन्द आता है जब स्लेज उलट जाती है और तुम गाड़ी के ओहार पर से उछल कर तीर की तरह नीचा मुँह किये बरफ में जा पड़ते हो और फिर अपनी मूँछों को बरफ से सफेद किये हुए उठ खड़े होते हो। टोपी गायब, दस्ताने नदारद, पेटी खुली हुई...आदमी हँसते हैं और कुत्ते भोंकते हैं।

पावेल इवानिच ने एक आँख आधी खोली, उससे गुसेव की ओर देखा और आहिस्ते से पूछा।

"गुसेव, क्या तुम्हारा कमान्डिंग अफसर चोर है?"

"कौन कह सकता है, पावेल इवानिच! हम नहीं कह सकते, हमें इसका पता नहीं चल पाता।" और इसके बाद बहुत लंबा समय खामोशी में गुजरा। गुसेव सोचता रहा, नींद में कुछ बड़बड़ाया और पानी पीता रहा। उसके लिये बात करना और सुनना दोनों ही मुश्किल हो रहा था। वह बात किये जाने से डर रहा था। एक घण्टा बीत गया, दूसरा, तीसरा भी बीत गया, शाम हो गई, फिर रात आ गई परन्तु उसने इस तरफ गौर नहीं किया। वह अब भी बरफ और पाले का स्वप्न देखता हुआ चुपचाप बैठा था।

एक आवाज आई जैसे कोई अस्पताल में आया हो। आवाजें साफ सुनाई दीं, मगर कुछ मिनट गुजर गये और फिर खामोशी छा गई।

"स्वर्ग का राज्य और अनन्त शान्ति," पट्टी में हाथ लटकाये हुए सिपाही ने कहा, "वह एक दुखी आदमी था।"

"क्या ?" गुसेव ने पूछा। "कौन ?"

"वह मर गया, वे उसे अभी ऊपर ले गये हैं।"

"ओह, अच्छा," जम्हाई लेते हुए गुसेव बड़बड़ाया। "उसे स्वर्ग का राज्य मिले।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है ?" बाँह को पट्टी में लटकाने वाले सिपाही ने गुसेव से पूछा। "उसे स्वर्ग का राज्य मिलेगा या नहीं ?"

"तुम किसके बारे में बातें कर रहे हो ?"

"पावेल इवानिच के बारे में।"

"उसे मिलेगा...उसने इतना सहा है। एक दूसरी बात और है, वह पादरियों से सम्बन्धित रह चुका है और पादरियों के अनेकों रिश्तेदार होते हैं। उनकी प्रार्थनाएँ उसे बचा लेंगी।"

पट्टी वाला सिपाही गुसेव के पास एक झूले पर बैठ गया और धीमी आवाज में बोला।

"और तुम भी, गुसेव, इस दुनियाँ में ज्यादा नहीं रहोगे। तुम रूस कभी नहीं पहुँच सकोगे।"

"क्या डाक्टर या उसका सहायक ऐसा कहता है ?" गुसेव ने पूछा।

"यह बात नहीं है कि उन्होंने ऐसा कहा था, मगर कोई भी यह देख सकता है...जबकि एक आदमी मरने वाला है तो कोई भी स्पष्ट देख सकता है। तुम खाते नहीं, तुम पीते नहीं, यह देखकर डर लगता है कि तुम इतने दुबले हो गए हो। दरअसल, यह तपेदिक है। मैं यह तुम्हें परेशान करने के लिए नहीं कहता बल्कि इसलिये कि शायद तुम धार्मिक संस्कार और अन्तिम उबटन करवाना पसन्द करो। और अगर तुम्हारे पास कुछ पैसा हो तो उसे अपने बड़े अफसर को दे दो।"

"मैंने घर पत्र नहीं लिखा है..." गुसेव ने आह भरी। 'मैं मर जाऊँगा और उन्हें मालूम भी नहीं पड़ेगा।"

"उन्हें खबर मिल जायगी," बीमार मल्लाह ने भारी आवाज में

कहा। 'जब तुम मरोगे तो ओडेसा के गजट में इसकी सूचना निकाल देंगे। वे वहाँ कमान्डिग अफसर के पास एक रिपोर्ट भेज देंगे और वह उसे जिले में या कहीं और...भेज देगा।"

गुसेव ऐसे वार्तालाप के बाद बेचैन हो उठा और उसके हृदय में एक अस्पष्ट-सी तीव्र अभिलाषा उत्पन्न हो उठी। उसने पानी पिया था, यह वह नहीं थी। वह खिचड़ता हुआ खिड़की के पास पहुँचा और गर्म और सीलन भरी हवा में उसने साँस ली...यह वह नहीं थी, उसने घर के बारे में सोचने की कोशिश की, पाले के बारे में सोचा—यह वह अभिलाषा नहीं थी।...अन्त में उसे लगा कि अगर वह उस वार्ड में एक मिनट और रहा तो निश्चिय रूप से मर जाएगा।

"बड़ी घुटन है, साथियो..." उसने कहा। "मैं डेक पर जाऊँगा। भगवान के लिए उठने में मेरी सहायता करो।"

"अच्छी बात है," पट्टी वाले सिपाही ने मंजूर किया "मैं तुम्हें ले चलूँगा, तुम चल नहीं सकते, मेरी गर्दन पकड़ लो।"

गुसेव ने सिपाही के गले में हाथ डाल दिया, सिपाही अपनी कच्छी वाली बाँह उसके चारों तरफ लपेट उसे सहारा देता हुआ ले चला। डेक पर मल्लाह और नौकरी की मियाद खत्म हो जाने वाले सिपाही बराबर-बराबर लेटे हुए थे। वे इतने अधिक थे कि उनके बीच में होकर गुजरना मुश्किल था।

"खड़े हो जाओ" पट्टी वाले सिपाही ने धीरे से कहा। "मेरे पीछे चुपचाप चले आओ, मेरी कमीज पकड़ लो।"

चारों तरफ अन्धकार था। वहाँ न डेक पर, न मस्तूलों पर और न चारों तरफ समुद्र पर ही कोई रोशनी थी। जहाज के सबसे दूर वाले अन्तिम भाग में सन्तरी पहरा देता हुआ बिल्कुल बुत की तरह खड़ा था और ऐसा लग रहा था मानो सो रहा हो। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो जहाज अपने आप जनशून्य हो गया था और अपनी मर्जी से चला जा रहा था।

"अब वे लोग पावेल इवानिच को समुद्र में फेंक देंगे," पट्टी वाले सिपाही ने कहा। "एक बोरे में और फिर पानी में!"

"हाँ, यही कायदा है।"

"मगर घर पर जमीन में दफनाया जाना ज्यादा अच्छा है। कुछ भी सही, वहाँ तुम्हारी माँ कब्र पर आती है और रोती है।"

"बेशक।"

वहाँ सूखी घास और गोबर की गन्ध भर रही थी। जहाज के रेलिंग के सहारे कुछ बैल सिर नीचे किए खड़े हुए थे। एक, दो, तीन कुल आठ बैल थे। और एक छोटा-सा घोड़ा था। गुसेव ने उसे मारने के लिए हाथ बढ़ाया मगर घोड़े ने अपना सिर हिलाया, दाँत निकाले और उसकी आस्तीन मुँह से पकड़ने की कोशिश की।

"शैतान..." गुसेव नाराज होकर बोला।

वे दोनों—वह और सिपाही—जहाज के अगले सिरे की तरफ रास्ता बनाते हुए गए, फिर रेलिंग के सहारे खड़े हो गए और ऊपर-नीचे देखने लगे। ऊपर गहरा आसमान, चमकते सितारे, शान्ति और निस्तब्धता बिलकुल गाँव के घर की तरह ही नीचे अन्धकार और कोलाहल। ऊँची-ऊँची लहरें गरज रही थीं, कोई नहीं बता सकता कि क्यों गरज रहीं थीं। तुम जिस लहर को भी देखो वह और दूसरी सब लहरों से अधिक ऊँची उठना, दूसरी का पीछा करना और उसे कुचल डालना चाह रही थी। उसके पीछे उतनी ही भयङ्कर और वैसा ही शोर मचाती हुई तीसरी लहर आती जिसकी चोटी प्रकाश से चमक रही होती।

समुद्र में बुद्धि और दया नाममात्र को भी नहीं थी। जहाज अगर और छोटा और मोटी लोहे की चादरों से न बना होता तो लहरें बिना किसी प्रकार के खेद का अनुभव किए उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालतीं और उस पर सवार सारे आदमियों को सन्त और पापी का बिना भेद किए, निगल जातीं। जहाज से भी वही क्रूर और अर्थहीन भाव झलक रहा था। यह दैत्य अपनी विशाल चोंच के साथ रास्ते में करोड़ों लहरों को छिन्न-भिन्न करता हुआ आगे झपटता हुआ चला जा रहा था। उसे न अन्धकार का भय था, न हवा का, न स्थान का, न निर्जनता का। वह बिना किसी की परवाह किए चला

जा रहा था। अगर समुद्र के अपने आदमी होते तो यह दैत्य उन्हें भी बिना सन्तों और पापियों का भेद किए कुचल डालता।

"अब हम कहाँ हैं ?" गुसेव ने पूछा।

"मैं नहीं जानता, हमें महासागर में होना चाहिए।"

"जमीन का कहीं पता नहीं..."

"सचमुच नहीं है। उनका कहना है कि हम जमीन के दर्शन सात दिन तक नहीं कर सकेंगे।"

वे दोनों सिपाही फास्फोरस के प्रकाश से प्रकाशित सफेद झाग को देख रहे थे और कुछ सोचते हुए खामोश थे। गुसेव ने ही सबसे पहले शान्ति भङ्ग की।

"यहाँ डरने की कोई बात नहीं है," वह बोला, "मगर हरेक व्यक्ति भय से आक्रान्त है मानो एक घने जंगल में बैठा हो। मगर, मान लो, अगर वे इसी समय पानी पर एक नाव उतार दें और एक अफसर मुझे समुद्र में सौ मील दूर जाकर मछली पकड़ने को आज्ञा दे तो मैं चला जाऊँगा। या, मानो, एक ईसाई इसी क्षण समुद्र में गिर पड़े तो मैं उसके साथ ही नीचे कूद पड़ूँगा। एक जर्मन या चीनी को मैं नहीं बचाऊँगा परन्तु एक ईसाई के साथ ही नीचे कूद पड़ूँगा।"

"क्या तुम मरने से डरते हो ?"

"हाँ ! मुझे घर पर रहने वाले अपने परिवार वालों के लिए दुख है। तुम जानते हो कि घर पर मेरा भाई ढङ्ग से नहीं रहता, वह शराब पीता है और अपनी बीबी को बिना बात मारता है और अपने माँ-बाप की इज्जत नहीं करता। मेरे बिना सब कुछ बर्बाद हो जाएगा और मुझे ताज्जुब नहीं कि मेरे माँ-बाप रोटी के लिए भीख न माँगते फिरें। परन्तु मेरी टाँगें मेरा बोझ नहीं सम्हाल पा रही हैं, भाई, यहाँ गर्मी भी है। चलो, सोने चलें।"

५

गुसेव वार्ड में वापस चला गया और अपने झूले पर बैठ गया। वह फिर एक अस्पष्ट तीखी अभिलाषा से परेशान हो उठा और समझ नहीं सका

कि वह क्या चाहता था। उसके सीने में दर्द था, सिर भन्ना रहा था, मुँह इतना सूख गया था। उसे जीभ हिलाना भी मुश्किल हो रहा था। वह झपकियाँ लेने और नींद में बड़बड़ाने लगा और बुरे सपनों, खाँसी और दम घोटने वाली गर्मी से पस्त होकर, सुबह के पहर गहरी नींद में सो गया। उसने सपना देखा कि लोग अभी बैरक में, चूल्हे में से रोटियाँ निकाल रहे थे। वह स्टोव के ऊपर चढ़ गया और उसमें भोजपत्र की शाखा से अपने को पीटते हुए, उसने वाष्प-स्नान किया। वह दो दिन तक सोता रहा और तीसरे दिन दोपहर को दो मल्लाह आए और उसे बाहर निकाल ले गए।

उसे पाल के कपड़े में सीं दिया गया और उसे अधिक भारी बनाने के लिए उन्होंने उसके साथ लोहे के दो भारी टुकड़े रख दिए। कपड़े में सिल जाने के बाद वह एक 'कैरट' या 'रेडिश' मछली की तरह दिखाई पड़ने लगा। सिर की तरफ चौड़ा और पैरों की तरफ संकरा।...दिन छिपने से पहले वे उसे ऊपर डेक पर ले आए और एक तख्ते पर रख दिया, तख्ते का एक सिरा समुद्र की तरफ था, दूसरा एक बक्स पर था जो एक स्टूल पर रखा हुआ था। उसके चारों तरफ सिपाही और अफसर नंगे सिर खड़े हुए थे।

"भगवान का नाम अमर रहे..." पादरी ने आरम्भ किया, "जैसा कि वह प्रारम्भ में था, अब भी है, और हमेशा रहेगा।"

"आमीन", तीन मल्लाहों ने सस्वर कहा।

सिपाहियों और अफसरों ने अपने ऊपर पवित्र सलीब का निशान बनाया और लहरोंकी तरफ देखने लगे। यह बड़ा अजीबसा थाकि एक आदमी को पाल के कपड़े में सीं दिया जाय और फौरन ही वह समुद्र में उड़ता दिखाई पड़े। क्या यह सम्भव था कि किसी के साथ ऐसी घटना घट सकती थी ?

पादरी ने गुसेव के ऊपर मिट्टी डाली और नीचे झुका। उन्होंने "अनन्त स्मृति" गाया।

पहरे पर खड़े हुए आदमी ने तख्ते के छोर को तिरछा किया, गुसेव

आगे फिसला और सिर नीचा किए उड़ा, हवा में एक कला खाई और छप से समुद्र में गिर पड़ा। वह झाग से ढक गया था और क्षण बीत गया और वह लहरों में गायब हो गया।

वह तेजी से निचली सतह की तरफ चला। क्या वह वहाँ तक पहुंच सका? कहा जाता था कि वहाँ गहराई तीन मील की थी। साठ या सत्तर फीट डूबने के बाद उसकी रफ्तार धीरे-धीरे कम होती चली गई। नीचे की तरफ जाते समय वह एक निश्चित लय ताल के साथ हिलता-डुलता रहा मानो झिझक रहा हो, और समुद्र की धारा में पड़कर नीचे गहराई में जाने की अपेक्षा इधर-उधर ज्यादा तेजी से फिसलने लगा।

फिर उसकी मुलाकात 'हार्बर पाइलट' नामक मछलियों के एक झुंड से हुई। उस काली वस्तु को देखकर उनमें से एक मछली रुकी मानो डर गई हो. फिर अचानक घूमी और गायब हो गई। एक मिनट से भी कम बीता कि वे मछलियाँ तीर की तरह तेजी से लौटकर गुसेव की तरफ लपकीं और पानी में उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगीं।

उसके बाद एक और काला शरीर दिखाई पड़ा। यह एक शार्क मछली थी। यह शान के साथ गुसेव के नीचे तैरी और उसमें कोई भी रुचि नहीं दिखाई मानो उसने उसे देखा ही न हो और पीठ नीचे कर नीचे गहराई में बैठ गई। फिर वह पेट ऊपर की तरफ किए उस स्वच्छ, गर्म जल का आनन्द लेती हुई घूमी और उसने दाँतों की दो पंक्तियों वाले अपने जबड़ों को धीरे से खोला। 'हार्बर पाइलट' खुश हैं, वे यह देखने को रुकी हैं कि अब आगे क्या होता है। शार्क उस शरीर से कुछ देर खेलने के बाद उदासीनता पूर्वक अपने जबड़े उसके नीचे करती है, सावधानी से अपने दाँतों से उसे छूती है और वह पाल का कपड़ा सिर से लेकर पैर तक चिर जाता है। लोहे का एक टुकड़ा बाहर गिर पड़ता है, वह टुकड़ा 'हार्बर पाइलटों' को डरा देता है और शार्क की पसलियों पर चोट करता हुआ तेजी से सीधा नीचे की तरफ चल देता है।

इस समय ऊपर आकाश में, पश्चिम दिशा में बादल इकट्ठे हो रहे हैं। एक बादल विजय स्तम्भ की तरह है, दूसरा एक शेर जैसा, तीसरा एक

कैंची जैसा है।...बादलों के पीछे से प्रकाश की एक चौड़ी हरी रेखा बादलों को भेद कर आकाश के बीचों-बीच फैल जाती है। कुछ देर बाद एक दूसरी गहरे नीले रंग की प्रकाश-रेखा उसके पास छा जाती है, उसके पास एक सुनहरी और फिर एक गुलाबी।...आसमान का रंग हल्का बकायन के रङ्ग का हो जाता है। इस भव्य, मनमोहक आकाश को देखकर समुद्र पहले तो गरजता है परन्तु तुरन्त वह भी उन कोमल, खुशनुमा, सुन्दर रङ्गोंको धारण कर लेता है जिनके लिए मानव भाषा में कोई भी संज्ञा ढूँढ़ना कठिन है।

दो बोलोद्या

"मुझे दो, मैं खुद हाँकना चाहती हूँ। मैं कोचवान के पास बैठूँगी !" सोफिया लवोव्ना ने ऊँची आवाज में कहा। "एक मिनट ठहरो, कोचवान, मैं ऊपर तुम्हारे पास बैठूँगी।"

वह स्लेज में खड़ी हो गई और उसके पति ब्लादीमीर निकतिश, और उसके बाल मित्र ब्लादीमीर मिहालिच ने उसे गिरने से रोकने के लिए उसकी बाँह थाम ली। तीनों घोड़े तेजी से सरपट भागे चले जा रहे थे।

"मैंने कहा था कि तुम्हें उसको ब्रान्डी नहीं पिलानी चाहिए थी," ब्लादीमीर निकतिश ने क्षुब्ध होकर अपने साथी से फुसफुसाते कहा। "तुम भी क्या आदमी हो।"

कर्नल अनुभव से इस बात को जानता था कि उसकी बीबी सोफिया लवोव्ना जैसी औरतों को जरा भी ज्यादा पिला देने से पहले तो वे प्रसन्नता से उन्मत्त हो उठती हैं, फिर हिस्टीरिया की रोगणी की तरह हँसती हैं और फिर आँसू बहाने लगती हैं। उसे डर था कि वे घर पहुंचेंगे तो सोने की जगह उसे उसको काबू में लाना पड़ेगा और दवाई पिलानी पड़ेगी।

"ठहरो !" सोफियो लवोव्ना चीखी। "मैं खुद हाँकना चाहती हूँ।"

वह सचमुच प्रसन्नता और विजय का अनुभव कर रही थी। पिछले दो महीनों से, अपनी शादी के बाद से ही, वह इस विचार से दुखी होती रही थी कि उसने कर्नल यागित्श से सांसारिक आनन्द प्राप्त करने के लिए और जैसा कि कहा जाता था। 'कुढ़ाने के लिए' के लिए शादी की थी। परन्तु

उस शाम को, रेस्त्रां में, उसे विश्वास हो गया था कि वह उससे गहरा प्रेम करती थी। चौवन साल की अवस्था होते हुए भी वह इतना अधिक छरहरा फुर्तीला और कोमल था। वह मजाक करता था और जिप्पी गानों की धुनों को बड़ी सुन्दरता के साथ गुनगुनाता था। सचमुच, आजकल के बुड्ढे जवान आदमियों से हजार गुने ज्यादा मजेदार होते थे। ऐसा लगता था मानो अवस्था और यौवन ने आपस में अदला-बदली कर ली थी। कर्नल उसके पिता से दो साल बड़ा था; परन्तु इस बात का क्या कोई महत्व हो सकता था? अगर सच कहा जाय तो, कर्नल में उसकी अपेक्षा अधिक शक्ति, स्फूर्ति और ताजगी थी यद्यपि स्वयं उसकी अवस्था अभी तेईस साल की ही थी।

"ओह, मेरे प्यारे!" उसने सोचा। "तुम अद्भुत हो!"

उसे रेस्त्राँ में ही इस बात का विश्वास हो गया था कि उसमें पुरानी विचारधारा का एक कण भी शेष नहीं रहा था। वह अपने उस बचपन के मित्र ब्लादीमीर मिहालिच या सिर्फ बोलोदया के प्रति जिसके प्रेम में वह कल तक बुरी तरह आबद्ध थी, इस समय पूर्ण उदासीनता के अतिरिक्त और कुछ भी अनुभव नहीं कर रही थी। उस पूरी शाम तक वह उसे एक निर्जीव, जड़ रूखा और तुच्छ व्यक्ति प्रतीत होता रहा था। उसकी उदासीनता ने, जिसके द्वारा वह अभ्यासवश इस अवसर पर रेस्त्राँ में बिलों का भुगतान करने से अपने को बचाता रहा था, सोफिया को विद्रोही बना दिया और वह मुश्किल से अपने को यह कहने से रोक सकी कि, "अगर तुम गरीब हो तो तुम्हें घर पर रहना चाहिए।" कर्नल ने ही सारे पैसे चुकाए थे।

शायद इसलिए कि पेड़, तार के खम्भे और बरफ के ढेर उसकी आँखों के सामने से तेजी से गुजरते रहे, उसके दिमाग में तरह-तरह के असम्भव विचार आते रहे। उसने सोचा रेस्त्रां का बिल एक सौ बीस रूबल का था यथा सौ जिप्सियों पर चले गए और कल, अगर वह चाहे तो हजार रूबल उड़ा सकती है, और सिर्फ दो महीने पहिले, उसकी शादी से सिर्फ दो महीने पहिले, उसके पास, उसके अपने तीन रूबल भी नहीं थे, हर मामूली चीज के लिए उसे अपने पिता से कहना पड़ता था। उसके जीवन में कैसा परिवर्तन हो गया है।

उसके विचार उलझे हुए थे । उसने याद किया कि जब वह दस साल की बच्ची थी, तब कर्नल यागित्श, अब उसका पति, कैसे बुआ से प्रेम किया करता था और घर में हरेक यही कहता था कि उसने उसे बर्बाद कर दिया था । और उसकी बुआ भी, सचमुच, रोकर आंख लाल किए कभी-कभी खाना खाने नीचे आया करती थी और हमेशा कहीं चली जाया करती थी । लोग उसके विषय में कहा करते थे कि उस बेचारी को कहीं भी शान्ति नहीं मिलती । कर्नल उन दिनों बहुत सुन्दर था और 'नारी-हन्ता' के रूप में उसको अद्वितीय प्रसिद्धि थी । इतनी अधिक कि उसे सारा शहर जानता था और उसके विषय में यह कहा जाता था कि वह प्रतिदिन नियम से अपनी उपासिकाओं के वहाँ उसी तरह जाया करता था जिस तरह एक डाक्टर अपने मरीजों को देखने जाया करता है । अब भी उसके भूरे बालों, उसकी झुर्रियों और उसके चश्मे के रहते हुए भी उसका पतला चेहरा सुन्दर लगता था, विशेष रूप से बगल से देखने में बहुत ही सुन्दर लगता था ।

सोफिया लवोव्ना का पिता एक फौजी डाक्टर था और किसी समय उसने कर्नल यागित्श के साथ एक ही रेजीमेन्ट में नौकरी की थी । वोलोद्या का पिता भी एक फौजी डाक्टर था और वह भी उसके पिता और कर्नल यागित्श की तरह उसी रैजीमेंट में रहा था । अनेक प्रेम सम्बन्धों के रहते हुए भी, जो कभी बड़े पेचीदा और परेशानी उत्पन्न कर देने वाले होते थे, वोलोद्या ने युनिवर्सिटी में अच्छी सफलता प्राप्त की थी और एक बहुत अच्छी डिग्री प्राप्त कर ली थी । इस समय वह विदेशी साहित्य का विशेष अध्ययन कर रहा था और बताया जाता था कि एक थीसिस लिख रहा था । वह अपने पिता उस फौजी डाक्टर के साथ बैरकों में रहता था और खुद कुछ भी नहीं कमाता था यद्यपि उसकी अवस्था तीस साल की हो चुकी थी । बचपन में वह और सोफियो एक घर में, यद्यपि अलग-अलग फ्लैटों में, रहते थे । वह अक्सर उसके साथ खेलने के लिए आया करता था और दोनों साथ-साथ नाचा करते और फ्रांसीसी भाषा सीखा करते थे । परन्तु जब वह बड़ा होकर एक भव्य और अत्यन्त सुन्दर युवक बन गया, तो वह उससे शर्माने लगी और फिर बुरी तरह उसे प्रेम करने लगी और उस समय तक बराबर उसे प्रेम

करती रही जब तक कि उसकी यागित्श के साथ शादी न हो गई। वह भी चौदह वर्ष की अवस्था से ही औरतों पर विजय प्राप्त करने के लिए मशहूर था। वे महिलाएँ जो उसकी खातिर अपने पतियों को धोखा देती थीं यह कहकर अपनी सफाई दे लेती थीं कि वह एक बच्चा है। किसी ने अभी हाल में उसका एक किस्सा सुनाया था कि जब वह एक विद्यार्थी के रूप में यूनि-र्वासिटी के पास ही एक मकान में रहता था तो हमेशा जब कोई उसके दरवाजे को खटखटाता था तो यह होता था कि उसके पैरों की आवाज सुनाई पड़ती थी और फिर फुसफुसाते हुए वह क्षमा-याचना करता था "क्षमा कीजिए मैं अकेला नहीं हूं।" यागित्श उससे प्रसन्न रहता था और उसे एक योग्य उत्तराधिकारी के रूप में आशीर्वाद देता था, जैसे कि देरझाविन ने पुश्किन को आर्शीवाद दिया था। वह उसे चाहता था। वे घन्टों बिना बोले साथ-साथ बिलियर्ड या ताश खेलते रहते थे। अगर यागित्स कहीं बाहर जाता तो बोलोद्या को हमेशा अपने साथ ले जाता था और यागित्श ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे वोलोद्या ने अपनी थीसिस के रहस्यों से परिचित करा रखा था। पहले जब यागित्श अपेक्षाकृत युवक था, वे कभी-कभी एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन जाते थे परन्तु कभी भी एक दूसरे से कुढ़ते नहीं थे। उस समाज में, जिसमें वे रहते थे, यागित्श 'बड़ा वोलोद्या' और उसका मित्र 'छोटा वोलोद्या' के नाम से प्रसिद्ध थे।

बड़े वोलोद्या, छोटे वोलोद्या और सोफिया लवोव्ना के अतिरिक्त उस स्लेज में एक चौथा व्यक्ति और था—मार्गेरिता अलेक्जेन्द्रोव्ना, या जैसा कि प्रायः सब उसे कहा करते थे, रीता। मैडम यागित्श की चचेरी बहन—काली भौहों और एक आँख का चश्मा लगाने वाली अत्यन्त पीली तीस साल से ऊपर की लड़की, जो हमेशा, भयंकर पाले में भी सिगरेट पिया करती थी और जिसके ब्लाउज की सामने के हिस्से और घुटनों पर हमेशा सिगरेट की राख पड़ी रहती थी। वह नाक के स्वर से और हरेक शब्द को भुनभुनाती हुई बोलती थी। उसका मिजाज ठंडा था, वह बिना नशे में गाफिल हुए चाहे जितनी शराब पी सकती थी और बड़े आलस्यपूर्ण और

नीरस ढङ्ग से गन्दी कहानियाँ सुनाया करती थी। घर पर वह मोटी-मोटी पत्रिकाएं पढ़ती रहती थी और उन पर सिगरेट की राख बिखेरती रहती थी या सेव खाती रहती थी।

"सोफिया, बेवकूफी बन्द करो," उसने भुनभुनाते हुए कहा। "यह सचमुच मूर्खता है।"

जब वे शहर के फाटक के पास आए तो और भी धीरे-धीरे चलने लगे और आदमियों और मकानों की बगल में होकर आगे बढ़ने लगे। सोफिया लवोव्ना शान्त हो गई तथा अपने पति के साथ सट कर बैठ गई और उसने अपने विचारों की बागडोर ढीली छोड़ दी। छोटा वोलोद्या सामने बैठा था। इस समय तक उसके कोमल और प्रसन्न भाव उदासीन भावों के साथ घुल-मिल गए थे। उसने सोचा कि सामने बैठा हुआ व्यक्ति जानता है कि वह उसे प्रेम करती थी और इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह इस अफवाह में विश्वास करता था कि उसने सांसारिक भोग-विलास के लिए उस कर्नल से विवाह किया था। उसने उससे अपने प्रेम के विषय में कभी नहीं कहा था। वह नहीं चाहती थी कि यह उसे मालूम पड़े। उसने अपने भावों को छिपाने की पूरी कोशिश की थी, परन्तु उसके चेहरे से वह जानती थी कि वह उसे अच्छी तरह समझता था—और इससे उसके आत्म-सम्मान को चोट पहुँचती थी। परन्तु उसकी स्थिति में सबसे अधिक उद्विग्न कर देने वाली बात यह थी कि उसकी शादी के बाद ही, वोलोद्या ने अचानक उसकी तरफ ध्यान देना प्रारम्भ कर दिया था, जो उसने पहले, उसके साथ घण्टों बिताने और चुपचाप बैठे या इधर-उधर की मामूली बातें करते हुए भी, कभी नहीं किया था। और यद्यपि अब भी स्लेज में बैठे हुए, उसने उससे बातें नहीं की थीं, परन्तु उसने अपने पैर से उसका पैर छुआ और उसके हाथ को जरा-सा दबाया। जाहिरा, वह इतना ही चाहता था कि उसकी शादी हो जानी चाहिए और यह स्पष्ट था कि वह उससे घृणा करता था। वह उसमें सिर्फ एक विशेष प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न कर देती थी मानो वह एक चरित्रहीन और बदनाम स्त्री हो। और जब अपने पति के प्रति प्रेम और विजय के भाव उसकी आत्मा में दुःख और चोट खाए आत्म-सम्मान

के भावों के साथ मिश्रित हो उठे तो वह एक विद्रोही भावना से भर उठी और वक्स पर बैठने, चीखने और घोड़ों को सीटी बजा-बजाकर चलाने की इच्छा करने लगी।

जैसे ही वे पादरियों के मठ के पास होकर निकले, सौ टन वाला विशाल घन्टा बजने लगा। रीता ने अपने ऊपर पवित्र सलीब का निशान बनाया।

"हमारी ओल्गा इसी मठ में है," सोफिया लवोव्ना बोली और उसने भी अपने ऊपर पवित्र सलीब का निशान बनाया और काँप उठी।

"वह मठ में क्यों गई थी ?" कर्नल ने पूछा।

"कुढ़ाने के लिए" रीता ने चिड़चिड़ा कर सोफिया के यागित्श से विवाह करने की ओर स्पष्ट संकेत करते हुए उत्तर दिया। "कुढ़ाने के लिए" ही आजकल का फैशन है। सारी दुनियाँ के खिलाफ बगावत करना। वह हमेशा हँसती रहती थी, बहुत चोंचलेबाज थी और सिर्फ नाच और जवान मर्दों की ही शौकीन थी और एकाएक वह हरेक को आश्चर्यचकित कर चली गई।"

"यह सच नहीं है," वोलोद्या ने अपने रुँएदार कोट का कालर नीचे की तरफ मोड़ते और अपने सुन्दर चेहरे को दिखाते हुए कहा, "यह कुढ़ाने वाला मामला नहीं था, अगर आप चाहें तो मैं कहूँगा कि भयानक मामला था। उसका भाई दमित्री सजा काटने चला गया था और उन्हें नहीं मालूम कि वह अब कहाँ है, और उसकी मां इस दुख से मर गई।"

उसने अपना कालर फिर ऊपर उठा लिया।

"ओल्गा ने अच्छा किया," उसने धीमी आवाज में आगे कहा, "एक गोद लिए हुए बच्चे की तरह रहना और ऐसे आदर्श के साथ जैसे कि सोफिया लवोव्ना—इस बात को भी ध्यान में रखना जरूरी है।"

सोफिया लवोव्ना ने उसकी आवाज में घृणा की ध्वनि सुनी और उससे कुछ कड़ी बात कहने के लिए उत्सुक हो उठी परन्तु कहा कुछ भी

नहीं। विद्रोह की भावना फिर उस पर हावी हो गई, वह फिर खड़ी हो गई और भरी आवाज में चीख कर बोली :

"मैं प्रार्थना में जाना चाहती हूँ। कोचवान, वापस चलो ! मैं ओल्गा को देखना चाहती हूँ।"

वे लौट दिए। मठ के घन्टे की आवाज भारी थी। सोफिया लवोव्ना ने कल्पना की कि उसमें कुछ ऐसा था जिसने उसे ओल्गा और उसके जीवन की याद दिलादी थी। गिरजे के दूसरे घन्टे भी बजने लगे। जब कोचवान ने घोड़ों को रोका तो सोफिया लवोव्ना स्लेज से नीचे कूद पड़ी और बिना किसी को साथ लिए अकेली तेजी से दरवाजे की तरफ चल दी।

"मेहरबानी करके जल्दी करना" उसके पति ने उसे पुकार कर कहा। "पहले ही काफी देर हो चुकी है।"

वह उस काले दरवाजे में होकर भीतर चली गई और फिर उस सड़क पर होकर आगे बढ़ी जो दरवाजे से मुख्य गिरजे की तरफ जाती थी। बरफ उसके पैरों के नीचे टूटने लगी। घन्टे की आवाज बिल्कुल उसके सिर के ऊपर बज रही थी और उसके सारे शरीर में लहराती हुई प्रतीत हो रही थी। यहाँ गिरजे का दरवाजा था, फिर तीन सीढ़ियाँ नीचे, और एक बगल का कमरा जिसमें दोनों तरफ सन्तों की मूर्तियाँ थीं, धूप और मसालों की सुगन्ध, फिर दूसरा दरवाजा और उसे खोलती हुई और नीचे तक झुकती हुई एक काली मूर्त्ति। प्रार्थना अभी प्रारम्भ नहीं हुई थी। एक पादरिन मूर्त्तियों वाले पर्दे के सहारे चल रही थी और बड़े ऊँचे शमादान की मोम-बत्तियों को जला रही थी। इधर-उधर खम्भों और बगल की वेदियों के पास काली, स्थिर मूर्त्तियाँ खड़ी थीं। "मैं सोचती हूँ कि वे लोग जैसे अब खड़े हैं, इसी तरह सुबह तक खड़े रहेंगे," सोफिया लवोव्ना ने सोचा और यह स्थान उसे अन्धकारपूर्ण, ठण्डा निर्जन—एक कब्रिस्तान से भी अधिक निर्जन-सा प्रतीत हुआ। उसने उदासीनतापूर्वक उन शान्त स्थिर मूर्त्तियों की तरफ देखा और अचानक अपने हृदय में एक टीस का अनुभव किया। किसी कारणवश एक छोटे कद की पादरिन के रूप में, जिसके कन्धे पतले थे और

और सिर पर एक काला रूमाल बँधा हुआ था, उसने ओलगा को पहचान लिया हालाँकि ओलगा जब मठ में दाखिल हुई थी तब मोटी थी और लम्बी लगती थी। हिचकिचाती और अत्यधिक उत्तेजना का अनुभव करती हुई सोफिया लवोव्ना उस पादरिन के पास गई और उसके कन्धे पर से होकर उसके चेहरे को देखते हुए उसने ओलगा को पहिचान लिया।

"ओलगा!" अपने हाथ फैलाए हुए वह चीखी और भावनावश आगे नहीं बोल सकी। "ओलगा!"

पादरिन ने उसे फौरन पहिचान लिया। उसने आश्चर्यसे भौंहें चढ़ाईं और उसका पीला, ताजा धुला हुआ चेहरा ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका सिर का सफेद कपड़ा भी, जिसे वह अपने परदे के नीचे बाँधे हुए थी, प्रसन्नता से चमक उठा।

"भगवान का कैसा आश्चर्य है!" उसने कहा और उसने भी अपने पतले पीले हाथ फैला दिए।

सोफिया लवोव्ना उससे चिपट गई, प्रेम से उसका चुम्बन किया और ऐसा करते समय उसे डर लगा कि उस पर से शराब भी बदबू आ रही होगी।

"हम लोग अभी यहाँ से गुजर रहे थे और हमें तुम्हारी याद आ गई," उसने हाँफते हुए कहा मानो दौड़कर आ रही हो। "मेरी प्यारी! तुम कितनी पीली दिखाई पड़ रही हो!...मैं...मैं तुमसे मिलकर बहुत खुश हूँ। अच्छा, बताओ तुम कैसी हो? यहाँ मन नहीं लगता क्या?"

सोफिया लवोव्ना ने चारों ओर दूसरी पादरिनों की तरफ देखा और अधीनता-सी दिखाती हुई कहने लगी:

"घर पर इतने परिवर्तन हो गए हैं......तुम्हें मालूम है, मेरी शादी कर्नल युगित्श से हो गई है। तुम्हें उसकी याद है, है न। मैं उसके साथ बहुत खुश हूँ।"

"अच्छा, इसके लिए भगवान को धन्यवाद दो। तुम्हारे पिता तो अच्छी तरह से हैं?"

"हाँ, वे अच्छी तरह हैं। अक्सर तुम्हारी बातें किया करते हैं। ओल्गा, छुट्टियों में आकर हम लोगों से जरूर मिलने, आओगी न ?"

"आऊँगी", ओल्गा बोली और मुस्करा उठी। मैं महीने की दूसरी तारीख को आऊंगी।"

सोफिया लवोव्ना रोने लगी, वह खुद नहीं जान सकी कि क्यों, और एक मिनट तक चुपचाप आँसू बहाती रही, फिर उसने अपनी आँखें पोंछी और बोलीं :

"रीता तुमसे न मिलकर बड़ी दुखी होगी। वह भी हमारे साथ आई है और वोलोद्या भी यहीं है। वे लोग दरवाजे के पास खड़े हैं उन्हें कितनी खुशी होगी अगर तुम बाहर चलकर उनसे मिल मको। चलो, उनके पास बाहर चलें, प्रार्थना अभी शुरू नहीं हुई।"

"चलो," ओल्गा सहमत हो गई। उसने अपने ऊपर तीन बार पवित्र सलीब का निशान बनाया और सोफिया लवोव्ना के साथ बाहर दरवाजे पर आई।

"तो तुम कहती हो कि तुम सुखी हो, सोनिच्का क्यों हो न ?" जब वे दरवाजे पर बाहर आ गई तो उसने पूछा।

"बहुत।"

"अच्छा, भगवान को इसके लिए धन्यवाद है।"

पादरिन को देखकर दोनों बोलोद्या स्लेज से बाहर निकले और सम्मान के साथ उन्होंने उसकी अभ्यर्थना की। दोनों ही उसके पीले चेहरे और मठ की काली पोशाक से प्रभावित प्रतीत हुए और दोनों प्रसन्न थे कि उसने उन्हें याद किया और उनका सम्मान करने के लिए बाहर आई। कहीं उसे ठन्ड न लग जाय इसलिए सोफिया लवोव्ना ने उसे एक कम्बल उढ़ा दिया और आधा रुंएदार कोट उसके चारों तरफ लपेट दिया। उसके आँसुओं ने उसके मन को हलका कर दिया था और हृदय को पवित्र भावना से भर दिया था। वह प्रसन्न थी कि यह शोरगुल और बेचैनी से भरी हुई

रात, और दरअसल गन्दी रात, एकाएक इतनी पवित्रता और शान्ति के साथ समाप्त होगी। और उसने ओलगा को कुछ देर और अपने साथ रखने के लिए प्रस्ताव रखा।

"चलिए, इसे घुमाने ले चलें। ऊपर चढ़ो ओलगा, हम लोग थोड़ी दूर चलेंगे।"

उन आदमियों ने आशा की थी कि ओलगा इन्कार कर देगी—सन्त लोग तीन घोड़ों की स्लेज में इधर-उधर नहीं घूमते-फिरते, उन्हें आश्चर्य-चकित करते हुए उसने स्वीकार कर लिया और स्लेज में बैठ गई। और जब घोड़े नगर के फाटक की तरफ दौड़े जा रहे थे, सब लोग खामोश बैठे रहे और केवल उसे ठन्ड से बचाने और आराम देने का प्रयत्न करते रहे। प्रत्येक यही सोच रहा था कि वह पहले क्या थी और अब क्या हो गई है। इस समय उसका चेहरा उत्तेजना रहित, भावनाहीन, शाण्त, पीतवर्ण और निर्मल था मानो उसकी धमनियों में रक्त न होकर पानी भरा हो। दो या तीन साल पहले वह स्वस्थ्य थी, उसका रङ्ग गुलाबी था, वह अपने प्रेमियों के विषय में बातें करती रहती थी और बात-बात पर हँसने लगती थी।

नगर के फाटक के पास स्लेज वापस मुड़ी। जब दस मिनट बाद वह मठ के पास रुकी, ओलगा नीचे उतर आई। घण्टा और तेजी से बजने लगा था।

"भगवान तुम्हारी रक्षा करे," ओलगा ने कहा और झुकी जैसे कि पादरिनें करती हैं।

"ओलगा, जरूर आना।"

"आऊँगी, आऊँगी।"

वह गई और तेजी से काले दरवाजे के पीछे गायब हो गई।

और इसके बाद जब वे लोग फिर चल दिए तो सोफिया लवोव्ना बड़ी उदास हो उठी। हरेक खामोश था लवोव्नाने पूरी तरह निराशा और निर्बलता का अनुभव किया। यह काम कि, उसने एक नर्स को स्लेज में बैठा कर ऐसे व्यक्तियों के साथ घुमाया था जो गम्भीर नहीं कहे जा सकते, उसे अब

मूर्खतापूर्ण, अव्यावहारिक और किसी पवित्र वस्तु को दूषित करने के समान लगा। जैसे ही उसका नशा उतरा, स्वयं को धोखा देने की उसकी इच्छा भी नष्ट हो गई। अब उसे यह स्पष्ट लग रहा था कि वह अपने पति से प्रेम नहीं करती और न कभी उससे प्रेम कर ही सकी थी और यह सब मूर्खता और व्यर्थ की बातें थीं। उसने उससे स्वार्थवश विवाह किया था क्योंकि उसके स्कूल के मित्रों के शब्दों में वह बहुत पैसे वाला था और वह रीता की तरह एक बुढ़िया नौकरानी बनने से डरती थी। क्योंकि वह अपने डाक्टर पिता से ऊब उठी थी और बोलोद्या को जलाना चाहती थी। अगर शादी करते समय वह इस बात की कल्पना कर सकी होती कि यह कार्य इतना क्रूर, इतना भयानक और इतना घृणित होगा तो वह दुनियाँ की सारी दौलत के बदले में भी शादी करने के लिए तैयार न होती। परन्तु अब इस स्थिति से उद्धार पाने का कोई रास्ता नहीं था। उसे इससे समझौता करना ही पड़ेगा।

वे लोग घर पहुंचे। अपने गर्म गुलगुले बिस्तर में लेट कर और रजाई ओढ़कर सोफिया लवोव्ना उस काले गिरजे को, धूप की गन्ध को और खम्भों के सहारे खड़ी हुई उन मूर्तियों को अपने स्मृति पट पर पुनः अङ्कित करने लगी और इस विचार से भयभीत हो उठी कि जब वह सो रही होगी, वे मूर्तियाँ पूरे समय तक वहाँ खड़ी रहेंगी। संध्या की प्रार्थना बहुत, बहुत देर तक होती रहेगी, और फिर 'घन्टे बजेंगे, फिर सम्मिलित प्रार्थना होगी, फिर दिन की प्रार्थना होगी....'

"परन्तु निस्संदेह एक ईश्वर है—निश्चित रूप से एक ईश्वर है, और मुझे मरना पड़ेगा, इसलिए देर या अबेर से हरेक को अपनी आत्मा के विषय में, ओलगा के से जीवन के विषय में, सोचना पड़ेगा। अब ओलगा का उद्धार हो गया है, उसने स्वयं ही सारे प्रश्नों को हल कर लिया है...परन्तु अगर ईश्वर नहीं है? तो उसका जीवन बर्बाद हो गया। परन्तु यह कैसे बर्बाद हो गया है, क्यों बर्बाद हो गया?"

और एक मिनट बाद उसके दिमाग में फिर यह विचार उठा।

"ईश्वर है, मृत्यु अवश्य आयेगी, अपनी आत्मा की चिन्ता अवश्य

करनी होगी। अगर ओल्गा इसी क्षण मृत्यु को अपने सामने देखती तो भयभीत नहीं होती। वह तैयार है और सबसे बड़ी बात यह है कि उसने अपने जीवन की समस्या सुलझा ली है। ईश्वर है....हाँ...परन्तु मठ में जाने के के अतिरिक्त इस समस्या का क्या और कोई हल नहीं है ? मठ में जाने का अर्थ है जीवन से सन्यास ले लेना, उसे नष्ट कर देना..."

सोफिया लवोव्ना थोड़ी-सी भयभीत हो उठी। उसने तकिए के नीचे अपना सिर छिपा लिया।

"मुझे इस विषय में नहीं सोचना चाहिए," वह फुसफुसाई, "हाँ, नहीं सोचना चाहिए।"

यागित्श दूसरे कमरे में, कालीन पर अपनी एड़ी की कीलों को धीरे से खटखटाता, कुछ सोचता हुआ, टहल रहाथा। सोफिया लवोव्ना के मस्तिष्क में यह विचार उठा कि यह व्यक्ति उसके इतना समीप और प्रिय केवल इसी कारण है कि उसका नाम भी ब्लादीमीर था। वह बिस्तर पर उठकर बैठ गई और कोमल स्वर में पुकारा :

"वोलोद्या !"

"क्या बात है ?" उसके पति ने उत्तर दिया।

"कुछ नहीं।"

वह फिर लेट गई। उसने घन्टे की आवाज सुनी, शायद वही मठ का घन्टा हो। उसने फिर उस दालान और उन काली मूर्तियों के विषय में सोचा और ईश्वर तथा अवश्यम्भावी मृत्यु के विचार उसके मस्तिष्क में घूमते रहे। उसने अपने कान बन्द कर लिए जिससे घन्टे की आवाज न सुन सके। उसने सोचा कि वृद्धावस्था से पूर्व उसके सामने एक लम्बा, बहुत लम्बा जीवन होगा और यह कि उसे दिन-प्रति-दिन उस मनुष्य के नजदीक आना पड़ेगा जिसे वह प्यार नहीं करती थी, और जो अभी शयनागार में आया था और पलंग पर चढ़ रहा था, और उसे अपने हृदय में उस दूसरे युवक, आकर्षक व्यक्ति, के प्रति अपने असहाय प्रेम का गला घोंट देना पड़ेगा। उसकी दृष्टि में वह व्यक्ति अलौकिक था। उसने अपने पति की तरफ देखा और उससे

'गुड नाइट' कहने का प्रयत्न किया परन्तु ऐसा करने के स्थान पर सहसा फूट-फूट कर रो उठी। वह स्वयं से नाराज थी।

वह सुबह दस बजे तक शान्त नहीं हुई। उसने रोना और काँपना बन्द कर दिया परन्तु उसके सिर में भयानक दर्द होने लगा। यागित्श दोपहर की प्रार्थना में जाने की जल्दी में था और बगल वाले कमरे में अपने अर्दली पर नाराज हो रहा था, जो कपड़े पहनने में उसकी मदद कर रहा था। वह एक बार शयनागार में, अपनी एड़ियों को हल्का-सा बजाते हुए कुछ लेने आया और दूसरी बार कन्धे पर पद-सूचक निशान और सीने पर तमगे लगाए, गठिया के कारण कुछ लँगड़ाते हुए आया और सोफिया लवोव्ना ऐसा लगा कि वह एक शिकारी चिड़िया की तरह चलता हुआ दिखाई दे रहा था।

उसने यागित्श को टेलीफोन की घन्टी बजाते सुना।

"मेहरबानी करके मुझे वास्सिलेव्स्की बैरक छोड़ देना," उसने कहा, और एक मिनट बाद फिर "वास्सिलेव्स्की बैरक? मेहरबानी कर डाक्टर सालीमोविच से टेलीफून पर आने के लिए कह दो..." और एक मिनट बाद फिर मैं किससे बातें कर रहा हूँ? तुम हो वोलोद्या? खुशी हुई। अपने पिता से फौरन हमारे यहाँ आने के लिए कह दो, प्यारे बच्चे, कल के बाद से मेरी पत्नी बड़ी परेशान है। तुम कहते हो घर पर नहीं हैं। हूँ!...शुक्रिया। बहुत अच्छा। मैं बहुत कृतज्ञ हूंगा...दया।"

यागित्श तीसरी बार शयनागार में आया, अपनी पत्नी के ऊपर झुका, उस पर सलीब का निशान बनाया, उसे अपना हाथ चूमने के लिए दिया (वह औरत जो उससे प्रेम करती थी उसका हाथ चूमा करती थी और यागित्श को इसकी आदत पड़ चुकी थी।) और यह कहते हुए कि वह खाने के समय तक आ जाएगा, बाहर चला गया।

बारह बजे नौकरानी यह सूचना देने भीतर आई कि व्लादीमीर मिहालोविच आ गया था। सोफिया लवोव्ना ने थकान और सिरदर्द से लड़खड़ाते हुए, जल्दी से 'फर' की मगजी लगी हुई अपनी नई सुन्दर बकायन

के रंग वाली ड्रेसिंग-गाउन पहन ली और जल्दी से बाल संवार लिए। वह अपने हृदय में एक अवर्णनीय कोमलता का अनुभव कर रही थी तथा प्रसन्नता और भय से काँप रही थी कि कहीं वह चला न जाए। यह उसे देखने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं चाहती थी।

वोलोद्या, अपनी वृत्ति के अनुसार ठीक पोशाक पहनकर आया था— एक ऊँचा कोट और सफेद टाई। जब सोफिआ लवोव्ना भीतर आई उसने उसका हाथ चूमा और अपना हार्दिक दुःख प्रकट किया कि वह बीमार थी। फिर जब वे बैठ गए तो वोलोद्या ने उसके ड्रेसिंग गाउन की प्रशंसा की।

"कल ओलगा को देखकर मैं व्यग्र हो उठी थी," उससे कहा। "पहले तो मुझे वह स्थिति भयानक लगी परन्तु अब मुझे उससे ईर्ष्या होती है। वह एक चट्टान की तरह है जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते, जिसे डिगाया नहीं जा सकता। परन्तु उसके लिए और कोई हल नहीं था, वोलोद्या ? क्या अपने को जिन्दा ही दफन कर देना जीवन की सयस्या का एकमात्र हल है ? परन्तु, यह तो मृत्यु है, जीवन नहीं।"

ओलगा के विचार से वोलोद्या के चेहरे पर कोमलता छा गई।

"तुम एक चतुर आदमी हो, वोलोद्या," सोफिया लवोव्ना बोली। "मुझे बताओ कि जो ओलगा ने किया है वह कैसे किया जाता है। यह ठीक है कि मैं आस्तिक नहीं हूँ और मुझे मठ में नहीं जाना चाहिए परन्तु उसके बराबर और कोई दूसरा काम भी तो किया जा सकता है। जिन्दगी मेरे लिए आसान नहीं है," उसने क्षण भर रुककर आगे कहा। "बताओ कि मैं क्या करूँ...कुछ ऐसी बात बताओ जिसमें आस्था रख सकूँ। मुझे कुछ बताओ अगर वह सिर्फ एक शब्द में ही बताया जा सके।"

"एक शब्द में ? बेशक ता रा रा बूम दिए।"

वोलोद्या, तुम मेरा तिरस्कार क्यों करते हो ?" उसने तेज होकर पूछा।" तुम मुझसे एक अजीब, गँवारों के से ढङ्ग से बातें करते हो, उस तरह नहीं जिस तरह कोई अपने मित्रों से क्षमा करना और उन स्त्रियों से

जिनका वह सम्मान करता है, बातें करता है। तुम अपने काम में इतने अच्छे हो, विज्ञान में तुम्हारी रुचि है. तुम उसके विषय में मुझसे कभी बातें क्यों नहीं करते ? ऐसा क्यों है ? क्या मैं इसके लायक नहीं हूँ ?"

वोलोद्या कुढ़कर घुन्ना उठा और बोला :

"तुम एकाएक विज्ञान को कैसे चाहने लगीं ? वैधानिक सरकार शायद तुम्हें पसन्द नहीं ? या मछलियाँ ?"

"ठीक है, मैं एक व्यर्थ, तुच्छ, मूर्खस्त्री हूँ जिसके कोई सिद्धान्त नहीं...। मुझ में बहुत, बहुत बुराइयाँ हैं। मैं पागल और बदचलन हूँ और इसके लिए मुझ से नफरत करनी ही चाहिए। परन्तु तुम, वोलोद्या, मुझसे दस साल बड़े हो और मेरा पति तीस साल बड़ा है। मैं तुम्हारे सामने बड़ी हुई हूँ और तुम जैसा चाहते बना सकते थे—एक फरिश्ता बना सकते थे। परन्तु तुम,—उसकी आवाज काँप उठी—"मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करते हो। यागित्श ने मुझसे बुढ़ापे में शादी की है और तुम..."

"अच्छा, अच्छा," वोलोद्या ने उसके और नजदीक खिसकते और उसके दोनों हाथों को चूमते हुए कहा : शोपेनहावर के अनुयायियों को दार्शनिक चिन्तन और जो वे चाहें वैसा सिद्ध करने दो, तब तक हम इन नन्हें से हाथों का चुम्बन लेंगे।"

"तुम मुझसे नफरत करते हो। काश कि तुम जानते कि इससे मुझे कितनी तकलीफ होती है," उसने इस बात को पहले से ही जानते हुए कि वह उसकी बात का विश्वास नहीं करेगा अनिश्चित के साथ कहा, "काश कि तुम जानते कि मैं स्वयं को बदलने के लिए एक दूसरी जिन्दगी शुरू करने के लिए कितनी उत्सुक हूँ। मैं उत्साह के साथ इस सम्बन्ध में सोचती हूँ!" और सचमुच उसके नेत्रों में उत्साह के आँसू भर आए। "अच्छी, ईमानदार, पवित्र बनना, झूठ से दूर रहना, जीवन का एक उद्देश्य रखना।"

"अच्छा, अच्छा, बस, रहने दो, भावुक मत बनो ! मुझे यह पसन्द नहीं !" वोलोद्या ने कहा और उसके चेहरे पर एक नाराजी का सा भाव झलकने लगा। "मैं सच कहता हूँ, तुम्हें तो अभिनेत्री होना चाहिए था। हम लोगों को साधारण मनुष्यों का सा व्यवहार करना चाहिए।"

वोलोद्या को नाराज चले जाने से रोकने के लिए वह अपनी सफाई देने लगी और उसे प्रसन्न करने के लिए जबरदस्ती मुस्कराई और फिर ओल्गा की बातें करने लगी ! और उसने बताया कि वह अपने जीवन की समस्या को हल करने के लिए और दरअसल कुछ बनने के लिए कितनी उत्सुक थी ।

"ता–रा–रा–बूम–दी–ए" वह गुनगुनाने लगा । "ता-रा-रा-बूम-दिए !"

और अचानक उसने अपने दोनों हाथ सोफिया की कमर में डाल दिए और उसने भी बिना यह जाने कि वह क्या कर रही है, उसके कन्धे पर अपने दोनों हाथ रखे, क्षण भर तक विभोर होकर, लगभग उन्मत्त सी होकर उसके चतुर, व्यंग्यपूर्ण चेहरे, उसकी भौहों, उसकी आँखों, उसकी सुन्दर दाढ़ी की तरफ देखा ।

"तुम जानते हो कि मैं तुम्हें कितने दिनों से प्यार करती हूँ," सोफिया ने उसके सामने स्वीकार किया और पीड़ा से लज्जित हो उठी और अनुभव किया कि शर्म से उसके होंठ इठे जा रहे थे । "मैं तुमसे प्रेम करती हूँ । तु म मुझे क्यों सताते हो ?"

उसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और वोलोद्या के होठों का गहरा चुम्बन लिया और काफी देर तक, पूरी एक मिनट तक, अपने होंठ नहीं हटा सकी यद्यपि वह जानती थी कि ऐसा करना भद्दा है कि वह उसके विषय में और भी गन्दी धारणा बनाएगा, कि कोई नौकर अन्दर आ सकता है ।"

"ओह, तुम मुझे कितना सताते हो !" उसने दुहराया ।

जब आधे घन्टे बाद, जो कुछ वह चाहता था सब कुछ पाकर, वह भोजन करने के कमरे में खाने पर बैठा हुआ था, उस समय वह उसके सामने घुटनों के बल बैठी, ललचाई निगाहों से उसके चेहरे की तरफ देख रही थी । वोलोद्या ने उससे कहा कि वह एक छोटे से कुत्ते की तरह थी जो एक टुकड़े के इन्तजार में खड़ा था । फिर उसने उसे अपने घुटनों पर बैठा लिया और एक बच्चे की तरह उसे ऊपर नीचे नचाता हुआ गुनगुनाया :

"तारा-रा-बूम-दि-ए...तारा-रा-बूम-दि-ए।"

और जब वह जाने के लिए तैयार होकर उठ रहा था सोफिया ने उससे उत्तेजित होकर फुसफुसाते हुए पूछा:

"कब ? आज ? कहाँ ?" और अपने दोनों हाथ उसके मुँह के सामने कर दिए मानो उत्तर को उनमें पकड़ लेना चाहती हो।

"आज तो मुश्किल से ही मौका मिलेगा," वोलोद्या ने एक मिनट सोचकर कहा, शायद कल।"

और वे अलग हो गए। शाम के खाने से पहले सोफिया लवोव्ना ओल्गा से मिलने मठ में गई, मगर वहाँ उसे बताया गया कि ओल्गा कहीं किसी की लाश पर भजन गा रही थी। मठ से वह अपने पिता के यहां गई और पता लगा कि वह भी बाहर गए हुए थे। फिर उसने एक दूसरी स्लेज पकड़ी और शाम तक सड़कों पर मुँह उठाए घूमती रही। और किसी कारण-वश वह बराबर अपनी बुआ की याद करती रही जिसकी आंखें रोते-रोते लाल पड़ गईं थीं और जिसे कहीं भी शान्ति नहीं मिलती थी।

रात को वे लोग फिर तीन घोड़ों की गाड़ी पर बैठकर शहर से बाहर एक रेस्त्रां में पहुँचे और जिप्सियों का गाना सुना। और लौटकर मठ के बगल में होकर गुजरते समय सोफिया ने ओल्गा के बारे में सोचा और यह सोचकर भयभीत होउठी कि उसके वर्ग की लड़कियों और स्त्रियोंके लिए इसके अलावा और कोई चारा नहीं कि वे इधर-उधर घूमती फिरें, झूठ बोलती रहें, या इन्द्रियोंको वशमें करनेके लिए मठ में चली जांय...दूसरे दिन उसकी अपने प्रेमीसे मुलाकात हुई और फिर सोफिया लवोव्ना एक किराएकी स्लेज में शहर में अकेली इधर-उधर घूमती फिरी और अपनी बुआ के बारे में सोचती रही।

एक हफ्ते बाद वोलोद्या का मन उससे भर गया और उसके बाद जिन्दगी पहले ही की तरह नीरस, दुखी और कभी-कभी वेदनापूर्ण भी बीतने लगी। कर्नल और बोलोद्या घन्टों ताश और बिलियार्ड खेलने में बिता देते। रीता उसी नीरस, आलस्यपूर्ण शैली में कहानियाँ सुनाती और सोफिया लवोव्ना इधर-उधर किराए का गाड़ी में घूमती और अपने पति से प्रार्थना करती रहती कि उसे तीन घोड़ों वाली स्लेज में घुमाने ले चलें।

उसने लगभग रोज ही मठ में जा-जाकर ओलगा को परेशान कर डाला। वह उससे अपने असह्य दुःख का रोना रोती, आंसू बहाती और ऐसा करते समय अनुभव करती कि वह अपने साथ उस कोठरी में .कुछ अपवित्र दयनीय, कुत्सित वस्तु ले आई है और ओलगा मशीन की तरह उसके सामने दुहराती, मानो बार-बार दुहराकर याद किया हुआ पाठ हो, कि इन सब का कोई महत्व नहीं है, कि यह सब बीत जाएगा और ईश्वर उसे क्षमा कर देगा।

एक स्त्री का राज्य

नोटों की एक मोटी गड्डी। यह गड्डी जंगल वाले बङ्गलेसे सहकारी अमीन ने भेजी थी। उसने लिखा था कि वह पन्द्रह सौ रूबल भेज रहा है जो उसे एक मुकद्दमा जीत जाने पर हर्जाने के तौर पर मिले थे। अन्ना एकीमोव्ना 'हर्जाना मिलना' और 'मुकद्दमा जीत जाना' जैसे शब्दों को नापसन्द करती थी और उनसे डरती थी। वह जानती थी कि कानून की शरण लिए बिना काम नहीं चल सकता परन्तु किसी कारणवश जब कभी फैक्टरी का मैनेजर सजारित्स या उसका गाँव का सहकारी अमीन, जो अक्सर मुकद्दमे लड़ा करते थे, उसको लाभ पहुंचाने वाले मुकद्दमे जीत जाते थे तो वह व्याकुल और लज्जित हो उठती थी। इस अवसर पर भी वह व्याकुल और व्यग्र हो उठी और उसने चाहा कि उन पन्द्रह सौ रूबलों को कहीं दूर कर दे जिससे वे उसकी आँखों के सामने से हट जांए।

उसने दुःखी होकर सोचा कि उसकी कमर वाली दूसरी लड़कियाँ— उसकी छब्बीसवीं साल चल रही थीं—इस समय अपने घर को सम्हालने में व्यस्त होंगी, थक गई होंगी और गहरी नींद सोती होंगी और कल सुबह छुट्टी मानने की मनःस्थिति में सोकर उठेंगी। उनमें से कइयों की शादी काफी पहले हो चुकी थी और उनके बाल-बच्चे भी थे। केवल वही, किसी कारणवश, इन पत्रों को देखने, एक बुढ़िया की तरह बैठने, उन पर रिमार्क लिखने, उनका जबाव देने और फिर पूरी शाम से लेकर आधी रात तक कुछ भी न करने बल्कि तब तक इन्तजार करने के लिए जब तक कि नींद न आए, मजबूर थी। और कल लोग सारे दिन बड़े दिन की शुभकामनाएँ

लेकर आते रहेंगे और उससे कुछ माँगते रहेंगे। और परसों फैक्टरी में निश्चित रूप से कोई-न-कोई ऊधम खड़ा होगा—किसी को पीटा जाएगा या कोई ज्यादा शराब पीने की वजह से मर जाएगा और वह आत्मा की कचोट से व्याकुल हो उठेगी, नजारित्श और छुट्टियों के दिन काम से गैर-हाजिर होने की बजह से किन्हीं बीस आदमियों को बर्खास्त कर देगा और वे बीसों आदमी उसके दरवाजे पर अपनी-अपनी टोपियाँ उतारकर धरना देकर बैठ जाएँगे और उसे उनके पास बाहर जाने लज्जा आएगी और उन्हें कुत्तों की तरह भगा दिया जाएगा और उसके सारे जान-पहिचान वाले पीठ पीछे उसकी बुराई करेंगे, उसे गुमनाम खत लिखेंगे कि वह एक करोड़पति और दूसरों का खून चूसने वाली है, कि वह दूसरे आदमियों की जिन्दगी को खा रही है और मजदूरों का खून पीने वाली है।

उसके सामने पड़े हुए खतों का एक ढेर एक तरफ रखा हुआ है। ये सारे खत ऐसे थे जिनमें भीख माँगी गई थी। वे ऐसे व्यक्तियों के थे जो भूखे, शराबी, लम्बे-चौड़े परिवार के बोझ से दबे हुए, बीमार, पतित, और घृणित थे ..। अन्ना एकीमोव्ना ने हरेक खत पर पहले ही से लिख रखा था कि एक को तीन रूबल, दूसरे को पाँच रूबल दे दिए जाएँ आदि। ये खत उसी दिन दफ्तर चले जाएँगे और उसके बाद सहायता करने का काम प्रारम्भ होगा, या जैसा कि क्लर्क कहा करते हैं, जानवरों को खिलाया जाएगा।

वे लोग छोटी-छोटी रकमों में चार सौ सत्तर रूबल और बाटेंगे। यह धन एकिम इवानोविच द्वारा दी गई धर्म खाते की रकम का सूद था जो उसने गरीबों और जरूरतमन्दों की मदद के लिए दान कर रहा था। वहाँ बड़ी गन्दी धक्कमधक्का होगी। फाटक से लेकर दफ्तर के दरवाजे तक चिथड़े पहने, ठन्ड से सुन्न पड़े, भूखे और शराब पिए भयानक चेहरों वाले अजीब लोगों की एक लम्बी कतार लग जाएगी जो भारी आवाजों अन्ना एकीमोव्ना को, जो उनकी रक्षिका थी, और उसके माँ-बाप को असीष दे रहे होंगे। पीछे वाले आगे वालों को आगे दबाएँगे, और आगे वाले गन्दी गालियाँ

बकते हुए उन पर नाराज होंगे। उस शोर से, उन कसमों से, और उन गाती हुई गूँजने की सी आवाजों और दुआओं से परेशान हो उठेगा और दौड़ कर बाहर आएगा और किसी के कान पर कस कर एक घूँसा लगाएगा जिससे और सब बड़े खुश होंगे। उसके अपने आदमी, फैक्टरी के मजदूर, जिन्हें बड़े दिन पर अपनी तनख्वाह के अलावा और कुछ भी नहीं मिला था और जो अपनी आखिरी पाई तक खर्च कर चुके थे, अहाते के बीच में खड़े हो जाएंगे और उन लोगों की तरफ कुछ ईर्ष्या के साथ और कुछ व्यंग्य के साथ देखते हुए हँसते रहेंगे।

"व्यापारी और उनसे भी ज्यादा उनकी बीवियां भिखारियों को अपने नौकरों से ज्यादा प्यार करती हैं," अन्ना एकीमोव्ना ने सोचा। "हमेशा ऐसा ही होता है।"

उसकी निगाह नोटों की उस गड्डी पर पड़ी। मजदूरों में इस घृणित और बेकार पैसोंको बाँट देना अच्छा रहेगा। परन्तु मजदूरोंको बिना किसीबात के कुछ भी देना ठीक नहीं रहेगा वर्ना वे दुबारा फिर मांगेंगे। और सिर्फ पन्दह सौ रूबल बाँटने से क्या लाभ होगा जब कि फैक्टरी में उनकी बीवियों और बच्चों के अलावा अठारह सौ तो मजदूर ही हैं? और, हो सकता है कि वह उन सहायता माँगने वाले खतों में से किसी एक के जीवन में किसी लिखने वाले को छाँट ले—किसी अभागे व्यक्ति को जो बहुत दिनों से जीवन में किसी भी प्रकार का सुख पाने की आशा छोड़ चुका है—और उसे ये पन्द्रह सौ रूबल दे दे। यह रकम उस गरीब आदमी के लिए छप्पर फाड़कर आई हुई दौलत की तरह होगी और शायद अपनी जिन्दगी में पहली बार वह प्रसन्न हो सकेगा। अन्ना एकीमोव्ना को यह विचार मौलिक और मजेदार लगा और इससे वह उमङ्ग में भर उठी। उसने उस ढेर में से वैसे ही एक खत उठा लिया और पढ़ा। चालीकोव नाम का कोई छोटा अधिकारी बहुत दिनों से बेकार और बीमार था और गुश्तचिन बिल्डिग में रह रहा था। उसकी पत्नी को तपेदिक थी और उसके पाँच बच्चे थे। अन्ना एकीमोव्ना उस चौमंजिली गुश्तचिन बिल्डिग को अच्छी तरह जानती थी

जिसमें चालीकोव रहता था ! ओह,यह एक भयानक, गन्दी और अस्वास्थ्यकर इमारत थी।

"अच्छा, मैं यह रकम उस चालीकोव को दूँगी," उसने तय कर लिया। "मैं इसे भेजूँगी नहीं, बेकार की बातों से बचने के लिए अच्छा यह होगा कि मैं खुद ही इसे वहाँ ले जाऊँ।" उसने उस रकम को अपनी जेब में रखते हुए सोचा, मैं उन लोगों को देख भी लूँगी और शायद उन छोटी बच्चियों के लिए भी कुछ कर सकूँ।"

उसकी बेचैनी दूर हो गई। उसने घन्टी बजाई और गाड़ी तैयार करने की आज्ञा दी।

जब वह स्लेज में बैठी तब शाम के छः बज चुके थे। सारे मकानों की खिड़कियाँ तेज रोशनी से चमक रही थीं और उससे वह विशाल अहाता बहुत अन्धकारमय लगने लगा था। फाटक पर, अहाते के उस सुदूर कोने में, गोदाम और मजदूरों की बैरकों के पास बिजली की बत्तियाँ चमक रही थीं।

अन्ना एकीमोव्ना, उन विशाल काली इमारतों, गोदामों और उन बैरकों से जिनमें मजदूर रहते थे, नफरत करती थी और डरती थी। अपने पिताजी की मृत्यु के बाद से अब तक वह सिर्फ एक बार प्रमुख इमारत में में गई थी। लोहे के गार्डरों वाली ऊंची छतें, बड़े-बड़े तेजी से घूमने वाले पहिये, उन्हें जोड़ने वाली पट्टियाँ और ढेकलियाँ, तीखी फुसकारें, लोहे की झनझनाहट, छोटी-छोटी गाड़ियों की खड़खड़ाहट, भाप निकलने की कठोर ध्वनि, पीले लाल और कोयले की राख से काले वे चेहरे, पसीने से भीगी कमीजें, लोहे, तांबे और आग की चमक, कोयले की गन्ध, और तेज हवा के झोंके जो कभी बहुत गरम और कभी बहुत ठंडे होते थे। ये सब बातें उसके सामने नर्क का दृश्य उपस्थित कर देती थीं। उसे ऐसा लगता था मानो वे पहिए, वे ढेकलियाँ और गरम फुसकारते हुए सिलैन्डर अपने बन्धनों को तोड़ कर उन आदमियों को कुचल डालने की कोशिश कर रहे थे जब कि वे आदमी, एक दूसरे की बातों को न सुनते हुए, व्यग्र चेहरों से इधर-उधर

दौड़ते और मशीनों को सम्हालने में व्यस्त उनकी भयङ्कर हरकतों को रोकने की कोशिश कर रहे थे। उन्होंने अन्ना एकीमोव्ना को कुछ दिखाया और आदर के साथ उसके विषय में समझाया। उसने याद किया कि कैसे उस भट्टी में से लोहे की एक लाल छड़ बाहर निकाली गई थी और कैसे एक बुड्ढे ने, जो सिर पर एक पट्टा लपेटे हुए था और एक दूसरे नौजवान ने जो नीली कमीज पहने और सीने पर एक जंजीर लटकाए हुए था और जिसके चेहरे पर क्रोध झलक रहा था, शायद वह फोरमैनों में से एक था—हथौड़े से उस लोहे को पीटा था और कैसे चारों ओर सुनहली चिनगारियाँ उचटने लगी थीं, और कैसे, कुछ देर बाद, वे लोग लोहे की एक लम्बी चौड़ी चादर को खड़खड़ाते हुए खींच कर लाए थे। वह बुड्ढा सीधा खड़ा था और उस नौजवान ने अपनी बांह से अपने चेहरे को पोंछा था और उसे कोई बात समझाई थी। उसने यह भी याद किया कि कैसे एक दूसरे विभाग में एक आँख वाला एक बुड्ढा लोहे के टुकड़े को रेत रहा था और कैसे लोहे के करण उसके चारों तरफ बिखरे पड़े थे, और कैसे काला चश्मा और छेदों वाली कमीज पहने वह लाल बालों वाला आदमी खराद की मशीन पर काम करता हुआ फौलाद के एक टुकड़े में से कुछ बना रहा था, खराद की मशीन गरज रही थी, फुसकार रही थी और शोर मचा रही थी और अन्ना एकामोव्ना उस शोर से परेशान हो उठी थी और उसे ऐसा लगा था मानो वह शोर उसके कानों को फाड़े डाल रहा था। उसने देखा, सुना, कुछ भी नहीं समझी, शान के साथ मुस्कराई और शर्मिन्दा हो उठी। किसी ऐसे काम से जिसे कोई समझता नहीं और पसन्द नहीं कर सकता, लाखों रूबल कमाना कितना अजीब सा लगता।

वह मजदूरों के क्वार्टरों में एक बार भी नहीं गई थी। उसे बताया गया था कि वहाँ सीलन रहती थी, वहाँ खटमल, दुश्चरित्रता और अराजकता थी। यह एक चौंका देने वाली बात थी, उन बैरकों को ठीक रखने के लिए उन पर एक हजार रूबल सालाना खर्च किए जाते थे, फिर भी, अगर वह उन गुमनाम खतों पर यकीन करती तो हर साल उन मजदूरों की हालत और भी ज्यादा खराब होती चली जा रही थी।

"मेरे पिता के समय में व्यवस्था अधिक अच्छी थी," अहाते से बाहर निकलते समय अन्ना एकीमोव्ना ने सोचा, "क्योंकि वे स्वयं मजदूर रह चुके थे। मैं इस विषय में कुछ भी नहीं जानती, सिर्फ ऊटपटाँग काम किया करती हूँ।"

वह फिर उदास हो उठी और अब इस बात से खुश नहीं थी कि वह वहाँ आई थी। उस सौभाग्यशाली व्यक्ति के विषय में जिसे छप्पर फाड़ कर पन्द्रह सौ रूबल मिलने वाले थे उसे यह विचार अब मौलिक और मनोरंजक नहीं प्रतीत हो रहा था। किसी चालीकोव या किसी और के पास जाने का मतलब, जब कि घर पर करोड़ों की लागत का व्यापार धीरे-धीरे बिगड़ और बर्बाद होता जा रहा था और बैरकों में रहने वाले मजदूर कैदियों से भी बुरी जिन्दगी बिता रहे थे, यह था कि वह कोई बेवकूफी का काम कर रही थी और अपनी आत्मा को धोखा दे रही थी। बड़ी सड़क पर और उसके पास वाले खेतों के पार पड़ोस की सूत और कागज की फैक्टरियों वाले मजदूर शहर की रोशनी की तरफ चले जा रहे थे। ठंडी हवा में बातें करने और हँसने की आवाजें गूँज रही थीं। अन्ना एकीमोव्ना ने उन औरतों और नौजवानों की तरफ देखा और उसके मनमें अचानक इसी भीड़ की तरह सादा जीवन बिताने की तीव्र इच्छा खड़ी हुई। उसने स्पष्ट रूप से उन स्मृतियों को दुहराया कि बहुत पहले जब उसे अन्यूत्का कह कर पुकारा जाता था, जब वह एक छोटी-सी बच्ची थी और अपनी मां के साथ एक ही रजाई ओढ़ कर सोया करती थी, जब उन्हीं के साथ रहने वाली धोबिन, बगल वाले कमरे में कपड़े धोया करती थी, जब पतली दीवालों को पार कर पड़ोस के घरों से हँसने की, कसमें खाने की, बच्चों के रोने की, हाथ से बजाने वाले छोटे से बाजे की और बढ़ई की खराद की और सीने की मशीनों की आवाजें आया करती थीं, जब उसका बाप, एकिम इवानोविच, जो हर काम में होशियार था, स्टोव के पास उस शोर और घुटन की कोई भी परवाह न करते हुए कुछ झालता रहता या कोई दूसरा करता रहता था। और वह कपड़े धोने, इस्त्री करने, दूकान और सराय में दौड़ कर जाने

जैसे कि वह जब अपनी माँ के साथ रहती थी, तब हर रोज किया करती थी, के लिए लालायित हो उठी ! उसे एक मजदूरिन होना चाहिए था न कि एक फैक्टरी की मालकिन। उसका विशाल भवन, झाड़, फानूस और तस्वीरें चमकती मूंछों और ऊँचा कोट वाला उसका अर्दली मिशेव्का, और गौरवशाली वर्वारुश्का और मधुरभाषिणी आगापयूश्का और वे युवक और युक्तियाँ जो लगभग प्रतिदिन उससे धन की याचना करने के लिये आया करते थे और जिनके सामने वह किसी कारण वश अपने को गुनहगार महसूस करती थी, और वे क्लर्क, डाक्टर और महिलाएँ जो उसके धन के बल पर दान दिया करते थे, उसकी चापलूसी करते रहते थे और उससे, नीची कुलकी होने के कारण छिपे तौर से नफरत करते रहते थे—यह सब उसके लिए कितना अपरिचित और थका देने वाला था।

यहाँ रेल का फाटक और शहर का दरवाजा था, फिर एक के बाद एक तरकारी की बगिया वाले मकान आए और अन्त में वह चौड़ी सड़क आई जहाँ वह मशहूर गुश्तचिन इमारत थी। वह सड़क, जो आमतौर पर निस्तब्ध रहा करती थी, आज बड़े दिन की शाम होने के कारण जीवन की हलचल से मुखरित हो रही थी। होटल और शराब की दूकानें आदमियों से भरी हुई थीं। अगर कोई व्यक्ति, जो इस हिस्से में न रह कर शहर के बीच में रहता होता और इस समय इस सड़क पर होकर गुजरता होता तो उसे यहाँ गन्दे, शराब पिए और गालियाँ बकते आदमियों के अलावा और कुछ भी नहीं दिखाई देता। परन्तु अन्ना एकीमोव्ना, जो जीवन भर इन लोगों के बीच में रही थी, उस भीड़ में बराबर अपने माता, पिता या चाचा को पहचानती जा रही थी। उसका पिता कोमल और दुर्बल चरित्र वाला, थोड़ा सा सनकी, ओछा और गैर जिम्मेदार व्यक्ति था। वह धन, सम्मान या शक्ति की चिन्ता नहीं करता था। वह कहा करता था फि एक मजदूर के पास छुट्टियाँ मनाने और गिरजे जाने का समय नहीं होता और अगर उसकी पत्नी जोर न देती तो शायद वह कभी भी न तो मृत्यु के समय अपने अपराधों को स्वीकार करता, न धार्मिक संस्कार करता या व्रत रखता। जबकि दूसरी

तरफ उसका चाचा इवान इवानोविच पत्थर की तरह कठोर था। धर्म, राजनीति और नैतिकता से सम्बन्धित प्रत्येक बात में वह कठोर और निर्दय था और केवल अपने ऊपर ही नहीं बल्कि अपने सब नौकरों और परिचितों पर कड़ी निगाह रखता था। भगवान् न करे कि कोई उसके कमरे में अपने ऊपर पवित्र मूर्ति के सम्मुख सलीव का निशान बनाए बिना चला जाता। वह विलास के साधनों से परिपूर्ण भवन, जिसमें अब अन्ना एकीमोव्ना रहती थी, हमेशा बन्द रहता था और उसे वह केवल महत्वपूर्ण छुट्टियों के दिन महत्वपूर्ण अतिथियों के लिए ही खोलता था और खुद आफिस में रहता था जो मूर्त्तियों से भरा हुआ एक छोटा सा कमरा था। वह पुराने धर्म में श्रद्धा रखने वालों का सम्मान करता था और सदैव प्राचीन धर्म विधानों को मानने वाले पादरियों और बिशपों का स्वागत किया करता था। यद्यपि उसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली थी, शादी की थी और कठोर धार्मिक विधानों के साथ अपनी पत्नी को दफनाया था। वह अपने एक मात्र भाई और उत्तराधिकारी एकिम को उसके ओछेपन के कारण नापसन्द करता था, जिसे कि वह सरलता और मूर्खता कहा करता था। वह उसकी धर्म के प्रति उपेक्षा के कारण भी उसे नापसन्द करता था। वह उसके साथ अपने से हीन व्यक्ति के समान व्यवहार करता था। उसने उसे सदा एक मजदूर की स्थिति में रखा और सोलह रूबल मासिक वेतन देता रहा। एकिम अपने भाई को बनावटी सम्मान के साथ सम्बोधित करता और क्षमा माँगने वाले दिन वह, उसकी पत्नी और बेटी उसके सामने जमीन पर माथा टेकते थे। परन्तु मृत्यु होने से तीन वर्ष पूर्व इवान इवानोचिव के अपने भाई के साथ अच्छे सम्बन्ध हो गए थे, उसकी निर्बलताओं को उसने क्षमा कर दिया था और आज्ञा दी थी कि अन्यूत्का के लिए एक शिक्षिका रख ले।

गुर्श्तचिन इमारत के नीचे एक अन्धकारपूर्ण, गहरा और बदबूदार मेहराब के नीचे होकर जाने वाला मार्ग था। दीवालों के पास आदमियों के खाँसने की आवाजें आ रही थी। स्लेज को सड़क पर छोड़ कर अन्ना एकीमोव्ना फाटक में घुसी और वहाँ पूछा कि चालीकोव नामक एक क्लर्क के

छयालीस नम्बर वाले मकान में कैसे पहुँचा जाय। उसे तीसरी मंजिल पर दाँयी तरफ, सबसे आखिरी दरवाजे पर जाने के लिए कहा गया। वहाँ अहाते में और बाहरी दरवाजे के पास और सीढ़ियों पर भी वैसी ही बदबू थी जैसी कि उस मेहराब के नीचे थी। अपने बचपन में अन्ना एकीमोव्ना, जब उसका पिता एक साधारण मजदूर था, इसी तरह की एक इमारत में रहा करती थी और बाद में, जब उनकी स्थिति बदल गई तब वह एक दयालु महिला के रूप में प्रायः वहाँ जाया करती थी। वह संकरों पत्थर का जीना, जिसकी प्रत्येक सीढ़ी गहरी और गन्दी थी और हर मंजिल पर जिसके दरवाजे खुलते थे, वह चीकट से भरी हिलती हुई लालटेन, वह तीखी बदबू, वे टब, वर्तन और दरवाजों के पास लटकते हुए चिथड़े—इन सब से वह बहुत दिनों से परिचित थी...। एक दरवाजा खुला हुआ था। उसके भीतर टोपियाँ पहने यहूदी दर्जी सिलाई करते हुए दीख रहे थे। अन्ना एकीमोव्ना को सीढ़ियों पर आदमी मिले। और उसके दिमाग में यह बात कभी भी नहीं आई कि लोग उसके साथ बदतमीजी कर सकते हैं। वह अब शिक्षित वर्ग के अपने परिचितों के अतिरिक्त किसानों या मजदूरों, शराब पिए हुए या गम्भीर, किसी भी व्यक्ति से नहीं डरती थी।

छयालीस नम्बर में घुसने का कोई दरवाजा नहीं था। उसका दरवाजा सीधा रसोई में खुलता था। यह स्वाभाविक बात है कि मजदूरों और कारीगरों के निवास स्थानों से किराएदारों के व्यवसाय के अनुसार बार्निश, कोलतार, कच्चा चमड़ा, धुँआ आदि की गन्ध आती रहती है। उच्च या अधिकारी वर्ग के उन व्यक्तियों के निवास स्थान जो गरीब हो गए हैं, एक अजीज तीखी और तेज गन्ध से पहचाने जा सकते हैं। इस घृणित गन्ध ने अन्ना एकीमोव्ना को चारों तरफ से घेर लिया जबकि अभी वह बरामदे में ही थी। काला कोट पहने एक व्यक्ति, जो निस्संदेह खुद चालीकोव ही था, एक कौने में पड़ी एक मेज पर दरवाजे की तरफ पीठ किए बैठा था। उसके पास पाँच छोटी-छोटी लड़कियाँ मौजूद थीं। सबसे बड़ी लड़की बालों में कंघा लगाए थी, गोरे चेहरे वाली एक पतली-सी लड़की थी। उसकी

उम्र पन्द्रह वर्ष की सी दिखाई पड़ती थी। सबसे छोटी, एक मोटी ताजी बच्ची जिसके बाल सीधे खड़े थे, तीन साल से ज्यादा की नहीं थी। वे छहों प्राणी खाना खा रहे थे। स्टोव के पास एक बड़ी दुबली-पतली पीले चेहरे वाली औरत खड़ी थी जिसके गर्भ के काफी महीने चढ़ चुके थे। वह एक स्कर्ट और सफेद ब्लाउज पहने हुए थी। उसके हाथ में रसोई का बड़ा-सा चम्मच था।

"मुझे तुमसे इतनी हुक्मउदूली की उम्मीद नहीं थी, लिजा," वह व्यक्ति डाँटते हुए कह रहा था। "थू, थू, शर्म की बात है! तुम चाहती हो कि पापा तुम्हारे हन्टर लगाएँ, क्यों?"

दरवाजे में एक अपरिचित महिला को देखकर वह पतली औरत चौंक पड़ी और चम्मच नीचे रख दिया।

"वासिली निकीतित्श!" वह कुछ रुककर खोखली आवाज में चीखी मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

आदमीयी ने मुड़कर देखा और उछलकर खड़ा हो गया। वह एक सपाट सीना, निकली हुई हड्डियों, संकरे कन्धों और घुसी हुई कनपटियों वाला व्यक्ति था। उसकी आखें छोटी और भीतर घुसी हुई थीं और उनके नीचे कालिमा छा रही थी। उसका मुख चौड़ा और नाक चिड़िया की चोंच की तरह दाहिनी तरफ को कुछ झुकी हुई-सी और लम्बी थी। उसकी दाढ़ी बीच में से काढ़ कर अलग कर दी गई थी, मूँछें सफाचट थीं और इस रूप रेखा में वह एक सरकारी क्लर्क होने की बनिस्पत एक किराये का नौकर जैसा ही अधिक लग रहा था।

"क्या मिस्टर चालीकोव यहीं रहते हैं?" अन्ना एकीमोव्ना ने पूछा।

"जी हाँ, महाशय," चालीकोव ने कठोरतापूर्वक उत्तर दिया परन्तु फौरन ही अन्ना एकीमोव्ना को पहचान कर चीखा, "अन्ना एकीमोव्ना! दाता!" फौरन उसने गहरी साँस ली और अपने हाथ इस तरह बाँधे मानो भयानक रूप से भयभीत हो उठा हो।

कराह कर अस्पष्ट रूप से बुदबुदाता हुआ मानो उसे लकवा मार गया हो वह उसकी तरफ दौड़ा। उसकी दाढ़ी में गोभी के टुकड़े उलझ रहे थे और उस पर से वोदका की गन्ध आ रही थी। उसने उसके दस्ताने पर अपना माथा टिका दिया और ऐसा लगा मानो उसे मूर्च्छा आ रही हो।

"अपना हाथ, अपना पवित्र हाथ!" उसने हांफते हुए कहा। "यह स्वप्न है, एक सुन्दर स्वप्न! बच्चो, मुझे जगाओ!"

वह मेज की तरफ मुड़ा और अपनी मुट्ठियां हिलाते हुए रुंधी आवाज में बोला :

"भगवान ने हमारी सुन ली! हमारा उद्धारक, हमारा फरिश्ता आ गया! हम बचा लिए गए! बच्चो, घुटनों के बल बैठ जाओ! घुटने के बल!"

श्रीमती चालीकोव और सब से छोटी बच्ची को छोड़ कर और सब लड़कियाँ किसी वजह से जल्दी-जल्दी मेज साफ करने लगीं।

"तुमने लिखा था कि तुम्हारी पत्नी बहुत बीमार थी," अन्ना एकीमोव्ना बोली और उसने लज्जा और व्यग्रता का अनुभव किया। "मैं इन लोगों को पन्द्रह सौ रूबल नहीं दूँगी," उसने सोचा।

"यह मेरी पत्नी है," चालीकोव ने पतली जनानी आवाज में कहा मानो उसके आँसू उसके सिर में चढ़ गए हों। "वह यह है, दुखिया! एक पैर कब्र में लटकाए हुए! मगर हम लोग शिकायत नहीं करते, मैडम। इस जिन्दगी से तो मौत अच्छी। अच्छा हो कि दुखिया मर जाय!"

"यह ऐसा अभिनय क्यों कर रहा है?" अन्ना एकीमोव्ना ने नाराज होकर सोचा। "कोई भी तुरन्त पहचान सकता है कि यह व्यापारियों से बातें करने का आदी है।"

"मेरे साथ एक मनुष्य की तरह बातें करो। मैं इस तरह के नाटक से प्रभावित नहीं होती।"

"हाँ, मैडम, अपनी माँ के कफन के चारों तरफ मोमबत्तियाँ हाथ में

लिए पाँच दुःखी बच्चे—यह एक नाटक है ? क्यों ?" चालीकोव ने तीखेपन से कहा और मुड़ गया।

"जबान सम्हाल कर बात करो," उसकी बीबी फुसफुसाई और उसकी बाँह खींची। "यह जगह अभी साफ नहीं हुई है मैडम," अन्ना एकीमोव्ना को सम्बोधन कर उसने कहा; "कृपया इसके लिए क्षमा कीजिए...आप जानती ही हैं कि जहाँ बच्चे होते हैं वहाँ की कैसी हालत रहती है। एक जनाकीर्ण अग्निकुंड परन्तु शान्तिमय।"

"मैं इन्हें वे पन्द्रह सौ नहीं दूँगी," अन्ना एकीमोव्ना ने फिर सोचा।

इन लोगों से और इस बदबू से यथाशीघ्र त्राण पाने के लिए उसने अपना बटुवा निकाला और उन्हें पच्चीस रूबल दे देने की बात सोची, अधिक नहीं, परन्तु एकाएक उसे लज्जा का अनुभव हुआ कि वह इतनी दूर आई और इस छोटी-सी रकम की खातिर इन लोगों को परेशान किया।

"अगर आप मुझे कागज और दवात दे दें तो मैं अपने एक डाक्टर मित्र को फौरन आकर आपको देखने के लिए लिख दूँगी," उसने लज्जा से लाल पड़ते हुए कहा। "बहुत अच्छा डाक्टर है। मैं दवाई के लिए आपको कुछ पैसे भी दे जाऊँगी।"

श्रीमती चालीकोव मेज को साफ करने की जल्दी कर रही थी।

"यहाँ गन्दगी है ! तुम क्या कर रही हो ?" चालीकोव उसकी तरफ गुस्से से देखते हुए फुसकार-सी छोड़ते कहा। "इन्हें पड़ौसी के कमरे में ले जाओ ! मैडम, मैं आपसे पड़ोसी के कमरे में चलने की प्रार्थना करने का साहस कर रहा हूँ," उसने अन्ना एकीमोव्ना को सम्बोधन करते हुए कहा। "वहाँ जगह साफ है !"

"ओसिप इलिच ने हमें उसके कमरे में जाने के लिए मना किया है !" छोटी लड़कियों में से एक तेजी से बोली।

परन्तु वे इस समय तक अन्ना एकीमोव्ना को रसोई से बाहर, दो पलङ्गों के बीच के संकरे रास्ते में होकर ले जा चुके थे। बिस्तरों के

बिछाने के ढङ्ग से यह साफ जाहिर हो रहा था कि एक पर दो प्राणी सीधे लम्बे सोये थे और दूसरे पर तीन आड़े होकर पड़ौसी के कमरे में, जो इसके बाद था, सचमुच स्वच्छता थी। एक साफ सुथरे बिस्तर पर एक लाल ऊनी रजाई, सफेद गिलाफ चढ़ा हुआ एक तकिया, पटुवे के बने मेजपोश से ढकी एक मेज और उस पर दूधिया रङ्ग के काँच का एक कलमदान, कलम, कागज, चौखटों में जड़ी तस्वीरें और प्रत्येक वस्तु करीने से सजी हुई जैसा कि होनी चाहिये, मामूली कामों के लिये एक दूसरी मेज से ढँकी जिस पर सजा कर रखे गये घड़ीसाजी के औजार और घड़ियों के पुर्जे। दीवाल पर लटकते हुए हथौड़े, प्लाइर्स, सूजे, छेनियां, सैड़सियाँ आदि और तीन लटकती हुई दीवाल—घड़ियाँ जो टिक-टिक कर रही थीं, एक बड़ी घड़ी थी जिसकी सुईयाँ मोटी थीं। यह घड़ी वैसी ही थी जैसी कि होटलों में लगी रहती है।

जैसे ही वह खत लिखने के लि! बैठी उसने अपनी तरफ मुँह किए अपना और अपने पिता का चित्र सामने रखे हुए देखे। इससे उसे आश्चर्य हुआ।

"तुम्हारे साथ यहाँ कौन रहता है?" उसने पूछा।

"हमारा किरायेदार पिमेनोव, मैडम। वह आपकी फैक्टरी में काम करता है।"

"ओह, मैंने सोचा कि वह एक घड़ीसाज होगा।"

"वह अपने आराम के समय घड़ियाँ ठीक करता है। उसे इसका शौक है।"

कुछ देर की खामोशी के बाद, जिसमें घड़ियों की टिक-टिक और कागज पर कलम के चलने की आवाज के अलावा और कोई भी शब्द सुनाई नहीं पड़ा, चालीकोव ने गहरी साँस ली और घृणा के साथ कटुता-पूर्वक कहा।

"यह एक सच्ची कहावत है, उच्च वंश में उत्पत्ति और नौकरी में अच्छा स्थान आपको एक कोट मुहैया नहीं कर सकता। आपकी टोपी पर एक झब्बा और एक उच्च पदवी, मगर खाने को कुछ भी नहीं। मेरे विचार से, अगर साधारण वर्ग का कोई व्यक्ति गरीबों की सहायता करता है तो वह किसी भी चालीकोव से, जो गरीबी और दुर्गुणों में डूबा हुआ है, अधिक सज्जन व्यक्ति है।"

अन्ना एकीमोव्ना की खुशामद करने के लिये उसने अपने उच्च कुलोत्पन्न होने के महत्व को घटाने के लिये कुछ और वाक्य कहे और यह स्पष्ट था कि वह अपने को विनम्र दिखाने का प्रयत्न कर रहा था क्योंकि वह स्वयं को अन्ना एकीमोव्ना से श्रेष्ठ समझता था। अन्ना एकीमोव्ना ने तब तक पत्र को समाप्त कर उस पर मोहर लगा दी थी। पत्र को फेंक दिया जायगा और उस पैसे को दवाइयों पर खर्च नहीं किया जायगा—इस बात को वह जानती थी, परन्तु फिर भी उसने मेज पर पच्चीस रूबल रख दिये और एक क्षण सोच कर उसमें दो नोट और जोड़ दिए। उसने देखा कि मैडम चालीकोव का खुरदरा पीला हाथ, मुर्गी के पंजे की तरह झपटा और पैसों को कस कर पकड़ लिया।

"आपने कृपा कर ये पैसे दवाइयों के लिये दिये हैं," चालीकोव ने कांपती आवाज में कहा, परन्तु मेरी तरफ भी सहायता का हाथ बढ़ाइये ... और बच्चों की तरफ भी!" उसने एक सिसकी लेकर आगे कहा। "मेरे दुःखी बच्चे! मैं अपने लिये भयभीत नहीं हूँ, अपनी बच्चियों के लिये मुझे भय है। यह दुर्गुणों रूपी अनेक फन वाला साँप है जिसका मुझे भय है।"

अपने बटुवे के खटके को, जो खराब हो गया था, खोलने की कोशिश करते हुए अन्ना एकीमोव्ना परेशान हो उठी और उसका चेहरा लाल पड़ गया। उसे इस बात से लज्जा महसूस हुई कि लोग उसके सामने खड़े, उसके हाथों की तरफ देखते हुये इन्तजार करते रहे और बहुत सम्भावना है कि अपने मन में उसकी हँसी उड़ा रहे हों। उसी समय कोई रसोई घर में आया और बरफ को झाड़ने के लिये अपने पैर पटके।

"किरायेदार आ गया है," श्रीमती चालीकोव ने कहा।"

अन्ना एकीमोव्ना और भी परेशान हो उठी। वह नहीं चाहती थी कि उसकी फैक्टरी का कोई आदमी उसे इस विचित्र परिस्थिति में देखे। दुर्भाग्य से किरायेदार उसी समय भीतर आ गया जब अन्त में खटका तोड़ कर वह चालीकोव को कुछ नोट दे रही थी और चालीकोव सूअर की तरह गुर्राते हुए मानो उसे लकवा मार गया हो, अपने होठों को चला कर यह देख रहा था कि उसका चुम्बन कहाँ करे। उस किरायेदार के रूप में अन्ना एकीमोव्ना ने उस मजदूर को पहचाना जिसने एक बार पहले, उसके सामने भट्टी में लोहे की चादर पटकी थी और उसे कई बातें समझाई थीं। यह स्पष्ट था कि वह सीधा फैक्टरी से चला आ रहा था, उसका चेहरा काला और भयानक-सा लग रहा था। उसके एक गाल पर नाक के पास राख लगी हुई थी। हाथ पूरी तरह से काले थे और बिना पेटी वाली कमीज तेल और ग्रीस चमक रही थी। वह तीस वर्ष का, औसत कद, काले बाल और चौड़े कन्धों वाला आदमी था और काफी ताकतवर दिखाई पड़ता था। पहली नजर में अन्ना एकीमोव्ना ने सोचा कि वह एक फोरमैन होना चाहिए जिसे कम-से-कम पेंतीस रूबल मासिक तो मिलते ही होंगे, और उसकी आवाज भारी होगी क्योंकि वह मजदूरों के मुँह पर घूँसा जमाता होगा। यह सब उसके खड़े होने के ढङ्ग से, उस व्यवहार से जो उसने एक महिला को अपने कमरे में देख कर स्वाभाविक रूप से प्रकट किया था और सबसे अधिक इस बात से कि वह ऊँचे बूट नहीं पहने था, कि उसके सीने पर जेबें लगी थीं और उसकी दाढ़ी नोकीली और सुन्दर ढङ्ग से छटी हुई थी आदि से स्पष्ट हो रहा था। उसका पिता एकिम इवानोविच फैक्टरी के मालिक का भाई था और फिर भी वह इस किरायेदार जैसे फोरमैनों से भयभीत रहता था और हमेशा उनकी खुशामद किया करता था।

"आपकी अनुपस्थिति में मुझे यहाँ भीतर आने के लिए क्षमा कीजिए," अन्ना एकीमोव्ना ने कहा।

मजदूर ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा, परेशान-सा होकर मुस्कराया और चुप रह गया।

"आप तनिक और जोर से बोलिए, मैडम···" चालीकोव ने धीरे से कहा। "मिस्टर पिमेनोव जब शाम को फैक्टरी से घर लौटते हैं तो कुछ ऊँचा सुनने लगते हैं।"

परन्तु अन्ना एकीमोव्ना अब इस बात से सन्तुष्ट थी कि अब उसे यहाँ और कोई काम नहीं है। उसने उनकी तरफ देख कर सिर हिलाया और तेजी से कमरे से बाहर चली गई। पिमेनोव उसे बाहर छोड़ने आया।

"क्या आप हमारी फैक्टरी में बहुत दिनों से काम कर रहे हैं?" बिना उसकी तरफ मुड़े उसने ऊँची आवाज में पूछा।

"नौ साल से। मैं आपके चाचा के जमाने में फैक्टरी में आया था।"

"बहुत अर्सा हो गया! मेरे चाचा और पिता दोनों सारे काम करने वालों को जानते थे और मैं मुश्किल से एकाध को ही जानती हूँ। मैंने आपको पहले देखा है परन्तु यह नहीं जानती थी कि आपका नाम पिमेनोव है।

अन्ना एकीमोव्ना उसके सम्मुख अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए और यह दिखाने के लिए कि उसने वह पैसा गम्भीरता पूर्वक नहीं बल्कि मजाक में दिया था, इच्छुक हो उठी।

"ओह, यह गरीबी," उसने गहरी सांस ली, "हम लोग छुट्टियों वाले दिनों और काम करने वाले दिनों में दान देते हैं और फिर भी इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं दिखाई पड़ती। मेरा विश्वास है कि इस चालीकोव जैसे आदमियों की मदद करना बेकार है।"

"बेशक, बेकार है।" उसने सहमति जताई। "आप उसे चाहे जितना दें वह सबकी शराब पी जायेगा! और इस समय मिया बीबी उस पैसे को एक दूसरे से छीन रहे होंगे और रात भर लड़ते रहेंगे," उसने हँसते हुए आगे कहा।

"हाँ, यह स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारा यह विश्वप्रेम व्यर्थ, उबा देने वाला और वाहियात है। परन्तु फिर भी आप सहमत होंगे कि हाथ-पर

हाथ धर कर नहीं बैठा जा सकता, कुछ-न-कुछ तो करना ही चाहिए ! मिसाल के तौर पर यही बताइये कि इस चालीकोव परिवार के साथ क्या करना चाहिए ?"

वह पिमेनोव की तरफ घूमी और उसके उत्तर पाने की आशा से रुक गई, वह भी रुक गया और बिना बोले आहिस्ता से उसने अपने कन्धे सिकोड़े। निश्चित रूप से वह जानता था कि इस चालीकोव परिवार के साथ क्या किया जाय परन्तु वह तरीका इतना भद्दा और अतानवीय होता कि वह उसे शब्दों द्वारा प्रकट करने का साहस नहीं कर सका। वह परिवार उसके लिए इतना नीरस और महत्वहीन था कि क्षण भर बाद वह उन्हें भूल गया। अन्ना एकीमोव्ना की आँखों में देखते हुए वह प्रसन्नता से मुस्कराया और उसके चेहरे पर ऐसा भाव छा गया मानो वह कोई मधुर स्वप्न देख रहा था। अन्ना एकीमोव्ना, उसके पास खड़े हुए केवल इसी समय उसके चेहरे और विशेषरूप से आँखोंसे पहचाना कि वह कितना थका और उनींदा हो रहा था।

"मुझे इसे वे पन्द्रह सौ रूबल दे देने चाहिए !" उसने सोचा परन्तु किसी कारणवश यह विचार उसे असंगत और पिमेनोव के लिए अपमान जनक लगा।

"मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने काम के बाद आपके सारे शरीर में दर्द हो रहा होगा और फिर भी आप मेरे साथ दरवाजे तक आए हैं," जैसे ही वे सीढ़ियों से नीचे उतरे उसने कहा। "घर जाइये !"

परन्तु वह उसके शब्दों को सुन नहीं सका। जब वे बाहर सड़क पर आ गए तो वह आगे दौड़ा, स्लेज के पर्दे को खोला और अन्ना एकीमोव्ना को भीतर बैठने में सहायता करते हुए बोला :

"मैं कामना करता हूँ कि बड़ा दिन आपके लिए शुभ हो।"

बड़े दिन की सुबह

"उन्होंने घन्टे बजाने इतनी देर से बन्द कर दिए हैं। यह बहुत बुरी बात है, तुम वहाँ पूजा समाप्त होने से पहले नहीं पहुँच सकोगी! उठो!"

"दो घोड़े दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं," अन्ना एकीमोव्ना ने कहा और जाग पड़ी। उसके सामने हाथ में मोमबत्ती लिए उसकी लाल बालों वाली नौकरानी माशा खड़ी थी। "क्यों, क्या बात है?"

"पूजा समाप्त हो गई," माशा ने निराश होकर कहा, मैंने तुम्हें तीन बार जगाया! मेरी बला से शाम तक सोती रहो परन्तु तुमने खुद ही मुझसे जगा देने के लिए कहा था।"

अन्ना एकीमोव्ना कुहनी के सहारे उठी और खिड़की की तरफ देखा। बाहर अभी तक पूरी तरह से अँधेरा था और सिर्फ खिड़की की चौखट का नीचे वाला हिस्सा ही सफेद बर्फ से ढका हुआ था। उसे घन्टों की धीमी सुरीली आवाज सुनाई दी। यह आवाज पेरिस चर्च से न आकर कहीं दूर से आ रही थी। छोटी मेज पर रखी हुई घड़ी छः बज कर तीन मिनट बजा रही थी!

"अच्छी बात है माशा...तीन मिनट में..." अन्ना एकीमोव्ना ने प्रार्थना के स्वर में कहा और बिस्तर में आराम से दुबक गई!

उसने सामने वाले दरवाजे पर पड़ी बर्फ, स्लेज, काला आसमान, गिरजे की भीड़ और अगरुधूम की गन्ध की कल्पना की और इस विचार से भयभीत हो उठी, परन्तु फिर भी उसने तय किया कि वह तुरन्त उठेगी और सुबह की पूजा में भाग लेने जायगी। जब वह बिस्तर में पड़ी गर्म

हो रही थी और नींद से लड़ रही थी—जो ऐसा लगता है मानो कुढ़ रही हो और जो विशेष रूप से, उस समय बड़ी मधुर लगती है जब किसी को उठना ही हो—और जब पहाड़ पर लगे एक विशाल उद्यान और फिर गुश्तचिन इमारत का स्वप्न देख रही थी, तो उस पूरे समय तक वह इस विचार से चिन्तित रही थी कि उसे उसी समय उठना और गिरजे जाना चाहिए।

परन्तु जब वह उठी तो पूरी तरह उजेला छा चुका था और साढ़े नौ बज रहे थे। रात को भारी हिमपात हुआ था। पेड़ सफ़ेद बर्फ के कपड़े पहने खड़े थे और हवा विशेष रूप से हल्की, स्वच्छ और मधुर थी, इसलिए जब अन्ना एकीमोव्ना ने खिड़की से बाहर देखा तो उसके मन में पहला विचार यह उठा कि वह एक गहरी, बहुत गहरी साँस ले। जब उसने हाथ-मुँह धो लिया तो एक सुन्दर अतीत के बाल्याकाल की भावनाओं का अवशेष—यह खुशी कि आज बड़ा दिन है—एकाएक उसके हृदय में उद्वेलित हो उठा। इसके उपरान्त उसने अपने को हल्का, स्वतन्त्र और आत्मिक रूप से पवित्र अनुभव किया मानो कि उसकी आत्मा भी धोकर साफ करदी गई हो या सफेद बर्फ में गोता लगा कर आई हो। माशा कपड़े पहने और कस कर फीते बांधे हुए भीतर आई और कामना की कि बड़ा दिन शुभ और सुखद हो। फिर वह बहुत देर तक अपनी मालकिन के बाल काढ़ती और कपड़े पहनने में उसकी मदद करती रही। उस नई, भव्य, सुन्दर पोशाक की सुगन्ध और स्पर्श, ने उसकी हल्की-सी खसखसाहट और ताजे इत्र की खुशबू ने अन्ना एकीमोव्ना को उत्तेजित कर दिया।

"अच्छा आज बड़ा दिन है," उसने प्रसन्नता से खिलते हुए माशा से कहा, "आज हम लोग अपने-अपने भाग्य को आजमायेंगे।"

"पिछली साल, मुझे बुड्ढे से शादी करनी थी। तीन बार यही बात निकली थी।"

"भगवान दयालु हैं।"

"अच्छा, अन्ना एकीमोव्ना, मैं सोचती हूँ कि उस बात से तो—कि न तो यही बात हो और न दूसरी ही—यही अच्छा है कि मैं एक बुड्ढे

से शादी कर लूँ," माशा ने दुखी होकर कहा और गहरी साँस ली। "मैं बीस साल की हो चुकी, कोई मजाक नहीं है।"

घर का हरेक व्यक्ति जानता था कि माशा नौकर मिशेन्का से प्रेम करती थी और यह सच्चा, गहरा, और निराश प्रेम तीन साल से चल रहा था।

"अच्छा, अच्छा, बेवकूफी की बातें मत कर," अन्ना एकीमोव्ना ने उसे सान्त्वना दी।

"मैं तीस साल की होने जा रही हूँ परन्तु फिर भी मैं एक नौजवान से शादी करने के इरादे रखती हूँ।"

जब उसकी मालकिन कपड़े पहन रही थी मिशेन्का एक नया फांकदार कोट और चमचमाते बूट पहने हाल में और ड्रांइग रूम में चहल कदमी करता हुआ उसके बाहर निकलने का इन्तजाम कर रहा था जिससे उसे बड़े दिन की शुभकामना दे सके। उसकी चाल विचित्र थी—धीरे धीरे और नजाकत के साथ कदम रखते हुए। उसके हाथों, पैरों और सिर की झुकन को देख कर यह कल्पना की जा सकती थी कि वह सिर्फ घूम ही नहीं रहा था बल्कि 'क्वाड्रिल' नृत्य का पहला पाठ याद कर रहा था। सुन्दर मखमली मूँछों और सुन्दर तथा कुछ-कुछ भरे हुए चेहरे के बावजूद भी वह सर्तक, चतुर और एक बुड्ढे की तरह धार्मिक द्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह जमीन तक झुक कर प्रार्थना करता था और अपने कमरे में, धूप जलाना पसन्द करता था, धनी और उच्चवर्गीय व्यक्तियों का सम्मान करता था और उनके प्रति श्रद्धालु बना रहता था। गरीबों से और उन सब लोगों से जो सहायता माँगने आया करते थे, वह अपनी शुद्ध और एक चपरासी की आत्मा की पूरी शक्ति से घृणा करता था। वह हमेशा अपने स्वास्थ्य के प्रति अत्यधिक सतर्क रहने के कारण जाड़ों और गर्मियों में अपनी कलफदार कमीज के नीचे एक फलालैन की बनयान पहने रहता था तथा उसके कानों में फूई लगी रहती थी।

जब अन्ना एकीमोव्ना ने माशा के साथ हॉल को पार किया तो

मिशेन्का ने अपना सिर जरा-सा नीचे झुकाया और सुन्दर, मधुर स्वर में बोला :

"अन्ना एकीमोव्ना मुझे, हमारे प्रभु के जन्म दिवस के सुन्दर भोज के अवसर पर, आपको बधाई देने का सम्मान प्राप्त हुआ है।"

अन्ना एकीमोव्ना ने उसे पाँच रूबल दिए। बेचारी माशा प्रसन्नता सुन्न सी पड़ रही थी। उसकी छुट्टियों की सज-धज, उसका व्यवहार, उसकी आवाज और उसकी कही हुई बातों आदि ने अपने सौन्दर्य और शिष्टता से उसे प्रभावित कर दिया था। अपनी मालकिन के पीछे जाते हुए वह कुछ भी नहीं सोच सकी, सिर्फ मुस्कराई, पहले प्रसन्नता से और फिर कटुतापूर्वक ऊपरी मंजिल सब से अच्छी थी और मेहमानों की अतिथिशाला कही जाती थी, जब कि 'व्यापार के हिस्से' का नाम—बूढ़े लोगों का या सिर्फ औरतों का हिस्सा—नीची मञ्जिल वाले उन कमरों को दिया गया था जहाँ चाची तात्याना इवानोव्ना का घर था। ऊपरी भाग में संभ्रान्त और शिक्षित व्यक्तियों का स्वागत किया जाता था, नीचे वाली मञ्जिल में मामूली आदमियों और चाची के व्यक्तिगत मित्रों का। सुन्दर, स्वस्थ भरा शरीर, और अब भी अपने को जवान और स्फूर्तिमान और अनुभव करती हुई कि वह एक अत्यन्त सुन्दर पोशाक पहिने हुए है, जो, उसे लगा कि, उसके चारों ओर एक स्निग्ध प्रकाश बिकीर्ण कर रही थी, अन्ना एकीमोव्ना निचली मञ्जिल पर गई। यहाँ उसे डाट खानी पड़ी कि वह अब भगवान को भूल गई है, क्योंकि वह ज्यादा पढ़-लिख गई है, कि वह व्रत का परायण करने नीचे नहीं आई, कि वह प्रार्थना में जाने के बजाय बहुत देर तक सोती रही। उन सभी ने हाथ जोड़े और पूर्ण निष्कपटता के साथ कहा कि वह सुन्दर और अद्भुत है, और उसने इसका विश्वास कर लिया, हँसी, उन्हें चूमा, एक को एक रूबल दिया, औरों को उनकी स्थिति के अनुसार तीन या पाँच रूबल दिए। उसे निचली मञ्जिल पर रहना अच्छा लगता था। जिधर देखिये उधर ही छोटे-छोटे से गिरजे, मूर्त्तियाँ, छोटे दीपक और संतों के चित्र थे—उस स्थान से पादरियों की गन्ध आती थी। रसोई में चाकुओं की

खड़खड़ाहट हो रही थी और भूख को प्रज्वलित कर देने वाली किसी वस्तु की तेज सुगन्ध सारे कमरों में भर रही थी। पीले रंग के फर्श चमक रहे थे और दरवाजों से छोटे-छोटे कम्बल, जिन पर चमकीली नीली धारियाँ पड़ी हुई थीं, छोटे-छोटे रास्तों की तरह मूर्त्तियों वाले फोनों तक चले गए थे। खिड़कियों से होकर धूप भीतर आ रही थी।

खाने वाले कमरे में कुछ अपरिचित वृद्धायें बैठी हुई थीं, बर्बारुश्का के कमरे में भी वृद्धायें और उनके साथ एक बहरी और गूंगी लड़की थी जो किसी बात से लज्जित होकर व्याकुल हो रही थी और बराबर कहे जा रही थी, "ब्ली, ब्ली !.................." दो छोटी लड़कियाँ, जिनकी हड्डियाँ दिखाई दे रही थीं, और जिन्हें अनाथालय से बड़े दिन के अवसर पर यहाँ लाया गया था, अन्ना यकीमोव्ना का हाथ चूमने आई और उसकी भव्य पोशाक से मंत्रमुग्ध-सी होकर जड़वत खड़ी रह गई। उसने गौर किया कि एक लड़की भेंड़ी थी। उसे देखकर उसके हृदय में व्याप्त त्यौहार की प्रसन्नता के मध्य यह सोच कर एक टीस सी उठी कि जवान लड़के इस लड़की से नफरत करेंगे और वह कभी शादी नहीं कर सकेगी। रसोईदारिन अगाफिया के कमरे में पाँच विशालकाय किसान नई कमीजें पहने समोवार के चारों तरफ बैठे हुए थे। ये फैक्टरी के मजदूर नहीं थे बल्कि आगाफिवा के रिश्तेदार थे। अन्ना एकीमोव्ना को देख कर सारे किसान अपनी जगहों से उछल पड़े और उसकी शान से प्रभावित होकर उन्होंने मुँह चलाना बन्द कर दिया, हालांकि उनके मुँह भरे हुए थे। रसोइया स्टेपन सफेद टोपी लगाए, हाथ में एक छुरी लिए, कमरे में भीतर आया और उसके प्रति शुभकामनाएँ प्रकट कीं। ऊँचे फेल्ट बूट पहने द्वारपाल भीतर आए और उन्होंने भी अपनी शुभकामनाएँ प्रकट कीं। अपनी दाढ़ी पर वरफ के कण बिखराये भिश्ती ने भीतर झाँका मगर अन्दर आने की हिम्मत न कर सका!

अपने परिजनों—चाची, बर्बारुश्का, निकान्द्रोव्ना, दर्जिन मार्फा-पेत्रोव्ना और माशा के साथ अन्ना एकीमोव्ना कमरों में होकर गुजरीं। बर्बारुश्का, एक लम्बी और पतली औरत थी। वह घर में लम्बी, काली काली पोशाक पहिने साइप्रस और काफी की गन्ध से गन्धित, हर कमरे में

पवित्र मूर्त्ति के सन्मुख अपने ऊपर सलीब का निशान बनाती और कमर से भी नीचे झुक कर प्रणाम करती चली गई। जब कभी कोई उसकी तरफ देखता तो उसे याद आ जाता कि उसने पहले ही से अपने कफन का इन्तजाम कर लिया है और लौटरी की टिकटें भी उसी सन्दूक में छिपा कर रख रखी हैं।

"अन्यूतिन्का बड़े दिन को रहम करो," उसने रसोई का दरवाजा खोलते हुए कहा, "उसे क्षमा कर दो, उसका कल्याण हो! अब इसे खत्म करो!"

कोचवान पेन्तेले, जिसे नवम्बर में ज्यादा शराब पी लेने के कारण बर्खास्त कर दिया गया था, रसोई के बीचोंबीच घुटनों के बल झुका बैठा था। वह अच्छे स्वभाव का आदमी था परन्तु जब नशे में होता था तो बद-तमीजी पर उतर आता था। ऐसी परिस्थिति में वह सो नहीं सकता था बल्कि बराबर इमारतों में इधर उधर चक्कर काटता और धमकी देता घूमता रहता था कि, मैं इस बारे में सब जानता हूँ।" इस समय उसके पुष्ट और फूले हुए चेहरे और खून की तरह लाल आँखों से यह जाना जा सकता था कि वह नवम्बर से लेकर बड़े दिन तक बराबर शराब पीता रहा था।

"मुझे माफ कर दीजिए, अन्ना एकीमोव्ना" उसने फर्श पर माथा पटकते और अपनी बैल जैसी गर्दन दिखाते भारी आवाज में कहा।

"चाची ने तुम्हें बर्खास्त किया था, उन्हीं से पूछो।"

"चाची की क्या बात है?" रसोई में आते हुए चाची ने गहरी साँस लेते हुए पूछा। वह बहुत मोटी थी और उसकी छाती पर चाय के प्यालों की एक ट्रे और समोवार रखा जा सकता था। "अब चाची की क्या बातें हो रही हैं? तुम यहां की मालकिन हो, अपनी आज्ञायें दो, ये सब बदमाश मर जाँय तो भी मुझे परवाह नहीं। उठो, सुअर!" वह अधीर होकर पेन्तेले पर झल्लाई। "मेरी निगाहों के सामने से दूर हो जाओ। यह आखिरी बार मैं तुम्हें माफ कर रही हूँ। परन्तु यदि तुमने फिर बदमाशी की तो दया की प्रार्थना मत करना!"

फिर वे लोग भोजन करने के कमरे में काँफी पीने गये। परन्तु अभी मुश्किल से बैठे ही थे कि नीचे वाली माशा आतङ्कित होकर दौड़ी आई, और कहा "गाने वाले!" और फिर वापस भाग गई। उन्होंने किसी को नाक साफ करते, धीरे से खाँसते और घोड़ों के नाल जड़े सुमों की सी आवाज करते हुए किसी के पैरों की आवाज को हाँल के पास दरवाजे पर सुना। आधी मिनट तक सब स्तब्ध रहे....गाने वाले इतने अचानक और तेजी से भीतर घुसे कि सब चौंक पड़े। जब वे लोग गा रहे थे तो अनाथालय से पादरी छोटे पादरी और गिरजाघर की सामग्री सम्भालने वाले अधिकारी के साथ भीतर गया। अपनी उपरनी ओढ़ कर पादरी ने धीरे से कहा कि जब वे प्रातःकालीन प्रार्थना के लिये घन्टे बजा रहे थे तब बरफ गिर रही थी और ठन्ड नहीं थी, परन्तु सुबह के पहर पाला तेजी से पड़ रहा था, भगवान रहम करे! इस समय बीस डिग्री पाला पड़ा होना चाहिये।

"बहुत से लोग कहते हैं कि यद्यपि शरद ऋतु ग्रीष्म ऋतु से अधिक स्वास्थ्यवर्धक होती है, छोटे पादरी ने कहा, फिर तुरन्त उसने अपने चेहरे की मुद्रा कठोर बनाली और पादरी के साथ गाने लगा, "तेरा जन्म, ओ ईसा मसीह, हमारे प्रभु..."

फौरन ही महिला चिकित्सालय का पादरी छोटे पादरी के साथ आया, फिर अस्पताल से नर्स और अनाथालय से बच्चे आये और उसके बाद अबाध गति से सङ्गीत सुनाई देने लगा। उन्होंने गाया, भोजन किया और फिर चले गये।

फैक्टरी के लगभग बीस आदमी बड़े दिन की शुभकामना प्रकट करने के लिए आए। उन लोगों में सिर्फ फौरमैन, मैकेनिक और उनके सहायक, साँचा बनाने वाले, मुनीम आदि थे। वे सभी नये काले कोट पहने अच्छी वेशभूषा में थे। वे मजदूरों में से प्रथम श्रेणी के व्यक्ति थे जैसे कि कहा जाता है कि चुने हुए व्यक्ति। प्रत्येक अपनी कीमत जानता था—मतलब यह यह है कि प्रत्येक जानता था कि अगर आज उसकी नौकरी छूट जाय तो

लोग उसे प्रसन्नतापूर्वक दूसरी फैक्टरी में ले लेंगे। यह स्पष्ट था कि वे चाची को पसन्द करते थे क्योंकि उसकी उपस्थिति में वे संकोच-रहित होकर व्यवहार करते थे और सिगरेट भी पीते थे। जब वे सब खाने-पीने के लिये इकट्ठे हो गये तो मुनीम ने उसकी मोटी कमर में अपना हाथ लपेट लिया। वे बेतकल्लुफी से व्यवहार कर रहे थे, शायद, कुछ इस वजह से कि बार्वारुश्का को पुराने मालिकों के जमाने में बहुत अधिक प्रभाव रखती थी और क्लर्कों के चरित्र पर कड़ी निगाह रखती थी परन्तु अब उसके हाथ में इस घर में कोई भी अधिकार नहीं रहा था, और शायद इसलिये कि उनमें से बहुत से अभी भी उस जमाने की याद करते थे, जब चाची तात्याना इवानोव्ना, जिसके भाई उस पर बड़ा प्रभाव रखते थे, इस समय आगाफिया की तरह मामूली किसान औरतों की सी पोशाक पहने हुए थी। उन्हें वे दिन भी याद थे जब अन्ना एकीमोव्ना अहाते में फैक्टरी की इमारतों के चारों तरफ भागती फिरा करती थी और प्रत्येक उसे नन्यूत्का कह कर पुकारता था।

फोरमैनों ने भोजन किया, बातें कीं और अन्ना एकीमोव्ना की ओर आश्चर्य से देखते रहे कि कैसे वह इतनी सुन्दर हो गई थी। परन्तु यह सुन्दर लड़की जो मास्टरनियों और मास्टरों द्वारा पढ़ाई गई थी, उनके लिए अपरिचित थी। वे उसे समझने में असमर्थ रहे और प्रवृत्ति से प्रेरित होकर बराबर चाची में ही उलझे रहे जो उन्हें उनके नाम लेकर पुकारती थीं, बराबर उनसे खाने पीने का आग्रह करती थी और उनके साथ ग्लास टकराती हुई इस समय तक 'रोवेनवरी' शराब के दो ग्लास पी चुकी थी। अन्ना एकीमोव्ना इस बात से सदैव भयभीत रहती थी कि कहीं वे उसे घमण्डिन, नई पैसे वाली या मोर के पङ्ख लगाये कौवा न समझ लें, और अब जबकि फोरमैंन भोजन की मेज के चारों तरफ इकट्ठे हो रहे थे उसने वह कमरा नहीं छोड़ा बल्कि उनकी बातचीत में भाग लिया। उसने अपने कल के परिचित पिमेनोव से पूछा।

"आपके कमरे में इतनी दीवाल-घड़ियाँ क्यों हैं ?"

"मैं घड़ियों की मरम्मत करता हूँ," उसने उत्तर दिया, "जब मौका

मिलता है काम करता हूँ, छुट्टियों वाले दिन या रात में, जब मुझे नींद नहीं आती तब।"

"तो अगर मेरी घड़ी खराब हो जाय तो मैं उसे ठीक कराने आपके पास ला सकती हूँ ?" अन्ना एकीमोव्ना ने हँसते हुए पूछा।

"बेशक, मैं बड़ी खुशी से ठीक कर दूँगा," पिमेनोव बोला और उसके चेहरे पर उस समय कोमल श्रद्धा का भाव छा गया, जब अन्ना ने, स्वयं न जानते हुए कि क्यों, अपनी सुन्दर घड़ी को चैन में से खोला और उसे पकड़ा दिया। उसने उसे खामोशी के साथ देखा और वापस लौटा दिया। "सचमुच, मैं खुशी के साथ इसे ठीक कर दूँगा," उसने दोहराया। "मैं अब जेबी घड़ियों की मरम्मत नहीं करता। मेरी आँखें कमजोर हो गई हैं और डाक्टरों ने महीन काम करने से मना कर दिया है। परन्तु आपके लिए मैं उनकी आज्ञा का उल्लंघन कर दूँगा।"

"डाक्टर लोग वाहियात बातें बकते हैं," मुनीम ने कहा। सब लोग हँसने लगे। "उनका विश्वास मत कीजिए," हँसी से उत्साहित होकर वह आगे कहने लगा, "पिछली साल सिलेन्डर में से एक बड़ा दाँत छिटक कर बुड्ढे काल्मीकोव की खोपड़ी पर इतनी जोर से लगा कि उसका भेजा फट गया। डाक्टरों ने कहा कि वह मर जायेगा, मगर वह जिन्दा है और आज भी काम कर रहा है, उस घटना के बाद वह सिर्फ हकलाने लगा है।"

"डाक्टर वाहियात बातें बकते हैं, यह ठीक है, परन्तु इतनी ज्यादा नहीं," चाची ने गहरी साँस ली। "प्योतर अन्द्रीइच, बेचारा, उसकी आँखें जाती रहीं। वह फैक्टरी में तुम्हारी ही तरह भट्टी के पास दिन-दिन भर काम किया करता था और अन्धा हो गया। आँखों को गर्मी नहीं सुहाती। परन्तु हम लोग कैसी बातें कर रहे हैं ?" उठती हुई वह बोली। "आओ, थोड़ी सी शराब पियो। मेरी सबसे सुन्दर शुभ-कामनाएँ तुम लोगों के साथ बड़े दिन के उपलक्ष में हैं। मैं और किसी के भी साथ कभी नहीं पीती परन्तु तुम्हारे साथ पीती हूँ, पापिष्ठा जो हूँ। भगवान दया कर !"

अन्ना एकीमोव्ना ने सोचा कि कल के बाद से पिमेनोव उसे एक आदर्शवादिनी होने के कारण घृणा करता है परन्तु एक नारी होने के कारण उसके प्रति आकर्षित है। अन्ना ने उसकी तरफ देखा और सोचा कि उसका व्यवहार बड़ा आकर्षक था और उसने सुन्दर पोशाक पहन रखी थी। यह सच था कि उसके कोट की बाँहें काफी लम्बी नहीं थीं और कोट कमर पर तंग मालूम पड़ता था। पतलून भी काफी चौड़ी और फैशनेबुल नहीं थी परन्तु उसकी टाई लापरवाही और सुरुचि के साथ बाँधी गई थी और दूसरों की टाइयों की तरह भड़कीले रङ्ग की नहीं थी। वह एक अच्छे स्वभाव का आदमी लगता था क्योंकि चाची जो कुछ उसकी प्लेट में रख देतीं उसे वह नम्रतापूर्वक खा लेता था। उसने याद किया कि कल वह कितना काला और कितना उनींदा दिखाई पड़ रहा था और इस विचार ने किसी कारणवश उसे प्रभावित कर दिया।

जब वे लोग जाने की तैयारी कर रहे थे, अन्ना एकीमोव्ना ने पिमेनोव की तरफ अपना हाथ बढ़ा दिया। वह उससे कहना चाह रही थी कि वह, बिना किसी तकल्लुफ के कभी-कभी उससे मिलने आ जाया करे परन्तु वह यह नहीं जानती थी कि यह बात कैसे कहे—उसकी जीभ उसका हुक्म नहीं मानेगी—और कहीं वे लोग यह न सोचने लगें कि वह पिमेनोव की तरफ आकर्षित हो उठी है। उसने उसके साथियों से भी हाथ मिलाया :

फिर उस स्कूल के बच्चे आए जिसकी वह संरक्षिका थी। उन सबके बाल छोटे-छोटे कटे हुए थे और सब एक ही से नीले ब्लाउज पहने हुए थे। मास्टर—एक लम्बा, बिना दाढ़ी वाला नौजवान जिसके चेहरे पर लाल चकत्ते पड़े थे—लड़कों को कतार में खड़े करते समय स्पष्ट रूप से उत्तेजित हो रहा प्रतीत हो रहा था। लड़कों ने स्वर के साथ गाया परन्तु उनकी आवाजें मोटी और भद्दी थीं। फैक्टरी का मैनेजर नजारित्श जो गंजी खोपड़ी और तेज आँखों वाला धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था मास्टरों से कभी भी संतुष्ट नहीं रह सका परन्तु इस मास्टर से, जो इस समय व्यग्रता से अपने हाथ हिला रहा था वह नफरत करता था यद्यपि यह नहीं बता सकता था कि क्यों नफरत

करता था। वह इस नौजवान से बड़ी कठोरतापूर्वक और उसे नीची निगाह से देखता हुआ बातें करता था, उसकी तनख्वाह रोक लेता था, पढ़ाई में टाँग अड़ाता था और अन्त में उसे निकालने के लिये उसने बड़े दिन से पन्द्रह दिन पहले एक शराबी किसान को, जो उसकी बीबी का दूर का रिश्तेदार था, जो मास्टर की आज्ञा नहीं मानता था और लड़कों के सामने उससे कड़ी बातें कहता था, स्कूल में चपरासी के पद पर नियुक्त कर दिया था।

अन्ना एकीमोव्ना इन सब बातों को जानती थी परन्तु कर कुछ भी नहीं सकती थी क्योंकि वह खुद नजारित्श से डरती थी। इस समय वह कम-से-कम उस स्कूल मास्टर के साथ अच्छा बर्ताव करना, और यह कहना चाहती थी कि वह उससे बहुत खुश थी, परन्तु जब गाने के बाद वह बड़ा हड़बड़ा कर किसी बात की माँफी माँगने लगा और चाची उससे आत्मीयतापूर्वक बात करने लगीं और उसे बिना तकल्लुफ के मेज पर ले गईं तो अन्ना किसी कारण वश ऊब उठी और व्यग्र हो उठी और बच्चों को मिठाई बांटने की आज्ञा देती हुई ऊपर चली गई।

"सचमुच बड़े दिन के इन रीति रिवाजों में कुछ क्रूरता है," कुछ देर बाद उसने इस तरह मानो अपने आप से कह रही हो, खिड़की से बच्चों की तरफ देखते हुए कहा जो भीड़ बनाकर घर से फाटक की तरफ जा रहे थे। ठण्ड से काँपते अपने कोट पहिनते हुये वे भाग गये। "बड़े दिन को हरेक आराम चाहता है, अपने परिजनों के साथ घर पर बैठना चाहता है और ये गरीब बच्चे, यह मास्टर, ये क्लर्क और फोरमैन किसी कारणवश जाड़े पाले में जाने के लिये, फिर अपनी शुभ-कामनाएँ प्रकट करने के लिये, सम्मान प्रदर्शित करने के लिये, परेशान हो उठने के लिये, मजबूर हो उठते हैं।"

मिशेन्का, जो ड्राइङ्ग-रूम के दरवाजे पर खड़ा था और जिसने यह सुन लिया था बोला:

"यह सब कुछ हमारे साथ नहीं आया है और हमारे साथ समाप्त भी नहीं होगा। बेशक, मैं एक पढ़ा-लिखा आदमी नहीं हूँ, अन्ना एकीमोव्ना परन्तु मैं यह समझता हूँ कि गरीबों को हमेशा अमीरों की इज्जत करनी चाहिये।

यह बहुत अच्छी कहावत है, "भगवान बदमाश की पहचान बना देता है।" जेलों, रात्रि-शरणगृहों और शराबखानों में आप गरीबों के अलाबा और किसी को भी नहीं देखेंगी, जब कि आप देखेंगी कि भले आदमी हमेशा अमीर होते हैं। अमीरों के बारे में कहा गया है कि, "गहरा गहरे को पुकारता है।"

"तुम अपनी बात हमेशा जटिल और दुर्बोध्य ढङ्ग से कहते हो," अन्ना एकीमोव्ना ने कहा और विशाल ड्राइङ्ग-रूम के दूसरे किनारे पर चली गई।

अभी सिर्फ ग्यारह ही बजे थे। कमरे की निस्तब्धता से, जो सिर्फ उस गाने की ध्वनि से जो नीचे से तैरती हुई ऊपर आ रही थी भङ्ग हो जाती थी, उसे जम्हाईयाँ आने लगीं। पीतल की मूर्तियाँ, एल्बम, और दीवाल पर लगे हुए, चित्र जिनमें समुद्र पर एक जहाज, चरागाह में गाएं, और राइन के विभिन्न दृश्य थे आदि वस्तुयें इतनी नीरस थीं कि उसकी निगाह बिना उन्हें ध्यान से देखे, उन पर से गुजरती हुई चली गईं। छुट्टी की उमङ्ग धीरे-धीरे फीकी पड़ती जा रही थी। पहले ही की तरह अन्ना एकीमोव्ना ने अनुभव किया कि वह सुन्दर, मृदुल स्वभाव वाली और अद्भुत है परन्तु अब उसे ऐसा लगा कि वह किसी के भी उपभोग की वस्तु नहीं है, उसे ऐसा लगा कि उसे नहीं मालूम कि उसने किसके लिए और किसलिए यह कीमती पोशाक पहनी थी, और जैसा कि छुट्टियों वाले दिनों में हमेशा होता था वह अकेलेपन से और निरन्तर रहने वाले इस विचार से उद्विग्न हो उठी कि उसका सौंदर्य उसका स्वास्थ्य और उसका धन केवल एक धोखा है क्योंकि उसे कोई नहीं चाहता था, वह किसी के भी काम की नहीं थी और कोई भी उसे प्यार नहीं करता था। वह गुनगुनाती और खिड़कियों से बाहर देखती हुई सारे कमरों में घूमी और ड्राइङ्ग-रूम में रुक कर मिशेन्का से बात करने की अपनी इच्छा को न रोक सकी।

"मैं नहीं जानती कि तुम अपने को क्या समझते हो, मिशा," उसने कहा और एक गहरी सांस ली। "सचमुच, भगवान इसके लिए तुम्हें दंड दे सकता है।'

"आप का अभिप्राय क्या है?"

"तुम जानते हो कि मेरा क्या मतलब है ।अपनी व्यक्तिगत बातों में दखल देने के लिए मुझे क्षमा करना । परन्तु ऐसा लगता है कि अक्खड़ता के कारण तुम अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हो । तुम स्वीकार करोगे कि अब समय आ गया है कि तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए । वह एक बहुत अच्छी और योग्य लड़की है । तुम्हें उससे अच्छी लड़की फिर कभी भी नहीं मिल सकेगी । वह सुन्दर, चतुर, सीधी और सच्चा प्रेम करने वाली है ।···और उसका रूप··· । अगर वह हमारे वर्ग की या और उच्च वर्ग की होती तो लोग केवल उसके लाल बालों के कारण ही उससे प्रेम करने लगते ! देखो न उसके रंग के साथ उसके बालों का कितना सुन्दर मेल है । ओह, मेरे भगवान ! तुम कुछ भी नहीं समझते और यह भी नहीं जानते कि तुम क्या चाहते हो ।" अन्ना एकीमोव्ना ने कटुता के साथ कहा और उसकी आँखों में आँसू झलक उठे । "बेचारी लड़की, मैं उसके लिए बहुत दुःखी हूँ ! मैं जानती हूँ कि तुम्हें धनवान पत्नी चाहिए परन्तु मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूँ कि मैं माशा को दहेज दूँगी ।"

अपनी कल्पना में मिशेन्का अपनी भावी पत्नी को एक लम्बी, मोटी, भारी-भरकम, पवित्र मोर की तरह कदम रख कर चलने वाली, और किसी कारणवश, अपने कन्धों पर एक लम्बा शाल डाले हुए स्त्री के अतिरिक्त और किसी भी दूसरे रूप में नहीं देख सकता था, और माशा पतली, छाहरी, कस कर फीता बाँधे और छोटे-छोटे कदमों से चलने वाली नारी थी और सबसे बुरी बात यह थी कि वह अत्यधिक आकर्षक थी और कभी-कभी मिशेन्का को पूरी तरह मन्त्र-मुग्ध कर देती थी और यह बात, उसकी राय में मातृत्व के लिए असंत और केवल चरित्रहीनता की वृद्धि में ही सहायक होने वाली चीज थी । जब अन्ना एकीमोव्ना ने माशा को दहेज देने का वायदा कर दिया तो वह कुछ समय तक हिचकिचाता रहा; परन्तु एक बार अपनी पोशाक के ऊपर भूरा ओवरकोट पहने एक गरीब विद्यार्थी, अन्ना एकीमोव्ना के लिए एक पत्र लेकर आया था तो माशा को देख कर आकर्षित हो उठा था और टोप टाँगने की जगह माशा का आलिंगन करने से अपने को न रोक सका था

और माशा धीरे से चीख पड़ी; ऊपर सीढ़ियों पर खड़े हुए मिशेन्का ने यह देख लिया था और उसी समय से वह माशा से घृणा करने लगा था। एक गरीब विद्यार्थी ! कौन जानता है कि अगर एक अमीर विद्यार्थी या एक अफसर ने उसे आलिंगन पाश में आबद्ध किया होता तो परिणाम कुछ और ही निकलता ।,

तुम शादी करना क्यों नहीं चाहते ?" अन्ना एकीमोव्ना ने पूछा "और क्या चाहते हो ?"

मिशेन्का खामोश खड़ा रहा और आराम-कुर्सी की तरह निगाह जमाए उसने भौंहें ऊपर चढ़ाईं।

"तुम किसी और से प्रेम करते हो ?"

मिशेनका खामोश रहा। लाल बालों वाली माशा ट्रे पर पत्र और बिजिटिंग कार्ड रखे हुए आई। यह भांप कर कि वे उसके बारे में बातें कर रहे थे, लज्जा से उसकी आँखों मैं आँसू भर आये।

"डाकिया आया है" वह बुदबुदाई। "और नीचे चालीकोव नामक एक क्लर्क प्रतीक्षा कर रहा है। वह कहता है कि आपने उसे आज किसी किसी काम के लिये बुलाया था।"

"क्या बदतमीजी है !" अन्ना एकीमोव्ना ने क्रुद्ध होते हुए कहा। "मैंने उसे कोई आज्ञा नहीं दी थी। उससे कहो कि अपनी तशरीफ का टोकरा ले जाय, कहो कि मैं घर पर नहीं हूँ।"

एक घन्टी सुनाई दी उसके चर्च का पादरी आया था । उन लोगों को हमेशा मकान के सजे हुए हिस्से में बैठाया जाता था — मतलब यह कि ऊपरी मंजिल पर। पादरी के बाद फैक्टरी का मैनेजर नजारित्श मिलने आया और फिर फैक्टरी का डाक्टर आया उसके बाद मिशेन्का ने प्रारम्भिक पाठशालाओं के निरीक्षक के आने की सूचना दी। मिलने वाले बराबर आते रहे।

जब एक क्षण का भी अवकाश मिलता तो अन्ना एकीमोव्ना ड्राँइन रूम में एक गहरी आराम—कुर्सी में धँस जाती और आँखें बन्द कर सोचने लगती कि उसका यह एकाकीपन पूर्ण स्वाभाविक है क्योंकि उसने शादी

नहीं की थी और न कभी करने का ही विचार है।.........परन्तु यह उसकी गलती नहीं थी। भाग्य ने उसे सीधे-सादे मजदूरों के उस वातावरण से बाहर निकाल फेंका था, जिसमें, अपनी याददाश्त पर भरोसा कर सके, वह अपने को अत्यन्त सुखी और निश्चित अनुभव करती थी। इन विशाल कमरों में रहती हुई वह कभी भी नहीं सोच सकी कि अपने साथ क्या करे और यह नहीं समझ सकी कि उसकी आँखों के सामने होकर बराबर इतने आदमी क्यों गुजरते हैं। जो कुछ अब हो रहा था वह उसे अत्यन्त तुच्छ व्यर्थ प्रतीत हुआ क्योंकि इसने उसे एक मिनट के लिए भी शान्ति नहीं दी और न दे सकता था।

"काश कि मैं किसी से प्रेम कर सकती," उसने अङ्गड़ाई लेते हुए सोचा। इस बात के विचार मात्र ने ही उसके हृदय को आन्दोलित कर दिया। "काश कि मैं फैक्टरी से छुटकारा पा सकती......उसने यह कल्पना करते हुए विचार किया कि किस प्रकार इन फैक्टरी की इमारतों, बैरकों और स्कूलों का बोझ उसकी आत्मा पर से उतर जायगा, उसके दिमाग से हट जायगा।......फिर उसने अपने पिता को याद किया और सोचा अगर वे और ज्यादा दिनों तक जीवित रहते तो निश्चित रूप से उसकी शादी किसी मजदूर के साथ कर देते—जैसे कि पिमेनोव के साथ। वे उससे शादी कर लेने के लिए कहते और इस बारे में इतना ही सब कुछ होता। और यह बहुत अच्छी बात होती, फिर यह फैक्टरी किसी योग्य व्यक्ति के हाथों में चली जाती।

उसने पिमेनोव के घुँघराले बालों वाले सिर का, उसके साहसी चेहरे का, उसके कोमल व्यंगपूर्ण होटों और शक्ति का, उसके कन्धों और हाथों का, उसके सीने की भयानक शक्ति और कोमलता का जिसके साथ उसने उस दिन उसकी घड़ी को देखा था, चित्र खींचा।

"हाँ," वह बोली, "यह बिल्कुल ठीक रहता।....मैं इससे शादी कर लेती।"

"अन्ना एकीमोव्ना," निःशब्द पगों से ड्राइङ्ग रूम में आते हुए मिशेन्का ने कहा।

"तुम मुझे कितनी बुरी तरह से डरा देते हो !" बुरी तरह से तरह काँपती हुई वह कह उठी। क्या चाहते हो !"

"अन्ना एकीमोव्ना," अपने हाथों को अपने हृदय पर रखते और भौंहों को चढ़ाते हुए वह बोला, आप मेरी मालकिन और संरक्षिका हैं, और आपके अतिरिक्त मुझे और कोई भी नहीं बता सकता कि मैं शादी के विषय में क्या करूँ, क्योंकि आप मेरे लिए माँ की तरह ममतामयी हैं।

"........परन्तु कृपा कर नीचे वालों से मना कर दीजिए कि वे मुझ पर हँसें नहीं और न मेरा मजाक उड़ाएँ। वे लोग ऐसा किए बिना वहाँ से मुझे गुजरने ही नहीं देते।"

"वे तुम्हारा कैसे मजाक उड़ाते हैं ?"

"वे मुझे माशेन्का का मिशेन्का कह कर पुकारते हैं।"

"फू, क्या वाहियात बात है !" अन्ना एकीमोव्ना गुस्से में चिल्लाई। "तुम कितने शैतान हो ! तुम कितने मूर्ख हो ! मैं तुमसे कितनी परेशान हूँ। मैं तुम्हारी शक्ल भी नहीं देखना चाहती।"

"तुम किसी से प्रेम करते हो ?"

भोजन

उससे गत वर्ष की ही तरह, सबसे अन्त में मुलाकात करने आने वालों में क्रिलिन, एक वास्तविक नागरिक परामर्श दाता, और लिसेविच, एक प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। उनके आने के समय तक अँधेरा हो चुका था। क्रिलिन, साठ साल का एक व्यक्ति था। उसका मुँह चौड़ा और कानों तक छाये भूरे गलमुच्छे थे, चेहरा बिल्ली के समान एक जङ्गली जानवर का सा था। वह सफेद पतलून और 'अन्ना तमंगा' लगी पोशाक पहने हुये था। वह अन्ना एकीमोव्ना का हाथ अपने हाथों में बहुत देर तक पकड़े रहा और उसके चेहरे को बराबर टकटकी बाँध कर देखता रहा। उसने अपने होंठ चलाये और अन्त से प्रत्येक शब्द पर जोर देते हुए गलगलाते स्वर में बोला :

"मैं तुम्हारे चाचा का...तुम्हारे पिता का सम्मान किया करता था और मुझे उनका मित्र होने का सौभाग्य प्राप्त था। अब जैसा कि तुम देख रही हो मैं इसे अपना आनन्दपूर्ण कर्त्तव्य समझता हूँ, कि उनकी उत्तराधिकारिणी के प्रति अपनी कमजोरी और उस दूरी के रहते हुए भी जिसे पाकर मैं यहाँ आया हूँ बड़े दिन की शुभकामना प्रकट करूँ।...मैं तुम्हें स्वस्थ देखकर बहुत प्रसन्न हूँ।"

वकील लिसेविच, एक लंबा, सुन्दर गोरा व्यक्ति था, उसकी कनपटियों और दाढ़ी पर हल्की सफेदी थी। वह अपने विशिष्ठ ललित व्यवहार के लिये प्रसिद्ध था। वह लहराते डगों से चलता था, सलाम करता था, इस तरह मानो अनिच्छापूर्वक कर रहा हो और बात करते समय कन्धे उचकाता था, और यह सारे काम एक आलस्यभरी भव्यता के साथ, अस्तबल से अभी

ताजा आये हुए बिगड़ेले घोड़े की तरह करता था। वह मोटा, अत्याधिक स्वस्थ और खूब सम्पन्न था। एक बार उसने चालीस हजार रूलब जुए में जीते थे परन्तु अपने दोस्तों से इस बात को छिपा गया था। वह अच्छे भोजन का शौकीन था; खासतौर से पनीर गुच्छी और सन के तेल में तली हुई खूब करारी मछली बहुत पसन्द थी। जैसा कि उसने बताया था जब वह पेरिस में था, वहाँ उसने पकी हुई परन्तु बिना साफ की हुई आंतें खाई थीं। वह आराम से बिना रुके, बिना झिझके और कभी-कभी ही बोलता था और वह भी प्रभाव डालने के लिए। बोलते समय वह इस तरह रुकता और अपनी उंगलियाँ चलाता रहता था मानो कोई शब्द ढूंढ़ रहा हो। बहुत पहले से ही उसने, जो कुछ वह अदालतों में कहता था, उनमें विश्वास करना बन्द कर दिया था। शायद वह उनमें विश्वास करता था परन्तु उन्हें कोई महत्व नहीं देता था। यह सब कुछ उसके लिए इतने लम्बे अरसे से परिचित नीरस और साधारण-सा बन गया था। वह नवीन और अद्भुत बातों को छोड़ कर और किसी में भी विश्वास नहीं करता था। नवीन रूप से उपस्थित किये जाने पर कोई भी सामान्य उपदेश उसे गद्गद् बना देता था। उसकी दोनों नोटबुकें अद्भुत विचारों से रङ्गी पड़ी थीं जो उसने विभिन्न लेखकों की पुस्तकों में पड़े थे, और जब उसे किसी विचार की आवश्यकता पड़ जाती तो वह दोनों कापियों को काँपते हाथों से उलटने लगता और आमतौर पर उसे ढूंढ़ने में असफल रहता। अन्ना एकीमोव्ना के पिता ने मौज में आकर उसे गर्वपूर्वक फैक्टरी से सम्बन्धित मामलों का कानूनी सलाहकार नियुक्त कर दिया था और उसका वेतन बारह हजार रूबल नियत किया था। फैक्टरी के कानूनी मामले दो या तीन कर्ज वसूल करने वाले मुकद्मों तक ही सीमित रहते थे। लिसेविच उन्हें अपने सहकारियों को सौंप देता था।

अन्ना एकीमोव्ना जानती थी कि उसे फैक्टरी का कोई भी काम नहीं करना पड़ता परन्तु वह उसे निकाल नहीं सकी—उसमें इतना नैतिक साहस नहीं था और साथ ही वह उसकी आदी हो गई थी। वह स्वयं को उसका कानूनी सलाहकार कहा करता था और अपने वेतन को जिसे वह

बिना भूले महीने की ठीक पहली तारीख को मंगा लिया करता था, उसे 'कठोर गद्य' कहा करता था। अन्ना एकीमोव्ना जानती थी कि जब उसके पिता की मृत्यु के पश्चात्, उसके जंगल की लकड़ी रेल के स्लीपरों के लिए बेची गई थी तो लिसेविच को उस सौदे में पन्द्रह हजार से अधिक की रकम मिली थी और उसने इसे नजारित्श के साथ बाँट लिया था। जब पहले-पहल उसे ज्ञात हुआ कि उन्होंने उसे धोखा दिया था तो वह बुरी तरह रोई थी परन्तु बाद में वह इसकी आदी हो गई थी।

उसके प्रति बड़े दिन की शुभकामना प्रकट कर और उसके दोनों हाथों को चूम कर, उसने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और भौंहों में बल डाले।

"तुमको नहीं होमा चाहिए," उसने वास्तविक निराशा के साथ कहा। "मैंने तुमसे कह रखा है, माई डियर, तुमको नहीं होना चाहिए।"

"आप क्या कहना चाह रहे हैं, विक्टर निकोलाइच ?"

"मैंने तुमसे कहा था कि तुम्हें मोटा नहीं होना चाहिए। दुर्भाग्य-वश तुम्हारे सारे खानदान में मोटे होने की प्रवृत्ति है। परन्तु तुमको नहीं होना चाहिए," उसने प्रार्थना के से स्वर में कहा और उसका हाथ चूम लिया। "तुम इतनी सुन्दर हो! तुम इतनी श्रेष्ठ हो! देखिये, महामहिम मुझे आपसे संसार की एक मात्र महिला से परिचित कराने दीजिए, जिसे मैं हमेशा से सच्चा प्यार करता आ रहा हूँ।"

"इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है तुम्हारी अवस्था में अन्ना एकीमोव्ना से परिचित होना और उससे प्रेम न करने लगना असम्भव है।"

"मैं इसकी पूजा करता हूँ," वकील पूर्ण सच्चाई के साथ परन्तु अपनी उसी स्वाभाविक आलस्यपूर्ण भव्यता के साथ कहता गया। "मैं इसे प्यार करता हूँ परन्तु इसलिए नहीं कि यह एक स्त्री है और मैं एक पुरुष हूँ। जब मैं इसके पास होता हूँ तो हमेशा महसूस करता हूँ कि मानो वह नारी और पुरुष दोनों से परे किसी तीसरे वर्ग की है और मैं किसी चौथे प्रकार का प्राणी हूँ और हम दोनों साथ-साथ सूक्ष्मतम छायाओं वाले प्रदेश

की ओर उड़ते चले जा रहे हैं और वहाँ अपने कल्पित लोक में एकाकार हो जाते हैं। लिकोन्ते-डि-लिस्ले ऐसे सम्बन्ध को सबसे अच्छा बताता है। उसने एक अत्यन्त सुन्दर वाक्य लिखा है, एक अत्यन्त सुन्दर वाक्य…"

लिसेबिच ने एक नोटबुक को पलटा, फिर दूसरी में ढूँढ़ा और उस उद्धरण को न पाकर चुप होकर बैठ रहा। वे लोग मौसम, ओपेरा और ड्यूस के शीघ्र ही आगमन के बारे में बातें करने लगे। अन्ना एकीमोव्ना ने याद किया कि गत वर्ष लिसेबिच और क्रिलिन ने उसके साथ भोजन किया था और इस समय जब वे जाने की तैयारी करने लगे तो वह पूर्ण सच्चाई के साथ यह कहते हुए उनसे प्रार्थना करने लगी कि क्योंकि उन लोगों को अब और किसी से भी मिलने नहीं जाना है इसलिए उन्हें उसके साथ भोजन करने के लिए ठहरना चाहिए। कुछ हिचकिचाहट के बाद वे राजी हो गए।

अगर उन्हें बड़ी छुट्टियों वाले दिन किसी मेहमान को ऊपरी मंजिल में खाना खिलाना होता तो रसोई में साधारण पारिवारिक भोजन के साथ जिसमें गोभी का शोरबा, दूध पीता सूअर का बच्चा, सेवों के साथ वत्तख आदि चीजें होती थीं, एक तथाकथित 'फ्रेंच' या 'बड़े लोगों का' भोजन पकाया जाता था। जब उन्होंने भोजन-गृह में प्यालों और तश्तरियों की खनखनाहट सुनी तो लिसेबिच एक दिखाई पड़ने वाली उत्तेजना के वशीभूत हो उठा। उसने अपने हाथ मले, कन्धे उचकाए, आँखें सिकोड़ीं और भावुक होकर बताने लगा कि पहले उसके चाचा और पिता कैसा भोज दिया करते थे और यहाँ का रसोइया चपटी मछली का बड़ा स्वादिष्ट शोरबा बनाया करता था। यह शोरबा न होकर एक यथार्थ स्वर्गीय आनन्द होता था। वह इस समय अपनी कल्पना में भोजन पर ललचाई निगाहें जमाए उसे खा रहा था और मजा ले रहा था। जब अन्ना एकीमोव्ना ने उसकी बाँह पकड़ी और भोजन-गृह की ओर ले चली, उसने वोद्का का एक ग्लास चढ़ाया और मछली का एक टुकड़ा मुँह में डाल लिया। वह आनन्द से गरगलाने लगा और जोर से आवाज करते और नाक से शोर मचाते हुए उसे चबाने लगा। खुशी के मारे उसकी आंखों में पानी भर आया।

भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। उसमें और चीजों के साथ ताजे सफेद मक्खन में लिपटे हुए कुक्कुरमुत्ते और एक विशेष प्रकार की चटनी थी जो तले हुए केंकड़ों और एक विशेष प्रकार की मछली के साथ तेज मिर्चें मिला कर बनाई गई थी। भोजन छुट्टियों वाले दिन बनने वाली, अनेक प्रकार की चीजों वाला और बहुत अच्छा था और शराबें भी ऐसी ही थीं। मिशेन्का उत्साह के साथ परोस रहा था। वह जब कोई नई चीज मेज़ पर रखता और उसका चमकता हुआ ढक्कन हटाता या शराब उड़ेलता, तो यह सारे काम एक जादूगर की सी गम्भीरता के साथ करता था। उसके चेहरे और 'क्वाड्रिल' नृत्य के प्रारम्भिक पगों की तरह उठते हुए उसके पैरों को देख कर वकील ने कई बार सोचा, "कैसा मूर्ख है।"

तीसरे दौर के बाद लिसेविच ने अन्ना की तरफ मुड़ते हुए कहा।

"एक सुन्दर नवयुवती—मेरा मतलब है कि जब वह युवती और धनवान भी है—तो उसे स्वतन्त्र, चतुर, ललित, बुद्धिमती, साहसी और थोड़ी सी चरित्र की ढीली होना चाहिए। चरित्र को ढीली सीमा के भीतर थोड़ी-सी ही क्योंकि तुम जानती हो, अति उबा देने वाली होती है। तुम्हें बढ़ना नहीं चाहिए, माई डियर, तुम्हें, दूसरों की तरह नहीं रहना चाहिए बल्कि जीवन का पूर्ण आनन्द लेना चाहिए। दुश्चरित्रता का हल्का सा बघार जीवन को चटनी की तरह चटपटा बना देना है। मादक सुगन्ध वाले फूलों में रह कर मद्यपान करो, कस्तूरी की गन्ध में साँसें लो, भाँग खाओ और सब से अच्छा यह है कि प्रेम करो, प्रेम करो।...और प्रारम्भ करने के लिए मैं तुम्हारी जगह सात प्रेमी बैठा दूँगा—हफ्ते के हर दिन के लिए एक; और एक को मैं सोमवार कहूँगा, दूसरे को मंगलवार, तीसरे को बुद्धवार इत्यादि जिससे हरेक को अपना दिन याद रहे।"

इस बातचीत से अन्ना एकीमोव्ना परेशान हो उठी। उसने कुछ भी नहीं खाया और सिर्फ एक ग्लास शराब का पिया।

"अन्त में मुझे भी कुछ कहने दीजिये" उसने कहा, "जहाँ तक मेरा

व्यक्तिगत प्रश्न है, मैं प्रेम को पारिवारिक जीवन के बिना स्वीकार नहीं कर सकती। मैं एकाकिनी हूँ, अकेली जैसे कि आकाश में चन्द्रमा, और वह भी निरन्तर क्षीण होता हुआ चन्द्रमा; और आप चाहे जो कहें, मुझे विश्वास है, मैं महसूस करती हूँ कि इस नष्ट होने की स्थिति को केवल साधारण एवं भौतिक प्रेम के द्वारा ही रोका जा सकता है। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसा प्रेम मेरे कर्त्तव्यों की रूपरेखा निर्धारित करेगा, मुझे मेरे काम बताएगा और जीवन के प्रति मेरे दृष्टिकोण को स्पष्ट करेगा। प्रेम के द्वारा मैं आत्मा की शान्ति और निर्मलता चाहती हूँ; मैं कस्तूरी-गन्ध, आध्यात्मिकता और एक सुन्दर नवयुवती होने से नितान्त भिन्न वस्तु चाहती हूँ···संक्षेप में"—वह व्यग्र हो उठी—'एक पति और बच्चे चाहती हूँ।"

"तुम शादी करना चाहती हो? अच्छा तुम वह भी कर सकती हो," लिसेविच ने सहमति जताई। "तुम्हें सब तरह के अनुभव करने चाहिए; विवाह, ईर्षा और नास्तिकता की प्रथम मधुरता और बच्चे भी।···परन्तु जल्दी करो और जीवन बिताओ—जल्दी करो, माई डियर, समय निकलता जा रहा है, वह इन्तजार नहीं करेगा।"

'हाँ मैं जाऊँगी और शादी कर लूँगी।" उसके भरे सन्तुष्ट चेहरे की तरफ गुस्से से देखती हुई वह बोली। "मैं बिल्कुल सादे और साधारण ढंग से शादी करूँगी और प्रसन्नता से खिल उठूँगी। और, क्या आप विश्वास करेंगे कि मैं किसी मामूली मजदूर, किसी मैकैनिक या ड्राफ्ट्समैन से शादी करूँगी।"

"इसमें भी कोई नुकसान नहीं है! डचेज जोसिआना ग्यिनप्लिन से प्रेम करती थी और उसके लिए इसका कोई बन्धन नहीं था क्योंकि वह एक ग्रान्ड डचेज थी। हर चीज तुम्हारे लिए भी सम्भव हो सकती है क्योंकि तुम एक असामान्य नारी हो। माई डियर, अगर तुम एक नीग्रो या एक अरब से प्रेम करना चाहती हो तो हिचकिचाना मत, किसी नीग्रो को बुला लेना। अपने को किसी चीज से वंचित मत रखना। तुम्हें अपनी इच्छाओं के समान ही साहसी होना चाहिए उनसे पीछे मत रह जाना।"

"क्या मुझे समझना इतना मुश्किल हो सकता है ?" अन्ना एकीमोव्ना ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। उसकी आँखों में आँसू चमकने लगे। "इस बात को समझिए कि मुझको बहुत बड़ा व्यवसाय सम्हालना है, दो हजार मजदूर जिनके लिये मुझे भगवान के सामने जवाब देना पड़ेगा। वे लोग जो मेरे लिये काम करते हैं अन्धे और बहरे हो जाते हैं इस तरह आगे बढ़ने म मैं भयभीत हूँ, मुझे डर लगता है ! मैं दुखी हूँ और आप इतने निर्दयी हैं कि मुझसे नीग्रो की बातें करते हैं...और मजाक उड़ाते हैं !" अन्ना एकीमोव्ना ने मेज पर घूँसा मारा। "जैसी जिन्दगी मैं इस समय बिता रही हूँ उसी तरह की बिताते जाना या अपने ही समान किसी आलसी और अयोग्य व्यक्ति से विवाह कर लेना, पाप होगा। मैं इस तरह जिन्दगी नहीं बिता सकती," उसने तेज होकर कहा, "नहीं बिता सकती।"

"यह कितनी सुन्दर है !" लिसेविच ने मन्त्रमुग्ध होते हुये कहा, "मेरे भगवान, यह कितनी सुन्दर है ! परन्तु तुम नाराज क्यों हो माई डियर ? सम्भव है मैं गलत होऊँ, परन्तु बेशक तुम यह नहीं सोचतीं कि अगर, उन विचारों के लिये जिनके प्रति मेरी अटूट आस्था है, तुम जीवन के सुखों को त्याग दो और एक नीरस जीवन बिताओ तो तुम्हारे मजदूर क्या इसमें तुम्हारी कोई भलाई कर सकेंगे ! रत्ती भर भी नहीं ! नहीं, चपलता, चपलता !" उसने निश्चयात्मक ढंग से कहा। "यह तुम्हारे लिये जरूरी है, यह तुम्हारा कर्त्तव्य है कि तुम चपल और चरित्रहीन बनो ! इस पर विचार करो, माई डियर, इस पर विचार करो।"

अन्ना एकीमोव्ना खुश थी कि उसने सब बातें कह दी थीं और इससे वह उत्साहित हो उठी। वह सन्तुष्ट थी कि उसने अपनी बात इतनी अच्छी तरह से कही थी और उसके विचार इतने अच्छे और उचित थे और उसे पूर्ण विश्वास हो चुका था कि, मान लो अगर पिमेनोव उससे प्रेम करता हो तो वह खुशी के साथ उससे विवाह कर लेगी।

मिशेन्का ने शैम्पेन ढालनी शुरू कर दी।

"आप मुझे नाराज कर देते हैं, विक्टर निकोलाइच," वकील के ग्लास के साथ अपना ग्लास टकराते हुये वह बोली। "मुझे ऐसा लगता है कि आप सलाह देते हैं और खुद जिन्दगी के बारे में कुछ भी नहीं जानते। आपके हिसाब से, अगर कोई व्यक्ति मैकेनिक या ड्राफ्टसमैन हो तो उसे एक किसान और एक मूर्ख होना ही चाहिये! मगर ये लोग सबसे चतुर होते हैं! असामान्य व्यक्ति होतेहैं?"

"तुम्हारे चाचा और पिता.. मैं उन्हें जानता था और उनका सम्मान करता था..." क्रिलिन जोर देने के लिये रुकते हुए बोला (वह एक खम्भे की तरह सीधा बैठा हुआ था और पूरे समय तक मन लगाकर खाना खाता रहा था) "काफी सूझबूझ वाले व्यक्ति थे...ऊँची आध्यात्मिक शक्तियों वाले थे।"

"ओह, बेशक, हम उनकी विशेषताओं के विषय में सब जानते हैं," वकील बड़बड़ाया और सिगार पीने की इजाजत माँगी।

जब भोजन समाप्त हो गया तो क्रिलिन एक झपकी लेने चला गया। लिसेविच ने अपनी सिगार समाप्त की और पूर्ण तृप्त होकर लड़खड़ाता हुआ अन्ना एकीमोव्ना के पीछे पीछे उसके अध्ययन-कक्ष में चला गया। दीवालों पर पंखे और फोटो लगे हुए आरामदेह कोने और ठीक छत के बीचोंबीच लटकती हुई पीली या गुलाबी लालटेनें उसे पसन्द नहीं थीं क्योंकि ये अरुचिकर और दकियानुसी रुचि को प्रकट करती थीं, साथ ही इन लालटेनों के साथ उसकी कुछ प्रेम-कथाओं की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं जिन पर अब वह लज्जित था। अन्ना एकीमोव्ना की कमरे की नंगी दीवालें और अरुचि प्रदर्शक फर्नीचर उसे अत्यधिक आनन्द प्रदान करता था। उसे टर्किश दीवान पर बैठ कर अन्ना एकीमोव्ना की तरफ देखना बड़ा आरामदेह और सुखकर लगता था जो अन्ना एकीमोव्ना अक्सर अंगीठी के सामने कालीन पर अपने घुटनों को दोनों हाथों में बाँधे आग में देखती और कुछ सोचती हुई बैठी रहती थी, और ऐसे अवसरों पर वकील को ऐसा लगता था मानो उसका

किसानी धर्म में विश्वास रखने वाला रक्त उसकी नसों में उद्वेलित हो उठा है ।

हर बार भोजन के बाद जब कॉफी और शराब आती तो वह खिल उठता और अनेक छोटी-छोटी साहित्यिक वार्ताएं सुनाने लगता । वह धारा-प्रवाह रूप से और उत्साहित होकर बोलता रहता और अपनी ही कही हुई कहानियों से प्रभावित हो उठता । वह उसकी बातें सुनती और हर बार सोचती कि ऐसे मनोरंजन के लिए बारह हजार ही नहीं बल्कि इसकी तिगुनी रकम देना भी उचित होगा और उसकी उन बातों को भूल जाना भी उचित होगा जिन्हें वह नापसन्द करती थी । कभी-कभी वह उसे किसी कहानी या उपन्यास की कथा, जो उसने पढ़ा होता, सुनाता और तब दो या तीन घन्टे एक मिनट की तरह अनायास ही गुजर जाते । इस समय उसने बड़े उदास होकर आँखें बन्द कर, गिरी हुई आवाज में कहना शुरू किया ।

"युग बीत गये, माई डियर, जब से मैंने कुछ भी नहीं पढ़ा," जब अन्ना ने उससे कुछ सुनाने के लिये कहा तो वह कहने लगा "यद्यपि मैं कभी-कभी जूनेस वर्न पढ़ लिया करता हूँ ।"

"मैं उम्मीद कर रही थी कि आप कुछ नई बात सुनाएंगे ।"

"हूँ !...नई," लिसेविच उनींदा-सा बड़बड़ाया और सोफे के कौने में और भी पीछे हट कर बैठ गया । "कोई भी नया साहित्य, माई डियर, मेरे या तुम्हारे किसी भी काम का नहीं है । बेशक, यह ऐसा होने के लिए बाध्य है और इसको मान्यता न देने का अर्थ है कि हम मान्यता नहीं देते—इसका मतलब यह होगा कि वस्तुओं के प्राकृतिक क्रम को मान्यता न देना और मैं इसे मान्यता देता हूँ, परन्तु..." ऐसा लगा कि लिसेविच सो गया । मगर एक मिनट बाद फिर उसकी आवाज सुनाई पड़ी । "सारा नया साहित्य चिमनी में घुमड़ती हुई हेमन्त ऋतु की वायु के समान कराहता और चीखता है । 'आह दुःखी बेचारा ! आह, तुम्हारी जिन्दगी कैद की सी जिन्दगी है ! आह, तुम्हारी जेल कितनी नम और अँधेरी है ! आह, यह तय है कि तुम बर्बाद

हो जाओगे, और तुम्हारे बच निकलने का कोई अवसर नहीं है। यह बहुत अच्छा है, परन्तु मैं ऐसे साहित्य को अधिक पसन्द करूँगा जो हमें यह बताए कि कैदखाने से कैसे भागा जा सकता है। फिर भी सारे समकालीन लेखकों में मैं मोपासाँ को पसन्द करता हूँ।" लिसेबिच ने आँखें खोल दीं।

"एक सुन्दर लेखक, एक गम्भीर लेखक !" लिसेविच अपनी जगह से हिला। "एक अद्भुत कलाकार ! एक भयंकर, विलक्षण, दैवी कलाकार !" लिसेविच सोफे पर से उठ खड़ा हुआ और अपना दाहिना हाथ उठाया। "मोपासां !" उसने आनन्दमग्न होकर कहा। "माईडियर, मोपासाँ को पढ़ो ! उसका एक पृष्ठ तुम्हें दुनियाँ की सारी दौलत से भी अधिक कीमती चीज देगा। प्रत्येक पंक्ति एक नया क्षितिज है। कोमलतम आत्मिक प्रवृतियाँ प्रलयंकारी भावनाओं में बदल जाती हैं, आत्मा मानो चालीस हजार वायु-मण्डलों के बोझ से दबी हुई एक अवर्णनीय गुलाबी रंग की किसी बहुत बड़ी वस्तु के एक अत्यन्त तुच्छ छोटे से कण में बदल जाती है, जिसे, मैं सोचता हूं, अगर कोई अपनी जबान पर रखे तो एक तीखा, आनन्दपूर्ण स्वाद देगी। परिवर्तनों की, उद्देश्यों की संगीत की कैसी तीव्रता ! तुम शान्तिपूर्वक लिली और गुलाब के फूलों पर आराम कर रही हो और अचानक एक विचार—एक भयानक, उच्च, बलवती भावना—एक रेल के इंजन का तरह तुम्हारे ऊपर तेजी से चढ़ आती है और तुम्हें अपनी गरम भाप में नहा देती है और अपनी सीटी से तुम्हें बहरा बना देती है। मोपासाँ पढ़ो, प्यारी लड़की, मैं इस बात को जोर देकर कहता हूँ।"

लिसेविच ने अपने हाथ हिलाये और अत्यधिक उत्तेजित होकर कमरे के एक कौने से दूसरे कौने तक टहलते लगा।

"हां, यह अकल्पनीय है," उसने घोषणा की, मानो निराश होकर कहा हो, "उसकी अन्तिम कृति ने मुझे आन्दोलित कर दिया, मस्त बना दिया ! परन्तु मुझे भय है कि तुम इसकी परवाह नहीं करोगी। इससे प्रभावित होने के लिये तुम्हें इसका स्वाद लेना होगा, प्रत्येक पक्ति का धीरे-धीरे

रसास्वादन करना होगा, उसे आकंठ पान करना होगा।... तुम्हें उसका पान करना होगा!..."

एक लम्बी भूमिका के बाद, जिसमें अनेक शब्दों का प्रयोग किया गया था जैसे तीव्र इन्द्रिय सुख, अत्यन्त कोमल स्नायुतन्तुओं का जाल, रेतीला अन्धड़, स्फटिक आदि, उसने अन्त में उपन्यास की कथा कहनी शुरू की। उसने कहानी इतनी सनक के साथ नहीं सुनाई, परन्तु उसे सूक्ष्मतम विवरणों के साथ, स्मृति द्वारा उसके सम्पूर्ण विवरणों और वार्तालापों का उद्धरण देते हुए सुनाया। उपन्यास के पात्रों ने उसे मन्त्रमुग्ध कर लिया और उनका वर्णन करने में उसने ऊँची उड़ाने भरीं, और एक सच्चे अभिनेता की तरह अपने चेहरे के भावों और स्वर को बदला। कभी वह एक गहरी आवाज में आनन्द से हँस उठता और दूसरे ही क्षण, तेज सीटी-सी बजाता हुआ अपने हाथ बाँध लेता और ऐसे भाव के साथ अपने सिर को थाम लेता, जिससे ऐसा प्रकट होता जैसे कि वह फटने वाला हो। अन्ना एकीमोव्ना मोहित होकर सुनती रही यद्यपि वह उस उपन्यास को पहले ही पढ़ चुकी थी और उस वकील के शब्दों में वह उसे उससे भी अधिक अच्छा और विलक्षण लगा जितना कि पुस्तक पढ़ने में लगा था। वकील ने उसका ध्यान अनेक विलक्षणताओं की ओर आकर्षित किया और आनन्दपूर्ण भावनाओं और गम्भीर विचारों पर बल दिया परन्तु अन्ना ने उसमें केवल जीवन, जीवन, जीवन और स्वयं अपने को देखा मानो वह स्वयं उपन्यास की एक पात्र हो। उसका उत्साह जाग्रत हो उठा। वह भी हँसती और अपने हाथ मलती हुई सोचने लगी कि क्या वह ऐसा ही जीवन नहीं बिता सकती, कि एक दयनीय जीवन व्यतीत करने की कोई जरूरत नहीं है जब कि कोई सुन्दर जीवन बिता सकती है। उसने भोजन के समय कहे अपने शब्दो और विचारों को याद किया और उन पर उसे गर्व हुआ। और जब पिमेनोव अचानक उसकी कल्पना में आ खड़ा हुआ तो उसने सुख का अनुभव किया और लालायित हो उठी कि पिमेनोव उसे प्रेम करे।

जब कहानी खत्म कर ली तो लिसेविच पस्त होकर सोफे पर बैठ गया।

"तुम कितनी श्रेष्ठ हो ! कितनी सुन्दर हो !" कुछ देर बाद उसने कहना प्रारम्भ किया, धीमी आवाज में इस प्रकार मानो बीमार हो। "मैं तुम्हारे पास सुखी हूँ, प्यारी लड़की, परन्तु मैं तीस की जगह बयालीस का क्यों हूँ ? तुम्हारी और मेरी रुचियाँ आपस में भिन्न हैं, तुम्हें विलासी होना चाहिए और मैं उस अवस्था को बहुत पीछे छोड़ आया हूँ और अब ऐसा प्रेम चाहता हूँ जो सूर्य किरण के समान कोमल और सूक्ष्म हो—मतलब यह है कि तुम्हारी अवस्था वाली स्त्री के लिए मेरा कोई भी सांसारिक उपयोग नहीं है।"

उसके अपने ही शब्दों में वह 'तुर्गनेव को, कुमारिका के प्रेम और पवित्रता को और रूस के प्राकृतिक दृश्यों की उदासीनता के अमर गायक तुर्गनेव को प्यार करता था। परन्तु वह कुमारिका के प्रेम को प्यार करता था, अनुभव के कारण नहीं बल्कि दुनियाँ के कहने के कारण, कि वह प्रेम अमूर्त और वातविक जीवन के परे होता है। अब उसने स्वयं को विश्वास दिलाया कि वह अन्ना एकीमोव्ना से आध्यात्मिक, आदर्शवादी प्रेम करता था, यद्यपि उसे यह नहीं मालूम था कि इन शब्दों का अर्थ क्या होता है। परन्तु वह सुखी और आनन्दित था और स्फूर्ति का अनुभव करता था। अन्ना एकीमोव्ना उसे मोहक और नवीन प्रतीत होती थी और वह कल्पना करता था कि इस वातावरण से उसके हृदय में उत्पन्न होने वाली आनन्दमयी भावना ही आदर्शवादी प्रेम कहलाती है।

उसने अन्ना के हाथ पर अपना गाल रख दिया और ऐसे स्वर में, जो प्रायः बच्चों को बहलाने के लिए स्तैमाल होता है, बोला :

"मेरे रत्न, तुमने मुझे दण्ड क्यों दिया है ?"

"कैसे ? कब ?"

"मुझे तुमसे बड़े दिन का कोई उपहार नहीं मिला।"

अन्ना एकीमोव्ना ने कभी सुना था कि उन लोगों की तरफ से उस वकील को कभी कोई बड़े दिन का उपहार भेजा गया था और अब उसकी समझ में नहीं आया कि उसे कितना दे। परन्तु उसे कुछ तो देना ही होगा

क्योंकि वह इसकी उम्मीद कर रहा था यद्यपि वह उसकी तरफ प्रेम भरी दृष्टि से देख रहा था।

"मेरा ख्याल है कि नजारिश इस बात को भूल गया," वह बोली, "परन्तु अभी ज्यादा देर नहीं हुई है।"

अचानक उसे उन पन्द्रह सौ रूबलों का ध्यान आ गया जो उसे कल मिले थे और जो इस समय उसके शयन-कक्ष में शृङ्गार-मेज की दराज में पड़े थे। और जब वह उस कुत्सित धन को लाई और इसे वकील को दे दिया और वकील ने उसे लापरवाही भरी शान के साथ जेब में रख लिया, तो वह सारी घटना बड़े आकर्षक और स्वाभाविक ढंग से घट गई। अचानक बड़े दिन के उपहार की याद दिलाना और ये पन्द्रह सौ रूबल लिसेविच की प्रकृति के विपरीत नहीं था।

'दया," वह बोला और उसकी उँगली चूम ली।

क्रिलिन प्रसन्न और उनींदा चेहरा लिए परन्तु बिना तमंगों के भीतर आया।

लिसेविच और वह कुछ देर और ठहरे और हरेक ने चाय का एक-एक ग्लास पिया और जाने के लिये तैयार होने लगे। अन्ना एकीमोव्ना जरा परेशान हो उठी। ..वह बिल्कुल भूल गई थी कि क्रिलिन किस महकमे में काम करता था और यह कि उसे पैसा देना चाहिये या नहीं, और अगर देना है तो अभी दे दे या बाद में लिफाफे में रख कर भेज दे।

"यह कहाँ काम करता है ?" वह लिसेविच से फुसफुसाई :

"भगवान जानता होगा," लिसेविच ने जम्हाई लेते हुए कहा।

अन्ना ने सोचा कि अगर क्रिलीन उसके पिता और चाचा के पास आता होगा और उनका सम्मान करता होगा तो शायद यह बेमतलब नहीं होगा। स्पष्टतः वह उनके बलबूते पर होगा, किसी दान लेने वाली संस्था में काम करते हुए दानी बनता। जब क्रिलिन ने विदा की नमस्कार की तो अन्ना ने चुपचाप तीन सौ रूबल उसके हाथ में पकड़ा दिए। वह चौंक-सा पड़ा और क्षण भर उसकी तरफ चुपचाप अपनी काँसे की सी आँखों से देखता रह गया परन्तु फिर ऐसा लगा कि समझ गया हो और बोला :

"सम्माननीया अन्ना एकीमोव्ना, इसकी रसीद तुम्हें केवल नये साल वाले दिन ही मिलेगी।"

लिसेव्रिच पूरी तरह उनींदा हो उठा था और जब मिशेन्का ने उसे ओवर कोट पहनाया तो वह लड़खड़ा उठा।

जब वह सीढ़ियों से नीचे उतरा तो ऐसा लग रहा था जैसे कि पूरी तरह थका हुआ हो और यह स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि जैसे ही वह स्लेज में बैठेगा, सो जायगा।

"महामहिम," सीढ़ियों के बीच में रुकते हुए उसने आलस्य भरे स्वर में क्रिलिन से कहा, "कभी आपने यह अनुभव किया है कि कोई अदृश्य शक्ति आपको दूर, बहुत दूर, खींचे लिये जा रही हो? आप बाहर खींच लिए गये हों और एक अत्यन्त सुन्दर तार में बदल गये हों। चेतन रूप से यह एक विचित्र आनन्दमयी भावना द्वारा व्यक्त होता है जिसकी किसी से भी तुलना करना असंभव है।"

अन्ना एकीमोव्ना ने सीढ़ियों के ऊपर खड़े हुए उन लोगों द्वारा मिशेन्का को एक-एक नोट दिये जाते हुए देखा।

"गुड बाई! फिर कभी आइये!" उसने उनसे कहा और अपने शयन-कक्ष मैं दौड़ती हुई घुस गई।

उसने चुपचाप अपनी पोशाक जिससे वह पहले से ऊब रही थी, उतार कर फेंक दी एक ड्रेसिंग-गाउन पहना और नीचे दौड़ गई, और नीचे दौड़ते समय एक स्कूली छोकरे की तरह हँसती और अपने पैर पटकती हुई गई। वह ऊधम मचाने के लिये मचल रही थी।

सन्ध्या

एक ढीला छींट का ब्लाउज पहने बुआ, वार्वारुश्का और दो और बुढ़ियायें खाना खाने वाले कमरे में बैठीं खाना खा रही थीं। उनके सामने मेज पर नमकीन गोश्त का एक टुकड़ा, एक रान और अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोज्य-पदार्थ रखे हुए थे। गोश्त में से भाप के बादल से उड़ रहे थे और यह संपूर्ण वातावरण विशेष रूप से भारी और क्षुधाग्नि को प्रज्वलित करने वाला प्रतीत हो रहा था। निचली मंजिल पर शराब नहीं परोसी जाती थी परन्तु वे लोग अनेक प्रकार की स्प्रिट और घर की बनी शराबें मिला कर उसे तैयार कर लेते थे। मोटी और सफेद चमड़ी वाली खूब स्वस्थ रसोईदारिन अगाफियूश्का दरवाजे के दोनों ओर बाहें टिकाये खड़ी उन बुढ़ियों से बात कर रही थी और नीचे वाली सांवली लड़की माशा जिसके बालों में लाल फीता बंधा हुआ था, प्लेटें देती जा रही थी। सुबह खत्म होने से पहले ही इन स्त्रियों को काफी खाना मिल चुका था इसलिये वे लोग इस समय इस तरह जबर्दस्ती खाना ठूंस रही थीं मानो अपना कर्त्तव्य पालन कर रहे हों।

"ओह, मेरी बच्ची!" जैसे ही अन्ना एकीमोव्ना दौड़ती हुई खाना खाने वाले कमरे में आई और उसकी बगल में बैठ गई बुआ ने आह भरी। "मैं तो डर के मारे मर गई।"

जब अन्ना एकीमोव्ना प्रसन्न रहती और खेलती कूदती तो घर में हरेक बहुत खुश होता। यह बात उन्हें हमेशा याद दिलाती रहती कि बुड्ढे मर चुके हैं और बुढ़ियों का इस घर में कोई अधिकार नहीं रहा है और कोई भी, बिना इस बात से भयभीत हुए कि उससे जबाब-तलब किया जायगा

अपना मनचाहा काम कर सकता है ! सिर्फ वे दोनों बुढ़ियाँ आश्चर्य से अन्ना एकीमोव्ना की तरह तिरछी निगाह से देख रही थीं वह गुनगना रही थीं जब कि भोजन की मेज पर बैठ कर गीत गाना पाप था।

"हमारी मालकिन, हमारा सौंदर्य, हमारी तस्वीर," अगाफियूस्का मधुर स्वर में गा उठी। "हमारा कीमती रत्न ! वे लोग, जो आज हमारी रानी को देखने आये हैं। भगवान् हमारे ऊपर रहम करे ! जनरल, अफसर और सज्जन पुरुष...मैं बराबर खिड़की में से देखती रही और गिनती रही, गिनती रही और अन्त में थक कर देखना बन्द कर दिया।"

"मैं चाहती थी कि ये लोग कत ईन आवें, चाची बोली' उसने उदास होकर अपनी भतीजी की तरफ देखा और आगे कहने लगी 'लोग सिर्फ मेरी बेचारी लड़की का वक्त बर्बा करते हैं।"

अन्ना एकीमोव्ना भूखी थी क्योंकि उसने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। उन्होंने उसे थोड़ी सी बड़ी तीखी शराब दी, उसने उसे पी लिया और सरसों के साथ नमकीन गोश्त खाया और सोचा कि यह बहुत स्वादिष्ट बना है। फिर नीचे वाली माशा टर्की, सेब का अचार और गुजबेरी लाई। वे चीजें भी उसे अच्छी लगीं। सिर्फ एक चीज ऐसी थी जो उसे पसन्द नहीं आई ईंटों के स्टोव से गर्म हवा का झोंका आ रहा था, स्टोव इतना नजदीक था कि उनका दम घुट रहा था और गाल जले जा रहे थे। भोजन समाप्त होने के बाद मेज पर से कपड़ा उठा लिया और पिपरमैंट के बिस्कुट, अखरोट और किशमिश की प्लेटें लाई गईं।

"तुम भी बैठ जाओ...वहाँ खड़े होने की जरूरत नहीं !" बुआ ने रसोईदारिन से कहा।

अगाफियूश्का ने गहरी साँस ली और मेज पर बैठ गई। माशा ने उसके सामने भी शराब का ग्लास रख दिया और अन्ना एकीमोव्ना महसूस करने लगी कि मानो अगाफियूश्का की सफेद गर्दन में से स्टोव की तरह गर्मी

निकल रही थी। वे सब यह बातें कर रही थीं कि आजकल शादी करना कितना मुश्किल हो गया है, कि पुराने जमाने में अगर पुरुष खूबसूरती की तरफ ध्यान नहीं देते थे तो पैसा देखते थे परन्तु अब तो यही पता नहीं चलता कि वे आखिर चाहते क्या हैं। उस जमाने में कुबड़ी और लंगड़ी लूली नौकरानियाँ बनने के लिए छोड़ दी जाया करती थीं। आजकल पुरुष खूबसूरत और मालदार औरतों से भी शादी नहीं करते। बुआ ने इसकी वजह बदचलनी बताई और कहा कि लोगों को भगवान का डर नहीं रहा है परन्तु उसे अचानक याद आया कि इवान इवानिच, उसका भाई और वार्वारुश्का—दोनों ही पवित्र जीवन बिताने वाले—भगवान से डरते थे मगर साथ ही उनके चुपचाप बच्चे होते थे और उन्हें अनाथालय में भेज दिया जाता था। वह सीधी होकर बैठ गई और बातचीत के विषय को बदल दिया और उन्हें अपने एक प्रेमी के विषय में बताया जिसने एक वार उससे शादी करनी चाही थी। वह एक मजदूर था और वह उसे बहुत प्यार करती थी परन्तु उसके भाइयों ने उसे मूर्त्तियों पर चित्रकारी करने वाले एक दूजिया पेन्टर से शादी करने को मजबूर कर दिया था, जो, भगवान को धन्यवाद है, दो साल बाद मर गया। नीचे वाली माशा भी मेज पर बैठ गई और उसने रहस्य पूर्ण ढंग से उन्हें बताया कि पिछले एक हफ्ते से कोई अजनबी आदमी, जिसकी मूछें काली हैं, अस्ट्राखाम कालर वाला बड़ा कोट पहने, हर रोज सुबह अहाते में दिखाई पड़ता था। वह बड़े घर की खिड़कियों की तरफ घूरता रहता था और उससे आगे इमारतों तक नहीं बढ़ता था। वह आदमी वहुत अच्छा और सुन्दर था।

इस सम्पूर्ण वार्तालाप ने अन्ना एकीमोव्ना को एकाएक विवाह करने के लिए लालायित बना दिया। वह बुरी तरह पीड़ित होकर-शादी के लालायित हो उठी। उसने अनुभव किया मानो वह अपनी आधी जिन्दगी और अपनी पूरी जायदाद सिर्फ इस बात को जानने के लिए दे सकती थी कि ऊपरी मंजिल पर एक ऐसा आदमी है जो दुनियाँ में उसके सबसे ज्यादा नजदीक है, कि वह उसे गहरा प्रेम करता है और उसके वियोग में तड़प रहा

है और इस प्रकार की आत्मीयता ने, जो इतनी आनन्दमय और अवर्णनीय है, उसकी आत्मा को उद्वेलित कर दिया। यौवन और स्वास्थ्य की भावना ने उसे झूठी तसल्ली देते हुए बहलाया कि जीवन की सच्ची कविता समाप्त नहीं हुई है बल्कि अभी आने वाली है और उसने इस बात का विश्वास कर लिया, और अपनी कुर्सी में पीछे की तरफ उठंग कर (ऐसा करने में उसके बाल पीछे बिखर गए) वह हँसने लगी और उसकी तरफ देख कर दूसरी स्त्रियाँ भी हँसने लगीं बहुत देर बाद खाना खाने वाले कमरे की यह बिना बात की हँसी बन्द हुई ।

अन्ना को सूचना दी गई कि कटखनी वाली बर्र आ गई है। यह एक तीर्थयात्रिन औरत थी जिसका नाम पाशा या स्पिरिदोनोव्ना था—पचास वर्ष की दुबली-पतली, सफेद रूमाल के साथ एक काली पोशाक पहने, तेज आँखें, तीखी नाक और नोकीली ठोड़ी वाली औरत। उसकी आँखें धूर्त और जहरीली थीं। वह इस तरह देखती थी मानो किसी की आत्मा तक की बातें देख रही हो। उसके होठों की शक्ल दिल की तरह थी। उसके जहरीलेपन और लड़ने-झगड़ने की आदत की वजह से वह कटखनी बर्र के नाम से मशहूर हो गई थी।

वह बिना किसी की तरफ देखे खाना खाने वाले कमरे में जाकर पवित्र मूर्तियों की तरफ बढ़ी और ऊँची आवाज में गाने लगी; "तेरा पवित्र जन्म", फिर उसने गाया, "कुमारी आज पुत्र को जन्म देती है," फिर, क्राईस्ट पैदा हुआ"। यह गाकर वह मुड़ी और सब पर एक भेदक दृष्टि डाली।

"सुखद बड़ा दिन मुबारक हो" उसने कहा और अन्ना एकीमोव्ना को कन्धे पर चूमा। "मैं सिर्फ यही कर सकी, आप लोगों के लिए सिर्फ इतना ही कर सकी, मेरे मेहरबान दोस्तो।" उसने बुआ को कन्धे पर चूमा। 'मुझे तुम्हारे पास सुबह ही आना चाहिए था परन्तु मैं रास्ते में कुछ भले आदमियों के यहाँ आराम करने लगी थी। "ठहरो, स्पिरिदोनोव्ना,

ठहरो, उन्होंने कहा और मुझे यही नहीं मालूम पड़ा कि शाम होने वाली थी।"

चूँकि वह गोश्त नहीं खाती थी इसलिए उन्होंने उसे मछली और सब्जी खाने को दी। वह उन लोगों की तरफ पलक झुकाए देखती हुई खाती रही और वोद्का के तीन ग्लास पी गई। जब वह खा चुकी तो उसने एक प्रार्थना गाई और अन्ना एकीमोव्ना के चरणों पर झुक गई।

उन्होंने 'राजाओं' का एक खेल खेलना शुरू कर दिया जैसे कि उन्होंने पारसाल और उससे भी अगले वर्ष खेला था। दोनों मंजिलों पर काम करने वाले नौकर उसे देखने दरवाजों पर इकट्ठे हो गए। अन्ना एकीमोव्ना ने सोचा कि उसने मिशेन्का को एक या दो बार उन किसान मर्द और औरतों में अनुग्रह पूर्ण दृष्टि से मुस्कराते हुए देखा था। पहले कटखनी वाली बर्र राजा बनी और अन्ना एकीमोव्ना ने सिपाही के रूप में उसकी अभ्यर्थना की, और उसके बाद बुआ राजा बनी और अन्ना एकीमोव्ना किसान। यह देख कर सब लोग प्रसन्न हो उठे। अगाफियूश्का राजकुमार बनी और प्रसन्नता से खिल उठी। मेज के दूसरे कोने पर एक दूसरा खेल होने लगा जिसमें दोनों माशायें, वार्वारुश्का और दर्जिन मार्फा पेत्रोव्ना भाग ले रही थीं। दर्जिन को जानबूझ कर इस खेल के लिए उकसाया गया था। उसका चेहरा हमेशा चिड़चिड़ा और उनींदा-सा बना रहता था।

वे लोग खेलती हुई मर्दों की बातें कर रही थीं। उन्होंने कहा कि आजकल पति प्राप्त करना कितना कठिन हो गया था। इसलिए इनमें से किस स्थिति को स्वीकार किया जाय—एक नौकरानी की या एक विधवा की।

"तुम एक सुन्दर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट लड़की हो," कटखनी बर्र ने अन्ना एकीमोव्ना से कहा, "परन्तु मेरी समझ में नहीं आता कि तुम किसके लिये देर कर रही हो।"

"अगर कोई मुझे स्वीकार ही न करे तो क्या किया जाय?"

"या हो सकता है कि तुमने कुमारी ही बने रहने की कसम खा रखी हो ?" कटखनी बर्र कहती रही मानो उसने अन्ना की बात ही न सुनी हो, "यह अच्छी बात है।···कुमारी बनी रहो," उसने टकटकी बाँधे द्वेष के साथ अपने ताशों की तरह देखते हुए कहा। "अच्छी बात है, माई डियर, रहो।··· हाँ···ये कुमारियाँ, ये धार्मिक कुमारियाँ सभी एक सी नहीं होतीं।" उसने गहरी साँस ली और राजा का अभिनय किया, "नहीं, मेरी बच्ची ये सब एकसी नहीं होतीं ! कुछ सचमुच अपने को पादरिनों की तरह रखती हैं और उनके मुख में मक्खन भी नहीं पिघलता, और अगर ऐसी कोई कभी मोह में पड़कर पाप कर बैठती है तो चिन्ता के मारे मर उठती है, बेचारी। इसलिये उसकी बुराई करना पाप है ! जब कि दूसरी काली पोशाकें पहनेंगी और अपने कफन सीती रहेंगी और फिर भी वासना के वश में होकर अमीर बुड्ढों से प्रेम करती फिरेंगी। हाँ, हाँ-आँ, मेरी प्यारी चिड़ियाओ, कोई पापिन किसी बुड्ढे को गुलाम बना लेगी और उस पर हुकूमत चलाती रहेगी, मेरी फाख्ताओं, उस पर हुकूमत करेंगी। और उसका दिमाग फिरा देगी, और जब काफी पैसा और लौटरी की टिकटें इकट्ठा कर लेगी तो उसे अपनी मुहब्बत में मार डालेगी।"

इन संकेतों के उत्तर में वर्वारुश्खा ने सिर्फ एक गहरी साँस ली और पवित्र मूर्त्तियों की ओर देखा। उसके चेहरे पर ईसाई—विनम्रता का भाव था।

"मैं एक ऐसी नौकरानी को जानती हूँ, जो अपनी सबसे बड़ी दुश्मन है," कटखनी बर्र चारों ओर सबकी तरफ विजयी दृष्टि से देखती हुई कहने लगी, "वह हमेशा गहरी साँसें लिया करती है और पवित्र मूर्त्तियों की तरफ देखा करती है, चुड़ैल कहीं की ! जब वह एक बुड्ढे के घर में। अपनी हुकूमत चलाती थी तब अगर कोई उसके पास जाता था तो वह उसे एक टुकड़ा पकड़ा देती थी और पवित्र मूर्त्ति के सम्मुख झुक कर प्रणाम करती और गाती थी, 'गर्भ, धारण करने पर तू एक कुमारी को त्याग देता है···!' छुट्टियों वाले दिन वह किसी को सताती और काम

वाले दिनों में किसी को इसके लिये डाँटती। परन्तु आजकल मैं उसे देखकर खुश होती हूँ। मैं जितनी चाहूँगी उतनी खुश होऊंगी, मेरी रानी!"

वार्वाहरखा ने फिर पवित्र मूर्त्तियों की तरफ देखा और अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया।

"परन्तु मुझे कोई स्वीकार ही नहीं करेगा स्तिरिदोनोंग्ना," बात बदलने के लिये अन्ना एकीमोग्ना बोली, "फिर क्या किया जाय?"

"यह तुम्हारा अपना दोष है। तुम बहुत ज्यादा पढ़े-लिखे लोगों की प्रतीक्षा में हो, परन्तु तुम्हें अपने ही वर्ग के किसी व्यक्ति से अर्थात् किसी व्यापारी से विवाह कर लेना चाहिये।"

"हमें व्यापारी नहीं चाहिये" बुआ व्याकुल होकर कह उठी। "स्वर्ग की रानी हमारी रक्षा कर! एक जेन्टिलमैन तुम्हारे पैसे को खर्च करेगा परन्तु साथ ही वह तुम्हारे साथ नम्रता का वर्ताव करेगा, नन्हीं-सी मूर्खा! मगर एक व्यापारी इतना कठोर होगा कि अपने ही घर में तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी। तुम उसे लुभाना चाहती रहोगी और वह अपना पैसा गिनता रहेगा और जब तुम उसके साथ खाना खाने बैठोगी, वह तुम्हारे हर निवाले पर कुढ़ेगा, हालाकि वह तुम्हारा अपना ही है, गँवार कहीं का!…एक जैन्टिलमैन से शादी करना।"

वे सब जोर से एक दूसरे को टोकती हुई बातें करने लगीं और बुआ सरौते से मेज पर आवाज करती हुई गुस्से से लाल होकर बोली।

"हम व्यापारी को मंजूर नहीं करेंगे, नहीं मंजूर करेंगे! अगर तुम व्यापारी से शादी करोगी तो मैं गरीबखाने में चली आऊंगी।"

"श!…श!…हुश!" कटखनी बर्र चिल्लाई। जब सब चुप हो गईं तो उसने एक आँख सिकोड़ी और बोली। 'तुम जानती हो, अन्यूश्का, मेरी चिड़िया…? सचमुच इसकी कोई जरूरत नहीं कि तुम औरों की ही तरह शादी करो। तुम अमीर और आजाद हो, खुद मुख्तार हो, परन्तु फिर भी, मेरी बच्ची, यह ठीक नहीं लगता कि तुम बुढ़िया होने तक कुमारी भी

बनी रही। मैं तुम्हारे लिए एक मामूली, बुद्धू-सा आदमी ढूँढ़ दूँगी। तुम दिखाने के लिये उससे शादी कर लेना और फिर खुल कर खेलना, रानी! तुम उसको पाँच या दस हजार दे देना और जहाँ से वह आये उसे वहीं वापस भेज देना और फिर तुम अपने घर की मालकिन होगी—तुम जिससे चाहोगी उससे प्रेम कर सकोगी और तुमसे कोई कुछ भी नहीं कह सकेगा। और तब तुम अपने उन पढ़े-लिखे आदमियों से प्रेम कर सकोगी। तुम्हारा समय मजे में कटेगा।" कटखनी बर्र ने अपनी उंगलियाँ चटखाईं और सीटी बजाई।

"यह पाप है," बुआ ने कहा।

"ओह, पाप है?" कटखनी बर्र हँसी, "अन्ना पढ़ी लिखी है, सब समझती है। किसी का गला काटना या एक बुढ्ढे पर जादू करना—यह पाप है, यह सच है मगर किसी खूबसूरत दोस्त से मुहब्बत करना पाप नहीं है। और फिर इसमें ऐसी बात ही क्या है? इसमें बिल्कुल भी पाप नहीं है। बुढ़िया तीर्थ यात्रियों ने सीधे-सादे लोगों को बुद्धू बनाने के लिए यह सब गढ़ लिया है। मैं भी हर जगह यही कहती हूँ कि यह पाप है, मैं खुद नहीं जानती कि यह पाप क्यों है।" कटखनी बर्र ने अपना ग्लास खत्म किया और खंखारा। "खुलकर खेलो, मेरी सुन्दरी," इस बार स्पष्ट रूप से अपने को सम्बोधित करते हुये कहा दुष्टाओ, तीस साल तक मैंने पाप के अलावा और कुछ भी नहीं सोचा और डरती रही, मगर अब मैं देखती हूँ कि मैंने अपना वक्त बर्बाद किया, मैंने एक बेवकूफ की तरह उसे निकल जाने दिया! आह, मैं कितनी बुद्धू रही!" उसने आह भरी। "एक औरत का समय थोड़ा होता है और उसका हर दिन कीमती है। तुम सुन्दर हो, अन्यूश्का और बहुत पैसे वाली, हो मगर जैसे ही पैंतीस या चालीस तक पहुँची कि समय निकल जायगा। किसी की बात मत सुनो, मेरी बच्ची, जिन्दगी बिताओ, खुल कर खेलो जब तक कि चालीस की न हो जाओ और तब तुम्हें क्षमा-प्रार्थना करने के लिए समय मिलेगा, बहुत समय मिलेगा जिसमें तुम अपना कफन सीना और प्रार्थना करना। भगवान के लिये एक मोमबत्ती और शैतान के लिये एक आग सुलगाने का सींकचा। तुम दोनों काम एक साथ कर सकती हो! कहो, कैसा रहेगा? तुम किसी मामूली आदमी को सुखी बनाओगी?"

"बनाऊँगी," अन्ना एकीमोव्ना हँसी, "अब मैं चिन्ता नहीं करती। मैं एक मजदूर से शादी करूँगी।"

"अच्छा, तब सब ठीक हो जायगा। ओह, तुम कितना अच्छा आदमी चुनोगी!" कठखनी बर्र ने अपनी आंखें सिकोड़ीं और सिर हिलाया। "ओ...ओ...ओह!"

"मैं इससे खुद कहती हूँ" बुआ बोली, "एक जेन्टिलमैन का इन्तजार करने से कोई फायदा नहीं, इसलिए इसे शादी कर लेनी चाहिए, किसी जेन्टिलमैन से नहीं बल्कि किसी सीधे-सादे आदमी से। कुछ भी हो घर में देखभाल करने के लिये एक आदमी तो रहेगा। और भले आदमियों की कमी नहीं है। वह फैक्टरी के किसी आदमी से शादी कर सकती है। वे सब गम्भीर और मेहनती लोग हैं..."

"मुझे भी ऐसा ही सोचना चाहिये," कटखनी बर्र ने हामी भरी। वे लोग बहुत अच्छे आदमी हैं। बुआ, अगर, तुम चाहो तो मैं वासिली लेबेदिन्स्की के साथ इसका जोड़ा मिला सकती हूँ।"

"ओह, वास्या की टाँगे इतनी लम्बी हैं," बुआ गम्भीर होकर बोली। "वह इतना दुबला पतला वह सुन्दर भी नहीं है।"

दरवाजे पर भीड़ में हँसी सुनाई पड़ी।

"अच्छा, पिमेनोव? तुम पिमेनोव से शादी करना पसन्द करोगी?" कटखनी बर्र ने अन्ना एकीमोव्ना से पूछा।

"बहुत अच्छा। मेरी पिमेनोव से शादी करा दो।"

"सचमुच!"

"हाँ, करा दो!" अन्ना एकीमोव्ना ने दृढ़तापूर्वक कहा, और मेज पर घूंसा मारा। "अपनी कसम, मैं उससे शादी कर लूँगी।"

"सचमुच?"

अन्ना एकीमोव्ना एकाएक झेंप गई। उसके गाल लाल हो रहे थे और हरेक उसकी तरफ देख रहा था। उसने ताश एक साथ मेज पर पटक दिये और कमरे से भाग गई। जैसे ही वह सीढ़ियों पर दौड़ती हुई ऊपरा

मञ्जिल पर पहुँची और ड्राइङ्ग-रूम में जाकर पियानो पर बैठी नीचे से समुद्र की गरज जैसा भनभनाहट का शोर उसके कान में आया। इस बात की अधिक सम्भावना थी कि वे उसके और पिमेनोव के बारे में बातें कर रही थीं और शायद उसकी गैरहाजिरी का फायदा उठाकर कटखनी बर्बार्वारुख्खा का मजाक उड़ा रही थी और ऊट पटाँग बोले चली जा रही थी।

बड़े कमरे में जल रही लैम्प की ही रोशनी ऊपरी मंजिल पर भी उजाला कर रही थी। इसकी हल्की-सी झलक दरवाजे में होकर अँधेरे-ड्राइङ्ग-रूम में आ रही थी। नौ और दस के बीच का समय था। इससे ज्यादा का नहीं होगा। अन्ना-एकीमोव्ना ने 'वाल्ट्ज, की धुन बजाई और फिर दूसरी और तीसरी बार बजाई। वह बिना रुके बराबर बजाती चली गई। उसने पियानो के पीछे अँधेरे कौने की तरफ देखा, मुस्कराई, और मन ही मन उसे पुकारा। साथ ही उसके मन में यह विचार उठा कि वह किसी से मिलने के लिए शहर जाय, जैसे कि लिसेबिच से मिलने जाय और उसे अपने हृदय की बात बता दे। वह बिना रुके बातें करना, हँसना और मजाक करना चाह रही थी मगर वह अँधेरा कौना उदास और खामोश था और ऊपरी मञ्जिल के सारे कमरों में चारों तरफ निस्तब्धता और शान्ति छा रही थी।

भावुकतापूर्ण गीत उसे बहुत पसन्द थे परन्तु उसकी आवाज भारी और अनाड़ियों की सी थी। इसीलिये वह केवल बाजे के ऊपर बहुत धीमी आवाज में गुनगुनाती हुई गाया करती थी। उसने धीमे स्वर में एक के बाद एक कई गाने गाये जो ज्यादातर प्रेम, बिद्रोह, और टूटी हुई आशाओं के गीत थे और उसने कल्पना की कि किस तरह वह उसकी तरफ अपने हाथ बढ़ाएगी और आँसू भर कर प्रार्थना करेगी, "पिमेनोब, मुझ पर से इस भार को हटालो!" और तब, जैसे कि उसके पापों को क्षमा कर दिया गया हो, इस तरह उसकी आत्मा में प्रसन्नता और शान्ति छा जायगी और सम्भवतः एक स्वतन्त्र और सुखी जीवन का श्रीगणेश हो जायगा। इस आशा की पीड़ा से वह अपने हृदय में इस बात की तीव्र आकांक्षा लिए हुए पियानो पर झुक

गई कि उसके जीवन में यह परिवर्तन बिना विलम्ब के तुरन्त हो जाय और इस विचार से भयभीत हो उठी कि उसका पुराना जीवन अभी कुछ और दिनों तक ऐसे ही चलेगा। तब उसने फिर पियानो बजाया और बहुत ही धीमी आवाज में गाया। उसके चारों तरफ निस्तब्धता व्याप्त थी। अब नीचे से शोर नहीं आ रहा था। वे सब सोने चली गईं होंगी। कुछ देर पहले दस बज चुके थे। एक लम्बी, एकाकी, उबा देने वाली रात घिरती चली आ रही थी।

अन्ना एकीमोव्ना सारे कमरों में घूमी, कुछ देर सोफा पर लेटी और अपने अध्ययन-कक्ष में बैठकर वे पत्र पढ़े जो उस शाम को आए थे। बड़े दिन की शुभकामना वाले बारह पत्र थे और तीन गुमनाम पत्र थे। उनमें से एक में किसी मजदूर ने एक भद्दी, लगभग न पढ़ी जाने वाली लिखावट में शिकायत की थी कि फैक्टरी की दूकान पर बेचा जाने वाला 'लेन्टन तेल' बदबूदार है और उसमें से पैराफीन की गन्ध आती है। एक दूसरे में, किसी ने सम्मान के साथ उसे सूचित किया था कि लोहे की एक खरीद में नजारिश ने अभी किसी से एक हजार रूबल की रिश्वत खाई थी! एक तीसरे में अन्ना को उसकी अमानवीयता के लिए बुरा-भला कहा गया था।

बड़े दिन का जोश समाप्त हो रहा था और उसे बनाए रखने के लिए अन्ना एकीमोव्ना फिर पियानो पर जा बैठी और धीरे से नये वाल्ट्ज की धुन बजाने लगी। फिर उसे याद आया कि वह आज भोजन के समय कितनी चतुरतापूर्वक और गौरव के साथ बातें करती रही थी। उसने चारों तरफ अँधेरी खिड़कियों, तस्वीरें लगी हुई दीवालों और बड़े कमरे से आती हुई धुँधली रोशनी की तरफ देखा और एकाएक रोने लगी और इस बात से दुखी हो उठी कि वह इतनी एकाकिनी है और उसके पास कोई भी ऐसा नहीं है जो उससे बातें करे और उसे सलाह दे। अपने को प्रसन्न करने के लिए उसने कल्पना में पिमेनोव का चित्र खींचा परन्तु इसमें असफल रही।

बारह के घन्टे बजे। मिशेन्का, जो अब अपना पीछे खुला हुआ कोट न पहन कर एक मल्लाहों की सी जाकेट पहने हुए था, भीतर आया और

बिना बोले दो मोमबत्तियाँ जला दीं। फिर वह बाहर गया और एक मिनट बाद एक ट्रे पर चाय का एक प्याला लिए लौटा।

"तुम हँस क्यों रहे हो ?" उसके चेहरे पर मुस्कराहट की रेखा देख कर अन्ना ने पूछा।

"मैं नीचे था और मैंने पिमेनोव के बारे में आपके मजाक को सुना था..." उसने कहा और अपने हँसते हुए मुख पर हाथ रख लिया, "अगर आज वह विक्टर निकोलइच और उस जनरल के साथ खाना खाने बैठा होता तो डर के मारे मर जाता।" हँसी के मारे मिशेन्का के कन्धे काँप रहे थे। "वह इतना भी नहीं जानता कि काँटा कैसे पकड़ा जाता है, मैं इस बात की शर्त बदता हूँ !"

उस नौकर की हँसी और शब्द, उसकी मल्लाहों की सी जाकेट और मूछें देखकर अन्ना एकीमोव्ना के मन में घृणा की भावना उत्पन्न हो उठी। उसने उसे न देखने के लिये आँखें बन्द कर लीं और अपनी इच्छा के विपरीत लिसेविच और क्रिलिन के साथ खाना खाते हुए पिमेनोव की कल्पना की और उसका सहमा हुआ; मूर्खों जैसा चेहरा उसे दयनीय और हताश लगा और वह इससे विरक्त हो उठी। और सिर्फ इसी समय, आज पूरे दिन भर में पहली बार उसने स्पष्ट रूप से यह महसूस किया कि उसने मिमेनोव और एक मजदूर से शादी करने के बारे में जो कुछ सोचा और कहा था वह मूर्खतापूर्ण, वाहियात और धूर्ततापूर्ण था। इसके विपरीत अपने को अश्वस्त करने और अपनी विरक्ति को दबाने के लिए उसने भोजन के समय कही गई अपनी बातों को याद करने की कोशिश की परन्तु अब उसे इसमें कुछ भी सार नहीं दिखाई पड़ा। अपने ही विचारों और हरकतों के प्रति लज्जा, और यह भय कि उसने दिन में कोई बेहूदी बात कही थी, और अपने में उत्साह की कमी होने के प्रति घृणा आदि ने उसे पूरी तरह व्याकुल कर डाला। उसने एक मोमबत्ती उठाई और इतनी तेजी से, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो, वह नीचे भागी, स्पिरिकोनोव्ना को जगाया और उसे यह यकीन दिलाने लगी कि वह मजाक कर रही थी ! फिर वह अपने सोने के कमरे में चली

गई। लाल बालों वाली माशा, जो बिस्तर के पास एक आराम-कुर्सी पर ऊंघ रही थी, उछल पड़ी और तकियों को इधर-उधर करने लगी। उसका चेहरा थका हुआ और उनींदा था। उसके सुन्दर बाल एक तरफ लटक रहे थे।

"चालीकोव आज शाम को फिर आया था," जम्हाई लेते हुए उसने कहा "मगर मैं आपको उसकी खबर देने की हिम्मत नहीं कर सकी : वह नशे में धुत हो रहा था। वह कह गया है कि कल फिर आयेगा।"

"वह मुझसे क्या चाहता है ?" अन्ना एकीमोव्ना ने पूछा और अपना कंघा फर्श पर फेंक दिया। "मैं उससे नहीं मिलूँगी, नहीं मिलूँगी।"

उसने यह तय कर लिया कि उसके जीवन में इस चालीकोव को छोड़ कर और कोई भी नहीं है, कि वह उसका पीछा करना कभी नहीं छोड़ेगा और हर रोज उसे याद दिलाता रहेगा कि उसकी जिन्दगी कितनी नीरस और भद्दी है।

वह बिना कपड़े बदले लेट गई और लज्जा और निराशा से सिसक उठी। उसे सबसे अधिक कष्टकर और मूर्खतापूर्ण बात यह लगी कि उस दिन उसके पिमेनोव से सम्बन्धित स्वप्न कितने न्यायसङ्गत, महान और सम्मानपूर्ण थे परन्तु साथ ही उसे यह भी अनुभव हुआ कि पिमेनोव और सारे मजदूरों की अपेक्षा लिसेविच और क्रिलिन उसके ज्यादा नजदीक हैं। उसने सोचा कि अभी बिताया हुआ दिन अगर एक चित्र में चित्रित किया जाता, वह सब जो बुरा और वाहियात था—मिसाल के तौर पर वह डिनर, वकील की वे बातें, राजाओं का खेल आदि सच्चे होते, जब कि उसके सपने और पिमेनोव से सम्बन्धित बातें, इस सबसे परे झूठी होती न चित्रित किये जाने वाली होतीं, और उसने यह भी सोचा कि अब सुख के सपने देखने में बहुत देर हो चुकी है, कि उसके लिये सब कुछ समाप्त हो चुका था, कि अब उस जिन्दगी में पीछे लौटना नामुमकिन है जब वह अपनी माँ के साथ एक ही

रजाई में सोया करती थी, या यह कि अब किसी नई निराली जिन्दगी, के बारे में सोचना व्यर्थ है।

लाल बालों वाली माशा पलङ्ग के सामने घुटनों के बल बैठी दुखी और व्याकुल होकर उसकी तरफ देख रही थी, फिर वह भी रोने लगी और उसने अपना सिर अपनी मालकिन की बाँह पर रख दिया। बिना कहे ही यह स्पष्ट था कि वह इतनी दुखी क्यों थी।

"हम मूर्ख हैं!" अन्ना एकीमोव्ना ने हँसते और रोते हुए कहा। "हम बेवकूफ हैं! ओह, हम कैसी बेवकूफ हैं।"

दुलहिन का दहेज

अपनी जिन्दगी में मैंने बहुत से मकान देखे हैं, छोटे और बड़े, नए और पुराने, पत्थर और काठ के बने, परन्तु एक घर से सम्बन्धित मेरी स्मृति सदैव स्पष्ट और सजीव रहती है। साफ कहा जाय तो वह एक घर न होकर एक कुटिया जैसी ही थी—एक मञ्जिल, तीन खिड़कियों वाली, सिर पर टोपी लगाए एक अजीव कुबड़ी छोटी-सी बुढ़िया की तरह नन्हीं सी कुटिया। इसकी चूने की सफेद दीवालें, खपरैल की छत, टूटी हुई चिमनी सब हरियाली के एक समुद्र में डूबी हुई थीं। कुटिया शहतूत, बबूल और चिनार के वृक्षों के झुरमुट में, जो इसके वर्तमान मालिकों के बाबा और परबाबा आदि ने लगाए थे, छिपी हुई थी। और फिर भी यह एक शहरी मकान था। इसका चौड़ा अहाता ऐसे ही दूसरे अनेक हरे-भरे अहातों की एक कतार में था जिनसे एक सड़क बन गई थी। उस सड़क पर होकर कोई भी सवारी नहीं गुजरती थी और उस पर बहुत कम आदमी चलते हुए देखे जाते थे।

इस नन्हें से मकान की झिलमिलियाँ हमेशा बन्द रहती हैं। इसके भीतर रहने वाले धूप की चिन्ता नहीं करते--रोशनी से उन्हें कोई काम नहीं पड़ता। खिड़कियाँ कभी नहीं खुलतीं क्योंकि वे लोग ताजी हवा के शौकीन नहीं हैं। बबूल, शहतून और बिच्छू के पेड़ों के बीच अपनी जिन्दगी बिताने वाले लोगों में प्रकृति के प्रति कोई आकर्षण नहीं होता। भगवान ने केवल गर्मियों में आने वाले अतिथियों को ही प्रकृति के सौन्दर्य के लिये आँखें दी हैं। शेष मनुष्य जाति ऐसे सौन्दर्य के अस्तित्व के विषय में घोर अज्ञान में पड़ी रहती है। मनुष्य बहुलता से उपलब्ध चीजों की कद्र कभी भी नहीं करते। "जो हमारे पास हैं हम उसका संग्रह नहीं करते," और इससे भी बड़ी बात यह है कि हम उससे प्रेम भी नहीं करते।

यह छोटा-सा मकान हरे वृक्षों के पृथ्वी पर बने हुए स्वर्ग जैसे स्थान में बना हुआ है जहाँ चहचहाती चिड़ियों ने अपने घोंसले बना रखे हैं। परन्तु भीतर...अफसोस... ! गर्मियों में यह बन्द रहता है और भीतर घुटन भरी रहती है, जाड़ों में तुर्की स्नानगृह की तरह गर्म रहता है, वहाँ हवा पर भी नहीं मार पाती, और नीरसता !...

पहली बार जब मैं इस मकान पर गया था उस बात को कई साल हो चुके हैं। वहाँ मैं एक काम से गया था। मैं कर्नल का, जो उस मकान का मालिक था, उसकी बीबी और बेटी के लिए एक सन्देश लेकर आया था। अपनी वह पहली मुलाकात मुझे खूब अच्छी तरह याद है। सचमुच उसे भूलना असम्भव है।

एक चालीस साल की छोटी-सी लंगड़ी स्त्री की कल्पना कीजिए जो, जब आप बरामदे में होकर बैठक की तरफ जा रहे हों, आपकी तरफ आशंकित और आश्चर्यचकित होकर घूम रही हो। आप एक अजनबी, एक आगन्तुक, "एक नवयुवक" है, बस इतना ही उसे भयभीत और व्याकुल बना देने के लिए काफी है। यद्यपि आपके पास छुरा, कुल्हाड़ी या रिवाल्वर नहीं है, और यद्यपि आप सौजन्यतापूर्वक मुस्कराते हैं, फिर भी आपका स्वागत आशङ्का के साथ ही किया जायगा।

"मुझे किनसे बातें करने का सौभाग्य और सम्मान प्राप्त हो रहा है ?" उस नन्हीं-सी महिला ने काँपती हुई आवाज में पूछा।

मैंने अपना परिचय दिया और अपने आने का कारण बताया।

वह आतंक और आश्चर्य का भाव तुरन्त एक सुरीले और प्रसन्नतापूर्ण "ओहो" में बदल गया और उसने अपनी आँखें उपर छत का तरफ उठा लीं। यह "ओहो" एक प्रतिध्वनि की तरह हाल से बैठक तक, बैठक से रसोई तक और वहाँ से भण्डार-घर तक गूँज उठा। फौरन सारा मकान विभिन्न स्वरों में "ओहो" की ध्वनियों से आपूरित हो उठा।

मैं पाँच मिनट बाद ड्राइङ्ग-रूम में एक बड़े, कोमल, गर्म लाउन्ज पर बैठा हुआ "ओहो" की ध्वनि को सारी सड़क पप प्रतिध्वनित होते हुए

सुन रहा था। वहाँ कीड़ों के पाउडर और बकरी के चमड़े के जूतों की गन्ध भर रही थी। बकरी के चमड़े के जूतों का एक जोड़ा मेरी बगल में एक रूमाल में लिपटा हुआ कुर्सी पर रखा हुआ था। खिड़कियों पर जिरेनियम के फूल रखे थे और मसलिन के पर्दे पड़े हुए थे और उन पर्दों पर मरी हुई मक्खियाँ चिपकी हुई थीं। दीवाल पर एक विशप का तैल-चित्र टँगा हुआ था जिसके शीशे का एक कोना टूट गया था, विशप की बगल में जिप्सियों जैसे नारङ्गी रंग के चेहरों वाले पुरखों की एक कतार थी। मेज पर दरजी की उंगली पर पहनने वाली एक टोपी, एक पेचक और एक आधा बुना हुआ मोजा आदि चीजें रखी थीं। कागज के नमूने और एक काला ब्लाउज, एक दूसरे से जुड़े हुए, फ़र्श पर पड़े हुए थे। बगल वाले कमरे में दो हड़बड़ाती हुई बुड्ढी औरतें जल्दी-जल्दी नमूने और दर्जी की खड़िया के टुकड़ों को फ़र्श पर से बटोर रही थी।

"आप हमें क्षमा करेंगे, हम बहुत गन्दे हैं," उस नन्हीं महिला ने कहा।

मुझसे बातें करती हुई वह दूसरे कमरों की तरफ, जहाँ फैले हुए नमूने बटोरे जा रहे थे, परेशानी की निगाह डालती जा रही थी। दरवाजा भी परेशान-सा नजर आ रहा था, कभी एक या दो इन्च खुल जाता और फिर बन्द हो जाता।

"क्या बात है ?" दरवाजे को सम्बोधित करते हुए उस नन्हीं महिला ने पूछा।

"मेरा क्रेवेट कहाँ है जो मेरे पिता मेरे लिए कुर्स्क से लाए थे ?" दरवाजे पर एक जनानी आवाज ने पूछा।

"अच्छा, यह बात है, क्या...कि... तब हमारे यहां एक ऐसा आदमी है जो हम से कम प्रसिद्ध है। लुकर्या से पूछो।"

"हम कितनी अच्छी फ्राँसीसी बोलती हैं !" मैंने नन्हीं महिला के नेत्रों में पढ़ा जो आनन्द से लिखी जा रही थी।

इसके बाद ही दरवाजा खुला और मैंने उन्नीस वर्ष की एक लम्बी,

पतली लड़की को देखा जो मसलिन की एक लम्बी पोशाक पर एक सुनहरी पेटी बाँधे हुए थी जिसमें, मुझे याद है, सीप का एक पंखा लटक रहा था। वह भीतर आई, नमस्कार किया और लज्जा से लाल पड़ गई। उसकी लम्बी नाक, जिस पर चेचक के छोटे-छोटे दाग थे, पहले लाल हुई और फिर वह लाली उसकी आँखों और माथे तक फैल गई।

"मेरी पुत्री," नन्हीं महिला ने सुरीली आवाज में कहा, "और, मानेत्यका, ये एक नवयुवक हैं जो आए हैं," आदि।

मेरा परिचय कराया गया और मैंने कागज के इतने ज्यादा नमूनों को देख कर आश्चर्य प्रकट किया। माँ और बेटी ने निगाहें नीची कर लीं।

"यहाँ, एस्सेनशन में एक मेला लगा था," माँ बोली, "हम मेले में से हमेशा सामान खरीदा करते हैं और इसे सीने में तब तक व्यस्त रहते हैं जब तक कि दूसरे वर्ष लगने वाला मेला आता है। हम अपनी चीजें किसी से कभी भी नहीं बनवाते। मेरे पति का वेतन ज्यादा नहीं है इसलिए हम लोग विलास पूर्ण जीवन नहीं बिता सकते। इसलिए हमें सब चीजें खुद ही बनानी पड़ती हैं।"

"परन्तु इतनी चीजों को कौन पहनेगा? यहाँ तो सिर्फ आप दो ही हैं?"

"ओह...जैसे कि हम इन्हें पहनने की ही सोच रहे थे! ये पहनने के लिए नहीं हैं, ये दहेज के लिए हैं!"

"आह, माँ, तुम क्या कह रही हो?" बेटी ने कहा और फिर लाल पड़ गई।" हमारे मेहमान समझेंगे कि यह सच बात है। मेरा शादी करने का इरादा नहीं है। कभी भी नहीं करूँगी!"

उसने यह कहा, परन्तु 'विवाह करने' के शब्द पर उसकी आँखें चमक उठीं।

चाय, बिस्कुट, मक्खन और 'मुरब्बा लाए गए, उसके बाद रसभरी और मलाई लाई गई। सात बजे हमने खाना खाया जिसमें छः तरह की चीजें थीं। जब हम खाना खा रहे थे तो मैंने दूसरे कमरे में जम्हाई लेने की तेज

आवाज सुनी। मैंने आश्चर्यचकित होकर दरवाजे की तरफ देखा : यह एक ऐसी जम्हाई थी जो सिर्फ आदमी ही ले सकता था।

ये मेरे देवर हैं, येगोर सोमियोनिच," मेरे आश्चर्य को लक्ष्य कर नन्हीं महिला ने बताया ! "वे पिछले वर्ष से हमारे साथ रह रहे हैं। कृपया उन्हें क्षमा कीजिए, वे आप से मिलने नहीं आ सकते। वे कभी किसी से नहीं मिलते और अजनबियों से शर्माते हैं। वे एक मठ में जा रहे हैं। नौकरी में उनके साथ अन्याय हुआ था और वह निराशा उनके दिमाग को परेशान करती रहती है।"

भोजन के उपरान्त नन्हीं महिला ने वह लबादा दिखाया जिसे चर्च को भेंट करने के लिए येगोर सेमियोनिच खुद अपने हाथों से काढ़ रहा था। मानेत्चका ने क्षण भर के लिए अपनी लज्जा को दूर किया और मुझे तम्बाकू रखने का थैला दिखाया जिसे वह अपने पिता के लिए काढ़ रही थी। जब मैंने यह दिखाया कि मैं उसके काम से आश्चर्यचकित हो उठा हूँ तो वह लाल पड़ गई और अपनी माँ के कान में फुसफुसा कर कुछ कहने लगी। माँ खुश हो उठी और मुझे अपने साथ स्टोररूम में चलने के लिए कहा। वहां मुझे पाँच बड़े और कई छोटे ट्रंक और बक्स दिखाए गए।

"यह इसका दहेज है," उसकी मां ने धीरे से कहा, "यह सब इसने खुद बनाया है।"

इन घृणित बक्सों को देखने के बाद मैंने अपना आतिथ्य-सत्कार करने वाली मेजवान से विदा ली। उन्होंने मुझसे फिर किसी दिन आने और उनसे मिलने का वायदा करा लिया।

ऐसा संयोग हुआ कि मैं इस वायदे को पूरा करने में समर्थ हो सका। मेरी पहली यात्रा के सात साल बाद मुझे उस छोटे से कस्बे में चलने वाले एक मुकद्दमे में विशेषज्ञ की गवाही देने के लिए भेजा गया।

जैसे ही मैं उस छोटे से घर में घुसा मुझे वहां वही "ओहो" की ध्वनि गूँजती हुई सुनाई पड़ी। उन्होंने मुझे फौरन पहचान लिया।...पहचानती

हीं। मेरी पहली मुलाकात उनके जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना थी और जब महत्वपूर्ण घटनायें कम होती हैं तो बहुत दिनों तक याद रहती हैं।

मैं ड्राइङ्ग रूम में घुसा। मां जो पहले से अधिक मोटी हो गई थी और जिसके बाल सफेद हो चले थे, फर्श पर रेंगती हुई सी कोई नीला कपड़ा काट रही थी। बेटी सोफे पर बैठी बुन रही थी।

वहां वही कीड़ों वाले पाउडर की गन्ध थी, वही नमूने और टूटे कांच वाला वही चित्र था। परन्तु फिर भी वहां एक तबदीली नजर आ रही थी। विशप के चित्र के पास कर्नल का एक चित्र लटक रहा था और स्त्रियां शोक-सूचक वस्त्र पहने हुए थीं। जनरल की पदवी पाने के एक सप्ताह उपरान्त कर्नल की मृत्यु हो गई थी।

स्मृतियां दुहराई गईं।...विधवा ने आंसू बहाए।

"हमारी भयंकर हानि हुई है," उसने कहा। "आप जानते ही हैं, मेरे पति की मृत्यु हो चुकी है। अब हम संसार में अकेले हैं और हमारी हिफाजत करने के लिये हमारे अलावा और कोई भी नहीं है। येगोर सिमेनोविच जिन्दा है परन्तु मेरे पास उसके विषय में आपको सुनाने के लिये कोई शुभ समाचार नहीं है। उन्होंने उसे मठ में नहीं लिया क्योंकि वह शराब पीता है। अब वह निराश होकर पहले से भी ज्यादा पीने लगा है। मैं सोच रही हूँ कि 'मार्शल आव नोवलिटी' से जाकर शिकायत करूँ। आप विश्वास करेंगे कि वह कई बार ट्रंकों का ताला ताड़कर मनेत्चका का दहेज निकाल चुका है और उसे भिखारियों में बांट दिया है। उसने दो ट्रंकों का सारा सामान निकाल लिया है। अगर वह ऐसा ही करता रहा तो मेरी मनेत्चका बिना दहेज के रह जायगी।"

"क्या कह रही हो, माँ?" मनोत्चका ने परेशान होकर कहा। "हमारे मेहमान सोचेंगे।...कोई पता नहीं कि वे क्या सोचेंगे। मैं कभी भी शादी नहीं करूँगी।"

मनेत्चका ने आशा और उत्साह से क्षण भर के लिये भी अपनी कही हुई बात पर विश्वास न करते हुए छत की तरफ निगाहें उठाईं।

एक गंजी पुरुषाकृति एक भूरा कोट और बूटों की जगह घुटनों तक बरसाती जूते पहने बरामदे में चूहे की तरह झपटी और गायब हो गयी। "मेरा ख्याल है कि ये गोर सिमेनोविच है," मैंने सोचा।

मैंने माँ और बेटी की तरफ एक साथ देखा, वे दोनों ही पहले से ज्यादा उम्र की और बहुत बदली हुई दीख रही थीं। माँ के बाल चाँदी जैसे सफेद हो गये थे परन्तु बेटी इतनी फीकी और मुर्झाई हुई लग रही थी कि उसकी माँ को उससे सिर्फ पांच साल बड़ी उसकी बड़ी बहन समझा जा सकता था।

"मैंने मार्शल के पास जाना निश्चित कर लिया है," माँ ने मुझसे कहा, वह भूल गई कि यह बात कि पहले ही कह चुकी है। "मेरा इरादा शिकायत करने का है। ये गोर सिमेनोविच हमारी बनाई हरेक चीज उड़ा देता है और अपनी आत्मा के उद्धार के लिए उसे दान दे डालता है। मेरी मनेत्चाका बिना दहेज के रह गई है।"

मनेत्चका फिर शर्म से लाल पड़ गई मगर इस बार बोली कुछ नहीं।

"हमें सारा सामान दुबारा बनाना पड़ेगा। भगवान जानता है कि हमारीं हालत अच्छी नहीं है। अब हम संसार में अकेले रह गये हैं।"

एक साल पहले भाग्य मुझे एक बार फिर उस छोटे से घर में ले गया।

ड्राइङ्ग-रूम में घुसते ही मैंने उस वृद्धा को देखा। भारी क्रेप की काली पोशाक पहने वह सोफे पर बैठी कुछ सीं रही थी। उसके बाद वह छोटा-सा आदमी भूरा कोट और बूटों की जगह घुटनों तक के बरसाती जूते पहने बैठा था। मुझे देखकर वह उछला और कमरे से बाहर भाग गया।

"आपको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई, महाशय!"

"आप क्या बना रही हैं" मैंने कुछ देर बाद पूछा।

"ब्लाउज है। जब यह पूरा हो जायगा तो मैं इसे पादरी के पास रखने के लिए ले जाऊँगी वर्ना येगोर सिनेनोविच इसे भी उड़ा ले जायगा। अब मैं सब चीजें पादरी के यहाँ रखती हूं," उसने धीमे स्वर में आगे कहा।

और अपनी बेटी के चित्र की तरफ देखकर, जो उसके सामने मेज पर रखा हुआ था, उसने आह भरी और बोली :

"हम दुनियाँ में अकेले हैं।"

और वेटी कहाँ थी ? मनेत्चका कहां थी ? मैंने पूछा नहीं। मैं उस वृद्धा मां से, जो गहरे शोक सूचक नए वस्त्र पहने हुये थी, यह पूछने का साहस नहीं कर सका। और उस समय जब मैं कमरे में था और जब जाने के लिए खड़ा हुआ, कोई भी मनेत्चका मुझे नमस्कार करने नहीं आई। मैंने उसकी आवाज नहीं सुनी, न उसकी सहमी हुई कोमल पगध्वनि ही सुनाई दी।...

मैं समझ गया और मेरा हृदय भारी हो उठा।

पोलिन्का

दोपहर का एक बजा है। 'नोवेउटेस-डी-पेरिस', आरकेडिस के एक बजाजे में पूरी तेजी से खरीद-फरोख्त हो रही है। दूकानदारों की आवाजों की एक उबा देने वाली भनभनाहट गूँज रही है। एक ऐसी भनभनाहट जैसी कि स्कूल में उस समय सुनाई देती है। जब मास्टर लड़कों को कोई चीज जबानी याद करने की आज्ञा देता है। निरन्तर होने वाली इस आवाज में न स्त्री ग्राहकों को हँसी से, न कांच के दरवाजों के बन्द होने की आवाज से और न बच्चों की इधर-उधर दौड़ने की आवाज से ही कोई बाधा पड़ रही है।

पोलिन्का, एक पतली सुन्दर लड़की, जिसकी मां बाल बनाने वाली एक दूकान की मालकिन है, दूकान के बीचो-बीच खड़ी किसी को ढूँढ़ रही है। एक काली भौंहों वाला लड़का दौड़कर उसके पास आता है और उसकी तरफ गम्भीरतापूर्वक देखता हुआ पूछता है :

"आपकी क्या सेवा की जाय, मैडम ?"

"निकोलाय टिमोफिच ही हमेशा मेरा आर्डर लेते हैं," पोलिन्का जवाब देती है।

निकोलाय टिमोफिच एक शानदार सांवला नौजवान, सुन्दर पोशाक पहने, घुंघराले बाल, और अपने गले के रूमाल में एक बड़ी सी पिन लगाये पहले ही से काउन्टर का एक हिस्सा साफ कर पोलिका की तरफ गर्दन बढ़ाए मुस्कुराता हुआ देख रहा है।

"नमस्कार, पेलेगिवा सजेविना !" वह एक प्रसन्नता भरे हार्दिक स्वर में जोर से कहता है। "मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ ?"

"नमस्कार !" उसके पास जाती हुई पोलिन्का कहती है। "तुम देख रहे हो मैं फिर आ गई।...मुझे कुछ तार वाला फीता दिखाओ।"

"तार वाला फीता--किस काम के लिये ?"

"वोडिस में गोट लगाने के लिये—दरअसल पूरी पोशाक में गोट लगाने के लिये।"

"जरूर।"

निकोलाय टिमोफिच कई तरह के तार वाले फीते पोलिन्का के सामने रखता है। वह फीतों का लापरवाही से देखती है और मोल-भाव करना शुरू कर देती है।

ओह, अच्छा, एक रूबल ज्यादा नहीं है," दूकानदार नम्रतापूर्वक मुस्कराते हुए अनुरोध करता है। "यह फ्रान्सीसी माल है, खालिस सिल्क का।...अगर आप चाहें हमारे पास मामूली माल भी है भारी वाला। वह पैंतालीस कोपेक गज का है, बेशक, यह इस दरजे का माल तो है नहीं।"

"मुझे दोनों तरह का कोरसेलेट भी चाहिये जिसमें तार वाले गोटे के बटन लगे हों," पोलिन्का, गोटे पर झुकती हुई और किसी वजह से गहरी सांस लेती हुई कहती है। "और आपके पास इसी रङ्ग की दानेदार मोटिफ भी है ?"

"है।"

पोलिन्का काउन्टर पर और भी ज्यादा झुक जाती है और धीरे से पूछती है :

"तुम वृहस्पतिवार को हम लोगों कों छोड़कर इतनी जल्दी क्यों चले आये थे, निकोलाय ?"

"हुं ! यह अजीब बात है कि तुमने इस पर गौर कर लिया, दूकानदार नखरे के साथ हँसता हुआ कहता है।"तुम उस सुन्दर विद्यार्थी को लेकर इतनी व्यस्त थीं कि...यह अजीब बात है कि तुमने इस पर गौर किया।"

पोलिन्का लाल पड़ जाती है और खामोश रहती है। कांपती हुई उङ्गलियों से दूकानदार बक्से बन्द करता है और बिना वजह उन्हें एक दूसरे पर रखता चला जाता है। क्षरण भर चुप्पी रहती है।

"मुझे थोड़ा-सा दानेदार गोटा भी चाहिए," अपराधिनी की तरह दूकानदार की तरफ निगाहें उठाती हुई पोलिन्का कहती है।

"कैसा ? काला या रङ्गीन ? पतले रेशम का दानेदार गोटा सबसे अधिक सुन्दर माना जाता है।"

"उसकी कीमत क्या है ?"

"काला कम-से-कम अस्सी कोपेन का और रंगीन कम-से-कम ढाई रूबल का। मैं अब कभी तुमसे मिलने नहीं आऊँगा," निकोलाथ धीमी आवाज में आगे कहता है।

"क्यों ?"

"क्यों क्या ? बिल्कुल स्वाभाविक है। यह तुम्हें खुद समझ लेना चाहिए। मैं अपने को दुःखी क्यों करूँ ? यह अजीब बात है ! तुम सोचती हो कि मुझे यह देखकर आनन्द आयेगा कि तुम उस विद्यार्थी के साथ जा रही हो ? मैं सब देखता और समझता हूँ। जाड़ों से ही वह तुम्हारे चारों तरफ मड़राता फिर रहा है और तुम लगभग हर रोज उसके साथ घूमने जाती हो, और जब वह तुम्हारे साथ होता है तो तुम उसकी तरफ ऐसे देखती हो मानो वह फरिश्ता हो। तुम उससे प्रेम करती हो, तुम्हारी नजर में उससे अच्छा और कोई भी नहीं है। खैर, अच्छी बात है, तब बात करने से कोई फायदा नहीं।"

पोलिन्का खामोश रहती है और परेशान होकर काउन्टर पर अपनी उँगलियाँ फिराती है।

"मैं सब देखता हूँ," दूकानदार आगे कहता है, "मुझे क्या लालच है कि जाऊँ और तुमसे मिलूँ ? मेरा भी कुछ आत्म-सम्मान है। हरेक आदमी बेवकूफी का खेल खेलना पसन्द नहीं करता। तुमने क्या माँगा था ?"

"माँ ने मुझ से बहुत सी चीजें लाने के लिए कहा था मगर मैं तो भूल गई। मुझे कुछ परबाली गोट भी चाहिए।"

"कैसी पसन्द करोगी ?"

"सबसे अच्छी, कुछ ऐसी जो फैशनेबिल हो।"

"आजकल सबसे ज्यादा फैशनेबिल तो असली पंखों वाली मानी जाती है। अगर तुम्हें सब फैशनेबिल रंग चाहिए तो वह सूर्य कमल या 'कनक' है—मतलब यह कि पीली छाया लिए हुए लाल। हमारे पास अनेक किस्में हैं। और यह सारी बातें कहाँ ले जायँगी, सचमुच, मैं समझ नहीं पाता। यहाँ आकर तुम प्रेम करती हो। इसका अन्त कैसा होगा?"

निकोलाय की आँखों के चारों तरफ लाल धब्बे छा जाते हैं। वह अपने हाथ में कोमल परों वाली गोट को दबाता है और कहे चला जाता है।

"तुम सोचती हो कि वह तुमसे शादी कर लेगा—क्यों यही बात है न? अच्छा हो कि तुम इस कल्पना को छोड़ दो। विद्यार्थी को शादी करने की इजाजत नहीं है। और तुम सोचती हो कि वह किसी भले इरादे से तुम से मिलने आता है? यह एक असम्भव विचार है! क्यों, ये सुन्दर विद्यार्थी हम लोगों को इन्सान की तरह नहीं देखते...वे दूकानदारों और दर्जियों के पास सिर्फ उनकी बेवकूफियों पर हँसने और शराब पीने जाते हैं। वे घर पर और भले आदमियों के यहाँ शराब पीने में शर्मिन्दा होते हैं मगर हम जैसे सीधे, बिना पढ़े-लिखे लोगों के साथ वे इस बात की चिन्ता नहीं करते कि कोई क्या सोचता है। वे सिर के बल खड़े होने को तैयार हो जाते हैं। हाँ! अच्छा, तुम्हें परवाली कौनसी गोटा पसन्द है? और अगर वह तुम्हारे चारों तरफ चक्कर काटता है और तुम्हारे पीछे लगा रहता है तो हम जान जाते हैं कि वह क्या चाहता है।....जब वह एक डाक्टर या वकील बन जायेगा तो तुम्हारे बारे में सोचेगा: 'आह', वह कहेगा, 'मेरे पास एक छोटी-सी सुन्दर लड़की थी! ताज्जुब है कि अब वह कहाँ है? अब भी, मैं तुमसे शर्त बद सकता हूँ, वह अपने दोस्तों में बैठकर डींग हाँकता होगा कि उसकी एक नन्ही-सी पोशाक बनाने वाली पर निगाह है।"

पोलिन्का बैठ जाती है और सफेद बक्सों के ढेर की तरफ सोचती हुई देखती है।

"नहीं, मैं परवाली गोट नहीं लूँगी," वह आह भरती है। "अच्छा होगा कि माँ खुद ही आकर छाँट लें, मैं गलत भी ले सकती हूँ। मुझे एक

ओवरकोट के लिए चालीस कोपेक गज वाली छः गज झालर चाहिए। उसी कोट के लिए मुझे नारियल के बटन चाहिए, छेददार, जिससे उन्हें अच्छी तरह सींया जा सके।..."

निकोलाय टिमोफिच झालर और बटन बाँधता है। वह उसकी तरफ अपराधिनी की तरह देखती है और स्पष्टता चाहती है कि वह बात करता रहे परन्तु वह उदास होकर चुप हो जाता है और परवाली गोट लपेटने लगता है।

"मुझे एक ड्रेसिङ्ग गाउन के लिए बटन लेना नहीं भूलना चाहिए..." अपने पीले होठों को रूमाल से पोंछती हुई वह कुछ देर की चुप्पी के बाद कहती है।

"किस तरह के ?"

"एक दूकानदार की बीवी के लिए चाहिए, इसलिए मुझे दो जो आकर्षक हों।"

"हाँ, अगर दूकानदार की बीवी के लिए चाहिए तो अच्छा हो कि कोई चमकीली चीज खरीदो। ये कुछ बटन हैं। रङ्गों का मिश्रण—लाल, नीले और फैशनेबिल सुनहरी रंग के। बहुत चमकीले। ज्यादा फैशनपरस्त लोग चमकीले किनारे के हल्के काले रंग वाले अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु मेरी समझ में नहीं आता। तुम खुद नहीं समझ सकतीं ? यह घूमना... तुम्हें आखिर कहाँ ले जावेगा ?"

"मैं नहीं जानती," पोलिन्का फुसफुसाती है और बटनों पर झुक जाती है, "मैं खुद नहीं जानती कि मेरा क्या होने वाला है, निकोलाय टिमोफिच।"

एक गलमुच्छे मोटा सेल्समैन जिसके निकोलाय टिमोफिच के पीछे होकर उसे काउन्टर से भींचता हुआ जबर्दस्ती रास्ता बनाता है। और बड़ी मौज में आकर शान के साथ ऊँचे स्वर में कहता है।

"श्रीमती जी, इस विभाग में आने की कृपा कीजिए। हमारे पास

तीन प्रकार की जर्सियाँ हैं। सादी, लैसदार और दानेदार किनारे वाली! आपको कौनसी दिखाऊँ?"

उसी समय एक तगड़ी औरत पोलिन्का के बगल में होकर, एक गहरी सुरीली, लगभग धीमी आवाज में कहती हुई गुजरती है।

"उनमें सिलाई नहीं होनी चाहिए, उन पर ट्रेड मार्क की मोहर होनी चाहिए।"

"चीजों की तरफ देखती रहने का बहना करो," एक जबंदस्ती की मुस्कुराहट के साथ पोलिन्का की तरफ झुकते हुए निकोलाय फुसफुसाता है: "मेरी प्यारी, तुम पीली और बीमार दिखाई पड़ती हो, बिल्कुल बदल गई हो। वह तुम्हें छोड़ देगा पेलागिया सर्जीबना! और अगर वह तुमसे शादी कर भी लेता है तो यह प्रेम के कारण न होकर वासना के कारण होगा, वह तुम्हारे पैसे के लिए ललचा उठेगा। वह तुम्हारे दहेज से अपने लिए एक मकान सजा लेगा और फिर तुम्हारी वजह से झेंपने लगेगा। वह तुम्हें अपने दोस्तों और मिलने वालों की निगाहों से दूर रखेगा क्योंकि तुम बिना पढ़ी-लिखी हो। तुम्हें यह पता नहीं होगा कि वकीलों या डाक्टरों के समाज में कैसा व्यवहार किया जाता है। उनके लिए तुम एक पोशाक बनाने वाली बेवकूफ औरत हो।"

"निकोलाय टिमोफिच!" कोई दूकान के दूसरे सिरे से पुकारता है। "यहाँ खड़ी हुई नवयुवती धातु की धारियों वाला तीन गज रिबन चाहती है? हमारे पास है?"

निकोलाय टिमोफिच उस तरफ मुड़ता है, नखरे के साथ हँसता है और चिल्लाता है।

"हाँ, है! धातु की धारियों वाला रिबन, बिना उठान का साटिन की धारियों वाला और मोहरी धारियों वाला साटिन।"

"ओह, कहीं मैं भूल न जाऊँ, ओल्गा ने एक जोड़ी अंगिया लाने के लिए कहा था!" पोलिन्का कहती है।

"तुम्हारी आँखों में आँसू हैं," उद्विग्न होकर निकोलाय टिमोफिच कहता है। "यह किस लिए ? अंगिया वाले विभाग में चलो, मैं तुम्हें वहाँ छिपा लूँगा—यह भद्दा लगता है।"

एक बनावटी मुस्कान और बड़ी लापरवाही के साथ दूकानदार जल्दी से पोलिन्का को अंगिया वाले विभाग में ले जाता है और उसे बक्सों के एक ऊँचे ढेर के पीछे लोगों की निगाहों से छिपा देता है।

"तुम्हें किस तरह की अंगिया दिखाऊँ," वह जोर से पूछता है और फौरन ही फुसफुसा कर कहता है, "अपनी आँखें पोंछ लो।"

"मुझे ..मुझे चाहिए...अड़तालीस सेन्टीमीटर नाप वाली। वह सिर्फ एक लाइन वाली चाहती है...असली ह्वेलबोन के साथ...मुझे तुमसे बातें करती हैं निकोलाय टिमोफिच, आज आना !"

"बातें करनी हैं ? किस बारे में ? बात करने के लिए कुछ भी तो नहीं है।"

"तुम्हीं सिर्फ एक व्यक्ति हो जो...मेरी चिन्ता करता है। मैं तुम्हारे अलावा और किसी से भी बात नहीं कर सकती।"

"ये सरकन्डे या स्टील का नहीं बल्कि असली ह्वेल की हड्डी की हैं।...हमारे पास बात करने के लिए है क्या ? बात करने से कोई फायदा नहीं।...मेरा ख्याल है, आज तुम उसके साथ घूमने जा रही हो ?"

"हाँ, मैं...मैं जा रही हूँ।"

"तब बात करने से क्या फायदा ? बातों से काम नहीं चलेगा।...तुम प्रेम करती हो, करती हो न ?"

"हाँ..." पोलिन्का हिचकिचाती हुई फुसफुसाती है और उसकी आँखों से बड़े-बड़े आँसू बहने लगते हैं।

"कहने के लिए है ही क्या ?" पीला पड़कर निराशापूर्वक अपने कन्धे उचकाते हुए निकोलाय टिमोफिच बड़बड़ाता है। 'बात करने की कोई जरूरत

नहीं।...अपनी आँखें पोंछ लो, सिर्फ इतना ही। मैं...मैं कुछ भी नहीं चाहता।"

उसी समय एक लम्बा, पतला सेल्समैन बक्सों के उस ढेर के पास आता है और अपने ग्राहक से कहता है : "देखिए, ये कुछ अच्छी एलास्टिक की गेटिसें हैं जो खून के दौरे को नहीं रोकतीं, डाक्टरों द्वारा प्रमाणित हैं..."

निकोलाय टिमोफिच पोलिन्का को छिपा देता है और अपनी ओर उसकी भावनाओं को छिपाने की कोशिश करते हुए अपने चेहरे पर हँसी की रेखायें बनाता है और जोर से कहता है।

'वे दो तरह की लैस हैं, मैडम : सूती और रेशमी। पूर्वीय, अँग्रेजी, बेलेन्मिया की, जालीदार बुनी हुई, फीते वाली सूती हैं और रोकोको, कपड़े में सीने वाली झालर, कैम्ब्रे रेशमी हैं।...भगवान के लिए अपनी आँखें पोंछ लो! वे लोग इसी तरफ आ रहे हैं!"

और यह देख कर कि उसके आँसू अभी तक बह रहे हैं वह पहले से भी जोर से कहने लगता है।

"स्पेनिश रोकोको, कपड़े की झालर, कैम्ब्रे, मोजे, डोरा, सूती, रेशमी...।"

सहधर्मिणी

"मैं तुमसे कह चुका हूँ कि मेरी मेज मत ठीक किया करो," निकोलाय येव्ग्राफित्च ने कहा। "जब तुम इसे ठीक करती हो तो किसी भी चीज का ढूँढ़ना मुश्किल हो जाता है। तार कहाँ है? कहाँ फेंक दिया? मेहरबानी करके जरा ढूँढ़ो तो सही। कजान से आया है, तारीख कल की है।"

नौकरानी ने जो एक पीली, छरहरे शरीर और उदास चेहरे वाली लड़की थी, मेज के नीचे टोकरी में कई तार पड़े पाए और बिना एक भी शब्द कहे उन्हें डाक्टर के हाथ में दे दिया, मगर ये सब मरीजों के तार थे। फिर उन्होंने ड्राइंग-रूम में और ओल्गा द्मित्रिएव्ना के कमरे में तलाश की।

रात आधी से ज्यादा गुजर चुकी थी। निकोलाय जानता था कि उसकी बीबी जल्दी घर नहीं लौटेगी, कम से कम पाँच बजे तक तो नहीं ही आएगी। वह उसका विश्वास नहीं करता था। जब वह बहुत देर तक बाहर रहती थी तो वह सो नहीं सकता था, परेशान रहता था और साथ ही अपनी बीबी से, उसके बिस्तर से, उसके मुँह देखने वाले शीशे से, उसके मिठाई के डिब्बों से, फूलों से, घाटी में खिलने वाले लिली के फूलों से, जो किसी-न-किसी के द्वारा रोज उसके पास भेजे जाते थे और जो सारे घर में फूलों की दूकान की सी भद्दी गन्ध भर देते थे, आदि सभी चीजों से वह नफरत करता था। ऐसी रातों को उसका स्वभाव ओछा, क्रुद्ध और चिड़चिड़ा हो जाता था। इस समय उसने सोचा कि उसके लिए अपने भाई के उस तार को, जिसमें बड़े दिन की शुभ कामना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था, प्राप्त करना बहुत जरूरी है।

अपनी बीवी के कमरे में, मेज पर स्टेशनरी के डिब्बे के नीचे उसे एक तार मिला और उसने अचानक उसकी तरफ देखा। यह उसकी बीबी को

उसकी सास की मार्फत, मौन्टे कार्लो से भेजा गया था और उसका भेजने वाला मिचेल था।...डाक्टर उसका एक शब्द भी नहीं समझ सका क्योंकि यह किसी विदेशी भाषा में अंग्रेजी में भेजा गया था।

"यह मिचेल कौन है मोन्टे कार्लो से क्यों? माँ की मार्फत क्यों?"

अपनी सात साल की विवाहित जिन्दगी के दौरान में वह शक्की, अन्दाज भिड़ाने वाला और संकेतों को पकड़ने वाला बन गया था। कई बार उसे ऐसा महसूस हुआ था कि घर की इन बातों ने उसे एक चतुर जासूस बना दिया था। अपने अध्ययन-कक्ष में जाकर सोचते-सोचते उसे एक दम ख्याल आया कि डेढ़-साल पहले वह किस तरह अपनी बीबी के साथ पीतर्सबर्ग गया था और वहां उसने अपने एक पुराने स्कूल के साथी एक सिविल इंजीनियर के साथ खाना खाया था और किस तरह उस इंजीनियर ने उसका और उसकी बीबी का बाईस या तेईस साल के एक नौजवान मिहेल इवानोविच से परिचय कराया था। उस नौजवान का उपनाम बड़ा विचित्र–सा था–रिस। दो महीने बाद डाक्टर ने अपनी बाबी के एलबम में उस नौजवान का एक फोटो देखा था जिस पर फ्रांसीसी में लिखा था। "वर्तमान की स्मृति और भविष्य की आशा में।" बाद में उसकी सास के घर उसकी नौजवान से मुलाकात हुई थी। और यह मुलाकात उस समय हुई थी जब उसकी बीबी अक्सर घर से गायब रहा करती थी और सुबह के चार या पाँच बजे घर लौटा करती थी और बराबर उससे विदेश जाने के लिये पासपोर्ट दिला देने के लिये कहा करती थी जिसके लिये वह हमेशा इन्कार कर दिया करता था; घर में हमेशा कलह मची रहती थी जिसकी वजह से वह नौकरों के सामने जाने में झेंपता रहता था।

छः महीने पहले उसके साथी डाक्टरों ने घोषणा की थी कि उसे तपेदिक होने वाली थी और उसे सलाह दी थी कि वह सब कुछ छोड़ दे और क्रीमिया चला जाय। जब उसकी बीबी ने यह सुना तो यह दिखाया कि वह बहुत अधिक चिन्तित हो उठी थी। उसने अपने पति के प्रति प्रेम दिखाना प्रारम्भ कर दिया और उसे यह विश्वास दिखाती रही कि क्रीमिया की

जलवायु बड़ी ठण्डी और नीरस रहेगी और वहाँ अच्छा तो रहेगा कि वह नीस चले। वह उसके साथ चलेगी और उसकी सेवा करेगी, देखभाल करेगी और हिफाजत करेगी।

वह अब समझा कि उसकी बीबी नीस जाने के लिये विशेष रूप से क्यों उत्सुक थी। उसका मिचेले मोन्ते कार्लो में रहता था।

उसने एक अंग्रेजी डिक्शनरी उठाई और शब्दों का अनुवाद करते हुए और उनके मतलब का अन्दाजा लगाते हुए धीरे-धीरे यह वाक्य बना लिया। "मैं अपनी प्रियतमा के लिए स्वास्थ्य-पान करता हूँ और उसके नन्हे से चरण का सौ बार चुम्बन करता हूँ और अत्यधिक व्यग्र होकर उसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।" उसने कल्पना की कि अगर वह अपनी बीबी के साथ नीस जाना स्वीकार कर लेता तो कितना दयनीय और भद्दा पार्ट अदा करता। वह इतना दुखी हो उठा कि उसकी आँखों से आँसू गिरने लगे और व्यग्र होकर वह फ्लैट के सारे कमरों में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा उसका गर्व, उसकी सामान्य उपेक्षा बुद्धि। अपनी मुट्ठियाँ बाँध कर, घृणा से भौंहें चढ़ाए वह आश्चर्य करने लगा कि कैसे वह एक गाँव के पादरी का बेटा, एक पादरियों के स्कूल में बड़ा हुआ, एक सीधा, सरल प्रकृति का व्यक्ति बना और डाक्टरी का पेशा अपनाया, किस तरह वह अपने को गुलाम बना देता और इस निर्बल नालायक, पेशेवर, नीच प्राणी की भद्दी जकड़ में फंस कर उसका पतन हो जाता।

"नन्हा चरण!" तार को मरोड़ते हुए वह अपने आप बड़बड़ाया। "नन्हा चरण"

वह समय, जब वह उसके प्रेम में पड़ा था और उसके सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा था, और वे सात साल जब से वह उसके साथ रहता आ रहा था आदि में से जो कुछ उसकी स्मृति में शेष रहा था वह उसके लम्बे, सुगन्धित केश थे, कोमल गोटे का एक ढेर, और उसके नन्हें से पैर जो सचमुच बहुत छोटे और खूबसूरत थे, ही था। और अब भी ऐसा लगा मानो उन पुराने आलिंगनों से उत्पन्न गोटे और सिल्क का अनुभव अब भी उसे

अपने हाथों और चेहरे पर हो रहा था । इसके अलावा उसे और कुछ भी नहीं याद रहा था मतलब यह कि हिस्टीरिया के दौरों, चीखने-चिल्लाने, लानत-मलामतों, धमकियों और झूठों–सफेद और धोखा देने वाली झूठों की तो गिनती ही नहीं । उसे याद आया कि किस तरह गाँव में उसके पिता के घर में, कभी धोखे से कोई चिड़िया बाहर की खुली हवा में से भीतर घुस आती थी और बुरी तरह निराश होकर खिड़कियों के शीशों से टकराती थी और सारी चीजों को तितर-बितर कर डालती थी । इसी तरह उससे भिन्न वर्ग की यह स्त्री उसके जीवन में उड़ कर आ गई थी और उसने उसे बुरी तरह तहस-नहस कर डाला था । उसके जीवन के सबसे अच्छे दिन मानो नरक में कटे थे, उसकी सुख पाने की आशाएँ छिन्न-भिन्न हो चुकी थीं और एक मजाक बन गई थी, उसका स्वास्थ्य नष्ट हो चुका था, उस वातावरण में उसके कमरे इतने गन्दे बन गये थे मानो एक वेश्या के कमरे हों और उन दस हजार में से, जो वह साल भर में कमाता था, वह कभी भी गाँव में अपनी बुढ़िया माँ को भेजने के लिए दस रूबल भी नहीं बचा पाया था और इस समय तक उस पर पन्द्रह हजार का कर्ज हो चुका था । ऐसा लगता था कि अगर उसके कमरों में डाकुओं का एक गिरोह रहता होता तब भी उसकी जिन्दगी इतनी बुरी तरह से, भयंकर रूप से नष्ट नहीं होती जितनी कि इस औरत की मौजूदगी से हो गई थी ।

वह खाँसने और साँस लेने के लिए मुँह फाड़ने लगा । उसे बिस्तर पर जाकर कपड़ों में लिपट कर सो जाना चाहिए था मगर वह ऐसा नहीं कर सका । वह बराबर कमरों में घूमता रहा । कभी मेज पर बैठ जाता था अधीर होकर पेन्सिल से खेलने लगता और मशीन की तरह कागज पर आड़ी तिरछी रेखाएं खींचने लगता ।

"कलम घिस रहा हूँ···एक नन्हा चरण ।"

पाँच बजने तक उस पर कमजोरी हावी होने लगी और उसने सारा दोष अपने ही सिर पर मढ़ दिया । अब उसे ऐसा लगा कि कौन जानता है । अगर ओ गा की शादी किसी ऐसे व्यक्ति के साथ होती जो उसे अच्छी तरह

काबू में रख सकता–तो वह एक अच्छी और सीधी औरत बन जाती। उसका मनोविज्ञान का ज्ञान बहुत उथला था और वह नारी-हृदय के विषय में कुछ भी नहीं जानता था। इसके अलावा वह गँवार और रूखे स्वभाव वाला भी था।...

"अब मुझे ज्यादा जिन्दा नहीं रहना है," उसने सोचा। "मैं एक मुर्दा हूँ और मुझे जीवित प्राणियों के रास्ते में रोड़े नहीं अटकाने चाहिए। ऐसी स्थिति में किसी के अधिकारों पर अड़े रहना अजीब और बेवकूफी से भरी बातें हैं। मैं इस समस्या को उसके साथ सुलझा लूँगा। उसे उस आदमी के पास चला जाने दूँगा जिसे वह प्रेम करती है।...मैं उसे तलाक दे दूँगा। मैं सारा दोष अपने ऊपर ले लूँगा।"

आखिरकार ओल्गा आ ही गई। वह अध्ययन-कक्ष में आई और अपना सफ़ेद लबादा, हैट और बड़े बूट पहने ही एक कुर्सी में धँस गई।

"बदमाश, मोटा लड़का," उसने गहरी साँस लेकर सिसकते हुए कहा: "यह सचमुच बेईमानी है, यह घृणित है।" उसने पैर पटका। "मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती। नहीं कर सकती, नहीं कर सकती!"

"क्या बात है?" उसके पास जाते हुए निकोलाय ने पूछा।

"वह विद्यार्थी, अजरबेकोव मुझे घर पहुँचाने आ रहा था और उसने मेरा बटुआ खो दिया। उसमें पन्द्रह रूबल थे। मैंने माँ से उधार लिए थे।"

वह एक छोटी बच्ची की तरह बिल्कुल सच्चे ढंग से रो रही थी और सिर्फ उसका रूमाल ही नहीं बल्कि उसके दस्ताने तक आँसुओं से भीग गए थे।

"इसका कोई इलाज नहीं!" डाक्टर ने कहा, "अगर उसने खो दिए तो खो दिए, इसके लिए चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं। चुप हो जाओ, मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ।"

"मैं कोई करोड़पति तो हूँ नहीं कि इस तरह पैसे खोती फिरूँ। वह कहता है कि वापस दे देगा, परन्तु मैं उसका विश्वास नहीं करती, वह गरीब है...।"

उसके पति ने उससे शान्त होने और उसकी बात सुनने की प्रार्थना की मगर वह बराबर उस विद्यार्थी और उन खोए हुए पन्द्रह रूबलों की ही बातें करती रही।

"ओह! अगर तुम खामोश हो जाओ तो मैं कल तुम्हें पच्चीस रूबल दे दूँगा!" उसने चिड़चिड़े होकर कहा।

"मुझे कपड़े उतारने हैं!" उसने रोते हुए कहा —"मैं अपना रूएँदार कोट पहने गम्भीरतापूर्वक बातें नहीं कर सकती। तुम भी कैसे अजीब आदमी हो!"

डाक्टर ने कोट और बड़े बूट उतारने में उसकी मदद की और ऐसा करते समय उसे उस सफेद शराब की गन्ध आई जिसे वह घोंघों के साथ पीना बहुत पसन्द करती थी (इतनी दुबली-पतली होते हुए भी वह बहुत ज्यादा खाती-पीती थी)। वह अपने कमरे में गई और जल्दी वापस आ गई। वह कपड़े बदल कर और चेहरे पर पाउडर लगाकर आई थी यद्यपि उसकी आँखों में अभी भी आँसुओं के निशान बाकी थे। वह अपने हल्के रेशमी ड्रेसिंग गाउन में पीछे सिमटती हुई बैठ गई। गुलाबी लहरों के उस समूह में उसका पति उसके बालों के अतिरिक्त, जिन्हें उसने खोलकर लटका रखा था, और कुछ भी नहीं देख सका। उसके नन्हें से पैरों में स्लीपर थे।

"तुम क्या बातें करना चाहते हो?" एक झूलने वाली कुर्सी में झूलते हुए उसने पूछा।

"मैंने यह देख लिया था" और उसने उसे वह तार पकड़ा दिया। उसने तार पढ़ा और कन्धे उचकाए।

"क्यों?" और भी जोर से झूलते हुए वह बोली, "यह मामूली बड़े दिन की शुभ कामना है, और कुछ भी नहीं है। इसमें कोई रहस्य नहीं है।"

"तुम सोच रही हो कि मैं अंग्रेजी नहीं जानता। नहीं, मैं नहीं जानता मगर मेरे पास एक डिक्शनरी है। यह तार रिसका का है, वह अपनी प्रियतमा के लिए स्वास्थ्य पान करता है और तुम्हें एक हजार चुम्बन भेजता है। मगर इस बात को छोड़ो," डाक्टर जल्दी-जल्दी कहता गया, "मैं यह

नहीं चाहता कि तुम्हें डाटूँ एक तमाशा खड़ा करदूँ। हम लोग एक दूसरे को काफी डाट-फटकार चुके हैं और तमाशे खड़े कर चुके हैं, अब समय आ गया है कि इन्हें खत्म कर दिया जाय।...मैं तुमसे यह कहना चाहता हूँ कि तुम स्वतन्त्र हो और जैसे चाहो वैसे रह सकती हो।"

खामोशी छाई रही। वह चुपचाप रोने लगी।

"मैं तुम्हें झूँठ बोलने और बहाने बनाने की जरूरत से छुटकारा दे रहा हूँ," निकोलाय कहता रहा, अगर तुम उस नौजवान से प्रेम करतीं हो, प्रेम करो, अगर तुम उसके पास विदेश जाना चाहती हो, जाओ। तुम जवान हो, तन्दुरुस्त हो और मैं एक टूटा हुआ व्यक्ति हूँ और मुझे ज्यादा दिनों तक जिन्दा भी नहीं रहना है। संक्षेप में...तुम मेरी बात समझ गईं।"

वह व्यग्र हो उठा और आगे नहीं बोल सका। ओलगा ने रोते और दीनता पूर्ण स्वर में बोलते हुए स्वीकार किया कि वह रिस से प्रेम करती है। वह उसके साथ शहर से बाहर जाया करती थी और उसके कमरों में है उससे मिलती थी और अब सचमुच विदेश जाने के लिए व्याकुल हो उठी है।

"देखो, मैं तुमसे कुछ नहीं छिपाती," उसने एक गहरी सांस लेकर आगे कहा, "मेरी सारी बातें तुम्हारे सामने खुली पड़ी हैं। इसलिए मैं तुम से फिर प्रार्थना करती हूँ, उदार बनो, मुझे एक पासपोर्ट ले दो।"

"मैं फिर कहता हूँ, तुम स्वतन्त्र हो।"

वह उसके चेहरे के भावों को देखने के लिए उसके और नजदीक जाकर बैठ गई। वह उसका विश्वास नहीं करती थी और इस समय उसके असली मतलब को समझना चाहती थी। वह कभी किसी का भी विश्वास नहीं करती थी। लोगों के इरादे चाहे कितने ही उदार क्यों न होते वह हमेशा उनमें कोई-न-कोई ओछा और भद्दा इरादा या स्वार्थ की बात होने की शङ्का करती रहती थी। जब उसने डाक्टर के चेहरे पर खोजपूर्ण निगाहें डालीं तो डाक्टर को ऐसा लगा कि उसकी आंखों में बिल्ली की आँखों की तरह एक हरी चमक है।

"मुझे पासपोर्ट कब मिल जायेगा ?" उसने नम्रता के साथ पूछा।

अचानक उसके मन में उठा कि कह दे, "कभी नहीं,' परन्तु उसने अपने को रोक लिया और बोला।

"जब तुम चाहो।"

"मैं सिर्फ एक महीने के लिए जाऊँगी।"

"तुम रिस के पास भले के लिए ही जाओगी। मैं तुम्हें तलाक दिला दूँगा, सारा दोष अपने ऊपर ले लूँगा और तब रिस तुम्हारे साथ शादी करने के लिए स्वतन्त्र होगा।"

"मगर मैं तलाक नहीं चाहती !" ओल्गा ने आश्चर्य चकित होकर जल्दी से जबाब दिया। "मैं तुमसे तलाक नहीं मांग रही। मुझे पासपोर्ट दिलवा दो, सिर्फ इतना ही चाहती हूँ।"

"मगर तुम तलाक क्यों नहीं चाहतीं ?" डाक्टर चिड़चिड़ाहट का अनुभव करते हुए कहना प्रारम्भ किया। "तुम अजीब औरत हो। अजीब कैसी हो ! अगर तुम सचमुच उसे चाहती हो और वह भी तुमसे प्रेम करता है तो अपनी इस स्थिति में तुम्हारे पास तलाक दे देने के अलावा और कोई भी दूसरा अच्छा रास्ता नहीं है। क्या तुम सचमुच शादी और व्यभिचार में अन्तर समझती हो ?"

"मैं तुम्हें जानती हूँ, "उससे दूर हटते हुये वह बोली और उसके चेहरे पर घृणा और प्रतिशोध के भाव झलक उठे। "मैं तुम्हें खूब समझती हूँ। तुम मुझसे ऊब उठे हो और मुझसे पीछा छुड़ाना चाहते हो, इस तलाक को मुझ पर लादना चाहते हो। तुम्हें बहुत-बहुत धन्यवाद है, मैं इतनी बेवकूफ नहीं हूँ जितनी कि तुम समझते हो। मैं तलाक मंजूर नहीं करूँगी और तुम्हें नहीं छोड़ूँगी नहीं छोड़ूँगी,नहीं छोड़ूँगी। पहली बात तो यह है कि मैं समाज में अपनी स्थिति नहीं बिगाड़ना चाहती," वह जल्दी-जल्दी बोलती गई मानो इस बात से डर रही हो कि कहीं उसे बोलने से रोक न दिया जाय। "दूसरे, मैं सत्ताईस की हूँ और रिस सिर्फ तेईस का है, वह साल भर

में मुझसे ऊब जायगा और छोड़ देगा। अगर तुम जानना चाहो तो सब से बड़ी बात यह है, कि मुझे विश्वास नहीं है कि मेरी यह भावना अधिक दिनों तक ऐसी ही बनी रहेगी...इसलिये मैं तुम्हें नहीं छोडूँगी।"

"तब मैं तुम्हें घर से बाहर निकाल दूँगा!" पैर पटकते हुये निकोलाय चीखा, "मैं तुम्हें निकाल दूँगा, नीच, घृणित औरत!"

"हम देखलेंगे!" उसने कहा और बाहर चली गई।

बाहर धूप खिल रही थी परन्तु डाक्टर अब भी मेज पर बैठा कागज पर पेन्सिल फिरा रहा था और मशीन की तरह लिख रहा था।

"माई डियर सर...नन्हा चरण।"

वह इधर-उधर घूमा और ड्राइङ्ग-रूम में एक फोटो के सामने जाकर खड़ा हो गया जो सात साल पहले, उसकी शादी के बाद ही खींचा गया था। वह बहुत देर तक उसकी तरफ देखता रहा। यह एक पारिवारिक चित्र था, उसका ससुर, उसकी सास, उसकी पत्नी ओल्गा दूमित्रीएव्ना, जब वह बीस साल की थी, और खुद वह एक प्रसन्न युवक पति के रूप में। उसका ससुर, एक दाढ़ी मूँछ रहित व्यक्ति, जलोदर सम्बन्धी प्रिवी काउन्सलर, चालाक और लालची, उसकी सास, एक तगड़ी न्यौले की सी लुटेरों जैसी रूपरेखा वाली स्त्री, जो अपनी बेटी को बहुत प्यार करती थी और हर बात में उसकी मदद करती थी, अगर उसकी बेटी किसी का गला घोंट रही होती तो भी वह मना नहीं करती बल्कि उसे अपने अंचल में छिपा लेती! ओल्गा की रूप रेखा भी छोटे लुटेरों जैसी थी परन्तु अपनी माँ से अधिक स्पष्ट और उद्धव। वह न्यौले जैसी न होकर एक बड़े खूंखार जानवर जैसी लगती थी। निकोलाव खुद चित्र में एक निष्कपट, दयालु, सज्जन, स्पष्ट और भोला व्यक्ति जैसा लग रहा था, उसका पूरा चेहरा एक धार्मिक व्यक्ति की सरल और मृदुल मुस्कान से खिल रहा था, वह इतना सीधा था कि इस बात पर विश्वास करता था कि इन शिकारी जानवरों की संगत में जो भाग्य ने उसे डाल दिया है वह उसे रोमान्स और प्रसन्नता तथा वह सब कुछ देगा जिसका वह एक विद्यार्थी के रूप में स्वप्न देखता हुआ गाया करता था,—"यौवन

नष्ट हो गया, जीवन शून्य है जब हृदय शान्त और प्रेम से शून्य है।"

और एक बार उसने व्याकुल होकर अपने आप से पूछा कि कैसे वह, एक ग्रामीण पादरी का पुत्र, एक प्रजातान्त्रिक वातावरण में एक सीधे, अक्खड़, सरल व्यक्ति के रूप में बड़ा होकर इस बेकार, भूंठी, गन्दी, क्षुद्र नारी जिसकी प्रकृति उससे पूर्णतः भिन्न थी के सम्मुख आत्मसमर्पण कर सका।

जब ग्यारह बजे उसने अस्पताल जाने के लिये कोट पहना तो नौकर उसके अध्ययन-कक्ष में आया।

"क्या है ?" उसने पूछा।

"मालकिन उठ गईं हैं और आपसे पच्चीस रूबल मंगा रही हैं वही जिन्हें देने का आपने कल वायदा किया था।"

अन्यूता

एक बड़े ब्लाक के सजे हुये कमरों में से एक सबसे सस्ते कमरे में मेडीकल के तृतीय वर्ष का विद्यार्थी स्टेपन क्लोत्चकोव घूमता हुआ बड़े जोर-जोर से शरीर-रचना-शास्त्र की रटाई कर रहा था। उसका मुँह सूख गया था और माथे पर, अपने विषय को बराबर रटते रहने का परिश्रम करने के कारण, पसीना झलझला रहा था।

खिड़की में, जिस पर पाले के तरह-तरह के चित्र से बने हुये थे, स्टूल पर अन्यूता नाम की एक लड़की बैठी हुई थी जो उसके साथ इसी कमरे में रहती थी। अन्यूता पच्चीस वर्ष की एक छोटी-सी दुबली पतली सांवले रंगकी लड़की थी। वह बहुत पीली पड़ रही थी। उसकी आंखें कोमल और भूरी थीं। पीठ झुकाये बैठी वह लाल धागे से आदमी की कमीज का कालर काढ़ने में व्यस्त थी। वह समय का विचार न कर बराबर काम किए जा रही थी। बरामदे की घड़ी ने तन्द्रिल से स्वर में दो घन्टे के बजाये, फिर भी अभी तक वह छोटा सा कमरा सुबह के लिए ठीक नहीं किया गया था। सिकुड़ी हुई चादरें, इधर उधर फेंके हुये तकिये, किताबें, कपड़े, एक बड़ा गन्दे पानी का साबुन के झागों से भरा हुआ बर्त्तन जिसमें सिगरेट के टोंटे तैर रहे थे और दरवाजे पर रखी हुई टिखटी—यह सब ऐसा लगता था मानो जान बूझकर वहां यह अव्यवस्था फैलाई गई हो।...

''दाहिने फेफड़े के तीन भाग होते हैं...'' क्लोत्चकोव ने दुहराया। ''सीमाऐं वक्षस्थल की पहली दीवाल का ऊपरी भाग चौथी या पाँचवी पसली तक, बगल की सतह तक पहुँचता है, चौथी पसली...'स्पिना स्केपुला' के पीछे...''

क्लोत्वकोव ने अपनी आंखें छत की तरफ उठाईं और अभी जो पढ़ा था उसे कल्पना में दुहराने की कोशिश की । उसका एक स्पष्ट चित्र खींचने में असफल होकर वह अपनी वास्कट के भीतर अपनी ऊपरी पसलियों को टटोलने लगा ।

"ये पसलियाँ पियानो के पर्दे की तरह हैं," उसने कहा, "हरेक को अगर वह उसके बारे में पशोपेश में नहीं पड़ना चाहता । किसी तरह से इनकी तुलना करनी ही चाहिये । हरेक को उनका अध्ययन एक अस्थि पिंजर और जीवित शरीर दोनों ही में करना चाहिए ।···मैं कहता हूँ, अन्ययूता, मुझे जरा उन्हें देखने दो ।"

अन्यूता ने अपना सीना—पिरोना नीचे रख दिया, अपना ब्लाउज उतारा और अपने शरीर को सीधा किया । क्लोत्वकोव भौंहों में गाँठ दिये उसके सामने बैठ गना और उसकी पसलियाँ गिनने लगा ।

"हुँ !···पहली पसली को नहीं देखा जा सकता, यह कन्धे की हंसली के पीछे है ।···यह दूसरी पसली होनी चाहिये ।···हाँ···यह तीसरी है······ तह चौथी है····हुँ !······हाँ······तुम कुलबुला क्यों रही हो ?"

"तुम्हारी उँगलियाँ ठण्डी हैं !"

"अच्छा, अच्छा, रहने दो···इससे तुम मर नहीं जाओगी । ऐंठों मत । यह तीसरी पसली होनी चाहिए, फिर···यह चौथी है···तुम्हारे शरीर पर सिर्फ चमड़ा ही चमड़ा है और फिर भी तुम्हारी पसलियाँ मुश्किल से दिखाई देती हैं । यह दूसरी है···यह तीसरी है ।···ओह, सब गड़बड़ हो गया, यह साफ दिखाई नहीं देती ।···मुझे इस पर लाइन खींचनी पड़ेगी ।···मेरी रङ्गीन पेन्सिल कहाँ है ?"

क्लोत्वकोव ने रङ्गीन पेन्सिल उठाई और अन्यूता की छाती पर पसलियों को बताने वाली अनेक समानान्तर रेखायें खींचीं ।

"बिल्कुल स्पष्ट । यह सब बिल्कुल सरल है ।···अच्छा, अब मैं तुम्हें उँगलियों से ठोक-ठोक कर देखूँगा । खड़ी हो जाओ !"

अन्यूता खड़ी होगई और अपनी ठोड़ा ऊपर उठाली । क्लोत्वकोव

ने उसे उँगलियों से ठोक-ठोक कर देखना शुरू कर दिया और इस काम में इतना तल्लीन हो गया कि इस बात को नहीं देख सका कि ठन्ड से अन्यूता के होठ, नाक और उँगलियाँ कितनी नीली पड़ गई हैं। अन्यूता काँपी और भयभीत हो उठी कि अगर उस विद्यार्थी ने इस बात को देख लिया तो वह लाइनें बनाना और ठोक-ठोक कर देखना बन्द कर देगा और तब शायद वह इम्तहान में फेल हो जाय।

"अब सब साफ हो गया" जब समाप्त कर चुका तो क्लोत्चकोव बोला। "तुम इसी तरह बैठ जाओ और देखो, इन लाइनों को मिटाना मत। तब तक मैं थोड़ा-सा और याद करलूँ।"

और वह विद्यार्थी फिर घूम-घूम कर रटने लगा। छाती पर काली लकीरें खिचाए, अन्यूता, ऐसी दिखाई देती हुई मानो उसके शरीर पर गोदने गोदे गए हों, सिकुड़ी हुई और ठन्ड से काँपती बैठी सोच रही थी। आमतौर पर वह बहुत कम बोला करती थी, वह हमेशा बैठी सोचती ही रहती थी।

एक सजे कमरे से दूसरे कमरे में घूमने की छः या सात साल की घुमक्कड़ जिन्दगी में वह क्लोत्चकोव जैसे पाँच विद्यार्थियों के सम्पर्क में आ चुकी थी। अब उन सबने अपनी पढ़ाई खत्म कर ली थी; वे बाहर काम करने चले गये थे और इसमें शक नहीं था कि, भले आदमियों की तरह उसे बहुत पहले ही भूल चुके थे। उनमें से एक पेरिस में रहता था, दो डाक्टर थे, चौथा एक कलाकार था और पाँचवें के लिये कहा जाता था कि प्रोफेसर बन गया है। क्लोत्चकोव छठवाँ था।...शीघ्र ही वह भी अपनी पढ़ाई खत्म कर लेगा और काम करने चला जायगा। उसके सामने निस्सन्देह एक उज्ज्वल भविष्य था और क्लोत्जकोब शायद एक बड़ा अपनी बने, उसकी वर्तमान स्थिति आशाजनक थी। क्लोत्चकोव के पास न तो तम्बाखू रही थी और न चाय। चीनी के सिर्फ चार टुकड़े बाकी बचे थे। उसे जल्दी से अपनी कढ़ाई समाप्त कर देनी चाहिए, कपड़े उस स्त्री के पास ले जाना चाहिये

जिसने आर्डर दिया था और इसके बदले में मिलने वाले चौथाई रूबल की चाय और तम्बाखू खरीदलानी चाहिए।

"मैं अन्दर आ सकता हूँ ?" किसी ने दरवाजे पर से पूछा।

अन्यूता ने जल्दी से एक ऊनी शाल अपने कन्धों पर डाल लिया। कलाकार फेतीसोव भीतर आया।

"मैं तुमसे एक मदद माँगने आया हूँ," उसने क्लोत्चकोव को सम्बोधित कर कहना और भौंहों पर लटकते हुए लम्वे बालों के गुच्छों में से जंगली जानवर की तरह घूमना शुरू कर दिया। "मेरी जरा मदद कर दो। मुझे अपनी इस युवती महिला को दो घन्टे के लिए उधार दे दो ! मैं एक तस्वीर बना रहा हूँ और उसे बिना माँडल के बना नहीं सकता।"

"ओह, खुशी से!" क्लोत्चकोव सहमत हो गया। "इनके साथ चली जाओ, अन्यूता !"

"मुझे अभी चीजें ठीक करनी हैं," अन्यूता धीरे से बुदबुदाई।

"वाहियात ! यह व्यक्ति तुम्हें कला के लिए माँग रहा है, किसी बुरे काम के लिए नहीं। अगर कर सकती हो तो उसकी मदद क्यों नहीं कर देतीं ?";

अन्यूता कपड़े पहनने लगी।

"तुम क्या बना रहे हो ? क्लोत्चकोव ने पूछा।

"आत्मा, यह बहुत अच्छा विषय है। परन्तु, फिर भी पूरा होना मुश्किल है ! मुझे भिन्न-भिन्न माँडलों द्वारा इसे बनाना पड़ेगा। कल मैं एक नीली टाँग वाली लड़की को माँडल बना कर चित्र तैयार कर रहा था। 'तुम्हारी टाँगें नीली क्यों हैं ?' मैंने उससे पूछा। मेरे मोजों ने उन्हें रंग दिया है' वह बोली। और तुम अब तक घोटे लगाए जा रहे हो ! तकदीर वाले हो ! तुम में बड़ा धैर्य है।"

"डाक्टरी एक ऐसा पेशा है जिसमें विना घोटे काम नहीं चलता।"

"हुँ ! ···माफ करना क्लोत्चकोव, मगर तुम एक सुअर की तरह

रहते हो ! तुम्हारा यह रहन-सहन का ढंग बड़ा गन्दा है !"

"क्या मतलब ? मैं कुछ नहीं कर सकता ।......मुझे पिताजी से सिर्फ बारह रूबल मासिक मिलते हैं, और इतने में अच्छी तरह रहना मुश्किल है ।"

"हाँ...हाँ..." विरक्ति के साथ भोहें चढ़ाते हुए कलाकार बोला, "मगर, फिर भी तुम अच्छी तरह रह सकते हो, ।...पढ़े-लिखे व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि उसकी रुचि परिष्कृत हो, है न ? और भगवान ही जानता है कि यहाँ की हालत कैसी है बिस्तर ठीक नहीं किया गया है, गन्दे पानी का बर्तन, यह गन्दगी...कल का हलुवा प्लेटों में पड़ा है ।...फू !"

"यह सच है !" विद्यार्थी ने उद्विग्न होकर कहा, "मगर अन्यूता को आज सफाई करने का समय नहीं मिला, वह पूरे समय तक व्यस्त रही थी।"

जब वह कलाकार और अन्यूता चले गए, क्लोत्चकोव सोफे पर लेट गया और लेटे हुए ही पढ़ने लगा, फिर अचानक सो गया और एक घन्टे बाद नींद खुलने पर उसने अपने हाथों पर सिर रख लिया और विषाद पूर्ण विचारों में डूब गया उसने कलाकार के शब्दों को याद किया कि एक पढ़े-लिखे आदमी की रुचि परिष्कृत होनी ही चाहिए और अब उसे अपने चारों तरफ का वातावरण घृणित और विरक्तिपूर्ण लगने लगा । उसने अपने कल्पना द्वारा अपना भविष्य देखा, जब वह अपने मरीजों को अपने मरीज देखने वाले कमरे में बैठ कर देखा करेगा जो एक सम्भ्रान्त महिला होगी । और अब वह गन्दे पानी का बर्तन जिसमें सिगरेट के टोंटे तैर रहे थे उसे बुरी तरह घृणोत्पादक प्रतीत होने लगा । अन्यूता भी उसकी कल्पना में आ खड़ी हुई—एक सीधी-सादी, फूहड़, दीन नारी...और उसने तय किया कि वह किसी भी कीमत पर उसे फौरन हटा देगा ।

जब कलाकार के यहाँ से वापस आकर अन्यूता ने अपना कोट उतारा तो क्लोत्चकोव उठ बैठा और उससे गम्भीरता पूर्वक कहने लगा ।

"देखो, मेरी प्यारी लड़की....बैठ जाओ और सुनो । हमें अलग हो

जाना चाहिये। असली बात यह है कि मैं अब तुम्हारे साथ और ज्यादा नहीं रहना चाहता।"

अन्यूता कलाकार के यहाँ से बुरी तरह थकी हुई आई थी। मॉडेल के रूप में इतनी देर तक खड़े रहने से उसका चेहरा पतला और पिचका हुआ और ठोड़ी पहले से भी अधिक नोकीली दिखाई पड़ रही थी। विद्यार्थी के शब्दों के उत्तर में उसने कुछ भी नहीं कहा, सिर्फ उसके होंठ काँपने लगे।

"तुम जानती हो कि हर हालत में, देर या अबेर से, हमें अलग होना पड़ेगा," विद्यार्थी बोला। "तुम बहुत अच्छी लड़की हो और मूर्ख भी नहीं हो; तुम समझ जाओगी।..."

अन्यूता ने अपना कोट फिर पहन लिया, चुपचाप कागज में अपने काढ़ने का सामान लपेटा, और अपनी सुइयाँ और धागे इकट्ठे किए। उसने कागज की पुड़िया में चीनी के चार टुकड़े खिड़की पर रखे पाए और उसे मेज पर किताबों की बगल में रख दिया।

"यह...तुम्हारी चीनी है..." उसने धीरे से कहा और अपने आँसुओं को छिपाने के लिए पीठ मोड़ ली।

"तुम रो रही हो?" क्लोत्वकोव ने पूछा।

वह कमरे में परेशान होकर घूमने लगा और बोला :

"तुम एक अजीब लड़की हो, सचमुच।... तुम जानती हो कि हमें अलग होना ही पड़ेगा। हम हमेशा एक साथ नहीं रह सकते।"

अन्यूता ने अपनी सारी चीजें इकट्ठी कर ली थीं। वह विदा माँगने के लिए उसकी तरफ मुड़ी और क्लोत्कोव उसके लिए दुखी हो उठा।

"मैं उसे एक हफ्ते और रहने दूँ?" उसने सोचा, "वह सचमुच एक हफ्ते ठहर सकती है। मैं उससे हफ्ते भर में जाने के लिए कह दूँगा," और स्वयं अपने ही विचारों में नाराज होकर वह उससे चीखता हुआ रूखेपन से बोला—

क्यों वहाँ क्यों खड़ी हो ? अगर जा रही हो तो जाओ। और अगर नहीं चाहती हो तो अपना कोट उतार दो और रहो ! तुम ठहर सकती हो।"

अन्यूता ने चुपचाप, धीरे से अपना कोट उतारा, फिर चुपचाप अपनी नाक साफ की, गहरी सांस ली और बिना आहट किए खिड़की के पास स्टूल पर अपनी पुरानी जगह पर आ बैठी।

विद्यार्थी ने अपनी किताब उठाली और फिर कमरे के एक कौने से दूसरे कौने तक घूमना शुरू कर दिया। "दाहिने फेफड़े के तीन भाग होते हैं," उसने दुहराया, "वक्षस्थल की पहली दीवाल का ऊपरी भाग चौथी या पाँचवी पसली तक पहुँचता है..."

बरामदे में कोई पूरे जोर से चिल्लाया, "ग्रिगोरी ! समोजार !"

योग्यता

येगोर सावविच नामक एक कलाकार, जो एक अफसर की विधवा के घर अपनी गर्मियों की छुट्टियाँ बिता रहा था, प्रातःकाल की उदासी में डूबा अपने बिस्तर पर बैठा हुआ था। बाहर शरदऋतु का सा मौसम छाने लगा था। घने, गहरे, भद्दे बादलों की गहरी पर्तें आसमान पर छाई हुई थीं। ठंडी, तीखी हवा चल रही थी, वृक्ष दुःख की सी उदासीनता में डूबे एक तरफ को झुके हुए थे। पीले पत्ते इधर-उधर हवा में और जमीन पर उड़ते हुए दिखाई पड़ रहे थे। विदा ग्रीष्म ! प्रकृति की उदासीनता, जब एक कलाकार की दृष्टि से देखी जाती है तो अपने एक विशिष्ट सौंदर्य और कलित्त शक्ति से परिपूर्ण दिखाई पड़ती है, परन्तु येगोर सावविच इस समय प्रकृति के सौन्दर्य को देखने की मुद्रा में नहीं था। वह उदासीनता में डूबा हुआ था और उसे केवल एक ही विचार से सन्तोष मिल रहा था कि कल वह यहाँ नहीं होगा। बिस्तर, कुर्सियाँ, मेजें फर्श आदि सब तकियों, सिकुड़ा चादरों और बक्सों से लदी हुई थीं। फर्श साफ नहीं किया गया था, खिड़कियों पर से सूती परदे उतार लिए गए थे। कल वह शहर जा रहा था।

उसकी मकान-मालकिन, वह विधवा, बाहर गई हुई थी। वह कल शहर जाने के लिए घोड़े और गाड़ी किराए पर तै करने गई थी। अपनी कठोर मां की अनुपस्थिति से लाभ उठाकर उसकी बेटी कात्या, एक बीस साल की लड़की, बहुत देर से उस नौजवान के कमरे में बैठी हुई थी। कल वह चित्रकार जा रहा था और कात्या को उससे बहुत कुछ बातें करनी थीं। वह बातें करती रही, और फिर भी उसने अनुभव किया कि जो कुछ वह कहना चाहती था उसका दसवाँ हिस्सा भी नहीं कह पाई है। आंखों में आँसू भरे कात्या ने उसने झबरीले सिर की तरफ देखा, उसकी तरफ अत्यन्त

हर्ष और दुख के साथ देखा। येगोर सावविच भयङ्कर रूप से झबरीला था, इस कारण यह एक जंगली जानवर की तरह दिखाई पड़ता था। उसके बाल उसके कन्धों तक लटके हुए थे, उसकी दाढ़ी गर्दन पर से, नथुनों में से, और कानों में से उग रही थी। उसकी आंखें घनी, नीचे को लटकती हुई भौहों के नीचे छिप गई थी। ये सारे बाल इतने घने, इतने उलझे हुए थे कि एक मक्खी या कीड़ा उनमें फंस जाता तो उसे इस जादू भरी झाड़ी में से बाहर निकलने का रास्ता कभी भी नहीं मिल पाता। येगोर सावविच जम्हाई लेता हुआ कात्या की बातें सुनता रहा। वह थका हुआ था। जब कात्या ने रिरियाना शुरू किया तो उसने अपनी लटकती हुई भौहों के नीचे से उसे कठोरता पूर्वक देखा, घुन्नाया और एक गहरी धीमी आवाज में कहा—

"मैं शादी नहीं कर सकता।"

"मगर क्यों नहीं कर सकते?" कात्या ने कोमल स्वर में पूछा।

"क्योंकि एक चित्रकार के लिए, और दरअसल हर व्यक्ति के लिए, जो कला के लिए जीवित रहता है, विवाह का प्रश्न ही नहीं उठता, कलाकार को स्वच्छन्द होना चाहिए।"

"मगर मैं तुम्हारे रास्ते में बाधा कैसे बन सकूँगी, येगोर सावविच?"

"मैं अपने विषय में नहीं कह रहा, आम बात कह रहा हूँ।...प्रसिद्ध लेखकों और चित्रकारों ने विवाह नहीं किए थे।"

"तुम भी तो मशहूर बनोगे—मैं इसे खूब अच्छी तरह समझती हूँ। मगर अपने को मेरी जगह रखकर देखो। मैं अपनी माँ से डरती हूँ। वह कठोर और चिड़चिड़े मिजाज की है। जब उसे पता लगेगा कि तुम मुझसे शादी नहीं करोगे और यह सब कुछ भी नहीं है...वह मेरी जान मुसीबत में डाल देगी। और! मैं कितनी दुखी हूँ! और तुमने अपने कमरे का किराया भी नहीं दिया है।....

"उसे गोली मारो! मैं किराया दे दूँगा।"

येगोर सावविच खड़ा हो गया और इधर-से-उधर घूमने लगा।

"मुझे विदेश जाना ही पड़ेगा।" उसने कहा। उस कलाकार ने कात्या

को बताया कि विदेश जाने से आसान दूसरा और कोई भी काम नहीं है, और कोई विशेष काम भी तो नहीं करना है। सिर्फ एक तस्वीर बनानी है और उसे बेच देना है।"

"बेशक !" कात्या ने सहमति जताई। "तुमने गर्मियों में कोई तस्वीर क्यों नहीं बनाई ?"

तुम समझती हो कि मैं इस खत्ती जैसी जगह में काम कर सकता हूँ !" कलाकार ने नाराज होते हुए कहा, "और यहां मुझे माडेल कहां मिलते हैं ?"

नीचे की मंजिल में किसी ने बुरी तरह दरवाजा खटखटाया। कात्या, जो प्रत्येक क्षण अपनी मां के लौटने की उम्मीद कर रही थी, उछल पड़ी और भागी। कलाकार अकेला रह गया। बहुत देर तक वह कुर्सियों तथा तितर-बितर पड़े हुए तरह-तरह के सामानों के बीच में रास्ता बनाते हुए इधर से-उधर घूमता रहा। उसने विधवा को नीचे चीनी-मिट्टी के बर्तन खड़खड़ाते और जोर-जोर से उन किसानों को गालियां देते हुए सुना जिन्होंने दो रूबल फी गाड़ी का किराया मांगा था। अपनी बिगड़ी हुई मनःस्थिति में येगोर सावविच आलमारी के सामने खड़ा हो गया और वोद्का की सुराही की तरफ बहुत देर तक भुन्नाता हुआ देखता रहा।

"आह, तेरा सत्यानाश हो !" उसने विधवा को कात्या पर चिल्लाते हुए सुना। "तुझे शैतान ले जाए !"।

कलाकार ने वोद्का का एक गिलास पिया और उसकी आत्मा पर छाया हुआ काला बादल धीरे-धारे गायब हो गया। उसने अनुभव किया मानो उसका सम्पूर्ण भीतरी भाग उसके भीतर मुस्करा रहा हो। वह स्वप्न देखने लगा।...उसकी कल्पना ने चित्र खींचा कि कैसे वह महान् बनेगा। वह अपने भावी कार्य की कल्पना नहीं कर सका परन्तु इस बात को स्पष्ट रूप से देख सका कि समाचार पत्र उसके विषय में कैसी चर्चाएँ करेंगे, किस तरह दूकानों पर उसके चित्र बिकेंगे, कितने हसद के साथ उसके दोस्त उसे देखेंगे। उसने स्वयं को कल्पना द्वारा एक विशाल, भव्य ड्राइंग रूम में

सुन्दर और उसकी पूजा करने वाली स्त्रियों से घिरा हुआ देखा; परन्तु यह चित्र धुंधला और अस्पष्ट था क्योंकि उसने अपनी जिन्दगी में कभी कोई ड्राइंग-रूम नहीं देखा था। उन सुन्दर और श्रद्धालु स्त्रियों की कल्पना में भी उसे सफलता नहीं मिली क्योंकि कात्या के अतिरिक्त वह किसी और श्रद्धालु स्त्री को जानता ही नहीं था, यहाँ तक कि किसी भले घर की लड़की को भी नहीं जानता था। वे लोग, जो जीवन के विषय में कुछ भी नहीं जानते, आमतौर से पुस्तकों के आधार पर जीवन चित्रण करते हैं, मगर येगोर सावविच का पुस्तकों से भी परिचय नहीं था। उसने गोगोल को पढ़ने की कोशिश की थी परन्तु दूसरे ही पन्ने पर सो गया था।

"यह नहीं जलेगा, इसे अलग फेंको," विधवा नीचे समोवार ठीक करती हुई बोली। "कात्या, थोड़ा-सा कोयला ला!"

स्वप्न देखते हुए कलाकार के मन में इच्छा उठी कि वह किसी को अपनी आशाओं और स्वप्नों का साथी बना सके। वह नीचे रसोईघर में गया जहाँ समोवार से उठ रहे कोयले के धुंए में वह तगड़ी विधवा और कात्या एक गन्दे स्टोव को ठीक करने में व्यस्त थीं। वहां वह एक बड़े बर्त्तन के पास एक बेंच पर बैठ गया और कहने लगा।

"कलाकार होना बहुत सुन्दर है! मैं जहाँ चाहूँ वहां जा सकता हूँ, जो चाहूँ सो कर सकता हूँ। कलाकार को दफ्तर में या खेतों में काम नहीं करना पड़ता। मेरे ऊपर अफसर या ऊँचे अधिकारी नहीं हैं।...मैं ही अपना अफसर हूँ। और इस सबके साथ मैं मानवता का कल्याण कर रहा हूँ।"

भोजन के उपरान्त उसने आराम करने के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया। वह आमतौर पर शाम को दोनों वक्त मिलने के समय तक सोचा करता था। परन्तु इस बार भोजन के उपरान्त उसने अनुभव किया कि कोई उसकी टाँग खींच रहा था। कोई हँसे जा रहा था और उसका नाम ले-लेकर पुकार रहा था। उसने आंखें खोलीं और अपने मित्र, प्राकृतिक दृश्यों के चित्रकार उक्लेकिन को देखा जो गर्मियों भर कोस्चोमा जिले में रहने चला गया था।

"वाह!" प्रसन्न होकर वह चिल्लाया, "मैं क्या देख रहा हूँ?"

फिर सवाल पूछे गए, हाथ मिलाए गए।

"क्यों, कोई चीज लाए हो ? मैं सोचता हूँ कि तुमने सैकड़ों चित्र बना डाले होंगे ?" येगोर सावविच ने उक्लेकिन को अपने ट्रंक में से सामान निकालते हुए देखकर पूछा ।

"हुँ !...हाँ। मैंने कुछ काम किया है। और सुनाओ, तुम्हारा काम कैसा चल रहा है ? कोई चीज बना रहे थे ?"

येगोर सावविच बिस्तर के पीछे झुका और लाल चेहरा किए उसने, एक चौखटे में जड़े, धूल और मकड़ी के जालों से भरे एक चित्र को खींचकर निकाला।

"यह देखो......अपने पति से बिछुड़ने के उपरान्त खिड़की पर खड़ी हुई एक लड़की। तीन बैठकों में। अभी पूरा समाप्त नहीं हो पाया है।"

चित्र में धुंधली-सी रूपरेखा वाली कात्या एक खुली खिड़की पर बैठी हुई थी जिसमें होकर बाग और सुदूरवर्ती नीलाकाश दिखाई पड़ रहा था। उक्लेकिन को चित्र पसन्द नहीं आया ।

"हुं !...इसमें वातावरण है...और भाव भी है," वह बोला। "दूरी की भावना भी है मगर...वह झाड़ी चीख रही है...बुरी तरह सिर धुन रही है।"

वहाँ सुराही लाई गई।

शाम को कोस्तीलियोव, एक होनहार चित्रकार, जिसने काम सीखना प्रारम्भ किया था, येगोर सावविच से मिलने आया। वह उसका मित्र था, अवस्था पेंतीस साल की थी और बगल वाले बंगले में रह रहा था। उसके बाल लम्बे थे और वह शेक्सपीयर के से कालर का ब्लाउज पहने हुए था। उसके व्यवहार में बड़प्पन की झलक थी। वोद्का को देखकर उसने भौंहों में गांठ दी, सीने के दर्द की शिकायत की, मगर अपने मित्रों के आग्रह को रखते हुए एक गिलास पी लिया।

"मैंने एक विषय सोचा है, मेरे दोस्तो," नशा चढ़ने पर उसने कहना शुरू किया। "मैं कुछ नवीन...हेरोद या क्लेपेन्टियन या उसी तरह के किसी

बदमाश का चित्र बनाना चाहता हूँ, समझे, और उसके विरोध में ईसाइयत की भावना को। एक तरफ रोम, समझे, और दूसरी तरफ ईसाइयत।...मैं उस भावना को चित्रित करना चाहता हूं, समझे ? भावना को !"

और नीचे वह विधवा निरन्तर चिल्लाये जा रही थी !

"कात्या, मुझे ककड़ी ला ! सिदोरोव के यहाँ जा और थोड़ी-सी क्वास (शराब) ला, मूर्ख !"

पिंजड़े में बन्द भेड़ियों की तरह वे तीनों दोस्त कमरे के एक कौने से दूसरे कौने तक चक्कर लगाते रहे। वे बिना रुके, गर्म होकर और सच्चाई के साथ बातें करते रहे। तीनों ही उत्तेजित थे, भावना में बह रहे थे। उनकी बातों को सुनकर ऐसा लगता था कि उनका भविष्य, धन, प्रसिद्धि सभी कुछ उन्हीं के हाथों में है। और उनमें से किसी ने भी यह महसूस नहीं किया कि समय निकला जा रहा है, कि प्रतिदिन जीवन समाप्ति के पास आता चला जा रहा है, कि उन्होंने दूसरों के बलबूते पर जीवन बिताया है और अभी तक कुछ भी नहीं कर सके हैं; कि वे सब निष्ठुर नियम से बँधे हुए हैं जिसके द्वारा सौ होनहार प्रारम्भिक चित्रकारों में से केवल दो या तीन ही किसी अच्छी स्थिति तक पहुँच पाते हैं और शेष सब असफल रह जाते हैं, तोप का शिकार बनते हुए समाप्त हो जाते हैं।...वे प्रसन्न और आनन्दमग्न थे और भविष्य का साहस के साथ सामना करने को प्रस्तुत थे।

सुबह एक बजे कोस्तीलियोव ने विदा मांगी और अपने शेक्सपीयर के से कॉलर पर हाथ फेरता हुआ घर चला गया। वह प्राकृतिक दृश्यों का चितेरा येगोर सावविच के यहां ही सोने के लिए ठहर गया। बिस्तर पर जाने से पहले येगोर सावविच ने एक मोमबत्ती उठाई और पानी पीने के लिए रसोईघर में गया। अंधकारपूर्ण, संकरे गलियारे में कात्या एक बक्स पर बैठी हुई थी और अपने घुटनों को हाथों से बांधे ऊपर देख रही थी। उसके पीले और थके हुए चेहरे पर एक प्रसन्न मुस्कराहट खेल रही थी और आंखें चमक रही थीं।

"तुम हो ? क्या सोच रही हो ?" येगोर सावविच ने उससे पूछा ।

"मैं सोच रही हूँ कि तुम कैसे प्रसिद्ध बनोगे," उसने धीमे स्वर में फुसफुसाते हुए कहा ।

"मैं कल्पना कर रही हूँ कि कैसे तुम एक प्रसिद्ध व्यक्ति बनोगे ।... मैंने तुम्हारी सारी बातें सुनी थीं ।...मैं बराबर स्वप्न देखती रहती हूँ, स्वप्न देखती रहती हूँ ।..."

कात्या प्रसन्न होकर हँसी, चीखी और श्रद्धा के साथ अपने दोनों हाथ अपने श्रद्धेय के कन्धों पर रख दिए ।

उनींदी

रात्रि का समय वार्का, नन्हीं-सी नर्स, तेरह वर्ष की एक लड़की, एक पालने को हिला रही है, जिसमें बच्चा लेटा हुआ है। और बहुत ही धीमे स्वर में गुन-गुना रही है—

"आजा री निदिया आजा,
मेरे बच्चे को आके सुलाजा।"

एक छोटा-सा हरा लैंप पवित्र मूर्ति के साममे जल रहा है। कमरे के एक कौने से दूसरे कौने तक रस्सी बँधी हुई है। उस रस्सी पर बच्चे के कपड़े और एक बड़ा काला पाजामा लड़का हुआ है। छत पर मूर्ति वाले लैम्प की रोशनी का एक विशाल हरा चकत्ता पड़ रहा है, उस बच्चे के कपड़ों और उस पाजामे की लम्बी छायाएँ स्टोव पर, पालने पर और वार्का पर पड़ रही हैं... जब लैंप की लौ हिलने लगती है तो उस हरे चकत्ते और उन छायाओं में जीवन पड़ जाता है और वे हिलने लगती हैं मानो हवा से हिल रही हों। हवा में घुटन है। गोभी के शोरबे और जूतों के दूकान की बदबू भर रही है।

बच्चा रो रहा है। रोने से बहुत पहले ही उसका गला पड़ चुका था। बच्चा थक गया है मगर फिर भी रोये चला जा रहा है और मालूम नहीं कब चुप होगा। बार्का की आँखों में नींद भर रही है। उसकी पलकें चिपक गई हैं, सिर नीचे को लटक गया है, गर्दन में दर्द हो रहा है। वह अपनी पलकों या होठों को हिला नहीं पाती और यह महसूस करती है मानो उसका चेहरा सूखकर काठ हो गया है, मानो उसका सिर इतना छोटा हो गया है जितना कि एक आलपिन का सिर।

"आजा री निंदिया आजा," वह गुनगुनाती है, "जब तक कि मैं तेरे लिए हलुआ पकाऊँ..."

एक झींगुर स्टोव में झनकार रहा है। बगल वाले कमरे के दरवाजे में होकर मालिक और उसके यहाँ काम सीखने वाली अफानासी खुर्राटे भर रही हैं। ...पालना शोकाकुल होकर चरमरा रहा है। वार्का बुदबुदाती है—और यह सब मिलकर रात्रि के उस शान्ति प्रदायक संगीत का सृजन कर रहे हैं जो उस समय सुनने में बड़ा अच्छा लगता है जब कोई बिस्तर में लेटा हो। इस समय वह संगीत सिर्फ कर्कश और चिड़चिड़ाहट उत्पन्न करने वाला है। क्योंकि यह उसे सोने के लिए उकसाता है और उसे सोना नहीं चाहिए। अगर वार्का—भगवान न करे सो जाए तो उसका मालिक और मालकिन उसे पीटेंगे।

लैम्प की लौ हिलती है। वह हरा चकत्ता और छायाएँ वार्का की स्थिर, अधखुली आँखों पर पड़कर नाचने लगती है और उसके उनींदे मस्तिष्क में रहस्यपूर्ण सपनों की सृष्टि कर देती हैं। वह देखती है कि काले बादल आसमान में एक-दूसरे का पीछा कर रहे हैं, बच्चों की तरह चीख रहे हैं। परन्तु फिर हवा चलती है, बादल गायब हो गए हैं और वार्का बहती हुई कीचड़ से ढकी एक बड़ी और चौड़ी सड़क देखती है, सड़क के किनारे गाड़ियों की लम्बी कतारें फैली हुई हैं। मनुष्य पीठ पर थैले लादे धीरे-धीरे चल रहे हैं और छायाएँ आगे-पीछे हिल रही हैं। उस ठंडे घने कोहरे में होकर उसे दोनों तरफ जङ्गल दिखाई दे रहे हैं। एकाएक वे मनुष्य अपने थैलों और छायाओं के साथ जमीन पर उस कीचड़ में गिर पड़ते हैं। "ऐसा क्यों कर रहे हो?" वार्का पूछती है। "सोने के लिए, सोने के लिए!" वे उसे उत्तर देते हैं। और वे गहरी नींद में, मीठी नींद लेते हुए सो जाते हैं। कौए और नीलकंठ टेलीग्राफ के तारों पर बैठते हैं, बच्चे की तरह चीखते हैं और उन्हें जगाने की कोशिश करते हैं।

"आजा री निंदिया आजा, मेरे गीतों को आकर सुनाजा," वार्का बुद-

बुदाती है और अब वह अपने को एक अँधेरी, दम घोटने वाली झोंपड़ी में देखती है।

उसका स्वर्गवासी पिता येफिन स्तेयानोव फर्श पर इधर-से-उधर करवटें बदल रहा है। वह उसे देख नहीं पा रही है मगर उसे कराहते और दर्द से फर्श पर लुढ़कते हुए सुन रही है। "उसकी आंतें फट गई हैं," जैसा कि वह कहता है। दर्द इतना भयानक है कि वह एक शब्द का भी उच्चारण नहीं कर सकता, सिर्फ सांस ले सकता है। वह एक ढोल की तरह अपने दांत कटकटा रहा है।

"बू-बू-बू...।"

उसकी मां पेलागिया, मालिक के घर यह कहने दौड़ी गई है कि येफिम मर रहा है। उसे गए बहुत देर हो चुकी है; उसे वापस आ जाना चाहिए था। वार्का स्टोव पर लेटी हुई जाग रही है और अपने पिता की "बू-बू-बू" सुन रही है। और तब वह सुनती है कि दरवाजे पर कोई गाड़ी आई है। यह शहर का एक नौजवान डाक्टर है जिसे उस बड़े घर से भेजा गया है जहां वह एक मरीज के देखने के सिलसिले में ठहरा हुआ है। डाक्टर झोंपड़ी के भीतर आता है, वह अँधेरे में दिखाई नहीं पड़ता परन्तु उसके खांसने और दरवाजे खड़खड़ाने की आवाज सुनाई पड़ती है।

"मोमबत्ती जलाओ," वह कहता है।

"बू-बू-बू..." येफिम जबाब देता है।

पेलागिया दौड़कर स्टोव के पास जाती है और दियासलाइयों के टूटे हुए बक्स को ढूँढ़ती है। एक मिनिट खामोशी में गुजर जाता है। डाक्टर अपनी जेब टटोलकर दियासलाई जलाता है।

"एक मिनिट में साहब, एक मिनट में," पेलागिया कहती है। वह झोंपड़ी से बाहर दौड़ी जाती है और फौरन ही मोमबत्ती का एक टुकड़ा लिए लौटती है।

येफिम के गाल लाल हैं और आंखें चमक रही हैं, उसकी निगाह में

एक विचित्र-सी उत्सुकता है मानो उसे उस झोंपड़ी और उस डाक्टर के अन्तर्तम रहस्य तक का ज्ञान हो गया हो।

"क्यों, क्या बात है ? तुम क्या सोच रहे हो ?" डाक्टर उसके ऊपर झुकता हुआ कहता है। "आहा ! क्या तुम्हें यह तकलीफ बहुत दिनों से है ?"

"क्या कहा ? मर रहा हूँ, सरकार, मेरा वक्त आ गया है।... मैं जीवितों के बीच नहीं रहूँगा..."

"बेवकूफी की बातें मत करो ! हम तुम्हें अच्छा कर देंगे !"

"जैसी आपकी मर्जी, सरकार, हम आपको नम्रता के साथ धन्यवाद देते हैं, हम जानते हैं...जब मौत आगई है तो आ ही गई है।"

डाक्टर येफिम को देखने में चौथाई घन्टा लगाता है फिर उठकर खड़ा होता है और कहता है––

"मैं कुछ नहीं कर सकता। तुम्हें अस्पताल चला जाना चाहिए, वहाँ वे तुम्हारा आपरेशन करेंगे। फौरन चले जाओ।...तुम्हें जरूर चला जाना चाहिए ! काफी देर हो चुकी है, वे लोग अस्पताल में होंगे परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं, मैं तुम्हें एक चिट्ठी दे दूँगा। सुन रहे हो ?"

"महरबान सरकार, मगर वह जाएगा किस चीज पर बैठकर ?" पेलागिया ने पूछा। हमारे पास घोड़ा नहीं है।"

"कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे मालिक से कहूँगा। वह तुम्हें एक घोड़ा भिजवा देगा।"

डाक्टर चला जाता है, मोमबत्ती बुझ जाती है और वहाँ फिर "बू-बू-बू" का शब्द होने लगता है। आधे घन्टे बाद दरवाजे पर कोई गाड़ी आती है। वह गाड़ी येफिम को अस्पताल पहुँचाने के लिए भेजी गई है। वह तैयार होता है और चला जाता है।......

मगर अब अच्छी तरह सुबह हो चुकी है। पेलागिया घर पर नहीं है। वह यह जानने अस्पताल चली गई है कि येफिम के साथ क्या किया जा रहा है। वहाँ कहीं एक बच्चा रो रहा है और वार्का किसी को उसकी अपनी ही बोली में गाते हुए सुनती है।

"आजा री निंदिया आजा, मेरे बच्चे को आके सुला जा।"

पेलागिया वापस आती है; अपने ऊपर सलीब का निशान बनाती है और बुदबुदाती है।

"रात को उन्होंने उसे अच्छा कर लिया था मगर सुबह के पहर उसकी आत्मा परमात्मा से मिलने चली गई।...भगवान उसे स्वर्ग और अनन्त शान्ति दे।...उनका कहना है कि उसे बहुत देर से ले जाया गया था।...उसे और जल्दी ले जाना चाहिए था।..."

वार्का सड़क पर जाती है और वहाँ रोती है मगर कोई अचानक उसकी खोपड़ी पर पीछे से इतनी जोर से मारता है कि उसका माथा भोजपत्र के एक पेड़ से टकरा जाता है। वह आँखें ऊपर उठाती है और अपने सामने अपने मालिक, उस मोची को देखती है।

"क्या कर रही है, झबरीली फूहड़?" वह कहता है। "बच्चा रो रहा है और तू सो रही है!"

वह उसके कान के पीछे एक जोर का थप्पड़ लगाता है। कात्या अपना सिर हिलाती है, पालने को झुलाती है और एक गीत गाने लगती है। वह हरा चकत्ता और पाजामे और बच्चे के कपड़ों की छायायें ऊपर-नीचे हिलने लगती हैं, उसकी तरफ इशारा करती हैं और फिर तुरन्त ही उसके दिमाग पर अधिकार कर लेती हैं। वह फिर कीचड़ से सनी हुई उस सड़क को देखती है। थैले वाले वे मनुष्य और वे छायायें लेट गई हैं और गहरी नींद में सो रही हैं। उन्हें देखकर वार्का सोने के लिए व्याकुल हो उठती है, वह खुशी से लेट जायगी मगर उसकी माँ तेलागिया उसे जल्दी चलने के लिए कहती हुई उसके बराबर में चल रही है। वे एक साथ भीख मांगने शहर की ओर तेजी से जा रही हैं।

"ईसा के नाम पर भीख दो!" उसकी मां रास्ते में मिलने वालों से भीख मांगती है। "हमारे ऊपर ईश्वरीय दया करो, दयालु सज्जनो!"

"बच्चे को इधर दे!" एक परिचित स्वर उत्तर देता है। "बच्चे

को इधर ला !" वही स्वर फिर कहता है, इस बार कठोरता और क्रोध के साथ। "तू सो रही है, अभागी लड़की ?"

वार्का उछल पड़ती है और चारों तरफ देखती हुई अनुमान लगाती है कि क्या मामला है। वहाँ वह सड़क नहीं है, पेलागिया नहीं है, उसे मिलने वाले आदमी नहीं हैं, वहां सिर्फ उसकी मालकिन है जो दूध पिलाने आई है और कमरे के बीचोंबीच खड़ी है। जब तक कि वह तगड़ी चौड़े कन्धों वाली औरत बच्चे को दूध पिलाती है और उसे चुप करती है, बार्का उसकी तरफ खड़ी हुई देखती है और उसके चले जाने का इन्तजार करती रहती है। खिड़की से बाहर नीलिमा खिलती चली आ रही है, वे छायायें और छत पर पड़ने वाला वह हरा चकत्ता पीला पड़ता हुआ दिखाई दे रहा है, जल्दी ही सुबह हो जायगी।

"ले इसे," अपनी शेमीज के बटन लगाती हुई मालकिन कहती है, "यह रो रहा है। उसे बहला कर सुला दे।"

बार्का बच्चे को ले लेती है, पालने में लिटाती है और फिर झुलाना शुरू कर देती है। वह पूरा चकत्ता और वे छायायें धीरे-धीरे गायब हो जाती हैं और अब उसकी आंखों को जबर्दस्ती बन्द करने और उसके दिमाग पर छा जाने के लिए कुछ भी नहीं है। पर उसकी आंखों में पहले ही की तरह नींद भर रही है, भयानक नींद भर रही है! बार्का पालने के किनारे पर सिर रख देती है और नींद को भगाने के लिए अपने पूरे शरीर को हिलाती है परन्तु फिर भी उसकी पलकें चिपकी जा रही हैं और सिर भारी है।

"वार्का, स्टोव जला !" वह दरवाजे में से आती हुई मालिक की आवाज सुनती है।

तो अब उठने और काम करने का समय हो गया। वार्का पालना छोड़ देती है और लकड़ी लाने झोंपड़ी में दौड़ी जाती है। वह खुश है। जब कोई इधर-उधर घूमता और दौड़ता रहता है तो उसे उतनी नींद नहीं सताती जितना कि बैठे हुए होने पर। वह लकड़ी लाती है, स्टोव जलाती है और

अनुभव करती है कि उसका काठ का चेहरा फिर कोमल हो उठा है और उसके विचार अधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं।

"वार्का, समोवार ठीक कर !" उसकी मालकिन चीखती है।

वार्का लकड़ी का एक टुकड़ा फाड़ती है और अभी लकड़ियों को सुलगा कर उन्हें समोवार में रख भी नहीं पाती कि उसे नया हुक्म मिलता है।

"वार्का, मालिक के बरसाती बूट साफ कर !"

वह फर्श पर बैठ जाती हैं, बूट साफ करती है और सोचती है कि एक बड़े गहरे बरसाती बूट में अपना सिर रख देना और उसमें एक झपकी ले लेना कितना अच्छा लगेगा।...और एकाएक वह बरसाती बूट बढ़ता है, फूलता है, सारे कमरे में भर जाता है। वार्का ब्रुश गिरा देती है मगर फौरन अपना सिर हिलाती है, आँखें पूरी खोलती है और चीजों को देखने की कोशिश करती है जिससे वे बढ़ें नहीं और उसकी आंखों के आगे घूमें नहीं।

"वार्का, बाहर की सीढ़ियां धो, मुझे शर्म आती है जब ग्राहक उन्हें देखते हैं।"

वार्का सीढ़ियों को धोती है, साफ करती है और कमरों में झाड़ू लगाती है, फिर दूसरा स्टोव जलाती है और दूकान पर दौड़ी जाती है। बहुत काम करना है, उसे एक मिनट की भी फुर्सत नहीं है।

मगर कोई भी काम इतना मुश्किल नहीं जितना कि एक ही जगह खड़े होकर रसोई की मेज पर आलुओं का छीलना। उसका सिर मेज पर झुक जाता है, आलू उसकी आंखों के आगे नाचने लगते हैं चाकू उसके हाथ से नीचे गिर जाता है जब कि उसकी मोटी नाराज मालकिन उसके पास आस्तीन ऊपर चढ़ाए इतनी जोर से बोलती हुई घूम रही है कि वार्का के कान बजने लगते हैं। भोजन के समय इन्तजार करना, सफाई करना, और कपड़े सीना भी दुखदायी लगता है, ऐसे क्षण आते हैं जब वह चाहती है कि सब कुछ भूल कर फर्श पर लेट जाय और सो जाय।

दिन गुजर जाता है। खिड़कियों को अंधेरी होती हुई देख कर वार्का अपनी कनपटियों को दबाती है जो ऐसी लगती हैं मानो काठ की बनी हों

श्रौर मुस्काती है यद्यपि यह नहीं जानती कि क्यों। शाम का धुन्धलका उसकी उन श्राँखों को श्राराम देता है जो मुश्किल से खुल पा रही हैं श्रौर आशा दिलाता है कि वह फौरन गहरी नींद सोयेगी। शाम को मेहमान श्राते हैं।

"वार्का, समोवार जला!" उसकी मालकियन चीखती है।

समोवार छोटा सा है श्रौर मेहमानों के चाय खत्म करने के पहले कात्या को उसे पाँच बार जलाना पड़ता है। चाय के बाद वार्का को उसी जगह मेहमानों की तरफ देखते श्रौर श्राज्ञाश्रों की प्रतीक्षा करते हुए एक घण्टे तक खड़ा रहना पड़ता है।

"वार्का, दौड़ जा श्रौर बीयर की तीन बोतलें खरीद ला!

वह चल पड़ती है श्रौर पूरी तेजी से दौड़ने की कोशिश करती है जिससे कि नींद भाग जाय।

"वार्का, थोड़ी सी वोदका ला! वार्का, डाट खोलने का काँटा कहाँ है? वार्का, एक मछली साफ कर।"

मगर श्रब, श्रन्त में, मेहमान चले गए हैं, रोशनी बुझा दी गई है श्रौर मालिक श्रौर मालकिन सोने चले गये हैं।

"वार्का, बच्चे को झुला!" वह श्रन्तिम श्राशा सुनती है।

झींगुर स्टोव में झनकारता है। छत पर पड़ता हुश्रा वह हरा चकत्ता श्रौर उस पाजामे श्रौर बच्चे के कपड़ों की छायायें वार्का की श्रधखुली श्राँखों पर फिर छा जाती हैं, उसकी तरफ श्राँखें मिचकाती हैं श्रौर उसके दिमाग में धुन्ध सीं छा जाती है।

"श्राजा री निंदिया श्राजा," वह गुनगुनाती है "मेरे बच्चे को श्राके सुला जा।"

बच्चा रोता है। वह रोते-रोते थक गया है। वार्का फिर उस कीचड़ भरी सड़क, थैले वाले मनुष्यों, श्रपनी माँ पेलानिया, श्रपने पिता येकिम को देखतीं है। वह सब समझती है, वह हरेक को पहचानती है मगर श्रपने उनींदेपन में वह उस शक्ति को नहीं समझ पाती जो उसके हाथ श्रौर पैरों को

बाँध देती है, उस पर छा जाती है और उसे जीने से रोकती है। वह चारों तरफ देखती है, उस शक्ति को ढूँढ़ती है जिससे कि वह उससे बच सके मगर उसे खोज नहीं पाती। आखिरकार, बुरी तरह थक कर वह अपनी पूरी कोशिश करती है, आँखों पर जोर देती है, ऊपर हिलते हुए हरे चकत्ते को देखती है और बच्चे को चीखते हुए सुन कर अपने दुश्मन को पा लेती है जो उसे जिन्दा नहीं रहने देगा।

उसका वह दुश्मन वह बचा है।

यह हँसती है। उसे यह अद्‌भुत लगता है कि वह इतनी साधारण सी बात पहले नहीं समझ सकी। वह हरा चकत्ता वे छायायें और वह झींगुर भी हँसने और आश्चर्य प्रकट करने लगते हैं।

वह छलना वार्का पर अधिकार कर लेती है। वह अपने स्टूल से उठ कर खड़ी हो जाती है और अपने चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान लिए और बिना झपकती हुई खुली आँखों के साथ कमरे में इधर-से-उधर घूमती है। वह इस विचार से प्रसन्न और मग्न प्रतीत होती है कि वह अभी उस बच्चे से मुक्ति पा लेगी जो उसके हाथ-पैरों को बांधे हुए है।······बच्चे को मार दो और फिर सो जाओ, सो जाओ, सो जाओ।···

हँसती, आँखें मिचकाती और उस हरे चकत्ते की तरफ उँगली दिखाती हुई वार्का चुपचाप पालने तक आती है और बच्चे के ऊपर झुकती है। जब वह उसका गला घोंट देती है तो जल्दी से फर्श पर लेट जाती हैं, प्रसन्नता पूर्वक हँसती है कि अब सो सकेंगी और क्षण भर में ही मुर्दे की तरह गहरी नींद में सो जाती है।

दर्रे में

उक्लीवो गाँव एक दर्रे में बसा हुआ था. जिसकी वजह से सड़क और रेलवे स्टेशन से सिर्फ घंटाघर और छींट के कारखानों की चिमनियां ही दिखाई पड़ती थीं। जब यात्री पूछते कि कौन-सा गाँव है तो उन्हें बताया जाता—

"यह वह गाँव है जहां मृतक भोज समय पादरी ने सारी सब्जी खा डाली थी।"

ऐसा हुआ था कि कोस्तुकोव के मृतक भोज के समय बुड्ढे पादरी ने भोजन सामग्री में बड़े दानों वाली कुछ सब्जी देखी और मरभुक्खे की तरह उसे खाना शुरू कर दिया। लोगों ने उसे कोहनी मारी, उसका हाथ पकड़कर खींचा, मगर ऐसा लगता था मानो पादरी आनन्द के मारे अपनी सुध-बुध खो बैठा हो, उसे और किसी भी बात का अनुभव नहीं हो रहा था, वह सिर्फ खाता चला गया। उसने सारी सब्जी खा डाली। बर्तन में दो सेर सब्जी थी। इस घटना को बर्षों बीत चुके हैं, पादरी बहुत दिन हुए मर चुका था परन्तु उस सब्ज़ी की चर्चा अब भी की जाती थी। चाहे इसलिए कि यहाँ की जिन्दगी बड़ीमनहूस थी या इसलिए कि यहाँ के लोग उस मामूली घटना के अलावादस जो साल पहले घटी थी। और किसी भी बात की तरफ ध्यान देने में चतुर नहीं थे। कुछ भी हो उन लोगों के पास उक्लीवो गाँव के बारे में बताने के लिए और कुछ भी नहीं था।

गाँव में हमेशा बुखार फैला रहता था। वहाँ गर्मियों में भी दलदली कीचड़ भरी रहती थी, विशेष रूप से मेंड़ के पास, जिसके ऊपर घनी छाया वाले 'विलो' के पेड़ लगे हुए थे। यहाँ कारखाने के कूड़े-करकट और खटेटे

तेजाब की जो कपड़े छापने में स्तेमाल किया जाता था। दुर्गन्धि छाई रहती थी।

कपड़े के तीन कारखाने और चमड़ा कमाने का बाड़ा गाँव में न होकर उससे कुछ दूरी पर बने हुए थे। कारखाने छोटे थे और उन सब में कुल मिला कर चार सौ से ज्यादा मजदूर काम नहीं करते थे। चमड़ा कमाने का बाड़ा अक्सर नदी के पानी को गन्दा बना देता था, कूड़ा करकट चरागाहों को दूषित कर दिया करता था और किसानों के जानवर साइबेरिया के प्लेग के शिकार होते रहते थे। इसलिए हुक्म दिया गया था कि इन कारखानों को बन्द कर दिया जाय। इनको बन्द हुआ मान लिया गया था मगर स्थानीय पुलिस अफसर और जिले के डाक्टर को खुश करके इन्हें गुप्त रूप से चालू रखा जाता था, जिन्हें मालिक की तरफ से दस रूबल माहवारी के हिसाब से रिश्वत दी जाया करती थी। सारे गाँव में ईंट और लोहे की छतों वाली सिर्फ दो ही अच्छी इमारतें थीं जिनमें से एक में स्थानीय अदालत थी और दूसरी में, जो दुमंजिली और चर्च के बिल्कुल सामने बनी हुई थी, एपीफान का रहने वाला ग्रिगोरी पेत्रोविच सिबुकिन नामक दूकानदार रहता था।

ग्रिगोरी की दूकान पंसारी की थी मगर वह सिर्फ दिखावे भर के लिये ही थी। दरअसल वह वोद्का, जानवर, चमड़ा, अनाज और सुअर के बच्चे बेचा करता था। वह, जो कुछ हाथ पड़ जाता उसी का व्यापार करने लगता था। मिसाल के लिए जब विदेश में महिलाओं के टोपों के लिए नीलकंठ की माँग बढ़ती तो वह इन चिड़ियों के एक जोड़े के लिए लगभग तीस कोपेक वसूल करता था, काटने के लिए चीड़ खरीद लेता, ब्याज पर रुपये उठाता—कुल मिलाकर वह एक मालदार और तेज बुड्ढा आदमी था।

उसके दो बेटे थे। बड़ा, एनीसिम, पुलिस के खुफिया महकमे में काम करता था और घर पर बहुत कम रहता था। छोटा, स्टेपन, व्यापार करता था और अपने बाप की मदद करता था, मगर उससे बहुत ज्यादा मदद की उम्मीद नहीं की जाती थी क्योंकि उसकी तन्दुरुस्ती खराब थी और वह बहरा

था। उसकी बीबी एक्सिन्या एक सुडौल शरीर वाली सुन्दर स्त्री, जो छुट्टियों वाले दिन टोप पहनती थी और छाता लेकर चलती थी—बहुत जल्दी उठ बैठती थी और रात को देर में सोने जाती थी और दिन भर अपना साया उठाए और चाबियों को भनकारती हुई इधर-उधर भागती रहती थी, वह अनाज के गोदाम से तहखाने में जाती और वहाँ से दूकान में जाती। बुड्ढा सिबुकिन मग्न होकर उसे देखता और उसकी आँखें चमक उठतीं। ऐसे अवसरों पर उसे अफसोस होता कि उसकी शादी छोटे बेटे की जगह, जो बहरा था और जिसे स्पष्टतः नारी-सौन्दर्य का किंचित मात्र भी ज्ञान नहीं था, बड़े बेटे के साथ क्यों न हुई।

बुड्ढा हमेशा पारिवारिक जीवन को पसन्द करता था, अपने परिवार को दुनियाँ की सब चीजों से ज्यादा प्यार करता था, खासतौर पर अपने बड़े बेटे उस जासूस को और अपनी पुत्रवधू को बहुत ही प्यार करता था। एकसिन्या की जैसे ही उस बहरे लड़के के साथ शादी हुई, उसने व्यापार में कुशलता दिखानी प्रारम्भ कर दी। वह जानती थी कि किसे उधार दिया जाय और किसे न दिया जाय। चाबियाँ वह अपने पास रखती थी और उन्हें अपने पति तक को नहीं देती थी। वह माला के दानों को गिनकर हिसाब-किताब रखती थी, घोड़ों के दाँतों की किसानों की तरह परीक्षा करती थी और हमेशा चीखती या हँसती रहती थी। जो कुछ भी वह करती या कहती, उससे बुड्ढा हमेशा खुश होता और कहता। "बहुत अच्छा किया बहू! तुम बहुत फुर्तीली औरत हो!"

वह विधुर था मगर अपने बेटे की शादी के साल भर बाद वह अपनी शादी किये बिना नहीं रह सका। उसके लिये उक्लीवो से बीस मील दूर रहने वाली वारवारा निकोलाएव्ना नामक एक लड़की तय की गई जो उस समय पूरी तरह जवान तो नहीं थी मगर देखने में सुन्दर, स्वरूपवान और एक अच्छे परिवार की थी। जैसे ही वह ऊपरी मंजिल के कमरे में आकर रहने लगी घर में प्रत्येक चीज चमक उठी मानो सारी खिड़कियों में नए काँच जड़ दिए गए हों। पवित्र मूर्तियों के सम्मुख दीपक जलने लगे, मेजें बर्फ की तरह

सफेद कपड़ों से ढक दी गईं, फूल लाल कलियों के साथ खिड़कियों में और सामने वाले बाग में खिल उठे; भोजन के समय एक ही प्याले में खाने के स्थान पर हर व्यक्ति के लिये अलग-अलग प्लेटें लगाई जाने लगीं। वारवारा निकोलाएव्ना के चेहरे पर एक सुखद मित्रतापूर्ण मुस्कान खेलती रहती थी जिससे ऐसा लगने लगा था मानो सारा घर भी मुस्करा उठा हो। भिखारी और तीर्थ यात्री, मर्द और औरतें अहाते में आने शुरू हो गये। यह एक ऐसी बात थी जो पहले कभी नहीं हुई थी। खिड़कियों के नीचे उक्लीवो की किसान औरतों के अवसाद भरे गीतों की आवाजें और बीमार तथा निर्जीव दिखाई देने वाले आदमियों की क्षमा-प्रार्थना सी करती हुई खाँसी, जिन्हें शराब पीने के कारण कारखाने से निकाल दिया गया था, सुनाई पड़ने लगीं। वारवारा पैसे से, रोटी से, पुराने कपड़ों से उनकी मदद करने लगी और बाद में जब वह पूरी तरह से घुलमिल गई तो दूकान से चीजें लाने लगी। एक दिन उस बहरे आदमी ने उसे चार औन्स चाय ले जाते हुए देखा और इसने उसे बेचैन कर दिया।

"देखिए, माँ ने चार औन्स चाय ले ली है," उसने बाद में अपने पिता को सूचित किया, "इसे किस मद में दर्ज करूँ?"

बुड्ढे ने कोई जवाब नहीं दिया, खामोश खड़ा रह गया और कुछ देर अपनी भौहों को ऊपर-नीचे करता हुआ सोचता रहा और फिर अपनी पत्नी के पास ऊपर गया।

"वारवारुस्का, अगर तुम्हें दूकान से कोई चीज चाहिए," उसने स्नेह के साथ कहा, "तो ले लिया करो, प्रिये। ले लो और स्वागत करो, झिझकना मत।"

और दूसरे दिन उस बहरे आदमी ने अहाते में दौड़ते हुए उसे पुकार कर कहा।

"माँ अगर तुम्हें कोई चीज चाहिए तो ले लेना।"

उसके द्वारा दान देने में कुछ नयापन, कुछ प्रसन्नता और उदार हृदयता की झलक सी थी, वैसी ही जैसी कि पवित्र मूर्तियों के सम्मुख जलने वाले

दीपकों और लाल फूलों में थी। जब, उत्सवों या गिरजे के त्यौहारों के समय जो तीन दिन तक मनाए जाते थे, वे किसानों को गन्दा नमकीन गोश्त, जिसमें से इतनी तेज बदबू आती थी कि उसके बर्त्तन के पास खड़ा रहना कठिन था, बेचते थे और शराबी आदमियों से बन्धक के रूप में हँसिए, टोपियाँ, और उनकी बीबियों के रूमाल ले लेते थे, जब कारखाने के मजदूर सड़ी हुई वोद्का से मदहोश होकर कीचड़ में लोटते रहते थे और पाप हवा में गहरे कुहरे की तरह मंड़राता प्रतीत होता था तो उस समय यह सोच कर सन्तोष मिलता था कि वहाँ घर में ऊपर शरीफ, साफ सुथरे कपड़े पहने हुए एक ऐसी औरत भी थी जिसका नमकीन गोश्त या वोद्का से कोई भी सम्बन्ध नहीं था। उन अन्धकारपूर्ण और कठिन दिनों में उसकी दानशीलता, मशीन में लगे हुए सुरक्षा यंत्र का सा प्रभाव डालती थी।

सिबुकिन के घर में दिन व्यापारिक चिन्ताओं में ही व्यतीत होते थे। सूरज निकलने से पहले ही बाहर के कमरे को धोती एकसिन्या हाँफती और मुँह से भाप छोड़ती रहती, और रसोईघर में समोवार एक ऐसी आवाज के साथ उबलता रहता जो अच्छे भविष्य का सूचक नहीं था। बुड्ढा ग्रिगोरी पेत्रोविच, लम्बा काला कोट, सूती ब्रीचिस और चमकते हुए ऊँचे जूते पहने, एक साफ सुथरी आकृति वाले छोटे से व्यक्ति के समान दिखाई पड़ने वाला, कमरों में घूमता और एक प्रसिद्ध गाने में ससुर की तरह अपनी छोटी एड़ियों को ताल के साथ बजाता रहता। दूकान खुल गई थी। जब धूप निकल आई तो एक तेज दौड़ने वाली गाड़ी सामने वाले दरवाजे पर लाई गई और बुड्ढा घूमने के लिए उस पर बैठ गया। अपनी बड़ी टोपी उसने कानों तक नीचे खिसका ली। उसे देखकर कोई भी नहीं कह सकता था कि वह छप्पन वर्ष का था। उसकी पत्नी और पुत्रवधू उसे विदा देतीं और ऐसे अवसरों पर जब वह एक अच्छा साफ-सुथरा कोट पहने होता और गाड़ी में एक बड़ा काला घोड़ा जुता होता जिसकी कीमत तीन सौ रूबल थी तो बुड्ढे को किसानों का अपनी शिकायतें और प्रार्थना-पत्र लेकर अपने पास आना अच्छा नहीं लगता

था। वह किसानों से नफरत करता था और अगर वह किसी किसान को फाटक पर प्रतीक्षा में खड़ा हुआ देखता तो गुस्से से चिल्ला उठता :

"तुम वहाँ क्यों खड़े हो ? आगे बढ़ो।"

और वह आदमी अगर कोई भिखारी होता तो वह कहता :

"भगवान देगा !"

वह व्यापार के काम से जाया करता था। उसकी बीबी काली पोशाक पहने और एक काला 'एप्रन' बाँधे कमरों को ठीक करती रहती या रसोई घर में मदद देती। कक्सिन्या दूकान का काम संभालती और अहाते से बोतलों और रुपये पैसे की खनखनाहट, उसकी हँसी और जोर-जोर से बातें करने की आवाज और उन ग्राहकों के गुस्से की भनभनाहट, जिनका वह अपमान कर देती थी, सुनाई पड़ती रहती थी। उसी समय यह भी देखा जा सकता था कि दूकान में वोद्का की बिक्री चोरी छिपे जारी रहती थी। वह बहरा आदमी भी दूकान में बैठा रहता या नंगे सिर, अपनी जेबों में हाथ डाले, खाली निगाहों से कभी ऊपर आसमान की तरफ देखता हुआ सड़क पर घूमता रहता। दिन भर में वह लोग छः बार चाय पीते, चार बार खाना खाने बैठते और शाम को अपनी कमाई गिनते, उसे हिफाजत से रख देते, बिस्तर पर जाते और गहरी नींद सोते।

उवलीवो के तीनों सूती कारखाने और उन कारखाने के मालिकों बड़े हीमिन, छोटे हीमिन और कोस्तुकोव-के घरों पर टेलीफून खटकता रहता। टेलीफून भी स्थानीय कचहरी में लगा हुआ था परन्तु जल्दी ही उसने काम करना बन्द कर दिया क्योंकि वहाँ खटमलों और कीड़े-मकोड़ों ने अपना अधिकार कर लिया था। देहाती जिले का मुखिया बहुत कम पढ़ा-लिखा आदमी था और सरकारी कागजों पर प्रत्येक शब्द छापे के बड़े अक्षरों में लिखा करता था। लेकिन जब टेलीफून खराब हो गया तो वह बोला :

"हाँ, अब टेलीफून के बिना हम लोगों को बड़ी तकलीफ हो जायगी।"

बड़े हीमिन हमेशा छोटे हीमिन के साथ मुकद्दमे लड़ते रहते थे और

कभी-कभी ऐसा होता कि छोटे ह्रीमिन आपस में ही लड़ मरते और अदालत का दरवाजा खटखटाने लगते और उनका कारखाना दो या एक महीने तक तब तक बन्द रहता जब तक कि उनमें फिर समझौता न हो जाता और यह सारा तमाशा उक्लीवो की जनता के लिए एक मनोरंजन का विषय बन जाता क्योंकि प्रत्येक झगड़े के अवसर पर वहाँ काफी चर्चा होती और गप्पें उड़तीं। छुट्टियों वाले दिनों में कोस्तुक्रोव और छोटे ह्रीमिन घुड़दौड़ करते, उक्लीवो में इधर-उधर दौड़ते फिरते और बछड़ों को कुचल देते। एक्सिन्या अपने कलफदार पेटीकोट को लहराती, एक नीची गर्दन वाली पोशाक पहने, अपनी दूकान के पास चहलकदमी करती रहती। छोटे ह्रीमिन उसे पकड़ लेते और ले जाते मानो जबर्दस्ती कर रहे हों। फिर बुड्ढा सिबुकिन अपने नए घोड़े को दिखाने के लिए गाड़ी में बाहर निकलता और वारवारा को अपने साथ बैठा लेता।

२

बड़ा बेटा एनीसिम बहुत कम घर आता था। वह सिर्फ बड़ी छुट्टियों में ही आता था परन्तु अक्सर किसी लौटते हुए गाँव वाले के हाथों तोहफे और किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा बड़ी सुन्दर लिखावट में लिखे हुए खत भेजता रहता जो हमेशा एक पूरे लम्बे-चौड़े कागज पर एक प्रार्थना पत्र की तरह लिखे होते। खतों में ऐसे विचार व्यक्त किए होते जिन्हें एनीसिम बातचीत में कभी भी व्यक्त नहीं करता था : "प्यारे पिता और माता, मैं तुम्हें तुम्हारी शारीरिक आवश्यकताओं के सन्तोष के निमित्त एक पाउन्ड फूल की चाय भेजता हूँ।"

हर खत के नीचे आड़ी तिरछी लिखावट में, मानो टूटी कलम से लिखा गया हो, लिखा रहता : "एनीसिम सिबूकन," और बाद में उसी सुन्दर लिपि में : "एजेन्ट।"

वे खत कई बार जोर-जोर से पढ़े जाते और बुड्ढा बाप प्रभावित हो और भावावेश से लाल पड़ कर कहता :

"देखो, वह घर पर रहने की परवाह नहीं करता, वह विद्वानों का सा जीवन बिता रहा है। खैर, बिताने दो। हरेक को अपना काम करना चाहिए।"

ऐसा हुआ कि मेले से बिल्कुल पहले ओलों के साथ भयंकर आँधी और पानी आया। बुड्ढा और वारवारा उसे देखने खिड़की पर गए और देखा: एनीसिम एक स्लेज में बैठा हुआ स्टेशन से घर आ रहा था। उसका आगमन नितान्त अप्रत्याशित था। वह चिन्तित और किसी बात से उद्विग्न होता हुआ भीतर आया, और पूरे समय तक ऐसा ही बना रहा। उसके व्यवहार में कुछ अजीब सी निश्चिन्तता और स्वच्छन्दता सी थी। वह जाने की जल्दी में नहीं था। ऐसा लगता था मानो उसे नौकरी से निकाल दिया गया हो। वारवारा उसके आने से प्रसन्न थी। उसने उसकी तरफ एक अर्थ-पूर्ण दृष्टि से देखा, गहरी साँस ली और सिर हिलाया।

"यह क्या बात है, मेरे दोस्तो?" वह बोली, "तत्, तत्, लड़के की अट्ठाईसवीं साल चल रही हैं और वह अब भी एक अविवाहित का मस्त जीवन बिता रहा है; तत्, तत्, तत्!"

दूसरे कमरे से उसकी कोमल और एक से स्वर से तत्, तत्, तत्, की सी ध्वनि आ रही थी। वह अपने पति और एक्सेन्या के साथ फुस-फुसा कर बातें करने लगी और उनके चेहरों पर चतुरतापूर्ण और रहस्यमय भाव झलक उठा मानो वे षड्यन्त्रकारी हों।

तय हुआ कि एनीसिम की शादी कर दी जाय।

"ओहं, तत्, तत्...छोटे भाई की शादी बहुत पहले हो चुकी है," वारवारा ने कहा, "और तुम मेले में आए हुए मुर्गे की तरह अब भी बिना साथी के हो। इसका क्या मतलब है? तत्, तत्, भगवान करे, तुम्हारी शादी हो जायगी, फिर जैसा तुम ठीक समझो—तुम नौकरी पर चले जाओगे और तुम्हारी बीबी यहाँ घर पर हमारी मदद करने के लिए रह जायगी। नौजवान, तुम्हारा जीवन बड़ा अव्यवस्थित है और मैं देख रही हूँ

कि तुम ढङ्ग से रहना भूल चुके हो। तत्, तत्, तुम सब शहरी लोगों के साथ यही मुसीबत है।"

सिबूकिन परिवार में शादी होती थी तो उनके लिए वधू के रूप में सब से सुन्दर लड़कियाँ छाँटी जाया करती थीं क्योंकि वे लोग अमीर थे। एनीसिम के लिए भी एक सुन्दर लड़की तलाश कर ली गई। वह खुद बड़ी मनहूस और ध्यान न देने लायक शकल सूरत वाला व्यक्ति था—दुबला पतला, बीमार सा शरीर और ठिगना क़द, गोल और फूले हुए गाल जो ऐसे लगते थे मानो वह उन्हें फुला रहा हो। उसकी आँखें टकटकी बाँधे जिज्ञासापूर्ण दृष्टि से घूरती रहती थीं, उसकी दाढ़ी लाल और छितरी थी और जब वह सोच रहा होता तो हमेशा उसे मुँह में पकड़ लेता और चबाता रहता था। साथ ही वह अक्सर ज्यादा पी लिया करता था और इसका पता उसके चेहरे और चाल से लग जाया करता था। मगर जब उसे सूचना दी गई कि उन्होंने उसके लिए बड़ी खूबसूरत बीबी ढूँढ़ ली है तो वह बोला :

"ओह, अच्छा, मैं कोई डरता थोड़े ही हूँ। मैं कह सकता हूँ कि हमारा परिवार सुन्दर है।"

तोरगुएवो गाँव शहर के पास था। कुछ दिन हुए इसका आधा हिस्सा शहर में मिला लिया गया था, बाकी का आधा गाँव ही रह गया था। पहले हिस्से में—शहर वाले में—एक विधवा थी जो अपने छोटे से मकान में रहती थी। उसके एक बहन थी जो उसी के साथ रहती थी और बहुत गरीब थी और दिन में काम करने बाहर जाया करती थी। इस बहन के लीपा नामक एक बेटी थी। वह भी काम करने जाया करती थी। तोरगुएवो के लोग लीपा की सुन्दरता की चर्चा करने लगे थे मगर उसकी भयंकर गरीबी ने सबको उससे दूर ही रखा। लोगों की राय थी कि कोई विधुर या बड़ी उमर का आदमी उसकी गरीबी का ख्याल न कर उससे शादी कर लेगा या बिना शादी किए ही उसे रख लेगा और उसके साथ रहने से उसकी माँ को पेट भर खाना मिल जाया करेगा। शादी कराने वाले दलालों के मुँह से वारवारा ने लीपा के विषय में सुना और गाड़ी में बैठ कर तोरगुएवो को चल दी।

फिर मौसी के घर लड़की देखने की रस्म अदा करना निश्चित किया गया जिसमें भोजन और शराब का सुन्दर प्रबन्ध था। लीपा ने इसी अवसर के लिए बनवाई गई नई गुलाबी पोशाक पहनी। उसके बालों में एक लाल फीता आग की लौ की तरह चमक रहा था। वह पीले चेहरे वाली, पतली, कमजोर लड़की थी जिसकी रूपरेखा कोमल और स्निग्ध थी और जो खुले में काम करने के कारण धूप से साँवली पड़ गई थी। उसके चेहरे पर हमेशा एक लज्जापूर्ण और अवसाद भरी मुस्कराहट छाई रहती थी और आँखों में एक बच्चे की सी विश्वासपूर्ण और जिज्ञासु भावना भरी रहती थी।

वह किशोरी थी, बिल्कुल छोटी सी बच्ची की तरह। उसके वक्ष का उभार मुश्किल से दिखाई पड़ता था मगर उसकी शादी हो सकती थी क्योंकि उसकी अवस्था कानून की दृष्टि से इस योग्य हो चुकी थी। वह सचमुच सुन्दरी थी और उसकी सिर्फ एक ही चीज, जो अनाकर्यक मानी जा सकती थी, उसके वे बड़े मर्दाने हाथ थे जो शिथिलतापूर्षक दो विशाल गदाओं की तरह लटकते रहते थे।

"दहेज नहीं है और हम इसकी ज्यादा परवाह नहीं करते," सिबूकिन ने मौसी से कहा। "हमने अपने बेटे स्टेपन के लिए भी एक गरीब घराने की लड़की ली थी और अब हम उसकी अधिक प्रशंसा नहीं कर सकते। घर के काम में और व्यापार के मामलों में वह माहिर है।"

लीपा दरवाजे में खड़ी थी और उसने इस तरह देखा मानो कह रहीहो : "मेरे साथ जो चाहो सो करो, मैं तुम्हारा विश्वास करती हूँ," जब कि उसकी माँ मजदूरिन ;प्रास्कोव्या शर्म ,से विजड़ित होकर रसोई घर में जा छिपी। एक बार उसकी जवानी में, एक व्यापारी ने जिसका वह फर्श साफ कर रही थी, गुस्से में उसके लातें मारी थीं; वह डर के मारे सुन्न पड़ गई थी और उसके मन में हमेशा के लिए भय की भावना ने जड़ जमा ली थी। जब वह भयभीत होती तो उसके हाथ पैर कांपने लगते और गाल एँठने लगते। रसोई-घर में बैठे हुए उसने आगन्तुकों की बातें सुनने की कोशिश की और बराबर अपने माथे पर उँगली जमाए और पवित्र मूर्त्तियों की तरफ देखते हुए अपने

ऊपर सलीब का निशान बनाती रही। एनीसिम ने जो थोड़ा पिए हुए था, रसोई-घर का दरवाजा खोला और लापरवाही के साथ बोला।

"यहाँ क्यों बैठी हो, मेरी प्यारी माँ ? हमें तुम्हारे बिना अच्छा नहीं लग रहा।"

प्रास्कोव्या ने सहम कर अपने हाथों को अपनी दुर्बल ढली हुई छाती से लगाते हुए कहा।

"ओह, कोई बात नहीं।....तुम्हारी बड़ी कृपा है।"

लड़की देखने के बाद विवाह की तिथि निश्चित की गई। इसके यदि एनीसिम घर पर सीटी बजाता हुआ कमरों में घूमता रहता या अचानक कोई बात सोच कर, गहरे विचार में डूब जाता और दरवाजे की तरफ चुपचाप टकटकी बाँधकर देखने लगता मानो जमीन की गहराई को जान लेगा। उसने न तो इस बात से प्रसन्नता प्रकट की कि उसकी शादी होगी और वह भी इतनी जल्दी कि इसी 'लो सन्डे' को और न अपनी होने वाली पत्नी को देखने की ही इच्छा प्रकट की। वह सिर्फ सीटी बजाता रहता था। और यह स्पष्ट था कि उसकी शादी :सिर्फ इसीलिये हो रही है क्योंकि उसका बाप और सौतेली माँ ऐसा चाहते थे और इसलिए कि गाँव में यह रिवाज था कि बेटे की शादी की जाय जिससे कि घर में काम करने के लिये एक औरत और आ जाय। जब वह गया तो यह नहीं लगता था कि जल्दी में था और उसका व्यवहार वैसा नहीं था जैसा कि पहले हुआ करता था। इस बार उसका व्यवहार विशेष रूप से लापरवाही से भरा हुआ था और बातें उखड़ी-उखड़ी सी थीं।

शिकालोवो गाँव में फ्लैगेलेन्ट सम्प्रदाय की अनुयायिनी दो दर्जिन रहती थीं जो आपस में बहनें लगती थीं। शादी के नए कपड़े तैयार करने का काम उन्हीं को सौंपा गया था। इसलिए वे अक्सर कपड़े बना कर उनका ठीक नाप देखने के लिये आया करती थीं और चाय पीती हुई काफी देर तक ठहरा करती थीं। वे वारवारा [के लिये काली गोट लगी हुई भूरे रंग की और एकसिन्या के लिये सामने पीले रंग की और लटकती हुई हल्के हरे रंग

की पोशाक तैयार कर रही थीं। सिबुकिन उन्हें नकद पैसों के रूप में मजदूरी न देकर दूकान के सामान के रूप में दिया करता था। वे अत्यन्त निराश होकर चर्बी की बनी मोमबत्तियों के बन्डल और मछलियों के टिन लिए, जिनकी उन्हें क़तई कोई जरूरत नहीं थी, चल देतीं और जब गाँव से बाहर निकल कर खुले मैदान में आतीं तो एक छोटे से टीले पर बैठ जातीं और रोने लगतीं।

एनीसिम शादी के दिन से तीन दिन पहले सिर से पैर तक लकदक कपड़े पहने हुए आ पहुँचा। वह अत्यन्त चमकीले भारतीय रबड़ के बरसाती बूट पहने हुए था तथा कमर-पेटी की जगह छोटे-छोटे से गोले लगी हुई एक लाल रस्सी बाँधे हुए था। उसके कन्धे पर एक ओवरकोट लटक रहा था जो नया था। उसने उसे पहन नहीं रखा था।

पवित्र मूर्तियों के सम्मुख शान्ति के साथ अपने ऊपर सलीब का निशान बनाने के बाद उसने पिता को प्रणाम किया और उन्हें चाँदी के दस रूबल और दस आधे-रूबल वाले सिक्के दिए। वारवारा को भी उसने इतने ही रूबल दिए और एकसिन्या को पच्चीस चौथाई-रूबल। इस उपहार का सबसे बड़ा आकर्षण यह था कि सारे सिक्के, जो मानो होशयारी से इकट्ठे किए गए हों, नए थे और धूप में चमक रहे थे। गम्भीर और शान्त दिखाई देने का प्रयत्न करते हुए उसने चेहरा सिकोड़ा और गाल फुलाए। उसके मुँह से शराब की गन्ध आ रही थी। शायद हर स्टेशन पर वह शराबखाने में गया था और इसके बाद उसके चेहरे पर लापरवाही के चिन्ह प्रगट हो उठे-जिसमें बनावट और असंगति थी। फिर एनीसिम ने बुड्ढे के साथ खाना खाया और चाय पी। वारवारा ने अपने हाथ में उन पर नए सिक्कों को उल्टा-पलटा और उन गाँव वालों की बातें पूछीं जो शहर में रहने लगे थे।

"भगवान को धन्यवाद है कि वे सब ठीक हैं। उनकी मजे से गुजर रही है।" एनीसिम ने बताया, "सिर्फ इवान येगोरोव मुसीबत में है। उसकी बुड्ढी स्त्री सोफिया निकीफोरोव्ना का देहान्त हो गया है। उसे तपेदिक हो गई थी। उन्होंने उसकी आत्मा की शान्ति के लिये दिए जाने

वाले भोज का ठेका ढाई रूबल प्रति व्यक्ति के हिसाब से हलवाई को दिया था। वहाँ असली शराब पिलाई गई थी। हमारे गाँव के किसानों ने भी अपने लिए ढाई-ढाई रूबल दिए थे। उन्होंने कुछ भी नहीं खाया मानो वे किसान धृष्टता को समझ गए हों।'

"ढाई !" उसके पिता ने सिर हिलाते हुए कहा।

"क्यों, वहां देहात की सी बात नहीं है। तुम कुछ जलपान करने के लिए किसी रेस्त्राँ में जाते हो, दो एक चीजें मंगाते हो, और लोग भी आ जाते हैं यहाँ तक कि अपनी एक पार्टी जमा हो जाती है, शराब पी जाती है और जब तक कि तुम्हें होश आता है, दिन निकल आता है और हरेक को तीन या चार रूबल के हिसाब से भुगतान करना पड़ता है। और अगर कोई समोरोदोव के साथ जाय तो वह हर चीज खाने के बाद काफी में ब्रान्डी डाल कर पीना पसन्द करता है और ब्रान्डी का एक छोटा सा गिलास साठ कोपेक का आता है।"

"और वह सब बर्दास्त कर लेता है," बुड्ढे ने उत्साहित होकर कहा, "वह इतना दे लेता है, तुम झूठ बोलते हो।"

'मैं अब हमेशा समोरोदोव के साथ ही रहता हूँ। समोरोदोव ही तुम्हारे लिए लिखे हुए मेरे खत लिखा करता है। वह बहुत सुन्दर लिखता है। और अगर मैं यह तुम्हें बताऊँ, माँ,' एनीसिम वारवारा की तरफ मुखातिब होकर उमंग के साथ कहता गया, "कि सोमोरोदोव कैसा आदमी है तो तुम मेरी बात का यकीन नहीं करोगी। हम लोग उसे 'महतर' कहकर पुकारते हैं क्योंकि वह आरमीनिया वासी की तरह काला है। मैं उसकी हर बात को जान जाता हूँ। मैं अपने हाथ की पाँचों उँगलियों की तरह उसके सब कामों को जानता हूँ और वह इस बात को महसूस करता है और हमेशा मेरी इस बात को मानता है कि हम लोग अलग नहीं हो सकते। वह एक तरह से तो इसे पसन्द नहीं करता मगर मेरे बिना उनका काम नहीं चल सकता। जहाँ मैं जाता हूँ वहीं वह भी जाता है। मेरी परख बड़ी सच्ची है माँ ! मैं एक किसान को बाजार में कमीज बेचते हुए देखता हूँ और फौरन

कहता हूँ, 'ठहरो, यह कमीज चोरी की है।' और सचमुच यही बात निकलती है, कमीज चोरी की थी।"

"तुम कैसे बता देते हो?" वारवारा ने पूछा।

"किसी चीज से नहीं। मेरी निगाह भाँप लेती है। मैं उस कमीज के बारे में कुछ भी नहीं जानता सिर्फ किसी वजह से मैं उसकी तरफ आकर्षित हो उठता हूँ। यह चोरी की है और मैं सिर्फ यही बता सकता हूँ। हम जासूसों में यह कहावत चल पड़ी है, 'ओह, एनीसिम शिकार करने गया है।" इसका मतलब है कि चोरी की चीजों को पकड़ने गया। हाँ...कोई भी चोरी कर सकता है, मगर उसको छिपाना दूसरी ही बात है। दुनियाँ लम्बी-चौड़ी है मगर चोरी के माल को कहीं भी नहीं छिपाया जा सकता।"

"हमारे गांव में पिछले हफ्ते एक मेढ़ा और दो मेढ़ी चोरी चली गई थीं" वारवारा ने कहा और एक गहरी साँस ली, "उन्हें ढूँढ़ने वाला कोई भी नहीं है।...ओह तत् तत्।"

"अच्छा, मैं कोशिश करूँगा। मुझे कोई उज्र नहीं है।"

शादी का दिन आ गया। यह अप्रैल का एक ठंडा मगर धूप से चम-चमकता खुशी से भरा हुआ दिन था। लोग सुबह से ही जोड़ों में या रंगीन फीतों से सजे हुए जुए और अयालों वाले तीन घोड़ों की गाड़ी में घन्टी बजाते हुए इधर-उधर आ-जा रहे थे। कौवे इस शोरगुल से आशंकित होकर सरई के झुंड में काँव-काँव करते हुए शोर मचा रहे थे। सारिकाएं सप्तम स्वर में बराबर गाए जा रही थीं मानो इस बात की खुशी मना रही हों कि सिबुकिन परिवार में शादी हो रही थी।

भीतर घर में मेजों पर लम्बी मछलियां, भाप निकलती हुई भुनी रानें, मसालेदार पकी हुई फाख्तायें, छोटी-छोटी मछलियों के डिब्बे तथा तरह-तरह की सुगन्धित मसालेदार खाने की चीजें, वोद्का तथा दूसरी तरह की शराबों की बोतलें सजी हुई थीं। वहां चारों तरफ मसालेदार गोश्त और टीन के डिब्बों में बन्द चटपटे केंकड़ों की सुगन्धि छा रही थी। बुड्ढा सेबुकिन अपनी ऐड़ियों को खटखटाता और चाकुओं को एक दूसरे पर रगड़ कर तेज करता

हुआ मेजों के आसपास घूम रहा था। कोस्तुकोव के यहाँ से आए हुए मर्द रसोइये और छोटे हीमिन के यहाँ से आई हुई खाना पकाने वाली औरतें बराबर चीजों के लिए वारवारा को पुकार रही थीं और वारवारा बराबर बद-हवास सी होकर रसोई घर में दौड़ती हुई भागी फिर रही थी। एकसिन्या अपने घुँघराले सिर्फ एक चोली पहने, नए चरमराते हुए बूटों में, बाल फह-राती अहाते में चारों तरफ बवंडर की तरह अपने नंगे घुटनों और नंगी छाती को दिखाती इधर-से-उधर उड़ती फिर रही थी।

चारों तरफ शोरगुल मचा हुआ था। डांटने और कसमें खाने की आवाजें आ रही थीं। रास्ता चलने वाले खुले हुए फाटक के सामने खड़े हो जाते थे। वहां की प्रत्येक वस्तु एवं हलचल से यह स्पष्ट हो रहा था कि वहां कोई अनोखी घटना घट रही है।

"वे लोग दुलहिन को लेने गए हैं!"

घंटियां बजनी शुरू हुईं और गाँव से बहुत दूर जाते-जाते उनकी आवाज आनी बन्द हो गई।

.........दो और तीन बजे के बीच लोग दौड़े: फिर घन्टियों की आवाज सुनाई पड़ी। वे लोग दुलहिन को ला रहे थे। गिरजा खचाखच भरा हुआ था। झाड़-फानूस जल रहे थे। वृद्ध सिबुकिन की इच्छानुसार बैन्ड वाले गाने की किताबों को देख कर धुनें बजा रहे थे। रोशनी की चमक चमकीले रङ्गों की पोशाकों ने लीपा की आँखों में चकाचौंध उत्पन्न कर दी थी। उसने ऐसा अनुभव किया जैसे कि गाने वाले अपने तेज स्वरों से उसके सिर पर हथौड़े मार रहे हों। उसके बूट और चोली, जो उसने जिन्दगी में पहली बार पहने थे, उसे तकलीफ दे रहे थे और उसका चेहरा ऐसा लग रहा था मानो वह अभी बेहोशी के दौड़े से उठ कर आई हो। वह बिना कुछ समझे, सूनी आंखों से चारों तरफ देख रही थी। एनीसिन, काला कोट, और टाई की जगह एक लाल फीता बाँधे, विचारों में डूबा उसी की तरफ देख रहा था और जब गाने वाले जोर-जोर से चिल्लाने लगे तो उसने जल्दी से अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। वह अपने को बड़ा प्रभावित अनुभव

कर रहा था। उसका मन रोने-रोने को हो उठा था। यह गिरजा, बचपन से ही उसका चिर-परिचित स्थान था, किसी समय उसकी स्वर्गीया माँ उसे यहाँ प्रार्थना के समय लाया करती थी, किसी समय वह गाने वालों के साथ यहाँ गाया करता था। हरेक पवित्र मूर्ति और गिरजे का कौना-कौना उसे अच्छी तरह याद था। उसकी शादी हो रही थी। सामाजिक नियम पूरा करने के लिए उसे एक पत्नी को अपनाना था परन्तु इस समय यह उसके में नहीं सोच रहा था। वह अपनी शादी को पूरी तरह भूल गया था। उसकी आँखों में आँसू भर आए जिससे वह पवित्र मूर्त्तियों की तरफ देखने में असमर्थ हो उठा। उसका हृदय भारी-भारी सा होने लगा। उसने प्रार्थना की और भगवान से याचना की कि ये मुसीबतें जो उस पर आने वाली थीं, जो आज नहीं तो कल उस पर टूट पड़ने वालीं थीं किसी तरह टल जायें, उसी तरह जिस तरह कि तूफानी बादल वर्फीले तूफान के समय गाँव पर एक भी बूंद बिना बरसाये वैसे ही निकल जाते हैं। उसके द्वारा पहले किए हुए पाप इतने ज्यादा थे कि उन सबको नजरअन्दाज कर देना या उनसे बच जाना आशा के विपरीत दिखाई पड़ रहा था। यहाँ तक कि उनके लिए क्षमा माँगना भी असंगत प्रतीत होता था। परन्तु फिर भी उसने क्षमा-प्रार्थना की और जोर से हिचकी तक ली मगर किसी ने भी वात को देख नहीं पाया क्योंकि उन लोगों ने यह सोचा कि उसने जरा ज्यादा चढ़ा ली होगी।

बच्चों की सी चिड़चिड़ाहट की एक तीखी आवाज आई :

"मुझे यहाँ से ले चलो, प्यारी माँ!"

"चुप रहो!" पादरी चिल्लाया।

जब वे गिरजे से लौटे तो लोग उनके पीछे दौड़े। दूकान पर, फाटक पर और अहाते में खिड़कियों के नीचे लोगों के झुन्ड जमा थे। किसानों की औरतें उन्हें बधाई के गाने सुनाने के लिए आईं। नवदम्पत्ति ने अभी मुश्किल से दहलीज को पार ही किया था कि गाने वालों ने, जो बाहरी कमरे में पहले से ही संगीत की पुस्तक लिए खड़े थे, अपनी पूरी ताकत से गला फाड़कर गाना शुरू कर दिया। एक वैन्ड ने, जिसे खास तौर पर शहर से

बुलाया गया था, बाजा बजाना शुरू कर दिया। कांच के बड़े-बड़े गिलासों में झागदार 'डोन' नाम की शराब लाई गई और ऐलीजारोव ने, जो एक लम्बा, तगड़ा और भरी हुई भौहों वाला बुड्ढा था और ठेके पर काम करता था, उस सुखी जोड़े को सम्बोधित कर कहना शुरू किया।

"एनीसिम और तुम, मेरी बच्ची, एक दूसरे को प्यार करना, धर्म मार्ग का पालन करना; स्वर्ग की माता तुम पर सदैव अपना वरद हस्त रखेगी।"

उसने अपना चेहरा बुड्ढे बाप के कन्धे पर रख लिया और सिसकने लगा।

"ग्रिगोरी पेत्रोविच, रोओ, खुशी से हमें रोने दो!" उसने पतली आवाज में कहा और तब तुरन्त ही एक गहरी आवाज में हँस उठा, हो—हो—हो। यह तुम्हारे लिए भी एक अच्छी पुत्र-बधू होगी। वह सब तरह से ठीक है। सब काम ठीक तरह से होता है, कोई खड़खड़ाहट नहीं, मशीनरी ठीक काम करती है, सब पुर्जे दुरुस्त हैं।"

वह येगोल्येव्सकी जिले का रहने वाला था मगर अपनी जवानी से ही उक्लीवो और उसके पास-पड़ोस की फैक्टरी में काम करता आया था और इस जगह को उसने अपना घर बना लिया था। वह वर्षों से यहाँ इसी तरह सबसे परिचित था—वृद्ध, क्षीणकाय और लम्बा। यहाँ के लोग वर्षों से उसे 'बैशाखी' के नाम से जानते आ रहे थे। शायद इस वजह से कि वह चालीस वर्षों से फैक्टरी की मशीनों को ठीक करता आया था इसलिए वह हरेक व्यक्ति को और हरेक चाज को उसके स्वास्थ्य और उसमें अपेक्षित मरम्मत की ही दृष्टि से देखता था जैसे कि मशीन को देखा जाता है। मेज पर बैठने से पहले उसने कुर्सियों की यह देखने के लिए जाँच की कि वे ठीक हैं या नहीं। उसने भाप निकलती हुई मछली की भी परीक्षा की।

'डोन' शराब पीने के बाद वे सब मेज पर बैठ गए। मेहमान अपनी कुर्सिओं को खिसका-खिसका कर बातें करने लगे। बाहरी कमरे में गाने वाले गा रहे थे। बैन्ड बज रहा था और अहाते में किसान औरतें समवेत स्वर में

गाना गा रही थीं। इन सब आवाजों के मिलने से एक ऐसा शोर मच रहा था जिसे सुन कर चक्कर आने लगते थे।

'वैशाखी' अपनी कुर्सी पर घूमा और अपने पड़ोसियों को कुहनी से ठेला, लोगों को बातें करने से रोका, हँसा और रह-रह कर चीखता रहा।

"नन्हें बचचो, नन्हें बच्चो," वह तेजी से बड़बड़ाया। "एकसिन्या मेरी प्यारी, वारवारा डार्लिंग, हम लोग सब शान्ति और सुख के साथ रहेंगे, मेरी नन्हीं छप्पन छुरियो!"

उसने थोड़ी सी शराब पी रखी थी और इस समय अँग्रेजी तीखी शराब का सिर्फ एक गिलास पीकर ही नशे में धुत हो गया मानो इसने उन्हें जड़ बना दिया हो। उसकी जवान लड़खड़ाने लगी।

स्थानीय पादरी गण, फैक्टरियों के सपत्नीक क्लर्क, दूसरे गाँवों के व्यापारी और सरायों के मालिक वहाँ उपस्थित थे। क्लर्क और जिले के देहाती भाग का मुखिया, जो साथ-साथ चौदह वर्षों से काम करते आ रहे थे और जिन्होंने इस पूरे समय में किसी के एक भी कागज पर दस्तखत नहीं किए थे तथा एक भी आदमी को स्थानीय अदालत से बिना धोखा दिए या अपमानित किए जाने नहीं दिया था, इस समय पास-पास बैठे हुए थे। दोनों ही मोटे और स्वस्थ थे और ऐसा लगता था कि मानो वे अन्याय और झूठ में इतने गर्क हो चुके थे कि उनके चेहरे की चमड़ी तक भी कुछ विचित्र और धूर्त सी दिखाई पड़ने लगी थी। क्लर्क की स्त्री, जो भेंड़ी थी, अपने सब बच्चों को अपने साथ ले आयी थी और तश्तरियों की तरफ शिकारी चिड़िया की तरह तिरछी निगाह से देख रही थी। वह जो कुछ भी उसके हाथ में पड़ जाता था उसे अपनी या अपने बच्चों की जेबों में भर लेती थी।

लीपा पत्थर की मूर्ति की तरह बैठी थी। उसके चेहरे पर गिरजे जैसी ही स्तब्धता का भाव था। उससे परिचय होने के बाद एनीसिम उससे एक शब्द भी नहीं बोला था जिससे अभी तक उसे उसकी आवाज का भी पता नहीं चल पाया था, और अब उसके बगल में बैठा हुआ वह बुत की तरह

खामोश बना रहा और बराबर तीखी शराब पीता रहा; और जब उसे नशा हो आया तो सामने बैठी हुई अपनी चाची से बातें करने लगा।

"मेरा सामोरोदोव नामक एक दोस्त है। अजीब सा आदमी है। पद के हिसाब से वह एक सम्मानित नागरिक है और बातें भी खूब अच्छी तरह करता है। मगर मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूँ, चाची और वह भी इस बात को समझता है। कृपया मेरे साथ सामोरोदोव का स्वास्थ्य-पान करो, चाची !"

"वारवारा थकी हुई और परेशान, मेहमानों से खाने का आग्रह करती हुई मेज के चारों तरफ घूम रही थी और इस बात से बहुत खुश थी कि वहाँ खाने की इतनी तरह की चीजें थीं जो बहुत ज्यादा थीं—अब कोई उनकी उपेक्षा नहीं कर सकता था। दिन छिप गया मगर खाना चलता रहा। मेहमानों को इस बात का भी होश नहीं रहा था कि वे लोग क्या खा रहे हैं या क्या पी रहे हैं। जो कुछ कहा जाता था उसे समझना असम्भव था और सिर्फ उसी समय जब बैन्ड का बजना बन्द हो जाता था किसी किसान औरत की यह आवाज सुनाई पड़ती थी।

"इन लोगों ने हमारा खून चूस लिया है, जोंक कहीं के। इन्हें महामारी खा जाय।"

शाम को वे लोग बैन्ड के साथ नाचने लगे। छोटे ह्रीमिन अपनी शराब लिए हुए आए और उनमें से एक नाचते समय दोनों हाथों में एक-एक बोतल और मुँह में शराब का गिलास पकड़े हुए नाचने लगा जिसे देख कर सब हँस उठे। नृत्य के बीच में उन्होंने एकाएक अपने घुटने झुका लिए और झुकी हुई स्थिति में नाचते रहे। एकसिन्या अपनी पोशाक से हवा उड़ाती हुई बिजली की चमक की तरह उड़ती फिर रही थी। किसी ने उसकी झालर पर पैर रख दिया और 'वैशाखी' चीख उठा।

"ए, उन्होंने गोट को उखाड़ डाला है ! बच्चो !"

एकसिन्या की आँखें भूरी और सरल थीं जो कभी ही झपकती थीं। उसके चेहरे पर हमेशा एक सरल मुस्कान खेलती रहती थी। उसकी उन

स्थिर दृष्टि से देखने वाली आँखों, लम्बी गर्दन पर छोटे से सिर, और उसके दुबलेपन में कुछ साँप का जैसा भाव था। ऊपर से नीचे तक हरी, मगर छाती पर पीली पोशाक पहने हुए वह अपने चेहरे पर खेलती हुई मुस्कराहट के साथ एक ऐसे बिषैले साँप की तरह दिखाई पड़ रही थी जो राई के नए पौधे पर छिपा हुआ, वसन्त के मौसम में बगल में से गुजरने वाले राहगीरों की तरफ अपना फन उठाकर देखता है। ह्रीमिन परिवार के पुरुषों का व्यवहार उसके साथ स्वच्छन्द था और यह बात गौर करने काबिल थी कि वह उनमें से सबसे बड़े के साथ बहुत घुली-मिली रहती थी। मगर उसके बहिरे पति ने कुछ भी नहीं देखा। उसने उसकी तरफ देखा तक नहीं वह पैर-पर-पैर रखे बैठा अखरोट तोड़-तोड़ कर खाता रहा। वह उन्हें इतनी जोर से तोड़ता था कि पिस्तौल के चलने की सी आवाज आती थी।

मगर, देखिए, बुड्ढा सिबुकिन खुद कमरे के बीच में आया और यह इशारा करते हुए अपना रूमाल हिलाने लगा कि वह भी रूसी नृत्य करना चाहता है। यह देख कर सारे घर भर में और अहाते में जमा हुई भीड़ में एक स्वीकृति सूचक कोलाहल उठ खड़ा हुआ।

"वह नाचेगा! वह खुद नाचेगा!"

वारवारा ने नृत्य किया मगर वह बुड्ढा सिर्फ अपना रूमाल हिलाता रहा और ऐड़ियाँ बजाता रहा। अहाते में खड़े हुए लोग, एक दूसरे को धक्के देते हुए खिड़की में से झाँकने लगे। वे सब बहुत खुश थे और क्षण भर के लिए उन्होंने उसके सारे अपराधों को क्षमा कर दिया—उसकी दौलत और उसके द्वारा किए गए सम्पूर्ण अपराधों को क्षमा कर दिया।

"बहुत खूब, ग्रिगोरी पेत्रोविच!" भीड़ में से आवाजें आईं। "ठीक है, खूब अच्छी तरह से नाचो! तुम अब भी नाच सकते हो! हा हा!"

यह नृत्य बहुत देर तक, सुबह के दो बजे तक, चलता रहा। एनीसिम लड़खड़ाता हुआ गाने वालों और बैन्ड वालों से विदा माँगने गया और प्रत्येक को एक-एक नया आधे रूबल वाला सिक्का दिया। उसके पिता ने, जो

लड़खड़ा तो नहीं रहा था मगर अब भी एक पैर पर खड़ा हुआ लग रहा था, अपने मेहमानों को विदा किया और हरेक से कहा :

"शादी मैं दो हजार का खर्च हुआ है।"

जब पार्टी बिखर रही थी तब किसी ने अपने पुराने कोट की जगह सराय वाले शिकालोवो का अच्छा कोट उठा लिया । यह देख कर एनीसिम एकाएक गुस्से से भर उठा और चीखने लगा।

"ठहरो, मैं अभी पता लगाए लेता हूँ। मैं जानता हूँ कि किसने चुराया है, ठहरो !"

"वह सड़क पर दौड़ा गया और किसी का पीछा करने लगा। उसे पकड़ लिया गया, वापस घर में लाया गया और गुस्से से लाल और नशे की हालत में धकेल कर भीगे कपड़ों में ही, उस कमरे में बन्द कर दिया गया जिसमैं चाची लीपा की पोशाक बदलवा रही थी।

४

पाँच दिन बीत चुके थे। एनीसिम जाने की तैयारी कर रहा था, वह वारवारा से विदा माँगने ऊपर गया। पवित्र मूर्त्तियों के सम्मुख अनेक बत्तियाँ जल रही थीं, सारे कमरे में धूप की सुगन्धः भर रही थी। वारवारा खिड़की पर बैठी लाल ऊन का मोजा बुन रही थी।

"तुम हमारे साथ ज्यादा नहीं ठहरे," वह बोली, "मेरा ख्याल है कि यहाँ तुम्हारा मन नहीं लगा। औह तत्-तत्...हम लोग आराम से रहते हैं। हमारे पास सब चीजें काफी तादाद में हैं। हमने तुम्हारी शादी नियमानुसार और अच्छी तरह से कर दी है। तुम्हारे पिता कहतेहैं कि दो हजार खर्च हुए हैं। सचमुच हम लोग व्यापारियों की तरह रहते हैं मगर फिर भी थोड़ी सी नीरसता अवश्य है। हम लोग जनता के साथ बहुत बुरा व्यवहार करते हैं। इस बात से मैं बड़ी दु:खी होती हूँ। हम उनके साथ कैसा बुरा व्यवहार करते हैं, हे भगवान् ! चाहे हम कोई घोड़ा बदलें या कोई चीज खरीदें या किसा मजदूर से काम करायें—हर चीज में बेईमानी करते हैं । सिर्फ धोखेबाजी

और कुछ नहीं। 'लेन्टन' के त्यौहार के समय जलने वाला, दूकान में बिकने वाला तेल कड़वा और बदबूदार है। लोगों को मिलने वाली राल तब भी कुछ अच्छी है। मगर, यह बताओ कि क्या हम अच्छा तेल नहीं वेच सकते ?"

"हर आदमी अपना काम जानता है, माँ।"

'मगर तुम जानते हो कि हम सब को मरना है ? ओ, ओ, सचमुच तुम्हें अपने पिता से बातें करनी चाहिए...!"

"क्यों, तुम्हें उन से खुद बातें करनी चाहिए।"

"अच्छा, अच्छा, मैंने उन से कहा था मगर उन्होंने भी वही कहा जो तुम कहते हो। 'हर आदमी अपना काम जानता है।' तुम कल्पना कर सकते हो कि उस लोक में वे लोग इस बात का ख्याल करेंगे कि तुम्हें क्या काम करने को दिया गया था ? भगवान् का न्याय निष्पक्ष होता है।"

"ठीक है, कोई भी ख्याल नहीं करेगा" एनीसिम ने कहा और एक गहरी साँस ली। "कुछ भी हो, माँ, तुम जानती हो कि भगवान नहीं है इसलिए वहाँ ख्याल ही क्या किया जायगा ?"

वारवारा ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा, खिलखिला कर हँसी और तालियाँ बजाने लगी। शायद इसलिए कि वह उसके शब्दों से सचमुच आश्चर्य चकित हो उठी थी। इसलिए उसकी तरफ इस तरह देखने लगी मानो वह एक अजीव आदमी हो। एनीसिम परेशान हो उठा।

"शायद भगवान् हो, मगर सिर्फ उसमें विश्वास नहीं रहा है। जब मेरी शादी हो रही थी तो मुझे अपना होश भी नहीं था। ठीक उसी तरह जिस तरह तुम किसी मुर्गी के नीचे से एक अन्डा उठालो और उसमें एक बच्चा चहचहाता होता है, इसी तरह मेरी आत्मा मेरे भीतर कुड़कुड़ाने लगी थी और जब मेरी शादी हो रही थी तब मैं पूरे समय सोचता रहा था कि भगवान है ! मगर जब मैं गिरजे से बाहर निकला तो कुछ भी नहीं था। और सचमुच, मैं कैसे बता सकता हूँ कि भगवान है या नहीं ? हमें बचपन से ही नहीं सिखाया गया और जब बच्चा माँ का दूध पीता होता है तभी से उसे सिर्फ यही सिखाया जाता है कि 'हर आदमी को अपना काम

करना चाहिए।' पिताजी भी भगवान में विश्वास नहीं करते तुम कह रही थीं कि गुन्तरोव की कुछ भेड़ें चोरी चली गई थीं।···मैंने उनका पता लगा लिया है। शिकालोवो के एक किसान ने उन्हें चुरा लिया था। उसने तो तो उन्हें चुराया था मगर पिताजी को उनकी ऊन मिल गई।···इसलिए उनका विश्वास यहीं तक सीमित है।"

एनीसिम ने आँखें मिचकाईं और सिर हिलाया।

"मुखिया भी भगवान में विश्वास नहीं करता," वह कहने लगा, "और क्लर्क और पादरी भी नहीं करते। और जहाँ तक उनके गिरजा जाने और व्रत रखने का सवाल है, वह सिर्फ इसलिए कि लोग उनके विषय में बुरी बातें न करें और इसलिए भी कि शायद यह बात सच हो कि 'न्याय का दिन' आयेगा। आजकल लोग यह कहते हैं कि दुनियाँ का अन्त आ गया है क्योंकि मनुष्य कमजोर हो गए हैं, अपने माँ-बाप की इज्जत नहीं करते, आदि। ये सब वाहियात बातें हैं। माँ, मेरा विचार यह है कि यह सब मुसीबत इस वजह से है कि आदमियों की आत्मा बहुत कमजोर हो गई है। मैं चीजों को भली प्रकार देखता हूँ माँ, और उनकी असलियत समझ लेता हूँ। अगर एक आदमी चोरी की कमीज पहने हुए है तो मैं भाँप जाता हूँ। एक आदमी सराय में बैठा हुआ है और तुम सोचती हो कि वह सिर्फ चाय पी रहा है मगर मेरे लिए चाय न तो यहाँ है और न वहाँ। मैं और आगे देखता हूँ, उसके आत्मा नहीं है। तुम दिन भर भटकने के बाद एक भी आदमी ऐसा नहीं पाओगी जिसमें आत्मा हो। और सारी वजह यह है कि वे लोग यह नहीं जानते कि भगवान है या नहीं।...अच्छा, विदा, माँ, अच्छी तरह रहना, मेरे विषय में बुरी बातें मत सोचना।"

एनीसिम वारवारा के चरणों में झुका।

"मैं तुम्हें सारी बातों के लिए धन्यवाद देता हूँ, माँ" उसने कहा। "तुम हमारे परिवार के लिए बहुत बड़ी नियामत हो। तुम बिल्कुल संभ्रान्त महिला के समान हो मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"

अत्यधिक उद्वेलित होकर एनीसिम बाहर निकला मगर फिर लौट आया और बोला :

"समोरोदोव ने मुझे एक मामले में फँसा दिया है : या तो मेरा भाग्य चेत जायगा या मैं बर्बाद हो जाऊँगा। अगर कोई बात होती है तो तुम पिताजी को सान्त्वना देना, माँ।"

"ओह वाहियात, तुम परवाह मत करो, तत् तत्, तत्...भगवान दयालु है। एनीसिम, तुम्हें अपनी पत्नी से प्रेम का व्यवहार करना चाहिए न कि इस तरह कि तुम दोनों एक दूसरे की तरफ बुझी-बुझी निगाहों से देखते हो। तुम्हें कम से कम मुस्कराना तो चाहिये।"

"हाँ, वह बड़ी विचित्र है," एनीसिम बोला और गहरी साँस ली। "वह कुछ भी नहीं समझती। कभी बात नहीं करती। वह अभी छोटी है, उसे जरा बड़ी होने दो।"

एक ऊँचा चमकीला सफेद घोड़ा गाड़ी में जुता हुआ पहले से ही दरवाजे पर खड़ा था।

बुड्ढा सिबुकिन घूमने के लिए दौड़ता हुआ गाड़ी पर आ बैठा और रासें पकड़ लीं। एनीसिम ने वारवारा को, एकसिन्या को और अपने भाई को चूमा। सीढ़ियों पर लीपा भी खड़ी हुई थी। वह चुपचाप स्थिर खड़ी हुई थी और दूसरी तरफ देख रही थी। और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह उसे विदा करने नहीं आई थी बल्कि वैसे ही किसी अज्ञात कारण वश वहाँ आ खड़ी हुई थी। एनीसिम उसके पास गया और अपने होठों से सिर्फ उसके गालों का स्पर्श किया।

"विदा।"

बिना उसकी तरफ देखे वह अजीब तरह से मुस्कुरा उठी। उसका चेहरा काँपने लगा और प्रत्येक व्यक्ति किसी कारण वश उसके लिये दुखी हो उठा। एनीसिम भी उछल कर गाड़ी पर चढ़ गया और खुशी के मारे कमर पर हाथ रख कर खड़ा हो गया क्योंकि वह अपने को सुन्दर समझता था।

जब वे लोग घाटी से बाहर आए एनीसिम बराबर पीछे गाँव की

तरफ देखता रहा। दिन सुन्दर और अच्छा था। पहली बार आज जानवरों को चरने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था, किसान लड़कियाँ और औरतें सुन्दर पोशाकें पहने जानवरों के साथ चल रहीं थी। साँवले रङ्ग का बैल, स्वतन्त्र होने की खुशी में रँभा उठा और अपने अगले खुरों से जमीन को खुरचने लगा। चारों तरफ ऊपर और नीचे सारिकाएं (मैना) गा रही थी और उसे याद आया कि किस तरह पांच दिन पहले वह वहाँ प्रार्थना कर रहा था। छोटी नदी के किनारे, जिसमें वह कभी नहाया और मछली पकड़ा करता था, बने हुए हरी छत वाले स्कूल की तरफ उसने देखा और उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा और उसने चाहा कि दीवालें जमीन से ऊपर उठकर उसे आगे जाने से रोक लें और उसके जीवन में केवल उसका वही विगत रह जाय।

स्टेशन पर वे लोग जलपान—गृह में गए और-एक एक गिलास शेरी (शराब) का पीया। उसके पिता ने बिल चुकाने के लिए जेब में हाथ डाला।

"मैं चुका दूँगा," एनीसिम ने कहा। बुड्ढे ने प्रभावित और प्रसन्न होकर उसके कन्धे को थपथपाया और बैरे को तरफ आँख मारी, मानो कह रहा हो, देखो. मेरा बेटा कितना अच्छा है।"

"तुम्हें घर पर ही रहकर कारबार की देखभाल करनी चाहिए, एनीसिम" उसने कहा "मेरे लिए तुम्हारी बहुत बड़ी कीमत है। मैं तुम्हें सिर से पैर तक सोने से ढक दूँगा, मेरे बेटे।"

शराब खट्टी थी और उसमें से चपड़े की सी गन्ध आ रही थी मगर उन्होंने एक-एक गिलास और पिया।

जब बुड्ढा सेबुकिन स्टेशन से घर वापस आया तो क्षण भर तो वह अपनी नौजवान पुत्रबधू को पहचान नहीं सका। जैसे ही उसका पति अहाते से बाहर निकला था लीपा बदल गई थी और खुश हो उठी थी। एक पुराना सूती पेटीकोट पहने, नंगे पैर और आस्तीनों को ऊपर कन्धों तक चढ़ाए वह दरवाजे के सामने सीढ़ियों को रगड़-रगड़ कर धो रही थी और सुरीली पतली आवाज में गाती जा रही थी। जब वह गन्दे पानी का एक बड़ा टब लाई

और अपनी बच्चों की सी मुस्कुराहट के साथ ऊपर सूरज की तरफ देखा तो ऐसा लगा कि जैसे वह भी एक मैना हो।

एक बुड्ढे मजदूर ने जो दरवाजे के सामने होकर गुजर रहा था, अपना सिर हिलाया और गला साफ किया।

"सचमुच, ग्रिगोरी पेत्रोविच तुम्हारी बहुएँ ईश्वर की नियामत हैं" उसने कहा। "औरतें नहीं बल्कि खजाने हैं।"

५

शुक्रवार ८ जुलाई को एलीजारोव उर्फ 'वैशाखी' और लापा काजान्स्कोय नामक गाँव से वापस आ रहे थे। वहाँ वे गिरजे की छुट्टियों में 'काजान की पवित्र माता' के सम्मान में की गई प्रार्थना सभा में शामिल होने गए थे। उन से काफी पीछे लीपा की माँ प्रास्कोव्या चली आ रही थी जो हमेशा पीछे रह जाती थी क्योंकि वह बीमार थी और उसे दमे की शिकायत थी। शाम होने वाली थी।

"आ···आ···आ···" लीपा की बातें सुन कर ताज्जुब करते हुए 'वैसाखी' ने कहा। "आँ-आ !···!"

"मुझे मुरब्बा बहुत अच्छा लगता है, इलिया माकारित्श," लीपा ने कहा। "मैं अपने छोटे से कोने में बैठ जाती हूँ और चाय पीती और मुरब्बा खाती रहती हूँ या मैं वारवारा निकोलाएव्ना के साथ पीती हूँ और वह भावुकतापूर्ण कहानी सुनाया करती है। हमारे यहाँ ढेर सारा मुरब्बा है—चार अमृतवान भरे रखे हैं। 'लीपा थोड़ा सा लो; जितना चाहो उतना खाओ।"

"आँ-आ-आ, चार अमृतबान !"

"वे लोग बहुत शान से रहते हैं। हमें चाय के साथ सफेद रोटी मिलती है और गोश्त भी सब को पेट भर मिलता है। वे बहुत अच्छी तरह रहते हैं; सिर्फ मुझे उन से डर लगता है, इलिया माकारित्श। ओह, ओह, मैं उनसे कितनी डरती हूँ !"

"तुम क्यों डरती हो, बच्ची ?" 'वैशाखी' ने पूछा और पीछे मुड़ कर देखा कि प्रास्कोव्या कितनी दूर रह गई है।

"पहली बात तो यह कि जब शादी हुई थी मैं एनीसिम ग्रिगोरिच से डरती थी। एनीसिम ग्रिगोरिच ने कुछ भी नहीं किया था। उसने मेरे साथ बुरा बर्ताव नहीं किया था। मगर जब वह मेरे पास आता है तो मेरे सारे शरीर में सिहरन सी दौड़ जाती है। मैं एक रात सो नहीं सकी। बराबर काँपती और भगवान से प्रार्थना करती रही। और अब मुझे एकसिन्या से डर लगता है, इलिया माकारित्श। इस वजह से नहीं कि वह कुछ करती है; वह हमेशा हँसती रहती है, मगर कभी-कभी वह खिड़की की तरफ देखती है और उसकी आँखें इतनी भयानक हैं, उन में एक हरी चमक है—सायबान में बंधी हुई भेड़ों की आँखों की तरह। छोटे हीमिन उसे गुमराह कर रहे हैं। 'तुम्हारे बुड्ढे,' वे लोग उससे कहते हैं, 'के पास बुत्योकिनो में जमीन का एक टुकड़ा है, एक सौ-बीस एकड़' वे कहते हैं, 'वहाँ एक ईंटों का भट्टा लगा लो और हम उसमें हिस्सा ले लेंगे।' ईंटें आजकल बीस रूबल की एक हजार मिलती हैं, यह बड़ा फायदेमन्द व्यापार है। कल ब्यालू के समय एकसिन्या ने मेरे ससुर से कहा: 'मैं बुत्योकिनो में एक ईंटों का भट्टा खोलना चाहती हूँ। मैं यह व्यापार अपने निजी पैसे से करूँगी।' यह कहते समय वह हँसी थी। और ग्रिगोरी पेत्रोविच का चेहरा काला पड़ गया था। यह साफ था कि उसे यह बात पसन्द नहीं आई थी। 'जब तक मैं जीवित हूँ' वह बोला, 'परिवार टूटना नहीं चाहिए, हम सबको एक साथ रहना होगा।' एकसिन्या ने घूर कर देखा और दाँत पीसे।···टिकियायें परोसी गईं मगर उसने नहीं खाईं।"

"आँ–आ–आ !..." वैशाखी को आश्चर्य हुआ।

"मुझे इस बात का ही पता नहीं चलता कि वह सोती कब है ?" लीपा ने कहा। "वह आधा घन्टा सोती है, फिर उछल कर खड़ी हो जाती है और चारों तरफ यह देखती हुई घूमती रहती है कि कहीं किसानों ने किसी चीज में आग न लगादी हो, कोई चीज चुरा न ली हो।···मुझे उसके साथ

डर लगता है, इलिया माकारित्श । और छोटे हीमिन शादी के बाद सोने के लिये नहीं गए बल्कि एक दूसरे से मुकद्दमा लड़ने के लिये शहर चल दिये । लोग कहते हैं कि यह सब एकसिन्या की वजह से हो रहा है । दो भाइयों ने उसे ईंटों का भट्टा खुलवा देने का वायदा किया है मगर तीसरा बिगड़ उठा है, फैक्टरी एक महीने से बन्द है । इसलिए मेरा चाचा प्रोहोर बेकार हो गया है और घर-घर से टुकड़े माँगता फिरता है । तब तक अच्छा हो कि तुम खेतों पर काम करो या लकड़ी चीरो, चाचा ?' मैं उससे कहती हूँ, 'अपना अपमान क्यों कराते हो ?' 'मैं उसका आदी नहीं रहा हूँ,' वह कहता है, 'मुझ से अब किसानी का काम करना नहीं आता, लिपिन्का ।....,''

वे एक नये जंगल के पास आराम करने और ग्रास्कोव्या का इन्तजार करने के लिए रुक गए। एलिजारोव बहुत दिनों से एक छोटे-मोटे ठेकेदार का सा काम करता आ रहा था, मगर घोड़े नहीं रखता था बल्कि सारे जिले में, हाथ में एक झोला लटकाये सिर्फ जिसमें रोटी और प्याज रखी रहती थी, पैदल ही लम्बी-लम्बी डगें रखता और हाथ हिलाता हुआ, चक्कर लगाया करता था । उसके साथ चलने में बड़ी कठिनाई होती थी ।

जङ्गल में घुसने के स्थान पर एक मील का पत्थर गढ़ा हुआ था । एलियारोव ने उसे छुआ और पढ़ा । ग्रास्कोव्या हाँफती हुई उसके पास आ पहुँची । उसका झुर्रियोंदार और हमेशा भयभीत-सा रहने वाला चेहरा खुशी से चमक रहा था । वह दूसरों की तरह आज गिरजा गई थी, फिर मेले गई थी और वहाँ उसने सेव की बनी हुई शराब पी थी । उसके लिए यह अनहोनी बात थी और इस समय उसे यहाँ तक महसूस हो रहा था कि जीवन में आज पहलीवार ही वह अपने आनन्द के लिए जीवित रही थी । सुस्ताने के बाद तीनों साथ-साथ चलने लगे । सूरज डूब चुका था और उसकी किरणें जङ्गल में से छन कर पेड़ों के तनों पर रोशनी डालती हुई आ रही थीं । आगे की ओर हल्की सी आवाजें आ रही थीं । उवलीवो की लड़कियाँ बहुत पहले ही आगे चली आई थीं मगर जङ्गल में घूम रही थीं, शायद कुकुरमुत्ते इकट्ठे कर रही हों ।

"ए, सुन्दरियो !" एलिजारोव चिल्लाया। 'ए, मेरी सुन्दरियो !'

उत्तर में हँसी की एक आवाज आई।

"वैशाखी आ रहा है ! वैशाखी ! बुड्ढी मछली !'

और उनकी प्रतिध्वनि भी हँस उठी। फिर जङ्गल पीछे रह गया। फैक्टरी की चिमनियों के ऊपरी हिस्से दिखाई पड़ने लगे। गिरजे पर लगा हुआ सलीब चमकने लगा। गाँव आ गया था : "वही जहाँ मृतक-भोज के समय पादरी सारी सब्जी खा गया था।" अब वे लगभग घर पहुँच चुके थे। उन्हें सिर्फ बड़े दर्रे में घुसना था। लीपा और प्रास्कोव्या, जो नंगे पैरों चल रही थीं, बूट पहनने के लिए घास पर बैठ गईं। एलिजारोव भी उनके साथ बैठ गया। अगर वे ऊपर से नीचे की तरफ देखते तो उक्लीवो अपने 'विलो' के पेड़ों, सफेद गिरजे और उसकी छोटी सी नदी के कारण बहुत सुन्दर और शान्तिपूर्ण दिखाई पड़ता। इस सम्पूर्ण दृश्य में केवल एक ही धब्बा था—फैक्टरी की चिमनियाँ जिन पर सस्ते के ख्याल से हल्का काला रङ्ग कर दिया गया था। आगे दूर, ढाल पर राई दिखाई पड़ रही थी—कुछ गड्ढों और ढेरों में, कुछ इस तरह मानो तूफान ने छितरा दी हों और कुछ ताजी कटी हुई खेतों में पड़ी हुई थी। जौ के खेत भी पक गए थे और इस समय सूरज की रोशनी में मोतियों की तरह चमक रहे थे। यह कटाई के दिन थे। आज छुट्टी थी, कल वे लोग राई काटेंगे और घर उठा ले जायेंगे और फिर इतवार की छुट्टी है। हर रोज दूर बिजली की कड़कड़ाहट सुनाई पड़ती थी। धुन्ध छा रही थी और पानी पड़ने के से आसार हो रहे थे। इस समय खेतों की तरफ देख कर हरेक सोच रहा था कि भगवान करे कि हम समय पर कटाई पूरी करलें। प्रत्येक प्रसन्न था और हृदय में आशंका का अनुभव कर रहा था।

"खेत काटने वाले आजकल बड़ी ऊँची मजदूरी माँगते हैं," प्रास्कोव्या बोली। "एक रूबल और चालीस कोपेक रोजाना के हिसाब से।"

लोगबागों का काजान्स्कोय के मेले से लौटना बराबर जारी रहा। किसान औरतें, नई टोपियाँ पहने फैक्टरी के मजदूर, भिखारी, बच्चे सभी,

...धूल उड़ाती हुई एक गाड़ी निकाल जाती जिसके पीछे बिना बिका हुआ घोड़ा दौड़ता चला जाता और वह इस बात से खुश सा नजर आता था कि वह बिका नहीं। फिर एक गाय आती जिसे सींगों से पकड़ कर ले जाया जा रहा था और जो बुरी तरह छूटने की कोशिश कर रही थी। उसके बाद फिर एक गाड़ी आई जिसमें नशे में धुत और पैर हिलाते हुए किसान बैठे थे। एक बुढ़िया एक छोटे से बच्चे को लिये हुए आई जो बड़ी टोपी और लम्बे-चौड़े बूट पहने हुए था। बच्चा गर्मी से और इन बूटों की वजह से, जो उसके घुटनों को मुड़ने से रोक रहे थे, थक गया था मगर फिर भी अपनी पूरी ताकत से एक टीन की तुरही को बजाता चला जा रहा था। वे लोग ढाल पर से उतर गए थे और सड़क की तरफ मुड़े थे,—मगर तुरही की आवाज अब भी सुनाई पड़ रही थी ।

"हमारी फैक्टरीके मालिकों का मिज़ाज आजकल ठीक नहीं नज़र आ रहा..." एलजारोब बोला। "मुसीबत उठ खड़ी हुई है । कोस्तुकोव मुझसे नाराज़ है। 'कोरनिस में बहुत ज्यादा तख्ते लगा दिये गए हैं। तुम मुझसे इस तरह की बातें करने की हिम्मत कैसे कर रहे हो ?' उसने कहा 'हरामी, मूर्ख ! अपने को मत भूलो ! मैंने ही तुम्हें ठेकेदार बनाया था। तुम बदमाश हो।' मैं कुछ भी नहीं बोला। 'हम लोग इस दुनियाँ में बदमाश हैं,' मैंने सोचा, 'और तुम दूसरी दुनियाँ में बदमाश बनोगे...' हा—हा—हा ! दूसरे दिन उसके बर्ताव में नरमी थी। 'मेरे बातों का बुरा मत मानना, माकारित्श,' उसने कहा : 'अगर मैं कुछ ज्यादती भी कर गया,' वह कहता है, 'तो उससे क्या हुआ ? मैं पहले दर्जे का व्यापारी हूँ, तुमसे बड़ा-तुम्हें अपनी जवान पर काबू रखना चाहिये।' 'तुम, मैंने कहा, 'पहले दर्जे के व्यापारी हो और मैं एक बढ़ई हूँ, यह ठीक है। और सन्त जोजफ भी एक बढ़ई था। हमारा पेशा ईमानदारी का और भगवान को खुश करने वाला है और अगर तुम्हें हमसे बड़ा बनने में आनन्द मिलता है तो तुम्हारा स्वागत है, वासिली दानीलिच।' और बाद में, मेरा मतलब है कि इस बातचीत के बाद, मैंने सोचा: 'बड़ा कौन

था ? पहले दर्जे का व्यापारी या एक बढ़ई ?' बढ़ई को ही बड़ा होना चाहिए, मेरी बच्ची।"

वैशाखी ने एक मिनट सोचा और आगे बोला:

"हाँ, यही बात है, बच्ची। वह जो मेहनत करता है, वह जो धैर्यवान है, बड़ा है।"

इस समय तक सूरज पूरी तरह डूब चुका था और नदी के ऊपर, गिरजे के अहाते में और फैक्टरियों के चारों तरफ खुली हुई जगहों में दूध की तरह सफेद गहरी धुन्ध छाती जा रही थी। अब जब कि अंधेरा तेजी से बढ़ता आ रहा था, जब नीचे रोशनियाँ चमक रही थीं और ऐसा लग रहा था कि यह धुन्ध एक अथाह गहराई में छिपी हुई थी। लीपा और उसकी माँ ने, जो गरीबी में पैदा हुईं थीं और अन्त तक अपनी भयभीत सरल आत्माओं के अतिरिक्त दूसरों को सब कुछ देती हुई, उसी में रहने को तैयार थीं, क्षण भर के लिए सोचा होगा कि शायद इस विस्तृत रहस्यपूर्ण संसार में, जीवन की अनन्त धारा में, उनका भी कुछ मूल्य है और वे भी किसी से ऊँची हैं। उन्हें यहाँ ऊँचाई पर बैठना अच्छा लगा। वे प्रसन्नता के साथ मुस्कराईं और इस बात को भूल गईं कि अन्त में उन्हें वहीं नीचे जाना है।

अन्ततः उन्हें घर जाना ही पड़ा। खेत काटने वाले मजदूर दूकान के पास फाटक के सामने जमीन पर बैठे हुए थे। नियमानुसार उक्लीवो के किसान सिबुकिन के यहाँ काम करने नहीं जाया करते थे। इसलिएउन्हें अजनबियों को मजदूरी पर रखना पड़ता था औरइससमय अंधेरे में ऐसा लग रहा था जैसे वहां लम्बी-लम्बी काली दाढ़ियों वाले लोग बैठे हुए थे। दूकान खुली हुई थी और दरवाजे में से वह बहरा आदमी एक लड़के के साथ गोटियों का खेल खेलते हुए दिखाई दे रहा था। कटाई करने वाले धीरे-धीरे ऐसे स्वर में गा रहे थे जो मुश्किल से सुनाई पड़ता था या जोर-जोर से पिछले दिन की मजदूरी मांग रहे थे मगर उन्हें इस डर से मजदूरी नहीं दी जा रही थीं कि कहीं वे कल से पहले ही न चल दें। बुडढा सिबुकिन बिना कोट पहने एक भोजपत्र के पेड़ के नीचे, सिर्फ वास्कट पहने एकसिन्या के साथ बैठा हुआ चाय पी-

रहा था। मेज पर एक लैम्प जल ररा था।

"मैं कहता हूँ, बाबा," एक मजदूर ने फाटक के बाहर से इस तरह पुकारा, मानो व्यंग कस रहा हो, "हमें किसी तरह आधी मजदूरी ही दे दो! ए, बाबा।"

और फौरन ही एक हँसी की आवाज आई और फिर वे लोग मुश्किल से सुनाई पड़ने वाली आवाज में गाने लगे।... 'वैशाखी' भी थोड़ी-सी चाय पीने बैठ गया।

"तुम्हें मालूम है, हम लोग मेले में गए थे," उसने उन्हें बताना प्रारम्भ किया। "हम लोग पैदल चले थे, बहुत अच्छा घूमना रहा, मेरे बच्चो, भगवान के गीत गाओ। मगर एक दुर्घटना घट गई: लुहार सारका ने कुछ तम्बाकू खरीदी और उसके द्वारा दूकानदार को दिया गया आधा रूबल वाला सिक्का जाली निकला"—वैसाखी कहता रहा। वह कानाफूसी की सी आवाज में बातें करना चाह रहा था मगर एक ऐसी घुटी हुई गहरी आवाज में बोल रहा था जिस हरेक सुन सकता था। "वह आधा रूबल खोटा साबित हुआ। उससे पूछा गया कि यह उसे कहाँ से मिला था। 'एनीसिम सिबुकिन ने दिया था,' उसने कहा। जब मैं उसकी शादी में गया था,' उसने बताया। उन्होंने पुलिस-इन्स्पेक्टर को बुलाया, और उस आदमो को पकड़ लिया।...देखो ग्रिगोरी पेत्रोविच, देखना यह कि इससे कोई बात न उठ खड़ी हो, कोई बात मत करना..."

"बा-बा!" उसी आवाज ने फिर फाटक के बाहर से व्यंग के साथ पुकारा, "बा-बा!"

इसके बाद खामोशी छा गई।

"आह, नन्हें बच्चो, नन्हें बच्चो, नन्हें चच्चो"...वैशाखी ने तेजी से दुहराया और उठ खड़ा हुआ। उस पर सुस्ती छा रही थीं। "अच्छा, चाय और चीनी के लिए धन्यवाद, नन्हें बच्चो। सोने का समय हो गया। मैं आजकल सड़े हुए चीड़ के कुन्दे की तरह हो रहा हूँ, मेरी शहतीरें मेरे नीचे लड़खड़ाने लगी हैं। हो-हो-हो! मेरा ख्याल है कि अब तक मुझे मर जाना चाहिए था।"

उसने चाय का एक घूँट गटका। बुड्ढे सिबुकिन ने चाय समाप्त नहीं की बल्कि कुछ देर तक बैठा हुआ सोचता रहा। उसके चेहरे से ऐसा लगता था मानो वह वैशाखी के कदमों की आवाज को जो नीचे सड़क पर दूर सुनाई पड़ रही थी सुन रहा हो।

"मेरा ख्याल है कि लुहार साश्का ने झूठ कहा है," उसके विचारों को भाँपते हुए एक्सिन्या बोली।

वह घर में भीतर गया और कुछ देर बाद एक पार्सल लिए हुए लौटा। उसे खोला। :उसमें रूबल चमक रहे थे—बिल्कुल नये सिक्के। उसने एक उठाया, अपने दांतों से उसे जाँचा, ट्रे पर फेंक दिया; फिर दूसरा फेंका।

"रूबल सचमुच जाली हैं...," उसने एकसिन्या की तरफ परेशानी के साथ देखते हुए कहा। "ये वही हैं जो एनीसिम लाया था—सौगात के तौर पर। इन्हें ले जाओ बेटी," वह फुसफुसाया और उस पार्सल को उसके हाथों में पकड़ा दिया " इन्हें ले जाकर कुए में डाल दो...बर्बाद कर दो! और ख्याल रखना कि इस विषय में बातें न हों। इससे मुसीबत आ सकती है।...समोवार उठा ले जाओ, रोशनी बुझा दो।"

लीपा और उसकी माँ ने गोदाम में बैठे हुए बत्तियों को एक के बाद एक बुझते हुए देखा। सिर्फ ऊपर वारवारा के कमरे में नीली और लाल बत्तियाँ चमक रही थीं और वहाँ से शांति, सन्तोष और सुखद अज्ञानता की भावना नीचे की तरफ बहती सी प्रतीत हो रही थी। प्रास्कोव्या अपनी बेटी की एक अमीर व्यक्ति से शादी कर देने पर भी उस वातावरण की आदी नही बन सकी थी इसलिए जब वह आई तो सहम कर बाहरी कमरे में ही, चेहरे पर एक दीन मुस्कान लिए गुड़ीमुड़ी होकर पड़ रही। उसके लिए वहीं चाय और चीनी भेज दी गई। लीपा भी इसकी आदी नहीं बन सकी थी और जब उसका पति बाहर चला गया तो वह अपने बिस्तर पर नहीं सोई बल्कि कहीं इधर-उधर पड़ रही थी—रसोई में या गोदाम में, वह हर रोज फर्श रगड़ती और कपड़े धोती और वह महसूस करती जैसे उसे दिन भर की

मजदूरी पर रखा गया हो। और अब, प्रार्थना से वापस आने पर, उन्होंने रसोई घर में रसोइये के साथ चाय पी, फिर वे गोदाम में गईं और वहीं जमीन पर दीवाली और स्लेज गाड़ी के बीच में लेट गईं। यहाँ अंधेरा था और गाड़ी के साज की गन्ध आ रही थी। घर की बत्तियाँ बुझ गईं, फिर उन्होंने बहरे आदमी को दूकान बन्द करते और कटाई करने वालों को वहीं अहाते में सोने की तैयारी करते हुए सुना। दूर, छोटे हीमिन के यहाँ वे लोग नाच गाने में मस्त थे।...प्रास्कोव्या और लीपा को नींद आने लगी।

और जब वे किसी के कदमों की आहट से जागी तो चाँदनी खिल रही थी। गोदाम के दरवाजे पर एकसिन्या हाथ में अपना बिस्तर लिए खड़ी थी।

"शायद यहाँ कुछ ठंडक हो," वह बोली। फिर वह भीतर आई और लगभग बीच दरवाजे में लेट गई जिससे कि चाँदनी पूरी तरह उस पर पड़ने लगी।

वह सोई नहीं बल्कि गहरी साँसें लेती रही और गर्मी से करवटें बदलती रही। उसने बिस्तर के सारे कपड़े उतार कर फेंक दिए। उस जादू-भरी चाँदनी में वह कितनी सुन्दर और कितने गर्वीले पशु की तरह दिखाई पड़ रही थी। कुछ समय बीत गया और फिर कदमों की आवाज सुनाई पड़ी। बुड्ढा बाप, ऊपर से नीचे तक सफेद, दरवाजे में आया।

"एकसिन्या," उसने पुकारा, "तुम यहाँ हो।"

"क्यों ?" उसने गुस्से से पूछा।

"मैंने अभी तुमसे उन सिक्कों को कुंए में फेंक देने के लिये कहा था, फेंक दिये न ?"

"अब आगे और क्या, होगा धन को कुंए में फेंक देना ! मैंने वे कटाई वालों को दे दिए।"

"ओह, मेरे भगवान !" भयभीत और स्तम्भित होकर बुड्ढा चीखा। "अहो मेरे भगवान ! शैतान औरत...।"

उसने अपने हाथ फटकारे और बाहर चला गया और जाते हुए कुछ

बड़बड़ाता रहा। कुछ देर बाद एकसिन्या बैठ गई और परेशान होकर गहरी सांसें लेने लगी, फिर उठ खड़ी हुई और अपना बिस्तर समेट कर बाहर चली गई।

"तुमने इस घर में मुझे क्यों ब्याह दिया, माँ ?" लीपा ने कहा।

"हरेक को शादी करनी पड़ती है, बेटी। ऐसा तकदीर में लिखने वाले हम लोग नहीं थे।"

और उस पर एक सान्त्वनाहीन दुख की भावना छा जाने के लिए तैयार थी। मगर उन्हें ऐसा लगा कि कोई ऊपर, स्वर्ग से ऊपर, उस नीलिमा में से, जहाँ से तारे उक्लीवो में होने वाली हर बातों को देख रहे थे, उन पर निगाह रखे हुए हैं। दुष्टता चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, रात फिर भी शान्त और सुन्दर थी और अब भी भगवान की दुनियाँ में सत्य और न्याय है और रहेगा, इसी तरह सुन्दर और शान्त, और दुनियाँ की हर चीज न्याय और सत्य का इन्तजार कर रही है जिस तरह कि यह रात चाँदनी से सुशोभित है।

और दोनों एक दूसरे से सटकर सन्तुष्ट होकर सो गईं।

६

यह खबर पहले ही आ गई थी कि एनीसिम जाली सिक्के बनाने और उन्हें चलाने के जुर्म में जेल में डाल दिया गया था। महीने गुजर गए, आधा साल से ज्यादा बीत गया, लम्बे जाड़े समाप्त हो गए, बसन्त आ गया। घर का और गांव का प्रत्येक व्यक्ति इस बात का आदी बन गया था कि एनीसिम जेल में है। और जब रात को कोई उस दूकान या मकान के सामने होकर गुजरता तो उसे याद आ जाता कि एनीसिम जेल में है। और जब किसी कारण वश गिरजे में घन्टे बजते तो उससे भी उन्हें यह ख्याल हो उठता कि एनीसिम जेल में पड़ा हुआ मुकद्दमे का इन्तजार कर रहा है।

ऐसा लगता था मानो उस मकान पर कोई काली छाया पड़ गई हो। मकान अधिक अन्धकारपूर्ण था, छत ज्यादा गन्दी थी, दूकान का लोहा मढा

हुआ भारी दरवाजा, जिस पर हरा रंग हो रहा था, खरोंचों से भर गया था या जैसा कि वह बहरा कहा करता था, उस पर "कोड़े" फटकारे गए थे। बुड्ढा सिबुकिन भी टूटा और गन्दा दिखाई पड़ता था। उसने बाल और दाढ़ी कटाना छोड़ दिया था जिससे वह झबरीला सा दिखाई पड़ने लगा था। अब वह घूमने के लिये खुशी से उछल कर गाड़ी पर नहीं चढ़ता था और न भिखारियों को देखकर चीखता था—"भगवान देगा!" उसकी शक्ति क्षीण हो गई थी और यह तथ्य उसकी हरेक बात से स्पष्ट हो जाता था। लोग अब उससे कम डरते थे। पुलिस अफसर ने उसके ऊपर दुकान के हिसाब-किताब में जाल साजी करने का इल्जाम लगाया था हालांकि उसे अब भी बंधी हुई रिश्वत मिलती चली जा रही थी। तीन बार उस बुड्ढे को नाजायज शराब बेचने के जुर्म में मुकद्दमा चलाने के लिए शहर बुलाया जा चुका था और वह मुकद्दमा कोई गवाह न मिलने के कारण बराबर मुलतवी हो रहा था। बुड्ढा सिबुकिन परेशानी से मरा जा रहा था।

वह अक्सर अपने बेटे को देखने जाया करता था, किसी को किराये पर बुलाता, किसी दूसरे को प्रार्थना पत्र देता, किसी गिरज में पवित्र पताका चढ़ाता। उसने एनीसिम की जेल के गवर्नर को एक लम्बे चम्मच के साथ चांदी का एक गिलास स्टैन्ड भेंट में दिया था जिस पर खुदा था—

"आत्मा इसकी असली कीमत को जानती है।"

"अब हमारे कामों की देखभाल करने वाला कोई भी नहीं है," वारवारा ने कहा, "तत् तत्...तुम्हें किसी भले आदमी से पूछना चाहिए, वे बड़े अफसरों के लिये लिखेंगे !...कम से कम वे उसे जमानत पर तो छोड़ देंगे ! उस बेचारे को घोंट-घोंट कर क्यों मारा जा रहा है ?"

वारवारा भी दुखी थी मगर पहले से ज्यादा मोटी और गोरी हो गई थी। वह पहले ही की तरह पवित्र मूर्त्तियों के सम्मुख दीपक जलाती थी और इस बात का ध्यान रखती थी कि घर की सब चीजें साफ रहें। वह मेहमानों की मुरब्बा और सेव के पनीर से खातिरदारी करती थी। बहरा और एक-सिन्या दूकान की देखभाल करते थे। एक नया काम शुरू किया जा रहा था

बुत्योकिनो में ईंटों का भट्टा—और एकसिन्या लगभग हर रोज गाड़ी में बैठ कर वहाँ जाया करती थी। वह गाड़ी खुद हाँकती थी और जब रास्ते में जान-पहचान वाले मिल जाते थे तो वह राई में बैठे हुए साँप की तरह अपनी गर्दन बाहर निकालती थी और सरल एव गूढ़ मुस्कुराहट के साथ मुस्करा उठती थी। लीपा अपने बच्चे के साथ खेला करती थी जो 'लेन्ट' त्यौहार से पहले पैदा हुआ था। यह एक नन्ना सा, दुबला-पतला, दीन बच्चा था। यह आश्चर्य की बात थी कि वह रोये और टकटकी बाँध कर देखे और उसे एक इन्सान माना जाय और यहाँ तक कि उसे निकीफोर कहा जाय। वह अपने झूलते हुए पालने में लेटा रहता था। लीपा दरवाजे की तरफ जाती और उसकी तरफ झुक कर कहती :

"नमस्कार निकीफोर एनीसिमिच !"

वह उसकी तरफ दौड़ती और उसे चूम लेती। फिर वह दरवाजे की तरफ जाती, फिर झुकती और कहती :

"नमस्कार, निकीफोर एनिसिमिच !"

वह अपनी नन्हीं लाल टांगों को फटकारता और उसके रोने में बढ़ई एलिजारोव की सी हंसी की आवाज मिल जाती।

आखिरकार मुकद्दमे की तारीख तय हो गई। सिबुकिन पाँच दिन पहले ही चला गया। फिर उन्होंने सुना कि गवाही के लिये बुलाए गए किसानों को भी वहां ले जाया गया है। उनका पुराना नौकर, जिसे हाजिर होने का नोटिस मिला था, भी वहां गया था।

मुकद्मा बृहस्पतिवार को था। मगर इतवार गुजर गया और सिबुकिन अब भी नहीं लौटा था और उसकी कोई खबर भी नहीं आई थी। मंगल की शाम को वारवारा खुली हुई खिड़की पर बैठी अपने पति के आने की बात सुनने का इन्तज़ार कर रही थी। बगल के कमरे में लीपा अपने बच्चे के साथ खेल रही थी। वह उसे अपने हाथों में उछाल रही थी और उत्साह के साथ कह रही थी :

"तुम इतने बड़े हो जाओगे, इतने बड़े। तुम किसान बनोगे हम दोनों साथ-साथ काम करने जाया करेंगे! साथ-साथ काम करने जाया करेंगे!"

"अच्छा, अच्छा," वारवारा ने नाराज होकर कहा। "काम करने जाओ, कैसे विचार हैं, मूर्ख लड़की, वह एक व्यापारी बनेगा...।"

लीपा धीरे-धीरे गाने लगी मगर क्षण भर बाद ही भूल गई और फिर...।

"तुम इतने बड़े हो जाओगे, इतने बड़े। तुम किसान बनोगे, हम साथ-साथ काम करने जाया करेंगे।"

वह फिर वही बातें कहने लगी।

लीपा निकीफोर को गोदी में लिये दरवाजे में चुपचाप आ खड़ी हुई और पूछा:

"मैं इसे इतना प्यार क्यों करती हूँ, मां? मुझे इसके लिये इतना दुख क्यों होता है?" वह कांपती आवाज में कहती रही और उसकी आँखों में आँसू भर आए। "यह कौन है? यह किसको पड़ा है? चिड़िया के एक पंख की तरह हल्का, एक टुकड़े की तरह नन्हा मगर मैं इसे प्यार करती हूँ। मैं इसे एक सच्चा आदमी मान कर प्यार करती हूँ। यह कोई काम नहीं कर सकता, बातें नहीं कर सकता मगर फिर भी इसकी नन्हीं सी आंखों से समझ जाती हूँ कि यह क्या चाहता है।"

वारवारा सुन रही थी। स्टेशन में घूमती हुई शाम की ट्रेन की आवाज उसे सुनाई पड़ी। क्या उसका पति आ गया? लीपा के कहने की तरफ न तो उसने कोई ध्यान ही दिया और न उन बातों को सुना। उसे यह पता ही नहीं चला कि समय कैसे बीत गया, मगर वह ऊपर नीचे तक सिर्फ कांपती रही—भय के कारण नहीं बल्कि चरम उत्सुकता के कारण। उसने किसानों से खचाखच भरी हुई एक गाड़ी की तेज खड़खड़ाहट की आवाज सुनी। यह स्टेशन से लौटते हुए गवाहों की गाड़ी थी। जब गाड़ी दूकान के सामने होकर गुजरी तो वह बुड्ढा नौकर कूदा और अहाते में आया। वारवारा ने सुना कि उससे दुआ-सलाम की गई और किसी ने उससे सवाल पूछे।

"नागरिक अधिकारों और सम्पति की जब्ती," उसने जोर से कहा, "और साइबेरिया में छः वर्ष की कठोर गुलामी।"

उसने एक्सिन्या को दूकान के पिछले दरवाजे से बाहर आते हुए देखा। वह मिट्टी का तेल बेच रही थी। उसके एक हाथ में बोतल और दूसरे हाथ में टीन था और मुँह में कुछ चाँदी के सिक्के भरे हुए थे।

"पिता जी कहाँ हैं?" उसने तुतलाते हुए पूछा।

"स्टेशन पर," मजदूर ने जवाब दिया, "उन्होंने कहा है कि' जब कुछ अंधेरा हो जाएगा, तब मैं आऊँगा।"

और जब सारे घर भर को यह पता चल गया कि एनीसिम को गुलामी की सजा मिली है तो रसोई घर में रसोइया इस तरह गला फाड़ कर रो उठा मानो किसी की मौत का अफसोस मना रहा हो, यह कल्पना करके ऐसे अवसर भी ऐसा ही करना चाहिए:

"अब तुम्हारे चले जाने से हमारी खोज-खबर लेने वाला कोई नहीं रहा, एनीसि मग्रिगोरिच, हमारे फरिश्ते..."

कुत्ते भयभीत होकर भोंकने लगे। वारवारा दौड़कर खिड़की पर आई और व्याकुल होकर इधर-उधर दौड़ती हुई अपनी पूरी ताकत लगा कर रसोइये पर चिल्लाई।

"चुप रहो, स्टेपेनिदा, चुप रहो! भगवान के लिए हमें परेशान मर करो।"

वे समोवार ठीक करना भूल गए, उन्हें किसी भी बात का होश नहीं रहा। सिर्फ लीपा ही यह नहीं समझ सकी कि यह क्या हो रहा हैं। वह अपने बच्चे के साथ खेलती रही।

जब बुड्ढा स्टेशन से घर आया तो किसी ने भी उससे कोई सवाल नहीं पूछा। उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और चुपचाप सारे कमरों में घूमा। उसने खाना भी नहीं खाया।

"कोई भी काम की देखभाल करने वाला नहीं था..." जब वे अकेले रह गए तब वारवारा ने कहना शुरू किया, "मैंने कहा था कि तुम्हें किन्हीं

भले आदमियों से कहना चाहिये था, तुमने समय पर मेरी बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया।...एक प्रार्थना-पत्र भेजने से...."

"मैंने परिस्थिति को समझ लिया था," उसके पति ने हाथ हिलाते हुए कहा, "जब एनीसिम को सजा हो गई तो मैं उसका बचाव करने वाले सज्जन के पास गया। 'अब कोई फायदा नहीं होगा,' वह बोला, 'बहुत देर हो चुकी है,' और एनीसिम ने भी यही बात कही, बहुत देर हो चुकी है। मगर फिर भी जैसे ही मैं अदालत से बाहर आया मैंने एक वकील से बातचीत की और उसे थोड़ा सा पेशगी रुपया भी दे दिया। मैं हफ्ते भर तक इन्तजार करूँगा तब फिर जाऊँगा। भगवान की ऐसी ही मर्जी है।"

बुड्ढा फिर सब कमरों में घूमा और जब वारवारा के पास लौट कर आया तो बोला:—

"मैं बीमार पड़ जाऊँगा। मेरे दिमाग में धुन्ध सी छा रही है। मेरे विचार गड़बड़ा उठे हैं।"

उसने दरवाजा बन्द कर लिया जिससे लीपा न सुन सके और धीरे से कहने लगा।

"मुझे अपने धन के लिए दुःख है। तुम्हें याद है कि शादी से पहले इतवार को एनीसिम मेरे लिए कुछ नए एक—रूबल और आधा-रूबल वाले सिक्के लाया था? उस समय मैंने एक पार्सल उठा कर रख दी थी और बाकी सिक्कों को अपने सिक्कों में मिला लिया था। जब मेरे चाचा दमित्री फिलाइतिच—भगवान उन्हें स्वर्ग का राज्य दे—जीवित थे तब वे बराबर माल खरीदने के लिए मास्को और क्रीमिया जाया करते थे। उनके एक पत्नी थी और यही पत्नी, जब वे माल खरीदने बाहर जाया करते थे, दूसरे लोगों के साथ मजे उड़ाया करती थी। उसके आधा दर्जन बच्चे थे। जब चाचा मजे में आते थे तो हँसते और कहते थे: 'मैं कभी भी नहीं जान सकता,' वे कहा करते थे, 'कि कौन सेरे बच्चे मे हैं और कौन से दूसरे लोगों के हैं।' सचमुच बड़ी सरल प्रकृति थी उनकी इसी तरह अब मैं भी नहीं बता सकता कि कौन से रूबल खरे हैं और कौन से जाली हैं। और मुझे ऐसा लगता है कि सारे-के-सारे जाली हैं।"

"वाहियात, भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

"मैं स्टेशन पर एक टिकट खरीदता हूँ, उस आदमी को तीन रूबल देता हूँ और बराबर सोचता रहता हूँ कि वे जाली हैं। मैं भयभीत हो उठता हूँ। मैं जरूर बीमार पड़ जाऊँगा।"

"इससे इन्कार नहीं किया जा सकता, हम सब भगवान के हाथ में हैं......ओह प्यारे, प्यारे......" वारवारा ने कहा और सिर हिलाया। "तुम्हें इस बारे में सोचना चाहिए, ग्रिगोरी पेत्रोविच, तुम्हें यह मालूम ही नहीं था कि कोई बात हो सकती है। तुम अब जवान नहीं हो। इस बात का ध्यान रखो कि जब तुम मर जाओ तो वे तुम्हारे पोते को कोई नुक्सान न पहुँचा सकें। ओह, मुझे भय है कि वे लोग निकीफोर के साथ अन्याय करेंगे। वह एक तरह से बिना बाप का ही है, उसकी माँ अभी लड़की और बेवकूफ है।...तुम्हें उसके लिए कुछ प्रबन्ध करना चाहिए। बेचारा बच्चा! कम से कम उसे वह जमीन, बुत्योकिनो वाली ही मिल जाय, ग्रिगोरी पेत्रोविच! इस पर जरा सोचो तो सही!" वारवारा उसे उकसाती हुई आगे कहने लगी: "बेचारा सुन्दर बच्चा, उसे देख कर अफसोस होता है! तुम कल जाओ तो वसीयत कर आना, इसमें देर क्यों की जाय?"

"मैं अपने पोते के बारे में भूल गया था," सिबुकिन ने कहा, "मुझे जाकर उसे जरूर देखना चाहिए। तुम कहती हो कि बच्चा ठीक है? अच्छा, उसे बड़ा होने दो, भगवान रक्षा करे।"

उसने दरवाजा खोला और उंगली हिलाकर लीपा की तरफ इशारा किया। वह बच्चे को गोद में लिए उसके पास आई।

"अगर तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो, लीपा, तो माँग लेना," वह बोला, "जो चाहो सो खाओ, हमें तब तक कोई शिकायत नहीं होगी जब तक कि यह तुम्हारे लिए फायदेमन्द साबित होगा।..." उसने बच्चे के ऊपर सलीम का निशान बनाया। "और मेरे पोते की हिफ़ाजत करना। मेरा बेटा चला गया है मगर मेरा पोता रह गया है।"

उसके गालों पर आँसू बहने लगे। उसने एक सिसकारी भरी और चला गया। थोड़ी ही देर बाद वह बिस्तर पर गया और जाग कर बिताई गई सात रातों के बाद गहरी नींद में सो गया।

७

बुड्ढा सिबुकिन कुछ समय के लिए शहर गया। किसी ने एकसिन्या से कहा कि वह वसीयत से सम्बन्धित अदालत में अपनी वसीयत कराने के लिए गया है और बुत्योकिनो को, वह स्थान, जहाँ उसने ईंटों का भट्टा लगाया था, निकोफोर के नाम कर रहा है। उसे इस बात की सूचना सुबह उस समय दी गई जब बुड्ढा सिबुकिन और वारवारा भोजपत्र के पेड़ के नीचे, सीढ़ियों के पास बैठे हुए चाय पी रहे थे। उसने दूकान को आगे और पीछे से बन्द किया, सारी चाबियाँ, जो उसके पास थीं, इकट्ठी कीं और उन्हें अपने ससुर के पैरों के पास फेंक दिया।

"मैं तुम्हारे लिए काम नहीं करूँगी," उसने जोर-जोर से कहना शुरू किया और सिसकने लगी। "ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारी बहू नहीं हूँ, बल्कि एक नौकर हूँ। हरेक मेरा मजाक उड़ा रहा है और कह रहा है 'देखो सिबुकिन को कैसी नौकरानी मिली है।' मैं तुम्हारे पास तनख्वाह मांगने नहीं आई। मैं भिखारिन नहीं हूँ, गुलाम नहीं हूँ मेरे माता और पिता मौजूद हैं।"

उसने अपने आँसू नहीं पोंछे बल्कि आँसू भरी आँखों से, द्वेष और क्रोध से भर कर तिरछी निगाह से टकटकी बाँध कर देखती रही। उसका चेहरा और गर्दन लाल और अकड़ी हुई थी और वह अपनी पूरी ताकत से चिल्ला रही थी।

"मैं गुलाम की तरह काम करते रहने को तैयार नहीं हूँ!" उसने कर आगे कहा, "मैं परेशान हो उठी हूँ। जब काम का मौका आता है, जब रात-रात भर और दिन-दिन भर दूकान पर बैठने का और दौड़-दौड़ कर वोद्का बेचने का मौका आता है तब यह सब मेरे हिस्से में पड़ता है

मगर जब जमीन देने का मौका आता है तब उस कैदी की स्त्री और उसके बच्चे के हिस्से में दिया जाता है। वह यहाँ की मालिकन है और में उसकी नौकरानी हूँ। उस कैदी की स्त्री को सब कुछ दे दो इससे उसका दम घुट जाएगा, मैं अपने घर जा रही हूँ। अपने लिए कोई दूसरा बेवकूफ ढूँढ़ लो, खून चूसने वाले कंजूसो ?"

अपने जीवन में सिबुकिन ने कभी भी बच्चों को न तो डाँटा ही था और न उन्हें सजा दी थी और कभी इस बात को सपने में भी नहीं सोचा था कि उसी के परिवार का कोई व्यक्ति उसके साथ इतनी बदतमीजी से बात कर सकता है, या उसका अपमान कर सकता है। इस कारण वह इस समय बहुत डर गया था। वह दौड़ कर घर के भीतर गया और आल्मारी के पीछे जा छिपा। वारवारा इतनी व्याकुल हो उठी कि उससे अपनी जगह से भी नहीं उठा गया। उसने सिर्फ अपने मुँह के सामने इस तरह हाथ हिलाए मानो मक्खी उड़ा रही हो।

"ओह पवित्र सन्तो ? इसका क्या मतलब है ?" वह भयभीत होकर बड़बड़ाई। तुम क्या चीख रही हो ? ओह, डियर, डियर ?…लोग सुन लेंगे। हुश। ओह, हुश ?"

"उसने बुत्योकिनो को उस कैदी की स्त्री को दे दिया है," एक्सिन्या चीखती रही। 'उसे सब कुछ दे दो, मैं तुमसे कुछ भी नहीं चाहती ! मुझे अकेला छोड़ दो ! तुम सब लोग चोर हो ! मैंने जी भर कर इस बात को देख लिया है, मेरा मन भर चुका है। तुमने आते-जाते लोगों को लूटा है ? तुमने जवान और बुड्ढे सब को समान रूप से लूटा है, डाकुओ ! बिना लाईसन्स के वोद् का कौन बेचता रहा ? और जाली सिक्के ? तुमने जाली सिक्कों से सन्दूक भर लिए हैं और अब मैं किसी मतलब की नहीं रही !"

इस समय तक फाटक पर एक भीड़ जमा हो गई थी और अहाते की तरफ घूर घूर कर देख रही थी।

"लोगों को देखने दो," एक्सिन्या चीखी। "मैं तुम सब के मुँह पर कालिख लगाऊंगी ! तुम शर्म से मरने लगोगे ! मेरे पैरों पर सिर पटकोगे।

ए स्टेपन," उसने बहरे को आवाज दी,"चलो, इसी समय अपने घर चलो! चलो, मेरे माँ-बाप के घर चलो। मैं कैदियों के साथ रहना नहीं चाहती। तैयार हो जाओ!"

अहाते में बंधी हुई रस्सी पर कपड़े लटक रहे थे उसने अपने भीगे पेटीकोट और ब्लाउज उस पर से खींच लिए और बहरे आदमी की गोद में फेंक दिए फिर गुस्से में अहाते में दौड़ती हुई सूती कपड़ों के पास पहुँची और सारे फाड़ डाले। जो कपड़े उसके नहीं थे उन्हें जमीन पर पटक दिया और पैरों से कुचल डाला।

"पवित्र सन्तो? उसे यहाँ से हटाओ," बारवारा कराही। "कैसी औरत है! उसे बुत्योकिनो दे दो! भगवान के लिए उसे दे दो!"

"देखो? कैसी औरत है?" लोग फाटक पर कह रहे थे। "यह औरत है? वह वही दिखाने जा रही है!" एक्सिन्या रसोई घर की तरफ दौड़ी जहाँ कपड़े धोए जा रहे थे। लीपा अकेली धो रही थी, रसोइया नदी पर कपड़े सिझाने चला गया था। नाद में से और स्टोव के बगल में रखे हुए बड़े बर्त्तन में से भाप उठ रही थीं और रसोईघर भाप से घुट रहा था। फर्श पर बिना धुले कपड़ों का ढेर लगा हुआ था। निकीफोर को जो अपनी नन्हीं-नन्हीं लाल टांगें फेंक रहा था, उनके पास ही एक बेंच पर लिटा दिया गया था जिससे अगर वह गिरे तो उसके चोट न लगे। जैसे ही एक्सिन्या भीतर घुसी लीपा ने ढेर में से एक्सिन्या का एक शेमीज निकाली और नाद में डाल दी और मेज पर रखे हुए उबलते हुए पानी के एक बर्त्तन को उठाने के लिए उसने जैसे ही हाथ बढ़ाया—

"इसे इधर दो" उसे घृणा से देखते हुए और नाद में से शेमीज को निकालते हुए एक्सिन्या ने कहा। "मेरे कपड़ों से हाथ लगाने से तुम्हें कोई मतलब नहीं। तुम एक कैदी की स्त्री हो और तुम्हें अपनी औकात और यह कि तुम कौन हो यह समझ लेना चाहिये।"

लीपा स्तम्भित होकर उसकी तरफ देखती रह गई और समझ नहीं सकी परन्तु एकाएक उसने एक्सिन्या की निगाह को बच्चे की तरफ मुड़ते

हुए देखा और फौरन वह समझ गई तथा उसका सारा शरीर सुन्न पड़ गया।

"तुमने मेरी जमीन ले ली है इसलिए बदले में यह लो!" यह कहते हुए एक्सिन्या ने खौलते हुए पानी का बर्त्तन छीन लिया और निकीफोर के ऊपर फेंक दिया।

उसके बाद वहाँ एक ऐसी चीख सुनाई पड़ी जैसी कि उक्लीवो में इससे पहले कभी भी नहीं सुनी गई थी और कोई भी इस बात का विश्वास नही करता कि लीपा जैसा कमजोर प्राणी भी इस तरह की चीख मार सकता है। और अचानक अहाते में खामोशी छा गई।

एक्सिन्या अपनी उसी पुरानी सरल मुस्कराहट के साथ मकान के भीतर चली गई।.... बहरा अपनी बाँहों में कपड़े भरे अहाते में इधर-उधर घूमता रहा। फिर उसने उन्हें दुबारा टांगना शुरू कर दिया—चुपचाप, आराम के साथ। और जब तक कि रसोईया नदी से लौट कर आया तब तक किसी की भी हिम्मत नहीं पड़ी कि रसोई घर में घुसे और देखे कि वहाँ क्या हुआ था।



निकीफोर को जिले के अस्पताल में ले जाया गया और शाम होते-होते वह मर गया। लीपा ने लेने के लिए घर वालों के आने का इन्तजार नहीं किया। उसने मरे हुए बच्चे को उसकी छोटो रजाई में लपेटा और घर ले चली।

अस्पताल, जो अभी नवा ही बना था और जिसकी खिड़कियाँ बड़ी-बड़ी थीं, एक पहाड़ी पर ऊँचा खड़ा था। डूबते हुए सूरज की रोशनी में वह चमक रहा था और ऐस दिखाई पड़ता था मानो उसमें भीतर आग लग गई हो। नीचे एक छोटा सा गाँव था। लीपा सड़क के सहारे नीचे की तरफ चली और गाँव पहुँचने से पूर्व ही एक तालाव के किनारे बैठ गई। एक औरत घोड़े को पानी पिलाने लाई मगर घोड़े ने पानी नहीं पिया।

"तुझे और क्या चाहिये ?" उस औरत ने घोड़े से धीरे से कहा, "क्या चाहता है ?"

लाल कमीज पहने एक लड़का किनारे पर बैठा हुआ अपने बाप के बूट धो रहा था। और दूसरा कोई भी प्राणी गाँव या पहाड़ी तक नहीं दिखाई पड़ रहा था।

"वह पी नहीं रहा," घोड़े की तरफ देखते हुए लीपा ने कहा।

फिर घोड़े के साथ वह औरत और बूटों के साथ वह लड़का, दोनों चले गए। वहाँ कोई भी नहीं रह गया। सूरज सूरज और बैंगनी रङ्ग के कपड़ों में लिपट कर सोने चला गया, लम्बे-लम्बे बादल लाल और भूरे रङ्ग के आकाश में चारों तरफ छा गए और उसको नींद की रखवाली करने लगे। दूर कही एक तितलौंया पक्षी एक खोखली अवसाद भरी आवाज में चीखा जैसे कि बाड़े में बन्द गाय रंभाती है। इस रहस्यमय पक्षी की आवाज हर साल बसन्त में सुनाई पड़ती थी परन्तु कोई भी नहीं जानता था कि वह कैसा था या कहाँ रहता था। पहाड़ी पर अस्पताल के पास तालाब के किनारे उगी हुई झाड़ियों में तथा खेतों में बुलबुलें चहक रही थीं। कोयल किसी की सालों की गिन्ती कर रही थी और भूल कर फिर शुरू से गिनने लगती थी। तालाब मेंढ़क एक दूसरे पर चीख-चिल्ला रहे थे, फूल-फूल कर फटने के करीब हो रहे थे और कोई भी उनके शब्दों का अर्थ लगा सकता था :

"तुम ऐसे हो ! तुम ऐसे हो !" सम्पूर्ण वातावरण विचित्र प्रकार के कोलाहल से भर उठा था। ऐसा लगता था मानो ये जानो ये जानवर इसलिए गा और चीख-चिल्ला रहे थे जिससे कोई भी उस बासन्ती रात्रि में सो न सके, जिससे सब, यहाँ तक कि वे क्रुद्ध मेंढ़क भी, हर क्षण का पूर्ण उपभोग और अपना मनोरञ्जन कर सकें : जीवन केवल एक बार ही मिलता है।

रुपहली अर्द्ध-चन्द्र आकाश में चमक रहा था। बहुत से तारे भी खिल रहे थे। लीमा को पता नहीं चला कि वह वहाँ कितनी देर बैठी रही मगर जब वह उठी और आगे बढ़ी तो उस छोटे से गाँव का प्रत्येक प्राणी

सो चुका था और एक भी रोशनी दिखाई नहीं पड़ रही थी । यहाँ से घर करीब नौ मील दूर था, परन्तु उसकी सम्पूर्ण शक्ति समाप्त हो चुकी थी,उसमें यह सोचने की भी शक्ति न रही थी कि वह कैसे जाय । चाँद कभी सामने चमकता था, कभी दाहिनी ओर और वही कोयल, भारी पड़ गई आवाज में टिटकारी सी भर कर मानो उसे चिढ़ाती हुई सी बराबर पुकारे जा रही थी : "ए सामने देखो, तुम अपना रास्ता भूल जाओगी !" लीपा तेजी से आगे बढ़ी । उसके सिर का रूमाल कहीं गिर गया.........उसने आसमान की तरफ देखा और ताज्जुब करने लगी कि उसके बच्चे की आत्मा इस समय कहाँ होगी : क्या वह उसके पीछे-पीछे चल रही थी या वहाँ दूर तारों के बीच तैर रही थी और इस समय अपनी माँ के विषय में कुछ भी नहीं सोच रही थी । ओह, रात को इस खुले हुए मैदान में कितना एकाकीपन था, उस सङ्गीत से भरे हुए वातावरण में जब कोई स्वयं नहीं गा सकता था, प्रसन्नता की उन अविराम गति से होने वाली चीखों में जब कोई स्वयं प्रसन्न नहीं हो सकता था, जब चाँद, जो इस बात की चिन्ता नहीं करता कि बसन्त का मौसम है या गर्मी का, मनुष्य जीते हैं या मर रहे हैं, चुपचाप एकाकी नीचे की तरफ देखा करता है ।.........जब हृदय में दुःख भरा होता है तो मनुष्यों के बिना रहना कठिन हो जाता है । काश कि सिर्फ उसकी माँ प्रास्कोव्या ही उसके साथ होती या वैशाखी या कोई रसोईया या किसान उसके साथ होता ?

"बू-ऊ-ऊ !" तितलौंया पक्षी । "बू-ऊ-ऊ !"

और अचानक उसने मनुष्य की आवाज को स्पष्ट रूप से सुना ।

"घोड़े जोत लो, वावीला !"

उससे आगे, सड़क के किनारे, आग जल रही थी । लपटें बुझ चुकी थीं सिर्फ लाल अँगारे रह गए थे । उसे घोड़ों की घास चबाने की आवाज सुनाई पड़ी । अंधेरे में उसे दो गाड़ियों की रूप रेखा दिखाई दी । एक में एक पीपा रखा था और दूसरी में, जो छोटी थी, बोरे भरे हुए थे । दो आदमी वहाँ और थे । एक घोड़ों को जोतने के लिए ले जा रहा था, दूसरा आग के पास हाथ

पीठ के पीछे किए चुपचाप स्थिर खड़ा हुआ था। गाड़ियों के पास एक कुत्ता घुर्राया। वह आदमी जो घोड़ों को ले जा रहा था रुका और बोला :

"ऐसा लगता है मानो कोई सड़क पर आ रहा है।"

"शारिक, चुप रहो !" दूसरे ने कुत्ते को पुकारा।

इस दूसरी आवाज से यह साफ मालूम हुआ कि दूसरा आदमी एक बुड्ढा आदमी था। लीपा रुक गई और बोली :

"भगवान तुम्हारी मदद करे।"

बुड्ढा लीपा के पास गया और कुछ रुककर जवाब दिया :

"नमस्कार !"

"तुम्हारा कुत्ता काटता तो नहीं, बाबा ?"

"नहीं, चली जाओ, वह तुमसे बोलेगा भी नहीं।"

"मैं अस्पताल गई थी," कुछ रुककर लीपा ने कहा। "मेरा नन्हा बेटा वहाँ मर गया। मैं उसे घर ले जा रही हूँ।"

यह सुनकर बुड्ढे को बहुत बुरा लगा होगा क्योंकि वह वहां से हट गया और जल्दी से बोला :

"कोई बात नहीं, डियर। यह भगवान की मर्जी है। तुम बहुत सुस्त हो, लड़के," अपने साथी को सम्बोधित करते हुए उसने आगे कहा, "फुर्ती से काम करो !"

"तुम्हारा जुआ मिलता ही नहीं," नौजवान ने कहा, "दिखाई ही नही देता।"

"तुम हमेशा के ही ऐसे हो, वावीला।"

बुड्ढे ने एक अँगार उठा लिया, उसे फूंका—और उसकी रोशनी में सिर्फ उसकी नाक और आँखें चमक उठीं—तब, जब उन्हें जुआ मिल गया, वह रोशनी लिए हुए लीपा के पास गया और उसकी तरफ देखा। उसकी निगाह में कोमलता और दया की भावना भरी हुई थी।

"तुम एक माँ हो," वह बोला; "हरेक माँ अपने बच्चे के लिए रोती है।"

यह कहते हुए उसने अपना सिर हिलाया और गहरी साँस ली। वावीला ने कोई चीज आग पर फेंकी, पैर से उसे रगड़ा—और तुरन्त ही वहाँ घोर अन्धकार छा गया। वह स्वप्न-चित्र समाप्त हो गया। पहले की ही तरह वहाँ सिर्फ खेत, तारों भरा आसमान और एक दूसरे के सोने में बाधा डालने वाली चिड़ियों की आवाजें ही शेष रह गईं। और एक पक्षी, ऐसा लगा कि उसी जगह जहाँ पहले आग थी, चीख उठा।

मगर इक मिनट बीत गया और लीपा को फिर दोनों गाड़ियाँ, वह बुड्ढा और लम्बा और दुबला-पतला वावीला दिखाई पड़ने लगे। गाड़ियां, सड़क पर चढ़ती हुई चरमरा उठीं।

"क्या तुम पादरी हो?" लीपा ने बुड्ढे से पूछा।

',नहीं। हम लोग फिरसानोव के हैं।"

"तुमने अभी मेरी तरफ देखा था और यह देखकर मेरा हृदय पिघल उठा था। यह नौजवान भी बहुत अच्छा है। मैंने सोचा था कि तुम तीर्थ-यात्री होगे।"

"क्या तुम दूर जा रही हो?

उक्लीवो की।"

"गाड़ी में बैठ जाओ, हम तुम्हें कुज्मेन्की तक ले चलेंगे फिर तुम सीधी चली जाना और हम बाँयी तरफ को मुड़ जायेंगे।"

वावली पीपे वाली गाड़ी पर बैठ गया और बुड्ढा और लीपा दूसरी गाड़ी में जा बैठे। वे धीमी चाल से आगे बढे। वावीली आगे था।

"मेरा बच्चा दिन भर तड़पता रहा," लीपा ने कहा। "वह अपनी नन्हीं सी आंखों से मेरी तरफ देखता था मगर कहता कुछ भी नहीं था। वह बोलना चाहता था मगर बोल नहीं पाता था। पवित्र पिता, स्वर्ग की रानी! दुख के मारे मैं फर्श पर पछाड़ें खाती रही। मैं खड़ी हुई और बिस्तर के पास गिर पड़ी। मुझे यह बताओ, बाबा, कि एक नन्हीं सी जान को मरने से पहले इतना कष्ट क्यों देना चाहिए? जब एक बड़ा व्यक्ति, आदमी या औरत, दुख उठाता हैं तो उसके पाप क्षमा कर दिए जाते हैं, मदद एक नन्हें

मे बच्चे को दुःख क्यों होता है जब कि उसने कोई पाप ही नहीं किया ? ऐसा क्यों होता है, बाब ?"

"कौन बता सकता है ?" बुड्ढे ने जवाब दिया।

वे आधे घन्टे तक चुपचाप चलते रहे।

"हम हर बात को नहीं जान सकते। कैसे और क्यों, चिड़िया के भाग्य में यह लिख दिया गया कि उसके चार न होकर दोही पंख होंगे। इसलिए क्योंकि वह दो से ही उड़ सकती है। इसी तरह मनुष्य के भाग्य में भी यह लिख दिया गया कि वह पूरी बात न जानकर आधी या चौथाई ही जाने—उतनी ही जाने जितनी कि उसे जिन्दा रहने के लिए जरूरी है, और इतनी वह जानता है।"

"अच्छा हो कि मैं पैदल चलूँ, बाबा। इस समय मेरा दिल बुरी तरह कांप रहा है।"

"कोई बात नहीं, चुपचाप बैठी रहो।"

बुड्ढे ने जम्हाई ली और अपने ऊपर पवित्र सलीम का निशान बनाया।

"कोई बात नहीं," उसने दुहराया, "तुम्हारा दुख ही सबसे अधिक गहरा नहीं है। जिन्दगी लम्बी हैं। इसमें सुख औरु दुख दोनों ही आयेंगे, हर तरह की बातें होंगी। मातृभूमि रूस महान है," उसने कहा और अपने चारों तरफ मुँह घुमा कर देखा। "मैं सारा रूस घूम चुका हूँ, मैंने उसकी हर चीज देखी है, तुम्हें मेरी बातों का यकीन करना चाहिए, डियर। दुनियाँ में अच्छी बातें भी होंगी और बुरी भी। मैं अपने गांव के प्रतिनिधि के रूप में साइबेरिया गया था और आमूर नदी तथा अल्ताई पहाड़ भी गया था। फिर साइबेरिया में जाकर बस गया था। वहां मैंने खेती की फिर मुझे अपने वतन रूस की याद सताने लगी और मैं अपने गांव वापस लौट आया। हम लोग पैदल ही वापस आए थे। मुझे याद है कि हमने एक स्टीमर पर सफर किया था। मैं दुबला, बहुत ही थका हुआ था, चियड़े पहने, नंगे पैर, ठंड से सिकुड़ता एक-एक टुकड़े के लिए तरसता यात्रा कर रहा था एक भले आदमी ने, जो

स्टीमर पर था—अगर वह मर गया हो तो उसे स्वर्ग का राज्य मिले-मेरी तरफ दया के साथ देखा और उसकी आंखों में आंसू भर आए। "आह," उसने कहा, "तुम्हारी रोटी काली है, तुम्हारे दिन काले हैं..." और जब मैं घर पहुँचा, जैसी कि कहावत है' तु वहाँ छान-छप्पर कुछ भी नहीं था। मेरी एक बीबी थो, मगर मैं उसे साइबेरिया में पीछे छोड़ आया था। उसे वहाँ दफना दिया गया था। इस तरह मैं दिन में काम करने वाले मजदूर की तरह दिन गुजार रहा हूँ। और फिर भी मैं तुम्हें बताता हूँ: तब से मैंने सुख भी देखा है ओर साथ-ही-साथ दुख भी भोगा है। अब मैं मरना नहीं चाहता, मुझे अभी बीस साल तक और जिन्दा रहने से खुशी होगी। इस तरह अच्छाई का भाग अधिक रहा है। और हमारी जन्मभूगि रूस महान है!" और उसने चारों तरफ सिर घुमा कर देखा।

"बाबा,' लीपा ने पूछा, "जब कोई मरता है, तो उसकी आत्मा कितने दिनों तक धरती पर घूमती रहती है?"

"कौन बता सकता है! वावीला से पूछो, वह स्कूल में पढ़ा है। आज-कल सब कुछ पढ़ाया जाता है। वावीला!" बुड्ढे ने उसे पुकारा।

"हाँ!"

"वावीला, जब कोई मरजाता है, तो उसकी आत्मा कितने दिनों तक धरती पर घूमती रहती है?"

वावीला ने घोड़े को रोक लिया और तब जवाब दिया:

"नौ दिन। मेरा चाचा किरिल्ला मर गया था और उसकी आत्मा हमारी झोंपड़ी में तेरह दिन तक रही थी"।

"तुम्हें कैसे मालूम?"

"तेरह दिन तक स्टोव में से खटखट की आवाज आती रही थी।"

"अच्छा, ठीक है। आगे बताओ," बुड्ढा बोला और यह स्पष्ट था कि उसने एक भी बात पर यकीन नहीं किया था।

कुज़्मेन्स्की के पास गाड़ी ऊपरी सड़क पर मुड़ी और लीपा सीधी चल दी। इस समय तक उजाला होने लगा था। जब वह नीचे घाटी में उतरी

उस समय उक्लीवो की झोंपड़ियाँ और गिरजा कोहरे में छिप रहे थे। ठंड थी और उसे ऐसा लगा कि वही कोयल अब भी पुकार रही थी।

जब लीपा घर पहुँची तो अभी तक जानवर बाहर न निकाले गए थे। सब सो रहे थे। वह सीढ़ियों पर बैठ गई और इन्तजार करने लगी। बुड्ढा सबसे पहले बाहर निकला। लीपा को एक ही नज़र से देख कर वह सब कुछ समझ गया और काफी देर तक एक शब्द का भी उच्चारण नहीं कर सका, सिर्फ उसके होंठ बिना किसी आवाज के हिलते रहे।

"आह, लीपा," उसने कहा, "तुमने मेरे बच्चे की हिफाजत नहीं की......"

वारवारा जाग गई थी। उसने अपने हाथ पीटे और रोने लगी और फौरन ही बच्चे को निकाल कर लिटाने लगी।

"वह एक सुन्दर बच्चा था......" वह कहने लगी। "ओह, डियर, डियर...तुम्हारे सिर्फ एक ही बच्चा था और तुमने पूरी तरह उसकी देख भाल नहीं की, बेवकूफ लड़की।"

सुबह-शाम मृतकों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने की रस्म अदा की गई। मृतक-संस्कार दूसरे दिन सम्पन्न किया गया और इसके बाद मेहमानों और पादरियों ने ठूँस ठूँस कर खाना खाया और इतने लालच के साथ खाया कि उन्हें देखकर कोई भी यह सोचता कि उन्होंने मुद्दत से भोजन के दर्शन भी नहीं किए थे। लीपा मेज के पास खड़ी थी। पादरी ने अपने काँटे से नमकीन कुकुरमुत्ते का एक टुकड़ा उठाते हुए उससे कहा :

"बच्चे के लिए अफसोस मत करो। क्योंकि ऐसों को स्वर्ग का राज्य मिलता है।"

और केवल तभी, जब सब चले गए, लीपा ने पूरी तरह महसूस किया कि अब निकीफोर वहाँ नहीं था और अब कभी भी नहीं आयेगा। उसने यह महसूस किया और फूट-फूट कर रो उठी। और उसे यह भी नहीं मालूम था कि वह किस कमरे में जाकर रोए क्योंकि उसने अनुभव किया कि अब जब कि उसका बच्चा मर चुका है, उसके लिए घर में कोई जगह नहीं रही थी कि

उसे अब यहाँ क्यों रहना चाहिए, कि वस रास्ते में खड़ी है, और दूसरों ने भी यह महसूस किया।

"अब तुम किसलिए गला फाड़ रही हो?" अचानक दरवाजे में आकर एक्सिन्या चीखी। मृतक—संस्कार के सम्मान में उसने सब नए कपड़े पहने थे और चेहरे पर पाउडर लगाया था। "चुप रहो!"

लीपा ने रोना रोकने की कोशिश की मगर न रोक सकी तथा और भी जोर से रो उठी।

"सुन रही हो?" एक्सिन्या चीखी और उसने अत्यन्त क्रुद्ध होकर जमीन पर पैर पटका। "मैं किससे कह रही हूँ? बाहर अहाते में जाओ और फिर यहां कभी कदम मत रखना, कैदी की बीबी! भाग जाओ।"

"अच्छा, अच्छा," बुड्ढे ने आडम्बर के साथ कहा। "एक्सिन्या, इस तरह मत चीखो, मेरी बच्ची।......वह रो रही है, यह स्वाभाविक है... उसका बच्चा मर गया है..."

"यह स्वाभाविक है," एक्सिन्या ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "इसे सिर्फ रात भर के लिए ही यहाँ ठहरने दो, कल मुझे इसकी छाया भी यहाँ दिखाई न पड़े! 'यह स्वभाविक है!'..." उसने पुनः उसका मज़ाक उड़ाया और हँसती हुई दूकान में चली गई।

दुसरे दिन तड़के ही लीपा अपनी माँ के पास तोरगुएनो चली गई।

६

आजकल सीढ़ियों और दूकान वाले दरवाजे पर दुबारा रोगन कर दिया गया है और वे ऐसे चममते रहते हैं मानो नए बने हों। खिड़कियों पर पहले की ही तरह खिले हुए 'जिरेनियम' के फूल रखे रहते हैं और तीन साल पहले सिबुकिन के मकान में और अहाते में जो कुछ घटना घटी थी उसे लगभग पूरी तरह से भुला दिया गया है।

ग्रिगोरी पेत्रोविच पहले की तरह अब भी घरका मालिक समझा जाता है लेकिन असलियत यह है कि सारे अधिकार एक्सिन्या के हाथ में

लाद कर स्टेशन ले जाती हैं और डिब्बों में चढ़ा देती हैं और इस काम के बदले में चौथाई रूबल रोज कमाती हैं।

एक्सिन्या छोटे हीमिन के साथ साझीदार बन गई है और उनकी फैक्टरी अब 'हीमिन जूनियर्स एन्ड कम्पनी' कहलाती है। उन्होंने स्टेशन के पास एक होटल खोल दिया है और अब खर्चीले नाच-गाने फैक्टरी में न होकर वहीं होते हैं। डाकखाने का पोस्टमास्टर अक्सर वहाँ जाया करता है और वह तथा स्टेशन-मास्टर भी थोड़ा-बहुत व्यापार करते रहते हैं। छोटे हीमिन ने बहरे स्टेपन को एक सोने की घड़ी भेंट में दी है। वह बराबर उसे जेब से निकाला करता है और कान से लगा लेता है।

लोग एक्सिन्या के विषय में कहते हैं कि उसके हाथ में अब बड़े अधिकार आ गए हैं और यह सच है कि जब वह सुबह सुन्दर और प्रसन्न बनी, गाड़ी में बैठ कर अपने चेहरे पर सरल मुस्कान झलकाती हुई ईंटों के भट्टे की तरफ जाती है, और बाद में जब वह वहाँ हुक्म दे रही होती है तो हरेक महसूस करता है कि उसके हाथ में बहुत ताकत है। घर में, गाँव में और ईंटों के भट्टे पर हरेक उससे डरता है। जब वह डाकखाने जाती है तो डाक-विभाग का प्रधान उछल पड़ता है और उससे कहता है।

"मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप तशरीफ फरमावें, एक्सिन्या आब्रामोव्ना ?"

अधेड़ मगर छैल-छबीले, कीमती कपड़े की पोशाक और 'पेटेन्ट लेदर' के ऊंचे बूट पहने एक ज़मींदार ने एक्सिन्या को एक घोड़ा बेचा और उससे बातें कर इतना प्रभावित हुआ कि एक्सिन्या ने अपनी इच्छानुसार घोड़े की जो कीमत दी उसने वही मंजूर कर ली। वह बहुत देर तक उसका हाथ पकड़े रहा और उसकी प्रसन्न, धूर्त सरल आँखों में आँखें डाल कर बोला।

"एक्सिन्या अब्रामोव्ना, तुम जैसी औरत के लिये, जो तुम चाहो मैं वही करने को तैयार हूँ। सिर्फ यह बतादो कि हम लोग उस जगह कब मिल सकते हैं जहाँ कोई भी हमारे कामों में बाधा डालने वाला न हो ?"

"क्यों, जब तुम चाहो ।"

और उसके बाद से वह अधेड़ रसिक लगभग रोज उसकी दुकान पर 'बीयर' पीने आया करता है । और वह बीयर बड़ी कड़वी होती है, चिरायते जैसी कड़वी । ज़मींदार अपना सिर हिलाता है मगर उसे पी जाता है ।

अजकल बुड्ढे सिबुकिन का लेन-देन से कोई भी सम्बन्ध नहीं रहा है । वह अपने पास एक भी पैसा नहीं रखता क्योंकि वह अच्छे और जाली सिक्कों को परख नहीं पाता मगर खामोश बना रहता है । अपनी इस कमजोरी के विषय में वह कुछ भी नहीं कहता । उसकी याददाश्त मारी गई हैं, वे लोग अगर उसे खाना नहीं देते तो वह माँगता नहीं है । वे लोग उसके बिना ही खाना खाने के आदी हो गए हैं और वारवारा अक्सर कहा करती है :

"कल वह फिर बिना खाना खाए सोने चला गया !"

और वह इस बात को उदासीनता के साथ कहती है, क्योंकि इसकी अभ्यस्त हो गई है । सिबुकिन किसी कारणवश गर्मियों और सर्दियों, दोनों ही मौसमों में हमेशा फरदार कोट पहने रहता है और सिर्फ तभी जब गर्मी बहुत बढ़ जाती है, बाहर नहीं जाता और घर पर बैठा रहता है । आम तौर पर वह फरदार कोट पहन, उसे अपने बदन में लपेट और उसका कालर मोड़ कर स्टेशन जाने वाली सड़क पर गांव में इधर-उधर घूमता रहता है या गिरजे के पास एक बेंच पर सुबह से लेकर शाम तक बैठा रहता है । वह वहां बिना हिले-डुले बैठा रहता है । रास्ते पर से गुजरने वाले सलाम करते हैं मगर वह जवाब नहीं देता क्योंकि पहले की तरह वह किसानों से नफरत करता है । अगर उससे कोई सवाल पूछा जाता है तो वह पूर्ण विवेक और नम्रतापूर्वक उसका जवाब दे देता है परन्तु संक्षिप्त रूप में ही ।

गाँव में एक अफवाह फैल रही है कि उसकी पुत्रवधू उसे घर से बाहर निकाल देती है और उसे खाने को कुछ भी नहीं देती और वह भीख माँग कर गुजारा करता है । कुछ लोग इस बात से खुश हैं तथा कुछ उसके लिये दुख प्रगट करते हैं ।

वारवारा पहने से और भी ज्यादा मोटी और गोरी हो गई है और पहले की ही तरह अच्छे कामों में लगी रहती है। एक्सिन्या उसके कामों में हस्तक्षेप नहीं करती।

आजकल घर में इतना मुरब्बा रखा रहता है कि फलों की नई फसल आने तक भी वे उसे खा नहीं पाते। उस पर चीनी की तहें जम जाती हैं और वारवारा इस बात को न समझ कर कि उसका क्या करे, लगभग रोने सी लगती है।

वे लोग एनीसिम को भूलने लगे हैं। उसके पास से एक बड़े कागज पर कविता में लिखा एक खत आया है, उसी सुन्दर लिपि में। यह खत ऐसा लगता है मानो कोई प्रार्थना-पत्र लिखा गया हो। यह स्पष्ट था कि उसका मित्र सामोरोदोव भी उसके साथ सजा भुगत रहा था। उस कविता के नीचे एक भद्दी, मुश्किल से पढ़ाई आने वाली लिखावट में एक लाइन लिखी हुई थी "मैं यहां हमेशा बीमार रहता हूँ, बड़ा दुखी हूँ,भगवान के लिये मेरी मदद करो।"

शरद के एक सुहाने दिन, संध्या के लगभग, बुड्ढा सिबुकिन गिरजे के फाटक के पास कोट का कॉलर ऊपर की तरफ मोड़े हुए बैठा था। उसकी नाक और टोपी के ऊपरी भाग के अतिरिक्त उसका और कोई भी अंग दिखाई नहीं पड़ता था। उस लम्बी बेंच के दूसरे कोने पर ठेकेदार एलिजारोव बैठा था और उसकी बगल में स्कूल का चौकीदार, वह बिना दांतों वाला सत्तर साल का बुड्ढा याकोव बैठा हुआ था। 'बैशाखी' और चौकीदार बातें कर रहे थे।

"बच्चों को चाहिए कि अपने बुड्ढों को खाना-पीना दिया करें। ...अपने माँ-बाप की इज्जत करें..." याकोव चिड़चिड़ाहट के साथ कह रहा था, "परन्तु इसकी बेटे की बहू, एक्सिन्या ने अपने ससुर को उसके ही घर से निकाल दिया है। बुड्ढे को न तो खाना मिलता है और न पीना, वह कहाँ जाय? उसे पिछले तीन दिनों से एक टुकड़ा भी नहीं मिला है।"

"तीन दिन से !" आश्चर्यचकित होकर 'वैशाखी' बोला।

"वह यहां बैठा है और एक शब्द भी नहीं कहता। वह कमजोर हो गया है। फिर चुप क्यों रहा जाय ? उसे उसके ऊपर मुकद्दमा चलाना चाहिये, पुलिस की अदालत में तो वे लोग उसकी खुशामद नहीं करेंगे न।"

"किसकी खुशामद नहीं करेंगे ?" बिना सुने हुए 'वैशाखी' ने पूछा।

"क्या कहा ?"

"औरत बिल्कुल ठीक है, वह उन लोगों के काम-धन्धे में अपनी पूरी कोशिश करती है। उनका उसके बिना काम नहीं चल सकता...पाप के बिना, मेरा मतलब है..."

"उसके अपने ही घर से," याकोव नाराज होकर कहता रहा। "पैसे बचाओ और अपना घर खरीदो फिर लोग उसमें से तुम्हें निकाल बाहर करें। सचमुच वह बहुत अच्छी है ! प्लेग की चुड़ैल है !"

सिबुकिन ने सुना और वह कुनमुनाया तक नहीं।

"चाहे यह तुम्हारा घर हो या किसी दूसरे का, इससे तब तक कोई फर्क नहीं पड़ता जब तक कि वहाँ आराम मिलता है और औरतें तुम्हें डाटती नहीं हैं...." वैशाखी बोला और हँस उठा। "जब मैं जवान था तो अपनी नास्तास्या को बहुत प्यार करता था। वह खामोश बनी रहती थी और हमेशा यह कहा करती थी, 'एक घर खरीद लो, माकारित्श ! एक घर खरीद लो, माकारित्श ! एक घर खरीद लो, माकारित्श, जिससे कि तुम्हें पैदल न चलना पड़े।' और मैंने उसके लिए अदरख की रोटी के अलावा और कुछ भी नहीं खरीद कर दिया।"

"उसका मालिक बहरा और बेवकूफ है," वैशाखी की बात को अनसुनी कर याकोव कहता रहा, "वह पक्का बेवकूफ है, बत्तख की तरह ही उसकी समझ में कुछ भी नहीं आता। बत्तख के सिर पर डंडा मारो और वह तब भी नहीं समझती।"

वैशाखी फैक्टरी में बने हुए अपने घर जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

याकोव भी खड़ा हो गया, और दोनों अब भी बातें करते हुए साथ-साथ चलने लगे। जब वे लगभग पचास कदम चले गये, सिबुकिन भी उठ खड़ा हुआ और उनके पीछे चल दिया—डगमगाते हुए अनिश्चित पग रखता हुआ मानो फिसलनी बर्फ पर चल रहा हो।

गाँव इस समय तक शाम के धुंधलके में डूब चुका था और धूप सिर्फ सड़क के ऊपरी हिस्से पर पड़ रही थी जो सांप की तरह बल खाती हुई ढाल पर उतरती चली गई थी। बुड्ढी औरतें जङ्गल से वापस आ रही थीं। उनके साथ बच्चे भी थे। वे कुकुरमुत्ते की डलिया भर कर ला रहे थे। किसान औरतें और लड़कियाँ स्टेशन से लौट रही थीं जहाँ वे रेल के डिब्बों में ईंटें लादती रही थीं। उनकी नाकें और आँखों के नीचे वाला गालों का हिस्सा ईंटों की लाल धूल से भरा हुआ था। वे गा रही थीं। उन सबके आगे लीपा अपनी आँखें ऊपर आसमान की तरफ उठाए, ऊँची आवाज में गाती हुई आ रही थी, उसकी आवाज काँप उठती थी मानो वह प्रसन्नता और विजय की इस भावना से भरी हो कि दिन समाप्त हो गया है और अब वह आराम कर सकती है। उसी झुन्ड में उसकी माँ प्रास्कोव्या भी थी जो अपनी काँख में एक बंडल दबाए हमेशा की तरह हांफती हुई चली आ रही थी।

"नमस्कार, माकारित्श !" 'वैशाखी' को देखकर लीपा चीखी। "नमस्कार, डार्लिंग !"

"नमस्कार, लिपिन्का," प्रसन्न होकर वैशाखी चिल्लाया। "प्यारी स्त्रियो और लड़कियो, अमीर बढ़ई को प्यार करो ! हो-हो ! मेरे नन्हें बच्चों, मेरे नन्हें बच्चो। (वैशाखी ने सांस ली) मेरी नन्हीं छप्पन-छुरियो !"

'वैशाखी' और याकोव आगे बढ़ गए। उनकी बातें अब भी सुनाई पड़ रही थीं। फिर उनके बाद उस झुन्ड की मुलाकात सिबुकिन से हुई और अचानक उसमें खलबली मच गई। लीपा और प्रास्कोव्या कुछ पीछे रह गई थीं और जब बुड्ढा उनके बराबर पहुँचा तो लीपा ने झुक कर उसे सलाम किया और बोली।

"नमस्कार, ग्रिगोरी पिमोविच !"

उसकी माँ ने भी झुककर उसे सलाम किया। बुड्ढा रुक गया और बिना कुछ कहे उन दोनों की तरफ चुपचाप देखने लगा। उसके होंठ काँप रहे थे और आँखों में आँसू भरे हुए थे। लीपा ने अपनी माँ के बन्डल में से स्वादिष्ट परांवठे का एक टुकड़ा निकाला और उसे दे दिया। बुड्ढे ने उसे ले लिया और खाना शुरू कर दिया।

इस समय तक सूरज डूब चुका था। ऊपर सड़क पर उसकी रोशनी गायब हो चुकी थी, अंधेरा और ठन्ड बढ़ गई थी। लीपा और प्रास्कोव्या आगे चल दीं और कुछ समय तक अपने-आप अपने ऊपर पवित्र सलीब का निशान बनाती रहीं।